



306  
Harua  
Vipāka  
Sāra

|        |   |
|--------|---|
| आशा नर |   |
| 2.000  | I |

ASHA ARCHIVES



| १ श्रीगणेशायनमः॥ ॥ कर्मविपाकपञ्चाङ्कः ॥ शुद्ध |                  |                   |                       |
|-----------------------------------------------|------------------|-------------------|-----------------------|
| अनुक्रमलिका — १                               | पनाक — ७         | रुक्मसाकपन — ८    | प्राजापत्यक्रिया ८    |
| अनुक्रमलिका — २                               | रुक्मगिरुक्म — ७ | श्रुतिमांकपन — ८  | को अनुकल्पनदान        |
| अनुक्रमलिका — ३                               | रुक्मसाम्य — ७   | रुक्म — ८         | ॥ धनदाना ८ को अनु     |
| पत्रिणाया — ४                                 | पंचदशाहिक — ७    | महासांतपन — ८     | नूकल्पसर्ववर्णनृपदा   |
| पत्रिणाया — ५                                 | मध्यचादायन — ७   | श्रुतिमांतपन — ८  | नी ॥ अनुप ८ को धाम्ना |
| पादरुक्म प्रायश्चित् — ६                      | चादायन — ७       | पर्वरुक्म — ८     | दिजनुकल्प ॥ प्राजा    |
| प्राजापत्य प्रायश्चित् — ६                    | चादायन विधि — ७  | पफ रुक्म — ८      | पत्नानुकल्प ॥ श्रुति  |
| श्रुतिरुक्म प्रायश्चित् — ६                   | निधुचादायन — ८   | पंचगव्यप्रमान — ८ | रुक्मानुकल्प ॥ सांत   |
| श्रुतिरुक्म — ७                               | मयिचादायन — ८    | इष्टरुक्म — ८     | पनानुकल्प ॥ ॥ पमा     |
| पादानरुक्म — ७                                | मासापन — ८       | मासापवास — ८      | कानुकल्प ॥ ॥ गफा १०   |



तिरुक्कानुकल्पः॥॥चाडा  
पनानुकल्पः॥प्रायश्चित्त  
कनानुकल्पः॥पनाकृतफे  
रुक्कानुकल्पःचाडापनानु  
कल्पःपनाकानुकल्पवक्र  
प्रप्रायश्चित्त—११  
नागपापविधान—१२  
प्रायश्चित्तविधिदत्तकाष्ठमंथ१३  
नागस्त्रानमृडिकास्त्रानहा  
मविधि—१४  
दहादानवायुदानस्यप्रमाण१५

कुष्माण्डहामविधि  
गदपानायनविधि  
दक्षिणामूर्तिदान १६  
आभागपदानभूच  
लेखन—१७  
असाध्यभागहनदान  
सर्वभागहनदान १८  
कालपुनर्यदान  
मोनचार्घदान १९  
अर्घदानविधि २०  
अर्घदानविधि २१

अर्घदानविधि २२ अर्घदानविधय ३१  
अर्घदानविधि २३ प्रवकंमृत्पुंजयविधि ३२  
अर्घदानविधि २४ प्रवकंमृत्पुंजयहामविधि ३३  
अर्घदानविधि २५ अपमृत्पुनराभापाग ३४  
अर्घदानविधि २६ काम्यहाम॥शुद्धिकाम्य  
अर्घदानविधि २७ हाममृत्गसंकीर्णविनीर्म  
अर्घदानविधि २८ शोधन ३५  
अर्घदानविधि २९ प्रवकमनुविधि ३६  
हामविधि अपमृत्पुविनाशनरु  
मकृत्पुचार्घ्य पहामप्रवकमनु  
दानविधय ३० मास ३१



उलापुत्रुषदान  
 प्रत्यक्षजुधिदवा  
 मृत्पुंजयध्यान ३८  
 मृत्पुंजममनुज  
 पामोर्जनशुभ्रज  
 पामोर्जन ३९  
 अषामोर्जन ३०  
 अषा ३१  
 अषा ३२  
 अषा ३३  
 अषा ३४  
 अषा ३५  
 अषा ३६।४२

सर्वभागहनप्रतिमादान ४३  
 सूर्यप्रतिमादान  
 सूर्यप्रतिमादानविधि ४४  
 सूर्यदानविधि ४५  
 सूर्यध्यानपूजनविधि ४६  
 अस्पाहामविधि ४७  
 सर्वभागहनसूर्यप्रतिमादान ४८  
 मोवर्षपद्मदान ४९  
 हयभागप्रतिमादान  
 दध्निधनुनामातिगूड ५०  
 दू. घटाधनु. गिलाधनु.  
 कुलधनु. होमधनु. म  
 धूधनु. मकनाधनु. द

धिधनु. नसधनु.  
 सनूपधनु ५०  
 चन्द्रकथकथा  
 वलभीतहनहन  
 ली. उलहनहन  
 ली ५१  
 विविधहनहनलं  
 सर्वहनहन. वृह  
 दानहनतेर्षण ५२  
 हनप्रकृतिदान ५३  
 उकाहिकादिहन  
 हनली. बाहिकहन  
 गिनाशिकहन ५४

चतुर्थिकहन ५४  
 हनवलिदानविधि ५४  
 महाहन  
 अपस्मानविनायकदान ५५  
 स्कंदापस्मानहन ५६  
 दुर्गंधहन ५७  
 वस्त्रगंधहन  
 उन्मादवायुहन  
 धनुर्वातहन  
 दहगुमहन ५८  
 अकस्मात्कार्थहन  
 सर्वांगधनहन ५९



५१

|                   |                           |                |                     |
|-------------------|---------------------------|----------------|---------------------|
| पाण्डुभागहन — ६०  | उष्ट्रवनहन. कृष्णपतिमा    | भीष्मगतहन      | दक्षिणभागवलहन — ७८  |
| कामलानागहन — ६१   | दानः दक्षहनत्व। गाय       | गङ्गवर्महन     | वामांगवलहन — ७८     |
| वाटहन — ६२        | हन. उष्ट्रमहन. यामा       | वक्रमपुलहन     | लिभाभागहन — ७८      |
| नकुवागहनवानक.     | हन — ६८                   | कृष्णमपुलहन    | एकांशलिभाभागहन — ७८ |
| वातपिडहन. नक      | दक्षमपुलहन — ६९           | पद्ममपुलहन     | हर्षावहन — ७८       |
| पिडहन — ६३        | गानागप्रवलयविधि — ६९      | विसर्पिहर — ७४ | पद्महन — ७८         |
| पद्महनत्व। गाय    | पुनालप्रवलयविधि — ७०      | पद्मवागहन — ७५ | मस्तकवलहन — ७८      |
| हन — ६४           | गानागपुनालप्रवलयविधि — ७१ | अग्निगिकांगहन  | कल्पभागहन — ८०      |
| कृष्णहन — ६५      | गानागप्रवलयविधि — ७२      | वृषहन — ७६     | वाधिर्यहन — ८०      |
| पिडकृष्णहन — ६७   | वर्वनांगत्वहन — ७३        | शूयवलहन — ७७   | कृष्णकल्पचहन — ८०   |
| गुल्फकृष्णहन — ६८ | कृष्णनृकांगत्वहन — ७३     | नागीवलहन       | कल्पवलहन — ८०       |
| चित्रकृष्णहन — ६९ | केशूतिहन — ७३             | सपिडवलहन — ७८  |                     |



|                  |                   |                   |                   |
|------------------|-------------------|-------------------|-------------------|
| भगवागहन ८१       | वक्रनासिकत्वहन ८५ | हिक्राहन ८०       | दंडकंहन ८३        |
| भयपूषहन ८१       | मुखवागहन ८६       | गङ्गदत्वहन ८०     | शुक्लचहन ८३       |
| भुवत्वहन ८१      | पुगिवकुचहन ८६     | विक्रगत्वहन ८१    | पाणिवागहन ८३      |
| नीललोचनत्वहन ८२  | दन्तुनत्वहन ८७    | हृदयवागहन ८१      | द्रुसपाणिहन ८३    |
| मन्ददृष्टिचहन ८२ | किंकाशिवहन ८७     | करुहन ८१          | शिवनपाणिहन ८३     |
| मिम्बिनहन ८२     | शूकत्वहन ८७       | धमसकाणहन ८१       | हस्तशूलहन ८३      |
| नेकाध्वहन ८३     | शूकत्वहन ८८       | हृदयकुमिहन ८२     | हस्तपादगतशूलहन ८३ |
| कंकनाशहन ८४      | खलवाकहन ८८        | उग्रवधहन ८२       | उदनवागहन ८३       |
| नैगधनहन ८४       | किंकादन्तवागहन ८८ | श्रीकनभूटहन ८२    | शूलवागहन ८३       |
| नासावागहन ८४     | कण्ठवागहन ८८      | श्रीकनारुनःचहन ८२ | वृचिशूलहन ८४      |
| नासाबुनहन ८५     | गण्डमात्राहन ८८   | पार्श्वशूलहन ८३   | श्रीकनशूलहन ८४    |



|                    |                    |                           |                |
|--------------------|--------------------|---------------------------|----------------|
| रुनः शूलहन ८४      | रुलाइनसर्वभागहन ८६ | रुमिद्रुहिहन १००          | गुठभागहन १०३   |
| रु(म)दनहन ८४       | महादनहन ८६         | वमिहन १००                 | प्रभवतगुठभागहन |
| उदनगुल्महन ८४      | मन्दागिहन ८७       | कटिकुलहन १००              | अर्धभागहन १०३  |
| वागगुल्महन ८५      | अगीसानहन ८८        | लिंगभागहन मृगकुक्रादि १०० | गुरुकुलहन १०४  |
| यकृगुलीह रुलाइनहन  | नकागीसान ८९        | मृगकुक्रहन बद्रमृगहन १०१  | चमपवपहन १०६    |
| प्रीहादनहन ८५      | संग्रहणीहन ८९      | लिंगहानिहन १०२            | पादभागहन १०४   |
| यकृगुलीहप्रतिमादान | ग्रहणीहन ८९        | मृगगंदनहन १०२             | खंडुचहन १०६    |
| प्रीहादिहन ८५      | कुर्विहन ८९        | प्रभवतयानि(म)निगहन        | पाद(व)दहन १०४  |
| उदनव्याधिहन ८६     | अन्यपीठाहन ८९      | दृष्यपव्याधिहन १०२        | शंगुलीवपहन १०५ |
| रुलाइनहन ८६        | अन्यवृद्धिहन ८९    | रुगंधनहन १०२              | रुनखीलहन १०५   |



धातुभागहन  
 मन्दाशुद्धिहन  
 अस्तिभागहन  
 प्रदनभागहन  
 प्रमहहन  
 मन्त्रप्रमहहन  
 वागप्रमहहन  
 मधुमहादिहन  
 यन्त्रत्वहन १०७  
 अविहोगभागहन  
 मोहागमकद्वय

अप्रुष्यवतीहन  
 वध्मत्वहन  
 गर्हप्रवेहन १०८  
 अनपयहन  
 मृगपुगत्वहन १०९  
 हनिवधप्रवणविधि  
 मृगपुगत्वहन ११०  
 मृगपुगत्वविनिर्मुक्तम  
 फालत्वहन  
 मृगवत्सापपुमनलहन  
 मफमीरुवविधि १११

चतुर्विधवन्ध्महन ११२  
 उद्राविधि ११३  
 वन्ध्मत्वहन ११४  
 सन्तसदीपदान  
 पूगकादृष्टपंचमी  
 आद्रविधि  
 पूगकामत्रिष्टुद्रा ११५  
 चतुर्विधवन्ध्मनाम  
 विष्टुद्राद्रविधि ११६  
 विष्टुद्राद्रागहन  
 उद्रानविधि ११७  
 विष्टुद्राद्रप्रयाग ११८  
 विष्टुद्राद्रप्रयाग ११९  
 एकवस्तुमान  
 कृतप्रार्थना १२०  
 शेषधीमान १२१  
 नागवलि १२२  
 वन्ध्मलिखक १२३  
 वन्ध्मलिखक १२४  
 चतुष्टमकि १२५  
 अप्रुष्यवतीत्वहन  
 मृगलण्यत्वहन



कीविनकिहन

प्रह्लादीनत्वहन १२६

प्रह्लाभापहन

चतनाहीनत्वहन

प्रतिष्ठितत्वहन

निकृष्टत्वहन १२७

सदादुःखहन

निस्कूनगाधित्वहन

सर्वकार्यासिद्धिहन

दानिद्युहन

कृद्वनप्रकृतिदान

दानिद्युधामनग्रीसूक्तविधान

ग्रीसूक्त १२८

ग्रीसूक्त १२९

ॐतिकर्मविपाकप्रणिकर्मसमापक॥६७८











कर्मविद्याक॥

ॐ नमः श्रीगणेशाय॥ यास्तुतामापसूर्यं ननयमिरुपितामसहृषूग्रमायं पाय  
मिरुयुमात्रं दिनकनविबुधः ॥ निका नाचमात्रं। कृत्वा। थ। कर्मपाकं खिलबुधम्  
यसात्रमेतं नानाति। श्रीनामादिप्रहावादयमपिरुजगतीत्यातिमुखे द्विवायां॥ ग  
नूकर्मविद्याकीयं यमयार्थनिरूपिता॥ नषामादोसुवाधाय। क्रियतेनूकर्मः सु  
नं॥ पात्रस्यना। दानादः ॥ पायमिरु ॥ सुमुखयः ॥ प्रागभातां तात्रतम्यनद्वोदः ॥ न  
नदद्वकी। नदद्ववातदद्ववापायमिरुमिदादितां। कृत्वायं सुत्युतिनिधिस्यता  
ग्रहः॥ पायमिरुविधि। छेदं दणदानविधिसुथा। कृत्वा। उरुमावदस्य। यात्रोयं  
विधिसुथा॥ सर्वत्रागयुदानवृद्धि। नृत्तिदानकी॥ आनायदानवाचकं। सर्वत्र  
विधिवृद्धकी। असाधसर्वत्रागभातां दानं युतिवृद्धसुथा। अतामं वासिमृकीयाविधियाक  
मः ॥ यत्र॥ कालयत्रवदानं च। नृत्वाद्यविधिसुतः॥ मृत्पुत्रयविधिः सर्वत्रागवृ  
त्तासुतासुतः॥ सर्वत्रदानं सर्वत्रं तथायामाजनसुतिः॥ अनूकत्रागवृत्तिवृत्तागवृ



निव।थविना।सर्वत्रागप्रतिकृति।दानस्यधात्रे।धविधि॥गण॥कृत्यरुनंदानं।कदल्या॥य  
 विकीर्णं।सोवर्णयद्दानंय।कृत्यप्रतिकृतिस्तथा॥३३॥धन्यादिदानस्य।पुसंगदीवि  
 नाविधि॥दानेहानीविधि॥याका।दाहहानीविधिस्तथा॥दानंविनायकस्थोकमयस्मान्न  
 रुनंतत॥अच्युतद्वनंयाकं।दुर्गन्धमत्तहावित्र॥सर्वद्विदनाहावि।यालुनागहनं  
 तथा।आकस्मिकस्यकाण्डस्य।हाविदानंततश्चरं॥कामलाहा॥सर्वद्विदनाहावि।यालुना  
 गहनंतथा।कामलाहाविदानंय।गवृत्तस्यविर्गतत॥वागदानंमृगस्थोकं।महिषानके  
 वातकं।लक्ष्मीनावायलस्याधि।वागयिक्तयितस्मृतं॥तयान्याययिकमालि।तत॥भरु  
 धनालित्र।कृष्टत्वंदायदुर्मन्त्रे।यामाहानीभूत॥यत्र॥दक्षमलुनहावीलि।तृणकित्त  
 रुनालित्र।गवतगवतस्याधि।विधि॥याकस्तथा॥यत्र॥वर्चनीगत्वकृष्टत्वं।वर्चनीगत्व  
 रुनालित्र।कलुषिगीर्णत्वंहाविगउचमत्तहावित्र॥कममलुनकंदानं।कृष्टमलुनकं  
 तथा।विसर्पनीगदानंय।यकाद्यागहनंतथा॥हायतिविर्कागहनं।वृणर्पगजदा



नर्क। नाडी वल्लो दानाति कर्मनाकानि सर्वगशा गीर्वादिवादाने गत गदहारीलितगुण ॥  
यद्वायवीगदानेन निवात्रागद्युमयन ॥ सुयविर्लुहवंगद सयदानेन पुकीर्तिर्न ॥ तग १॥  
महर्षिर्षाक मरु क वल्लो रात्रिच ॥ कर्ण प्रयत्न मिद्विच वाधियादि रुनालित ॥ कर्णभूलद  
नेत्रेव नगवाग रुनालित ॥ कर्मपूयाधत्त रुने मन्ददृष्टि रुने तथा ॥ तिमि वद्वेन गुदी गोर  
ने गदु उदान के ॥ ग्यायालदानेन नकां धृ रुने शाक नग ४ यने ॥ नगभूल रुने गदनेन गक  
व रुने तथा ॥ नासावाग वल्लो रुने ॥ ग्यायाल रुने तथा ॥ वकु वृति रुने गद दकु दन  
धरात्रिच ॥ मुखवाग रुने वाधि गज दाने पुकीर्ति ॥ दनुन रुने वाधि ॥ अमदन रुने  
रात्रिच ॥ उक्तावाग रुने गद दास्य वल्लो रुने तथा ॥ मूकत्व रात्रिदानेन गिलयद्यस्य की  
र्ति ॥ सत्रस्व त्यासुथादान मरु मूकत्व रात्रिच ॥ दनवाग रुने नेत्र कलत्रा म रुने त  
था ॥ गलुमाता रुने नेत्र वल्लो दाने पुकीर्ति ॥ दानानुनेन गोर हिक्का रुने मग ४ यने ॥  
गतागददकल रुने वाधुर्कि दान के ॥ अमकासक रुद्यानि दत्कटि वल्लो रात्रिच ॥

२



(२१)

सुन स्नात रुव सुन्य कवलय सवनागर्त ॥ यार्व स्नात रुज सुन कू कानागर्तानि च ॥ यालि वाः  
गह्वर्त गृल दानं गृल रुवर्त गथा गृल मदन दानादि स्नात रुज सुन रुवालि च ॥ जल दन रुवर्त तद्वनं  
हाद वनिवावर्त ॥ मन्दाग्निनागना न्यूका चगीसावा रुवालि च ॥ तन ४ मंगरुली हावि कृदिना  
गह्वर्त तन १॥ अथानुयी जग हृदि तिमिलाद वनागर्त ॥ वमिहाविकदी कृक मंगरुली हादि  
हावि च ॥ अग्नी वद्व मंगरुल तिग हावि रुवालि च ॥ तन वल रुवर्तानि सुवहातिग हावि  
च ॥ वृषलस्य ग्राधि रुवर्त तन रुव रुवालि च ॥ रुगुवाग रुवर्त तद्व दयात्राग रुवालि च ॥  
गुल्ल कृष्ट रुवर्त पाद वल हावि तथानुगी ॥ खं अल्ल सुवयाद त्व वकयाद त्व हावि च ॥ या  
दयालि सव रुवर्त मंगुली वल हावि च ॥ अस्त्यद रुवर्त तद्व मदा वृद्धि रुवर्त तथा ॥ अस्तिनाग  
रुवर्त तद्व मदन सवनागर्त ॥ यम रुवर्त हात्री ति खल्ल रुवर्त तथा ॥ अविज्ञात सवनाग  
स्य हावि याक तन ४ यव ॥ उर्व ग्राधि रुवाल्थ कू न्याधि हात्री यत ४ यव ॥ यस्या राव रु  
वर्तानं भाहाग कृस्य वीर कशा यज्ञाय वीत दानं च ग कृसाव रुवर्त तथा ॥ महावृद्ध जयः



सुद. वा. ॥ ६८ ॥ दृढं न तथा ॥ यत्नात् कस्यैव हि मा. महावृद्धदार्ढ्यं न ॥ कृत्यं यद्यप्यवाप्तं सु. कृत्या  
 त्यक्तं वस्तु. स्वर्गकन्यात्र तस्मिन् दानं यत्तु पदं न त ॥ सकृन्मि स्रष्टुं न चैव. न दुस्मानमपि दि  
 तं ॥ सर्वेषु धन्या दानं च. सर्वसाया स्रष्टुं यत् ॥ कृष्णयज्ञस्यैव म्या. अर्द्धं अर्द्धं निरुप्यत ॥ वि  
 ष्णु अर्द्धं न त ॥ यत्कर्म कवमुविधिस्रुतं न ॥ न त ॥ यत्काना गवति मृतं ता यत्तु त्वत्तु विच. मा  
 विच किं दृढं न दृ. त्यक्ता हानि दृ. ना विच ॥ यत्काना शुद्धं न दृ. दृ. यदा न व कीर्तिर्न. यत्तना  
 या हानि दृ. मयुमिष्टा दृ. न तथा ॥ निरुष्टु त्वत्तु दृ. न दृ. सदा दृ. न व दृ. न तथा ॥ निरुष्टु त्वत्तु दृ.  
 न दृ. त्वा यत्तु सिद्धि दृ. न तथा ॥ दक्षिण न गतस्याति. कृष्ण हानि तत्त ॥ यत् ॥ दा वि. शु. हानि वि  
 न द. मूर्ति दानं न त ॥ यत् ॥ गी. सू. क. स्या विधिस्रुतं दृ. दृ. न दानं समृद्धि दी. कर्म विद्या कर्म दृ. शु.  
 कर्म हानि वि. न यत्तु व दृ. न मिति शु. त्यत्तु या. या. आदि यमू. ख्य ॥ १ ॥ तद्विद्या का जा त्या यत्तु कर्म  
 ०० नियात्तु जलसू. गान. तन्निवर्त्तक कर्म सला दक्षिण ॥ नन्वनिष्टु ह व त्वा वि. न यत्तु ॥ ०० नि  
 कर्म विद्या क. या ॥ ०० क. रं द. ०० ति व. ०० उ. यत्तु. ता. शानिष्टु ह व त्वत्तु ॥ ०० नि. क. त्वत्तु. ता. नि. ष्टु ह व



पूर्व २

तुं कर्मविद्या कर्तुं ॥ ननु या ध्यादिजनक कर्मद्वयं संचितं पात्रवृत्तं अति संचितं नामवृ  
त्तवृत्तमानदहृत्तम्यदुलं जन्मकर्तुं नवागुपमाने नास्तीति वाच्यं एकजन्मकृतथावि  
रुद्धरुलया वृत्तित्वपूरादिजनक कर्मलिखकस्मिन् दहृत्तम्यदुलं संचितं न तत्सिद्ध  
४। वृत्तमानदहृत्तमपि जन्मा नवरा म्यदुलं संचितं भव कंचित्त्वं तत्त्वित्य  
माने संचितं न संचितं मिथ्या ४। यात्रवृत्तं न जन्मनीयं वा ध्यादिवा पात्रवृत्तं  
न ननु या ध्यादिजनक जन्मा नवरा म्यदुलं न केहि ॥ अतः ननु ॥ पूर्वजन्मक  
र्तुं याप्यं ननकस्य च निश्चयं । बाधनं वाधिरूपेण तस्य जायादि हि ४। मन्त्रं  
॥ पत्रिहमाया मूकं ४। पुनिकर्मविद्याकं जन्मा नवरा म्यदुलं जन्मलोका कथं न  
थ स्यादिकानूवा दो नैहिकस्य वा ध्यादिजनक त्वनिषेधमिति वाच्यं मानाया  
वान् । अतः लोके ४। पुन्यपाये विरुद्धरुलं मधूतं नैव चनी पापाकृतं न ता  
त्यर्थं कर्ममथवा ४। उक्तं ननु नपि ४। स्वादर्थं नात् । नैव अति नियमन जन्मानक



वीरनाम जनकत्वा यथाऽपि तातय वचनविवादाच्च बालयशुयाध ऊन्मात्तरीय पाच  
जन्यत्वस्यावश्यकत्वाच्च ॥ यदुविद्याक ४ कर्मणि पुत्र्यक वीचि दिति जायते ॥ ०० हवा मू  
त्रक वी. साव रु गु पु या जनमिति वचनं तदपि सा कुचिक न्यायाद्विहित कर्मविषयक  
चित्त्वे का रुका दपि या या शा ग म यु त्य कि वि व द कि ज न्मा क व द त स्य च या आदि जनकत्वे  
द ह जनक गैव न के स्ये वा ग य जनकत्वं सी र व ति. त ह द माना सा वा ग अ न्यथा घटा  
दि ग ऊ च सखादिक जनक कर्म (अर्थ) दोष ४। त न द हान म क स्य द्वा ना गि ना ग म त्क  
र्थ कर्मविद्याक नाश्वत्वं उच्यते ॥ जीवन्म क स्य ग वी व द्वा व ल न य य रु न्न ग त्व द्वा न स्य  
त न्ना ग क त्वी। कर्मविद्याक स्य रु त न्ना ग क त्वं या आदि इ ४ ख जनक इति गति न्न इति गे ४  
ग वी व द्वा व ल य य रु न किं चि द ग न. उ ग न द ह जनक स्य या त क स्य. या व द्द ह या  
गं सि ग न्न कर्मविद्याक नाश्वत्वं सी र व ती ति नं का य वा म्मा. त न द या आदि जन न न य व  
म (अ) ना ग न. कर्थ कर्मविद्याक नाश्वत्वं ना पूर्व कर्मणि ॥ ताना ज न्म रा वि द्या धि जन



क त्वं तस्मिन्नावस्थ क त्वात् ॥ तथ गता तव ॥ महायात कृतं विद्मः, सुक जन्म नि जायत । उच  
याया कृवं यच्च गीतिया य सम कृवं ॥ अतः कर्म विद्या क कालं वर्तमानं दद स क दयना ॥ ग  
द । गीति स फ ज न्म स क दयादि ना ॥ अयुर्व स्य क त्वात् य मु कृतं यि कर्म विद्या क कृत्वा  
ताव ॥ स कर्म वे तु ॥ अतः यात क व द्वा द्वा य पादनात् ॥ य द्वा ॥ त ग या य धि र्ग नी का व द्वा य  
यस्य कृत त्वान्न कर्म विद्या क न कृत्वा त्य रि वि ति क ल्ये त ॥ दान धर्म य ॥ य या पा नि म वा ॥  
कृत्वा नि व स्य नि व र्ते ॥ सदा । सदा ॥ र व स मा यु का । या धि ना स क व न्य त ति ॥ ता व ता क ॥ म  
का या त क ज वि द्वा मि त्या दि व व न त्व कृत कर्म विद्या क वि ष यं त ग या ग मि वि धि ॥ क  
र्म जा दा ष जा उ त य जा ॥ तथ व ॥ अयुर्व द ॥ कर्म यु का य न क दा वि द्वा त । दा ष यु का  
य न र व नि वा न्य । तथ य व या ति व कर्म जा दा ष जा यु का य जा ॥ का य म न । वि का वा त ॥  
त ग व ॥ य थ ग म् कु नि र्गु ना य थ या धि वि कि ति त ॥ न ग म् या ति या धि रि ॥ स नू य क र्म  
जा व ॥ ॥ ॥ स्व कृ कृ यि त द्वा य व नि र्गु ना य द्वा य ज वि द्वा ॥ त ग व नि र्गु ना कर्म ज न्मा कु द्वा



यजुःस्योषधिनहि॥ उक्त्याजायमानमु. निष्कस्योषधिसवया॥ यद्यपि दावज न्यागयि कर्मजुः  
त्वकार्यमाणस्यादृष्टं जनुत्वादिति रुधानाविनस्मथयितुं दावत्वमववागत्वावहिनकाद्य  
नानिद्रुषितकात्रलतावच्छेदकं ननु कर्मत्वमिति कल्प्यते॥ आयुर्वेदविद्याभाषणं॥ गथावदाव  
जनुत्वागदृष्टत्वेनैव कर्मजनुत्वागत्वनिति॥ गणकवलदावजुषनकर्मविषाका  
नष्टानद्विनिर्धेयस्य नदधिकारिविधिषलत्वात्॥ तन्निधयुष्मिषधिसाधेत्तन्निधयानुय  
च्चुबुद्ध्यादिमंदं यिनिगादोपायधिरुक्कः॥ सूर्यादिदं संधयि रुजादोपवृ  
त्तिदं नोक्तं तद्वत्कृतकर्मदावजनुत्वेमं ययि पुवृत्तिर्युक्ता॥ पृथीव्यादयं महाधु  
ववेव अगदं यतिताति॥ कश्चिन्कर्मविषाकानित्याशनेमिरुक्कयुगात्त्यादनानुकूलशायान  
कुर्यादित्यर्थकात्पुनरावजनुत्वाधिनित्वककर्मविषाकानां नित्यत्वात्॥ सर्वतः॥ अ  
स्मान्॥ गमयायदित्यस्मादात्मवद्वत्तनूकूलशायानं कुर्यादित्यर्थकात् कुर्यादिति वक्तुं का  
नामयितदवगन्तं॥ एवमन्वेत्यादिनिवावकांती नित्यं दर्शयुक्तमासौ नूकूलशायानत्वा

५



(21)

त्रित्यत्वं यत्तु कृष्णादिषु मत्स्वयिनात्मन कलविद्यातस्तन्निवर्तकानां न त्रित्यगतिदिक। वागमदि  
कृष्णपापविदुर्गर्थं कर्मविद्याकानूनां न पाययिषु मयिकर्तुं श्युः॥ तस्य न निवर्तकत्वेन विहित  
त्वात् न च जंमिज्जन्मनि पापमनूविर्न तस्मिन् न च जन्मनि पापयिषु विधिः। पुनरुक्तं गतिवाच्यं स  
कां च यमात्मता वागमदिना अधिका विविधा यत्तस्य या य निश्चयस्य जातत्वाच्च तद्विधेन  
तज्जन्मनीव जन्मान्नेत्रयि पुनरुक्तं तथा च कर्मविद्या क पाययिषु या न दृष्टार्थत्वात्॥ पाययि  
रुम कृत्वा तु न कृत्वा कर्म किंचन। अनिसीर्ण मयि नित्यं वर्द्धनं द्विरुक्तं तद्वदित्यादि म हार्त  
व संप्रदुष्टवचनाच्च समुच्चयः। यत्तु कश्चित् पाययिषु स्य न कदलीदानादिना समुच्चयः। उ  
क्तं नैव दूत्रि न कृत्वा स तवागमनं न च दानं वागमार्थं पाययिषु न च पापनाशार्थमिति वाच्यं॥  
पापनाशस्योपधादेव तस्मिन् ४ पूजायतावतिमिरु दूत्रि न कृत्वा कस्य तु पाययि  
रुस्य तत्कृत्यार्थं कस्य वत् ५ धनदानादिना समुच्चयः ४ पूजायतावतिमिरु दूत्रि न कृत्वा कस्य तु पाययि  
क दूत्रि नात्यंशस्य किं तु कर्मतावाच्चा तत्तु पाययिषु न च पुनित्वं क दूत्रि न नाग ४ सूत्र



धनदानादिना च युगात्यरिहृत्तृदृष्टजननं नवननदानस्यैवाहयार्थत्वमस्मीति वाच्यं सक  
 दनष्टाननरुलदयात्यरुष्टु (थेति वा कनक्षदिह्याहृतगृष्टिके न्यायेन नया वक्षीय  
 क०१॥ नननञ्थे कर्मदयायाथे ककुआधिविययुयाविलयिसमञ्चययननयं ककु० पा  
 यश्चिह्नं आधिविययुयं० पुनिकृतिदानं॥ ॥ अथ ककुस्वतयाधुशुनं॥ यादुवल्ह०॥  
 ककुनननकन, ताथे वायाचिननच। उयवासननेवायं यादककु० पकीर्णित०॥ यथ  
 कथं चिह्नं गुल०॥ पाजाययायमूयुत। अयमवाति ककुस्यात्यातिपूनात्तुलाजन०॥ य  
 थ कथं चिह्नं दिदिदिदु कलिनवदावृहिवृस्वस्मानविवृद्धिं वृत्तिगया नूलायं यातिसास्यं व  
 तिमितादवायालियूनात्तुलायस्मिन्नरुनिहाजनं वाकं तदेव विधीयत लाद्यवान्॥  
 ॥ यवागव०॥ सायं बुद्धादगयसा० पात० यं वदगस्मृता० वदुर्विगतिनाया०॥ यवेनि  
 वगनं स्मृत्०॥ आयस्मन्नु०॥ सायं द्वाविगतिं गुप्ति०॥ पात० वदुर्विगति० स्मृता० वदुर्विगति  
 नाया०॥ यवेनि वगनायुय०॥ सायं नकं पातवकहकं आय०॥ अयाचिनीया०॥ ॥



मनु॥ न के कं ग स म ग्री या द हानि गी ति पूर्व व ७। गृहं वा य व सु द ह्य मति रु कं च व न द्वि ८॥  
अर्द्ध रु कं या दान रु कं वा ८॥ ॥ आय स म ॥ सा र्यं या त वि ना दं च्या त्या दानं न क वे ऊं  
ती ॥ स न व ॥ सा र्यं या त स (थे के कं दिन द य म या वि री। दिन द र्यं व ना ग्री या लु कु दं ग द्वि  
धी य त ॥ ॥ या रु व ल ॥ द्वा द श हा य वा स न य वा क ४ य वि की र्ति त ४। रु कु ति रु कं य  
य सा दि व सा न क वि ना त ॥ व रू मा न मि ति। ग ४॥। ने त म न व द्वा द श रा ग मू द क न व रू  
नं रु कु ति रु कं ॥ य कं या रु व ल ॥। यि थि का वा स त का च्च स कू नं पु ति वा स र्वा। न क वा  
गा य वा स थ रु कु ४ सो म्मा य मू य त ॥ आ वा म उा द न नि सा व ४॥। पु ति वा स व म के क मि नि  
न ॥ य थ ४॥ ॥ जा वा ल रु ॥। यि थि कं स क व स कं व रु। थ रु रा का ऊ नं। वा सा वे द कि  
र्षा द या सो म्मा र्य रु कु उ य त ॥ ॥ य रु या रु व ल ॥। न यी ति वा ग म र्था सा दं के क  
स्य य थ वि थि। रु ला य नू व ॥ य थ रु य ४ य व द श हि क ४॥। न यी यि थि का दी नी र्य व  
द श रु ला क नू य वा स नि वृ ति ४। स न व म थ वा दा य व मा रु स न वा ति थि व द्वा व र थि



अन्तु कलिखण्डसंमितात् । न के कं जासयत्तु धूमिलं वातायनं वनं ॥ वनं दृश्यते ॥ नि  
 र्वीमयं न ॥ दृष्टं पतियदि वदुर्दशम् सा ॥ जूमायां चायदास ॥ न के कं वदुर्दशं धूमिलं  
 कृष्टं तथा गसं ॥ दृष्टं दृश्यते नृजीतं न व वातायनं विधिः ॥ दृष्टिं वनिष्ठाकं ॥ धिपी  
 तिकामं मा रुवनिष्ठं ॥ मासस्य दृष्टं वदुर्दशं । असा न या वदुर्दशं । असा य व यराजी  
 सनं यदुर्दशं समा यय ॥ तथे वदुर्दशं वदुर्दशं असा नृजीतं वा वनी । असा य व यराजी  
 सनं यदुर्दशं समा यय ॥ जूमायां धिपीमाया म अदीया दृश्यते जास ॥ कर्तुं दृष्टं त्यक्ती ॥ जू  
 भाते धिपीमाया वनी ॥ असा नृजीतं मासी मय व स ॥ असा य स्व सतं यया सिन वान वः  
 दृष्टिं वेता हि सय्ये लमा य दृष्टं वदुर्दशं विषयान् मनु ल मय सनं वदुर्दशं स ॥ उं यदुर्दशं वदुर्दशं  
 नमिति वत सति दृष्टं दृष्टं दृष्टं । दव दत सति वानं समिहि ॥ उं दृष्टं वदुर्दशं स्व र्म दृष्टं जनं  
 तयः सत्यं यलं ॥ जी जू क दृष्टं उं उं ॥ तज ॥ यून्य ॥ धर्म ॥ निव ॥ दृष्टं सने सुसो न मला लीः  
 पुति मनु म नसान मः स्या रु ति वा सव्वाने न व असान् नृजीतं अस यमा ल मास्या वि का



नववनेरुसकु कवलाया कयथा दधि घृत मूल रुला दका विरुवी विउरुवा रुन यगस्तानि  
योर्लमा स्यायि त्रदण्यमानु कुक्का नके कायवयन यवयक मग्नीया ७॥ अमावास्या मूयाष्टी  
के कायवयन पूव्वेव क विषवी तमक मा मय वा न्दाय (ममास वंति ॥ अहना योर्लमाः  
मीमित्यनन व कुदं थु श्रुत ॥ ॥ युका वा न व मा रु या रु व त्वा १॥ यथा कथं विविधुना  
व त्वा विंश द्दुत द्वयी। मा सने वा य गु जीत वा न्दा य ल म थ य व ॥ मन १॥ अष्टावक्षी समग्नी  
या शि लु न म धु न्दि न स्मिती। नियता ता रु विष्णु स्य यति वा न्दा य लं व व न ॥ व कु व १ वा त व ग्री  
या शि लु न वि य १ स मा हित १ व कु व रु मि न सूर्य नि गु वा न्दा य लं व व ॥ ॥ य म १॥ गिंस्त्री  
नि लु न स मग्नी या। नियता ता दृ व त १ रु विष्णु न स्य वे मा स मृ वि वा न्दा य लं स्मृती ॥ य  
था कथं विदि स्यादि य क वृ ता व न मा स ग रु लं यदा कदा वि श्वार्थ रु दित्य कं मिता कः  
नायी ॥ ॥ मा क्क लु य १॥ ग म्दीनं स क वा न्दु यि व स्म न व कु व मा त। स न ग या  
स फ वा र्ग स क वा र्ग स न द या ७॥ स न नै क न व पु र्ग गि वा र्ग वा य कु क रु व ७॥



॥ गत्सा मायनं नाम वर्गं कल्पयनाशनं ॥ ॥ हावीनं नयका वा न वमयुर्क या कूव ल्य ॥ ॥ ग  
 मृगं गम मयं दीर्घं दधि सयि ॥ कू ॥ ग द क ॥ ॥ अ व न द्र प व म ल् कू कू सां त य न व व न ॥ ॥ ग  
 मृगदीभि मिलिता शक सिद्धि न व न य न य व स दित्यर्थ ॥ ॥ मिलितं ल्य वा ॥ ॥ पृथ क ल्य वि  
 धाना द व ग म्य न ॥ ॥ ग मृगदि य त्रि मा लं व द्म कू च व श्रु तं ॥ ॥ जा वाल लु ॥ ॥ ग मृगं ग  
 मयं दीर्घं दधि सयि ॥ कू ॥ ग द क ॥ ॥ उ के कं प ल्य द यी त्या ल् व हा वा ण म हा ऊ न ॥ ॥ कू ॥  
 सान्क य नाना म स र्व या य पु ल्ल ग न ॥ ॥ ६० ॥ ल्य ह ॥ ॥ लं ख ॥ ॥ ॥ न द व स हा ल्य र्क ल्य नि मा न  
 य नं स्मृ तं ॥ ॥ न नि नि न यं च ग श्रु मि ति वि द्वा नं च व ॥ ॥ ॥ या कू व ल्य ॥ ॥ पृथ क्का न  
 य न द यो ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ सा य वा स क ॥ ॥ स का ह न रु क्क श्रु यं म हा ग न क य न ॥ ॥ स्मृ त ॥ ॥ उ य  
 वा स ॥ ॥ स क म ल् ल्य र्थ ॥ ॥ ॥ य म लु ॥ ॥ गृ हं यि व रु ॥ ॥ ग मृ गं गृ हं रु ॥ ॥ ग मयं यि व ॥  
 ॥ गृ हं दधि गृ हं दीर्घं गृ हं सयि स्मृ त ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ म हा ग न क य नं च त् स र्व या य पु ल्ल ग  
 न मि त्या ह ॥ ॥ जा वाल लु ॥ ॥ य ल्ल भ के क भ त र्वा ॥ ॥ गि वा ण मू य या ऊ य ॥ ॥ गृ हं रु य



[illegible]



[illegible]



सायवास ॥ कार्त्तिकमासायवासव कार्त्तिकमहावर्गव ॥ अथवाजायस्यादिपुण्यानाया ॥ मि  
तादवायानि दुर्विनीतिमत् ॥ वाजायत्यक्रिया न को धनं दद्याद्विजालम् ॥ धनान्नसावदातय  
मृत्युं दुर्त्यनसंगय ॥ मृत्युं नरेव ॥ गवामतावनिष्कीवा तदहं यादमववा ॥ निष्कप्रु ४ मव  
धुनिरुथस्यमवर्णस्यवा ॥ तामादोनिष्कयविमाधनक ॥ अथगकी पादाहं तत्समंधाया  
दिवादयादिनिस्मृत्यर्थसाव ॥ ॥ गृहलयालोषदिं गन्त ॥ धनं ४ र्यं व रिवावा नं मध्व  
नारिपूनालिका कार्ष्णिपिलोकमृत्याद्विकनिष्ठानां युकीर्त्तिता ॥ द्वकृष्णलसमधृत विष्णुया  
वृष्टमावक ॥ नभाउगस्याद्वर्णपूनालोषेववाजग ॥ दारिणं दृता ऊष्टमिग ४ यूनाल  
॥ नरेव ॥ दारिणं त्यलिकागमवा वत्स ४ योनालिका गव ७ ॥ दूदय ऊविषयमिति नरेव  
मितादवायानिवागव ॥ कृष्णयुर्गुग्मयग्रा उयवासकथेववा ॥ धनपुदानीविषाय  
सममनद्वदुष्टय ॥ कृष्ण ४ पुजायत्य ४ उयवास अहानापी नरेव ॥ कृष्णदशयुर्गवेववा  
लीयामगनद्वय ॥ तिलहाम सरुसी दुवदयावायलीतथा ॥ तिलहामागदशामाधवीय



सुनवा ॥ न कम ध्यय न कृया त्याजायत्यमथापि च । दया द्वादश साहसु गवां मूर्ध्नि विचक्रव ॥ मूर्ध्नि  
वृक्षस्यामितां दवायां वृद्धिं नमः ॥ याजायत्यनु गमका मगिकु कु दयं स्मृती ॥ तसे वत्र दुर्लभ  
नमः ॥ याजायत्यनु गमका दया त्मा नयनं दयं । यवा कत का गिकु कु ति मुक्ति मुमुग्धा स्मृता  
॥ अष्टौ वा न्दा यल दया मि सा वा ग क्य य दया ॥ माधवीय वृहस्य नि ॥ यवा कत क क कु  
ली स्तान क कु यय व न ॥ गृह न या लो वा न्दा यल ति ति ॥ क कु ॥ यवा क स दय न न ॥ ग  
था ॥ वा न्दा यल कु क वृक्ष ॥ कृष्ट ॥ क कु व कु दय ॥ तथा ॥ वा न्दा यल यवा कार्या निवृत्ति  
यान ग कृया ॥ सक मी त्या त्म तु द्यर्थ याजायत्यस्य यं व क ॥ माधवीय वृहस्य नि ॥ क  
कु यं वा गिकु कु ति मुल मरु व रु ति ग द व रु ती य वेत्ता रिं ग द न क ति मुल म मुलि ता  
विं ग ति ॥ स्या त्य वा क ॥ क कु सा न य ना र्थ त व ति स उ धि का विं ग ति ॥ सा व दी ना द्वा र्या वा  
न्दा यल स्या रु य सि रु ग त वा ला ज य द्वि य म र्थान ॥ अरु न रु वि ति सर्व ग स व धु म ॥ तथा  
व ॥ याजायत्यम वि द्वा द्म ॥ १ व म प्र यि रु ती य ॥ क कु ति क कु ॥ व पू य वा सा ॥ याजायत्य



स्य प्राच्यान्मायः ८ मासिक मास यथावत् मासयैव गद्यानतानी साह्य जाजायस्य दयं प्राच्यान्मायः १॥  
 कविपुलाजनमूयवासः ॥ प्रतिस्मृत्यर्थमात्रः ॥ यद्विवाधनकं नृशमायकं वादयादिति होत्रीणाकं नृ  
 शमायकं घननकं पुल्यान्मायः ४ ॥ ॐ तिगूलनयाति ॥ ॥ यमः ॥ ६ कृष्णलं समधृतं विद्वया नृश  
 मायकः १ ॥ एजनद्वयकं कुर्नकं द्वयमूयवासः दुर्त्यं एजनद्वयात्तावस्यतत्वादिति वयं गूलनयाति  
 मुनकं गयमूयवासः दुर्त्यमित्याह ॥ तथैव ॥ नकगलनया नृशमायकं दयाः ४ कृष्णलं पुलायवा  
 सः दुर्त्यं जाजायस्य पुयवासः दुर्त्यः ॥ ३ कृष्णलं नमस्यान् नमस्या कयर्णं पुदी ॥ मस्या कृष्ण  
 वरं लुक् ॥ वगाविष्मृगं मववति मनूकः ४ निवूययदः ४ कृष्णलं ४ जाजायस्य वाचकः ४ ननूय  
 पुयवासे ४ जाजायस्य सिद्धो धनः ४ जाजायस्य पुल्यान्मायात् द्वादश ॥ भयवासा स्मकयवाकस्य  
 धनद्वयं मवपुतिनिधिः ४ स्यान्ति सु ४ नपथमायवासः षड्वादेक नवकं कृष्णलं विष्मृत् ॥ द्वादश  
 वार्षिकस्य जाजायस्य दिति वनूष्णं वार्षिकादिकं मव ॥ गगकुद्वा द ॥ वयं विद्वहाय  
 यगनवः ॥ वद्विर्वयं ४ कृष्णलं वानी ॥ वद्वहाय विद्वहाय ॥ मासि मासि ववाकं ॥ विद्विर्वयं



अथाहति । अर्द्धमासं न तु जाना । द्विवर्षा विमं शुभं ॥ सर्वस्ववत्मासाणी । वृथानागुसंयय ॥ ॐ  
 निगू नयात्तं विवमाकं ॥ यगस्यात्तु कुतयत्तं । यसाविमनीषिणी ॥ हयत्तं कुतयं नगकुत  
 न कुतया सुवाद्यगः ॥ तिष्ठन्दागयविनिष्ठाव ॥ यकुमनो ॥ अकामतमुना ऊच्यं विनिष्ठावद्विजा  
 रुमः । वषट्कसहस्रागं दद्याच्छ्रुथमात्मनः ॥ तिष्ठद्वा । नसहस्रयास्तुत्यत्वमूर्कं नगसधन  
 निर्द्धनविषयत्वनश्वत्सु । एकादश्यातिमादया ॥ तिष्ठत्तु । त्यद्यत्तनवति । गदानसमत्वात् ॥ मा  
 सायवासवतीयं वदशधनदानसमं ॥ सम्वत्सवत्मासाणी । वृथानागुसंययवित्यन्वितासाक  
 ॥ ननु सर्वस्वमात्मनस्य द्वादश दत्तु त्वत्मासायवासवति नवः ॥ ननु वीतार्थः सर्व  
 स्वनमोऽनो संरुवात् ॥ अनाश्रुवहिनश्चादश मासायवासः ॥ सम्वत्सवत्तद्वनविधीयते ॥ तथाच  
 ॥ पूर्वक्रियच्छ्रुथकेल्यनयवागुयं वदशधनवत् ॥ तिष्ठन्तयाति ॥ ॥ ॐ निगू मन्त्रावाय  
 लसूतगीमदामकृष्णसूतदिनकरतदृष्टं कर्मविया कसारं कृष्णत्युतिनिधिनिर्णय ॥  
 ॥ अथ नागनिदानं यमाहायातकादिषु वायुश्चिरुमशुभं ॥ भगताय ॥ कृष्णीयवा

११



जयन्ता च पुमहाय हली गथा । मृगकृष्णनीकासा । अनीसावतगन्दन ॥ इष्टवर्णगुणमाला । य  
दाघाताकिनागर्ज । अथवमादया । भागमहायाया इवा ८ मृगा १॥ जलादवय कृत्यीरुगूल । भि क  
वर्णनिच । असाजीर्णकन कृदि उममा रुगल गुहा १ । वकावृद विमर्याद्या । उ ययाया इवा गदा १  
दंष्टयागनकश्चिग वयू ८ कय विवर्चिका १ । वलीक पूषुनीकाया । भागयाय सम इवा १॥ मधमथ्या  
नृर्ण । भाग । अथियाया इव निदि । महायाययू सर्वस्या । रुद द्वाययागक ॥ दधत्याथयूय वृ  
र्ण । इत्वाद्या धिवलावली । सर्वदादधदं । उतसमर्थविषय । असमर्थस्य त्वद द्धमिति महावृव  
१॥ कश्चिदु महायाययू सर्वस्वमिति या १०१॥ ॥ अथ पायश्चिरु विधि १॥ अनातय १॥ दण वचा  
थव कुत्र । उ यव अदि जानु गुणाना । गमासनूद्रया सर्व पायश्चिरु मय कुम ७॥ विधायये पूर्व  
अर्द्ध । साकल्यनिजकायया । धनूद्वाद्यादि जानिया । दक्षिणं च स्वर्गकि १॥ धनू विनिवद्रव  
नात्मन्या यस्मानीय । गवद्वदानमादि । गवदानमूक । गवदानीव गृह्यत ॥ दक्षिणं च नि । धनूराव  
विषय । अर्द्धकृत्ययथागकि वस्तुर्लकन । लेदि जान । यावडा गन सावदा । पायश्चिरु यथा



त्रिर्गं॥ तद्यामनूय्या सर्वं पायश्चिरं यथाविधि। पायश्चिरं पुकावा वक्त्रहत्यादि पायश्चिरं वक्तुं य  
८॥ ततस्तान् यत्रियुक्तं धर्मं यद्विधिबद्धं जान॥ दद्यात्तु गं दानानि तस्य ८॥ द्वा समन्वितं ८॥ संपुष्टा  
वाक्त्रहत्यादयः न नू क्तिवत कारि। ८॥ ॥ अथ पायश्चिरं पुयागं ८॥ दण्डं च वक्तुं नो वा द्विजान् पाय  
त्वं नायवन्धं क्लिन्नवासाः ८॥ पदं किं वीकृत्य सार्गं पुलाभं ८॥ ततस्ते ८॥ किं न कार्यमिति पृष्ठं कत्रिष्टमा  
पायश्चिरं गत्वनं दृष्टयाः ८॥ पुत्यान्नायं सत्यं दानुमरुमूत्तुं न संकल्य दत्वा ममा म  
कत्रां गनिदानपातकनिवासार्थं पायश्चिरं मयदि ८॥ नु वक्तुं ८॥ सर्वं धर्मं सर्वं क्त्वा न। गसा न  
८॥ सकलाः ८॥ द्विजाः ८॥ मम ददस्य संपुष्टं कृत्वा नु द्विजं सक्तुमा ८॥ मया कर्तं महाघातं क्त्वा न मक्त्वा न  
क्लिष्टं। पुसादः ८॥ कियतां मं ८॥ नु कानू क्तिं पुयं कथं ८॥ पृष्ठं ८॥ कन ८॥ यत्रिणा दं। क्वयं द्विजं स  
क्तुमे ८॥ ममानू गृह्णतु क्व वक्तुं नु निपार्थं य ८॥ ततस्ते ८॥ आवावात्सु सक्तुं कृत्वा कावयित्वा वा ग  
निदानानि ना नायुवा। ८॥ कानि। अवयित्वा नं म महाघातं क्व वद्वा दणं दं वक्तुं दं वा यदि। ८॥  
यू ८॥ उ यवातं क्व वक्तुं म उ दं वा या य संपुष्टं ८॥ दं दम दं वक्तुं न या तावतं क्व उ ग दं वा क्व वा



पायश्चिक्रकाः ॥ अर्कं मरुत्यायनालकं च वा गवली यस्तु कर्मवियाक सात्र पत्रिहावाकं वउर्द्धवा  
 गत्य कात्रश्चानूवादकाय दक्षिणं दाययित्वा अमूक पायश्चिक्रं यथाशक्ति कृतं पूर्वोक्तं वा ग  
 सहितं न यथाशक्ति पुर्यान्नायद्याना कृतं न तत्रामूकना गनिदानया गकना ॥ अथ विष्टातीति  
 अनुवाकाय चिन्तयति ॥ यः ॥ अनुवाकश्च वा गि ॥ अथ गनिदानया गकवद्वत्त्वं न ॥ अमूक  
 मूकानां गवया गकना ॥ अथ विष्टातीति उ यदि ॥ यः प्रिति गतः ॥ कस्यां विष्टिका यांति ॥ ये सा  
 या क्रिममामूकनिदानया गकना ॥ अर्थः सत्या यदि वृममूक पायश्चिक्रं कविष्टातुं त्ययंदं  
 वत्सं कस्या ॥ यानिकानि च वा यानि बुद्धं हस्या समानि च ॥ कश्च नाश्रित्य तिष्ठति तस्मात्क  
 शन्त्येवा म्यहमिति ॥ कदायस्मिन् वक्तुं वा ययित्वा ॥ अथ पूर्वर्तय ॥ अथ वचः ॥ पुजा ॥ यस्तु वस्तु निव ॥ य  
 स्म यस्मिन् वक्तुं मया ॥ त्वनाद हि वनस्य ॥ ॐ ॥ दादं ॥ गुलकाष्टन दन्तान् ॥ अथ जिह्वा लव  
 नं कृत्वा स्नात्वा हस्मादि हिर्दं गन्ताना नि मनु वद मनु वद्वा कथं ॥ पुति स्नानं च ना कवमिति म  
 हाध्वं ॥ ॥ हस्मात्मानं मनु ॥ ॥ अथ नायनमः ॥ ॐ तिलि वसि ॥ ॥ तस्यू वया यतमः ॥ ॐ तिमूख ॥ अ



धारायनमः ४०० ति ह द थ ॥ वामदवायनमः ४०० ति उ अ ॥ सधा जागायनमः ४०० ति या द थ ॥  
 युधमदा सर्वगं जूतिविति तस्मिन्मनुष्ये वा तस्मिन् ॥ गमयस्नानं गंधदानमिति ॥ जूय  
 मयमिति वामान स्ना क ०० ति वा मृत्तिका स्नानं तु जूय कान्त वथ कान्त विष्णु कान्त वसन्ध वा नि  
 वसाधन विष्णु मित्र द्रुस्व मायि द य द ॥ तस्मिन् नृद्वे वा क्षणी क्षत्रिणी ला क क्षत्रिणी उद्धता सि  
 वना रुन दक्षु न गत वा रुना ॥ मृत्तिका रु व म यो र्य य न्नया ड्छु र्ग द र्ग मृत्तिका व द्ध द र्ग  
 सि का यथ ना रि म रुता ॥ मृत्तिका द रु म य र्ग त्वयि सर्वं व ति धि र्ग मृत्तिका ति धु र्ग स  
 र्वं त न्म नि र्ग द मृत्तिका त्वया रु र्ग न या य न ग क्का मि य व र्ग ग ति मि ति ॥ क व ल स्नान  
 माया दिष्ट ति र्ग द ॥ गम मू र्ग द स्नानं गम य शा गंध दाना मि ति गम य न आ या र्ग ति र्ग  
 व द द धि का प्र ति द धा ॥ गं ऊ सी ति आ र्ग न द व स्य त्व ति क्का म द क न जूय ति र्ग  
 वामी र्ग आ र्ग व ॥ मृत्तिका नाम मनुका नि स्नाना नि ॥ स्नानं गत र्ग र्ग द त्वा वा स सी य  
 विष्णु य या य रु म रु विष्णु द ग न रि शा वि का न् य ग्म वा द्ध र्ग र्ग ज य दाना ना दि



वा दशात ॥ गतागवामं (गच्छिति मनुष्यादि) गदानं कृत्वा स्मृतीयाक विधिना अतः समस्त आह नि  
रिव शक्ये वलन मस्या विंशति वर्तनी कृत्वा ७ ॥ घाय ह मरु विष्णु वन्दनं नममति त्याग ४ ॥ गतः  
सर्वेषां दिवा नृप द्यादियं वायु वाक् मनुः ४ पल वन र्यं व ग श्रु व द्र कृ व ददा दा वा या विधिति  
कृ (भ) द कं वा दा य पल व लला श्रु न न व निर्मथ ग न वा रि मनु स क य गे मि रि ह वि त कृ ल  
दं भ इ नी कृ द्या ७ ॥ ॐ वा व नी वृ वि श्रा ॐ दं ॐ दं विष्णु विष्णु व ॐ दं मान सा क वृ डा य दं ॥  
न ॐ द्रा नी त व नी ॐ द्रा नि त्या मि दं अ ग्र य स्वा हा सो मा य स्वा हा ग य ग्रा स यो य स्वा हा  
पु ल व ल पु जा य त य स म स्र आ ह ति रि ४ पु जा य त य अ ग्र य स्वि स्तु त न स्वा रु ति इ त्वा  
सा र्य न द्र ग द र्श न वा व त ग ह लं क वि श्रा ॐ ति वा द्र ष न स्य द्वा ने व नू द्वा न ४ पु ल व ल ॥  
षी वि व ७ ॥ अ मि नि न उ य वा सा ह वि श्रा ण न वा त ना य थ ण कि प त्या म्ना य न प्रा य श्चि रं क  
त्वा वृ व व दा य ह म विष्णु आ ह म न (ग) दानं व कृ श्चि त न ना क्ति द वा व न दं द नाना नि कृ या  
न ॥ गानि च नि त्या नि ष्ट कृ त्वा व ता न क तु ॥ ग हि व ल्म दि द कि (ल) त्या दि य द न त द व ग ग वि



तिमरुद्रवः॥ स गुरुः॥ गुरुतिलदिबः॥ अवासावायुगुणानिच। रोषं लवतमिह्याद्रुदः॥  
 दानानिचलुताः॥ गेदानमकु उकः॥ सर्वसस्यां यारुमिः॥ सर्ववाहने समुद्रगा। अननस  
 सुरुलदा॥ अतः॥ गुरुनिपयकमः॥ अतिगुवः॥ मरुदः॥ गुरुनिपयकमः॥ अतिगुवः॥ मरुदः॥  
 तस्मादयमिदं दानं नममयायं श्रुया रुतु॥ अतिगुवः॥ मरुदः॥ गुरुनिपयकमः॥ अतिगुवः॥  
 विरावसाः॥ अननपूष्यरुलदः॥ मरुदः॥ गुरुनिपयकमः॥ अतिगुवः॥ मरुदः॥ गुरुनिपयकमः॥  
 मरुदः॥ सर्वकुतुम्भसिनि। दवानामाश्रमादात्र मरुदः॥ गुरुनिपयकमः॥ अतिगुवः॥ मरुदः॥  
 रुरुः॥ सर्वलोकाणां मालकाया वदनीयरी। सर्ववधविबलुत्त मरुदः॥ गुरुनिपयकमः॥ अतिगुवः॥  
 अतिवसुस्य॥ सर्वदवमयधन्यं सर्वत्यक्तिकरं मरुदः॥ अतिगुवः॥ मरुदः॥ गुरुनिपयकमः॥  
 निपयकमः॥ अतिगुवः॥ मरुदः॥ गुरुनिपयकमः॥ अतिगुवः॥ मरुदः॥ गुरुनिपयकमः॥  
 नां दवानां तु सदानिवः॥ यत्नवः॥ सर्वमनुष्याणां नावीनां यावती यथा॥ तथा वसानां यत्न  
 वः॥ सदेव कुवसानमरुदः॥ मरुदः॥ गुरुनिपयकमः॥ अतिगुवः॥ मरुदः॥ गुरुनिपयकमः॥



卷一

॥ ४ ॥ यिदृशं च विष्णुं कत्रया ॥ सदा ॥ गिवन ॥ गुरुवं वृथा मत ॥ भक्तिं प्रयच्छम ॥ ॐ नमो भगवते  
॥ यस्य दुरुवसा ॥ सर्वं नात्कृष्णलवर्णं विना ॥ गुरुं वदयति कर्म मत ॥ भक्तिं प्रयच्छम ॥ ॐ नमो  
लवर्णस्य ॥ ॥ ॐ नमो भगवते ॥ यत्नं नृणां मज्जाम कुरु सूर्य दिनकत्र विवचि न कर्म विद्या  
कसात्र या यश्चिरुष कवर्ण ॥ ॥ अथ यत्रि राया ॥ भगवत ॥ ॥ भगवत वत्स यूका ॥ गी  
॥ सुगीला च ययस्विनी ॥ वृष दानं गुणान दानं गुणान् च स कर्तव्यं न ॥ निर्वृत्ता निरुदान द  
ग दद्याद्दिजा गय ॥ सर्वं त्वथ निष्कुरु तद द्वा द्विपु मात ग ॥ सद्वृत्तं वा श्व दानं त्वं  
सायस्क वंदि ॥ ७ ॥ महिषी महिषी दानं दद्याद्द्विपु मात ग ॥ दद्याद्दजा मजा दानं सर्व  
र्णं यल संपूर्त ॥ लक्ष्मण वरं ययं दद्याद्दव ता च न ॥ दद्याद्दिज सहस्रा य मिश्रान् द्वि  
ज हाजने ॥ यथ भगवति मरुर्ग व ॥ वृद्ध जाया लक्ष्मण ॥ पूजयित्वा गिर्यं वरं ॥ उका  
दग जय दूषान् दगां गुणु लन ॥ इत्यादि वरं कुर्यान्मने वरं देवते ॥ उका  
वृथा हाम ॥ भक्तिक गल भक्तिं गुरु विधि पूर्वक ॥ यदा नृणां रं धनं रवा नी म वि स



मन्त्रिणी॥ वज्रदानं इव कृतं प्रदयं कथं त्रिसंयुतं॥ ॥ अथ कृष्णालुहामविधिः॥ मन्त्रालुहं जमदग्निः॥  
अथ गरीयस्य कृष्णालुविधिमुरुमीकलम्बुवाययित्वा स्नात्वा पुनः अर्जुनलेपः॥ अथ गरी-  
यस्य कर्तव्यं कृष्णालुहं कृत्वा द्विजः॥ यद्दत्तं तन्वाकेश्वरिणि दत्त्वा ये मन्त्रदं॥ वेधनवायं य-  
गादिस्तु मन्त्रिणमपि विदुः॥ यदि त्याग्यसमिधं जयादिपुति ययत्॥ वोधयना कस्तु पुसिद्ध-  
ः॥ गलहामाधि वोधयना ह्ययः॥ ॥ अथ वंदयात्राय विधिः॥ गणेशो वक्त्रादिवृजा विधि-  
र्महार्ग्वं॥ गीर्धदवालयं गहं पुनस्तु यत्र कृतं॥ कलर्गं विधिना तत्र॥ यदि मन्त्राय स-  
नः॥ यं वागदिः कृत्वा काश्या वक्त्रायश्च मुखः॥ स्निग्धः स्नायितः स्नायितः कृत्वा वत्तु वदितुं  
कुर्मस्वः॥ वत्सजा च कृतिवदं मूलवागेः कृत्वा कर्तुं॥ वक्त्रायश्च नंदत्वा नं॥ ततः स्वस्थं य-  
नं यः॥ वक्त्रे यस्तु नमिति वा॥ गयश्चावापु वृजयः॥ उवाक्ष्यं च संयुक्तं॥ यथा वागं यः  
॥ रुग्णः॥ वोधयनः कृत्वा लंकं यत्वा मिमूय समाधाय तदयत्रिस्त्रीयाश्चिनेनास्थादवता-  
स्था शहानि॥ अथ यस्मात्मायं नाय विध्यं दवत्यः॥ अथिद्यः॥ अथिद्यः॥ अथिद्यः॥ अथिद्यः॥







सध्वनिप्रोक्तमाद्योच्चवायवीयं॥ महायाग कदायं यथागतकचाययागक॥ अथवा मयि याया  
नां निष्कृतिर्यत्रिकत्यर्थः॥ यत्नगुणद्वयवर्णं सर्वज्ञस्य युक्त्यर्थः॥ श्रीगणेशं दक्षिणमूर्तिं  
सर्वज्ञं लोकसाक्षिणं॥ गमयन्नायनिकायां ह्यो विन्यस्य यं कजे॥ नानावजातिस्तन्मधुय  
ुवीकं च सद्यः॥ तत्कलिकायां दवर्णं मर्त्ययद्वमहवर्णं॥ ववदारुयया लिष्टं सर्वज्ञा  
नमहापूर्वं॥ एवं स विन्यस्य दवर्णं मर्त्ययद्वद्वयं कजे॥ एते द्विकसिनेऽयद्ये॥ एतेन वा  
मववा विहि॥ कर्ष्यत्र मिश्रमगर्भं धृयार्थं विनिवदय॥ को मववा ससी दद्यात्त्यायश्चि  
हं निवदय॥ पुदक्षिणं ततः कृत्वा निवदय यवमात्मन॥ आत्मानं मय्ययित्वा तु त  
मा विपुं पृथुजय॥ तत्रैव दर्वं स कल्याणं कृत्वा विध्वनता॥ पुलियस्य वनं दर्वं त  
नामनुमदीयय॥ ततः गतं तत् सर्वज्ञं सर्वज्ञं वृत्तं कत्रा त्वस्य सादनं दवर्णं दार्यनं  
तु सर्वदा॥ यत्प्राप्य सात्मनः कार्यं लं कर्तुं समगलं कत्रा॥ तत्र नृप पुदानां विलयं या तु  
वदा॥ अनेन विधिना यस्तु पुदद्यात् सर्वं निष्कृतिं॥ तस्य पापानि सर्वानि विनश्यन्ति नश्यन्ति



यः ॥ इति सर्वत्रागद्वलदक्षिणमूर्तिनान् ॥ ॥ अथवाग्दानी ॥ कर्मविद्याकर्मधनिधो  
रुमादोवद्विभामिगः ॥ आवाग्दानीत्यनर्मनदानीविद्यतकचित् ॥ गणेशसंवत् ॥ ॐ नमो  
यश्चमादानीतेलाख्यं पतिगयं ॥ यः ॥ पुयकृतिनागिर्यः ॥ सरवद्याधिवर्जितः ॥ गणेशवर्नदि  
यूना ॥ ॥ आवाग्दानीकृत् ॥ मदीयधिसमन्विता ॥ विदग्धवेद्यसंयुक्ता ॥ ह्यावसथसंयुक्ता  
॥ सम्यग्वाग्दानीत्या ॥ मोषधेः ॥ स्रुयाचने ॥ द्याधिर्नीवृजं कृत्वा ॥ अथकं कर्त्तव्यं युतः ॥  
आद्याविलान्सावत्तद्विदुः ॥ इत्येताकृत् ॥ ॥ अथशक्तसंवत् ॥ रुमादोवद्विभामिगः  
व ॥ उदकं पुदानयि ॥ अगकायः ॥ यमाकृत् ॥ गणागनाग्नकस्यवगना ॥ मूर्तिं संयुक्तं यगात्म  
ना ॥ सर्वयायसगमनं ॥ सर्वद्वः ॥ स्वयुक्तगनं ॥ यदक्षिणरिमं कुं ॥ मनु उक्तामहापूर्व ॥  
आवाग्दानीविद्वान् ॥ त्यत्रुत्रुनोनिवागत्वा ॥ महिवर्षकुसुमितं ॥ सुवनस्यनं स्वमितं सु  
वनस्यनं ॥ योवालिक्तायितुर्व ॥ अक्षिर्द्युतुजस्यर्चः ॥ इत्येताद्विद्विद्विगी ॥ गणेशवस  
मृत्यन्तं ॥ मन्त्रकं मयस्वम् ॥ ॥ अथसाश्चसर्वत्रागद्वनी ॥ द्याधिपकृतिदानी ॥ महा



क्वेवदानरुमाडोववक्षा॥सर्वलूवत्तवजगेर्यथागर्हन्नवृयत॥कृत्वात्रयुतिमांश्याधद  
 याद्विपाययत्नत॥सर्वलूवत्तवजगेर्यथागर्हन्नवृयत॥कृत्वात्रयुतिमांश्याधद  
 शिंमगानिक्कसंखाया॥जातदूयमयंश्याधि॥युतिवृयंरुकात्रय॥निष्प्राययागसंपूर्णतत्तु  
 ले॥सिगवृयके॥अलीकृत्यवसोवर्ण॥वृयत्तुवृल्लयने॥वासाय॥मनसंबंधा॥दिनवृ  
 वरुस्यले॥अलीकृत्यायविपाय॥दशामनुमदीवय॥अमीवाग॥पुवाधक॥ददस्ता  
 ॥सतर्तवत्ता॥गृहीत्ययुतिवृयत्तु॥तालागमन्दिउसरुम॥वाठमिखवतदृयं॥गृहीया  
 द्याधिरि॥सह॥तत॥समागीदगाव॥दीर्घायुष्टं॥यययर्ग॥००॥दीववाजय॥काहवमव  
 तिमरुल्लव॥तदायार्गकांस्त्यकांस्त्यवय॥लदयमिति॥कर्मविद्याकसीगुदागा॥त  
 त॥युतिगृहीरुमखावसाकनादिनकृया॥३॥युतिगुरुदयंस्त्य॥विपुस्यकिलतावगा  
 नव॥अधदनीय॥नयेनमहिवादयदिति॥वीवर्षिहावलाकसावताक॥अथानुग  
 रान्विभान॥असाध्याधिनागसु॥उ॥गुलपावहाविष्ठा॥आनवीडलसूकन॥प्रखवताः

११



अथ १२ वि० ॥ पूर्वमाश्रादनी कृत्वा उयस्कायवर्गं कर्तुं ॥ पूर्वमित्युक्तं च नरुहाम १ यथा द्व  
 वि० ॥ लक्षणं वर्तते ॥ उक्तं नरुहमनन्तरं १॥ पूर्वमाश्रादनी कर्तुं नरुहाम १ यथा द्व  
 मकर्मस्थानं कर्तुं ॥ उयस्कायवर्गं कर्तुं ॥ अथ यितत्रिगिर्यं वदाम ॥ अथ यितत्रिगिर्यं वदाम ॥  
 नमः के कर्मयवा स कृत्वा यत्र स्मिन्दिनं रुमं कृत्वा तच्छ यं तच्छ यं ॥ मासा रुवचन  
 दं यजय ॥ अथ नमः कर्तुं ॥ अथ नमः कर्तुं ॥ अथ नमः कर्तुं ॥ अथ नमः कर्तुं ॥  
 नक १ योर्लुमास्याममावास्या कृत्वा द्वेतां रिजनाम ॥ अथ यत्र रागययर्न कृत्वा  
 बाल्ययनादिकं ॥ यानि लभ्युषितं तत्तु किं वदामनस्य संपदा ॥ मया मित्रं तिसृ  
 कृतं पश्युर्वं रुद्रया द्ववि० सो विष्टु कृतमावस्य रुमं १ यं समा यय ॥ वाक्  
 लभ्य यथं किं रुजयस्व किं वा वयं ॥ ॥ अथ सर्वत्रागद्वर्गं कालपत्र  
 यदानीं ॥ रुमादी रविधा रुव ॥ काम्या दानविधि १ पार्थ कियमा लभ्य यथं तर्था रु  
 लानं यमूनिरि १ याका विषयीता रया वरु ॥ रुयं निष्कलनं पार्थ दानमूनिरु



म१ मधुमं गद दृष्टं न तद दृष्टं नाव१ स्मृ१ नर्वदृष्टं व१ धनं व१ धनं १ कृष्णजिनस्य च ॥ अ  
न कस्यापि कृष्णाय पदं मोवर्त्तिका विधिः ॥ अनाथस्य न यादया न कदाचन नवा रुमेश ॥ प्रति  
गृह्णाति वा तस्य इह रवः ॥ कस्यावर्त्तं ॥ पूर्वदिन मथा साय तमिरा ॥ गुरु रसम ॥ बहुद  
धं व१ उ१ धावा व१ धावा वा या लुन न्यन ॥ विष्टि क१ ॥ यमान कृष्णतिले १ काथी नोष्ट दकं स  
वर्त्तक ॥ रवः ॥ आयात कवा दीध जिवा कृष्णमकृष्ण ल१ वका मन्त्र व१ व१ सुखी लखमा १ ८  
ला विष्टि म१ ती क्लासि यूपी व१ धन विष्टि म१ कटी त१ ॥ अमि यूपी कृत्रिका ॥ उयानथ  
गय क्लासि १ कृष्ण कवत यार्वक १ गृहीत मीस विष्टि म१ वामक व१ त१ गथ ॥ नर्वविधि  
यमान कृष्ण गृहीत कृष्णमजलि १ यजमान १ पुननात्मा ॥ मीमं नु मदी वय ७ ॥ संपृष्ट  
नध यूपी १ संपृज विनिव शत्रा सर्व कल यस यस्मात्काल ह्यं न नया शुभ ॥ वद  
विष्टि निवा दीनी त्वमसा ॥ आसि सु व१ यजि तत्त्वं मया रक्षा ॥ पार्थि तथ यथा सुखं ॥  
यशु शत नव विष्टि तत्त्वं वद न मान म१ ॥ नर्व संपृज यित्वा न वा कृष्ण यनिव दय ॥



वाङ्मनी प्रथमं पृथ वा सा हि कृषा ले सुधा दक्षिणी ग कि ता दद्याः सुति यत्य वि सं ऊ य ॥ द  
दिल म पूर्व का नि कृ ग ता दि का । अ न न वि धि ना य सु दान म त त्य य कृ ति ॥ ना य मृ त्य र य  
त स्य न व द्या धि कृ र्ग र व ॥ र व त्य वा रु ने ध र्थ ॥ सर्व वा धा वि व र्जि त ॥ रु मा डो तिल ग र्द द  
नी ग त मा न दाने वि व नू य दान म धि नी कृ मा व दाने व सर्व वा ग रु व त्व ना कं त द्वि धि कृ त  
व ऊ य ॥ ॥ अथ सर्व वा ग रु व सो व रु वा र्ध दाने ॥ रु मा डो ॥ उ य न य ति म ला यी सो व  
॥ या य पु ल ग न ॥ वा ग धु धु वि व धु धु ॥ उ कि मू कि रु ल व द ॥ क व न व य वा दृ षा उ व  
॥ य न म सि धि द ॥ पृ थ स्य वा ग ना ध य र्वा ता ला क हि ता य व ॥ त न आ वा धि ता द व रु  
व म नु ल ता स्क व ॥ अ न न व वि धा न न न्या स पृ थ क म ल व ॥ रु स या र्द द य मू र्धि वा  
द ना ति मू र्धे षु व । व रु वा ॥ क व र्ध वा र्म । या द रु दि य दे र्थ म ॥ उ य न्द कि ल रु र्मा  
रु ने ना नि गु व रु ॥ आ वा रु न्वा म रु र्मा म रु ता उ वि व रु ॥ रु डा र्ग रु द य म  
र्था र्ज्ञा ना उ क त्व थ म या न् ॥ रु वि मा र्ग मू र्धि ता न् मी सर्व रु ता नि व रु ॥ सू क व द



क्रियायाद गमनात्तद्वगत्र दत्तु। वायव्यकासवामेभु। पूषा वदत्त गमना ७॥ अथानास्यां ग  
माजाशाद्विषयगर्हवदत्तु॥ रुद्रिमातीस्वजिह्वया। मन्त्रि वि१ सर्वत्र दत्तु॥ उद्धृदि। लमा  
नगुल। आदिस्थावदुष्णीकलभत॥ विष्वतवामनगुल। सविता वदत्तनी दलभत॥ द्विषर्कक  
वर्चरात्रुत्वा। प्रामात्र्यर्कवदत्तु॥ मांशुतिर्मा विद्वषलभ उद्धत्तमुलराक्षत्र१॥ एवय१  
कनूगन्यासी। द्वादशी। गयदानित्र॥ सर्वयापविनिर्मक१ सर्वयिदववर्जित१। उययावा १२  
दिककया। अथयूय१ स्वर्गकि१। वरुगन्ध। क्रो१ यूय१। मासुयागुल। रकि१॥ वादाद्व  
व्रजवावेव। नृचनेव। गिवावृणा। दद्यादय्य१ समर्तुय१ अनूलाभ्ययून१ यून१॥ याद्य  
येतासुयागुल। पुददाति सरुमुकी। नतीवा। नानुवावर्ल। विषान्दादग। राजय७॥ वाग  
द्रवतिनिर्मक१ सर्वगजुजय१ रुस१। यूग। रायाचयु। रुस्य। आनाभ्य१ सर्वदारव७॥  
त्रिय१। प्रातिविपूली। वद्व१। प्रायनामय॥ ॥ अथपुयाग१॥ आदीरु। ननुद्विवा  
लपुतिष्ठा। नमामि। कान्यासीकृत्यानिष्ठा। दिर्सी। र्थरुद्रि। रुव। वद्व१। सकमिगादि द्वादश१



सकस्य जून्म दि द्वादश मासाधियमि स्य नृयस्य द्वादश वर्षस्य पृथी मूर्ति कृगवतः ११ स  
यनात्रायस्य पीति द्वात्रायज मानस्य स्यस्य वामक नक्षत्रं नृकनामो जातस्य गत्रीयत्र  
रुमानात्यस्य मानवा गजनि तसर्वस्ति वदनानि त्रासार्थं किं यावांश्च दीर्घायः १२ पाक्यर्थं शु  
वमकुलमर्चदानं कविषु ॥ इति मं कल्या ॥ जलवायि सुल वायि यद्ममष्ट दली निख  
नदी तीव्रं शुभोदः १३ ॥ मयं नाय निघ्नं ॥ अर्थं ॥ नृकचन्दनं नखाति १४ क्रीकमन  
वि १५ गतः १॥ तन्माधु द्वादश दली यद्मकं कात्रय दूर्ध्वः ॥ ॥ उग्रनयनि शुच मनुस्य  
कल्पय १६ पुस्तक्य १७ मिश्रविस्तृत्य तान् स्वगपूषदि नय्य ग क्री मनी आदित्यस  
विगुर्क रासुत्रात्रा ग रुक्मीनाद वगा जूनस्य यच्छन्दः १८ जूनदाका दयः १९ स्या ॥ ॐ गत्वं  
ॐ क्री क्री क्री क्री क्री ॥ इति वीजानि स्या योर्धदान विनि यागः ॥ तदङ्गं मूल मनुष्य  
वप्रीजे वनित्रक पूनक कृकृके १० पाथ्यामपुयं कल्या मूल मनुष्य कत्रलु द्वि कल्या  
मूल मनुष्य यायक कल्या ॥ वक्रा ११ दन्ता भनि कनेः स्मृष्टानि जसे १२ गन सत्यन



मंदि. तीर्थं वेदि वा क्व ॥ अंकुशं मूदया नीर्था कृष्टं यत्र मलयत्रमी कृत्य निर्विघ्नं नि  
 विधीकृत्य कलस्य मुखे ॥ लंखं च नृकं देवस्य वा नृलं चापि देवतां । पृष्टं पुजायेति स्मृतं । अथ  
 गंगं स वसुती ॥ त्वं पूजासागभात्यन्ता विष्णुना त्रधृगः क्व ॥ अथ गः सर्वदेवतां यो वज्रं न्य  
 नमास्तुत ॥ यो वज्रं न्यतिजक्षत ध्वस्तपातकसीनित ॥ गहिमां यापिर्न धारं सीसावाध्वं  
 यातिर्न ॥ लंखं म ॥ ॐ आत्मतत्वाय नमः ॥ ॐ विद्यातत्वाय नमः ॥ ॐ ज्ञानतत्वाय नमः ॥  
 ॐ सर्वतत्वाय नमः ॥ ॐ हर्षवः स्वः ॥ ॐ तिग्मयशः धनूः मूर्ध्नि पदं ध्वंसि हस्तं नीर्यति धा  
 तुः ॥ इत्युक्तं नावाय लज्जि ॥ ॐ उगदीर्घं पूरुषः यत्र मात्मा देवता अस्या गिरि पृष्ठ  
 दली विष्णुपीत्यर्थं अंगं न्यासं विनियोगः ॥ ॐ सरुनीर्षा वामरुक्ताय नमः ॥ ॐ पूरुषं  
 वेदं दक्षिणरुक्ताय ॥ ॐ एतावानस्य वामपादाय ॥ ॐ प्रिया हृदं दक्षिणपादाय ॥  
 ॐ तस्मादिवात् वामजानव ॥ ॐ यत्पूरुषं दक्षिणजानव ॥ ॐ गीयं वदिति वाम  
 मकड्य ॥ ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वज्ञः सीरुर्न दक्षिणकड्य ॥ ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वज्ञः अज्ञः ॥ ना



[illegible]



हरिमाली स्वगमय नमः॥ कनिषिका॥ ॐ कुं ४ वायव्यो कासू दक्षसि पूषे नमः॥ कवग्नः॥ ॐ कुं ५  
(ध) हारिः पूषे नमः॥ हिरण्यगर्भे नमः॥ हृदयाय नमः॥ ॐ कुं ६ हरिमाली निदक्षसि मन्त्री यथ  
नमः॥ मित्रं स्वरा॥ ॐ कुं ७ उदगं दयमादित्यः॥ आदित्याय नमः॥ मित्रायै वोषट्॥ ॐ कुं ८ वि  
(ध) न स रुसा स रुस विष्णवे नमः॥ कव वायव्यं॥ ॐ कुं ९ दिवर्गं मर्त्यं वसुधायै नमः॥ अक्रिये नमः॥  
ननु गुर्यायै वोषट्॥ ॐ कुं १० माजुर्हं दिवर्गं धर्मास्तु वायव्यं नमः॥ अक्रिये रुट्॥ ॐ कुं ११  
उद्यन्तं यामिनु मरुमिणाय नमः॥ दक्षिण रुसाय नमः॥ ॐ कुं १२ आगं रुतं नदी दिव्यं व  
यं नमः॥ वाम रुसाय नमः॥ ॐ कुं १३ उगं ममस्तु सूर्याय नमः॥ हृदयाय॥ ॐ कुं १४ हरिमा  
ली च नाभयः शान्तं नमः॥ पूषे नमः॥ ॐ कुं १५ कुं के पूषे हरिमाली स्वगमय नमः॥ दक्षिण  
यादाय नमः॥ ॐ कुं १६ वायव्यो कासू दक्षसि पूषे नमः॥ वाम॥ ॐ कुं १७ (ध) हारिः पूषे  
गर्भे नमः॥ ॐ कुं १८ हरिमा मन्त्री यथ मरुजिह्वाया॥ ॐ कुं १९ उदगं आदित्याय नमः॥  
दक्षिणं नगाय नमः॥ ॐ कुं २० दिवर्गं मर्त्यं अक्रिये कव वायव्यं॥ ॐ कुं २१ माजुर्हं राक्षसाः



यज्जगत्तु ॥ उद्यद्विहङ्गस्य मङ्गलानि शान्तिवद्वा ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ मधुना द्रव्यं  
नाहविः ॥ हृदये मङ्गलं दयस्व मङ्गलं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ हृदि मार्गं मृद्विहङ्गं मङ्गलं यः यत्रि  
वद्वा ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ मङ्गलं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ मङ्गलं नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
मया ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ मङ्गलं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ मङ्गलं नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
वीर्यं ॥ मङ्गलं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ मङ्गलं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ मङ्गलं नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
वद्वा ॥ मङ्गलं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ मङ्गलं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ मङ्गलं नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
मङ्गलं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ मङ्गलं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ मङ्गलं नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
दियद्विहङ्गस्य मङ्गलं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ मङ्गलं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ मङ्गलं नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
याधुदिव कर्तुं नानि कार्या नमो भगवते वासुदेवाय ॥ मङ्गलं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ मङ्गलं नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
द्रुतिना नमो भगवते वासुदेवाय ॥ मङ्गलं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ मङ्गलं नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
गुर्वेष्टुमना नमो भगवते वासुदेवाय ॥ मङ्गलं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ मङ्गलं नमो भगवते वासुदेवाय ॥



यथा कुलानुमाना ॥ उदकं कुमयं विद्या दादित्यं नारि मलुल । कथा नुवि न्यसंघर्षं नूदमूर्वा सु  
 विन्यसं ॥ जानो मुग्धवर्ति न्यस्य सविगर्भं कुंजं दया ॥ उल्लया ध्रुवि वस्वर्न यादया ध्रुप  
 राकर्त्री । वो अगध नमार्धं सखगमय नर्न न्यसं ॥ सर्वा गमसह सर्गं दिग्विदि कुतर्ग न्यस  
 ॥ उर्व न्यास विधिं कृत्वा सा कान्ता नाय ॥ ६८ ॥ ननु विष्णु मयी न स्या यावत्किं विन्न रावत  
 ॥ ६ ॥ निखाया सास्त्र वायनम ॥ ललाटः स्यायिनम ॥ उमः श्रुतानव नम ॥ वक्षुषा ॥ उ  
 गच्च रुचनम ॥ मुखं वक्ष्ये नम ॥ कलः शानुमग नम ॥ स्तनयोः ॥ तिमिरनाशय नम ॥ २२  
 नाशो जागवद सनम ॥ उच्छ्र उग्र नृपाय । कर्षा कालात्मनोः ॥ उच्छ्र उग्र नृपाय । उ  
 ल्लया ॥ नक्षत्रा विना न । दक्षिणे वाद सुल गलय नय ॥ वाम वाद सुल गलय नय ॥ प  
 त्यर्क मर्द्ध मृक्तावीर्ज न्यसं ॥ ॐ उग्र नय मिगर्हं को निवसं स्वाहा ॥ ॐ हृदा गं मम सूर्य  
 को मुखाय ॥ ॐ शुक्लं वद दयाय ॥ ॐ अथा हात्रि कुं नार्ये ॥ ॐ उदम को जानर्या ॐ द्वि  
 वर्न मर्द्ध ॥ ॐ यादा ह्यनम ॥ ॐ कुं वक्षुषा गजसं हल हलामा सिन स्वाहा ॥ ॐ शुक्लाय ॥

उच्छ्र उग्र नृपाय । ५



ॐ कौं विष्णु गजसं काल काला मालिन स्वाहा गऊ नीर्या ॥ ॐ कूं नृप गजसं मधुमा ॥ ॐ कूं जाम  
गजसं अनामि ॥ ॐ कौं कान गजसं काल कनिष्ठि ॥ ॐ १ सर्व गजसं कन गन ॥ ॐ वम वद  
दयादि कार्या ॥ ॐ कौं उद्यमि त्यक्षेत्र क. मिन्न वदित्या नमः ॥ अंगुष्ठा ॥ ॐ कौं दडा गसूर्या  
नर्या नमः ॥ गऊ ॥ ॐ कूं धुकषु शु. खग पूषा र्या नमः ॥ मधु ॥ ॐ कूं अ. थ हा वि दु वः  
हि वः अगर्क मरी वि र्या नमः ॥ अना ॥ ॐ कौं उदग दय. आ दित्य सवि रु र्या नमः ॥ कनिष्ठि  
॥ ॐ १ द्विषे नमः अर्क राक्ष वा र्या नमः ॥ कन गल ॥ ॐ वम वद दयादि ॥ ॐ कौं मिष  
व वि र्या नमः ॥ अंगु ॥ ॐ कौं सूर्य राक्ष वा र्या नमः ॥ गऊ ॥ ॐ कूं खग पूषा र्या नमः ॥ मधु ॥  
ॐ कूं हि वः अगर्क मरी वि र्या नमः ॥ अना ॥ ॐ कौं आदित्य सवि रु र्या नमः ॥ कनिष्ठि ॥ ॐ कूं १  
अर्क राक्ष वा र्या नमः ॥ कन गल ॥ ॐ वम वद दयादि ॥ अथ सूर्य मिषु लान कर्त ग सूर्य  
पुति मां सो वः अर्क न सा पा न मा अर्क. पूजार्थ आग मिषु कीं श्रुय ॥ व वि द्वा ना व वि रु कि  
व विः सर्व मिदं जगता व वि रु य नि सर्व गु र्या व विः सा रु भ व हि ॥ ॐ न मा रु ग व न मा सा



धिपतिस्वययायत्रागुरुं श्रीसूर्याय सांगभयसायुधाय सयविवावाय आवाहनं समर्पयामि  
 मि आसनं वायं अर्घ्यं आचमनं यस्नानं वस्त्रं यक्षाय वीर्यं गन्धं पुष्पं धूपं दीपं नेत्रं ताम्बूलं  
 दक्षिणं पुदक्षिणं नमस्कारं मनुष्यं उगैव यथात्र ४ मासाधिपतिश्रीसूर्यनावाय ४ प्रिय  
 गतिम ४ हृदयाकर्तुं मृच्छिनामिकोठिका मूर्धन्यं यथार्कं दक्षिणं नासा मूढं सूर्यपुनिर्मा  
 नयित्वा विष्णुं तत्र कृत्वा विजयं जयं ७॥ आध्यात्मिकं नमः ॥ कूर्मार्चनं नमः ॥ वनावाय नमः ॥  
 अनं कायं पृथिवीं क्षीरं द्रव्यं गन्धं दीपाय वल्लभं लिङ्गं मधुं वायनं नमः ॥ वल्लभं सिंहासनाय ॥  
 सुवर्णं पाकाय रत्नाय चाकावद्वायं ४ दालया लक्ष्म्यं ४ गण ४ कलमर्चनं विष्णुं यादयामुः  
 गन्धं पुष्पां रुगानि किंशु मूलं मलं लक्ष्मं वानं मणिं मनुष्यं मूढं ४ पुदक्षिणं ॥ धनं ४ मखं सुखाय  
 गदां गन्धं उव वं ॥ पृथिवीं यमं यागं च ईशं कर्मणा सुमदका ॥ अर्घ्यं यागं लिङ्गं दक्षिणं या  
 गं हृमिवात्मानं संयागं समृद्धां कार्या सा हृमिति रावयं ७॥ ॐ आत्मनश्चाय नमः ॥ ॐ वि  
 श्वात्मनश्चाय नमः ॥ ॐ सूर्यतश्चाय नमः ॥ अथ मधुं लक्ष्मं ॥ पूर्वद्वारे ॥ द्वावेष्टेन नमः ॥ ग



लयनयनमः॥ दक्षिणद्वारेण नमः॥ ईशं गुणालाय॥ पश्चिमद्वारे॥ द्वात्रिंशे ईशं नमः॥  
 उरुद्वारे॥ द्वात्रिंशे लक्ष्म्यै पूर्वद्वारे रुद्राय सुरदाय दक्षिणद्वारे वलाय पुवलाय पश्चि  
 मद्वारे ब्रह्मणे पुब्रह्मणे उरुद्वारे ज्ञाय विज्ञाय द्वात्रिंशे गन्धर्वादिभिरत्यर्थं॥ अ  
 थ दलद्वारा॥ ॐ दं दलितं नमः॥ ॐ उं उ व स॥ ॐ मि मि सर्वग्या इ र्चिगलाय पुब्रह्मणे॥  
 द्वात्रिंशे गुणालाय गन्धर्वियतय॥ इत्ये लक्ष्म्यै दलद्वारा गन्धर्वादिभिरत्यर्थं॥ पूर्वपुनः  
 सूर्यं आग्र्यां तु दिवा करी॥ आभ्यवेव न वेव ने र्च्यं तु रुग्ं नमः॥ अर्चयेत्पश्चिमपुनः  
 वायुं मित्रं मवव॥ आदित्यं मरुतं वपुः॥ अग्निं विष्णुं मवव॥ मधुं रुद्रं स्कर्वं विद्यां  
 कुमारे वदलं लिख॥ दलादिद्वारा गन्धर्वादिभिरत्यर्थं॥ दीक्षां सुभ्राज्यां रुद्रा विरु  
 तिं विमलानथा॥ अमाया विष्णुं चैव मधुं रुद्रं सर्वं तो मुखी॥ दलमद्य धिद्वारा गन्धर्वादिभि  
 रत्यर्थं॥ आदित्यं सविता सूर्यं स्वर्गं वृथा गरुडं मान॥ मार्कं उजगतां वक्रं व  
 र्चं दलं स्मृता॥ दलगुहा धिद्वारा गन्धर्वादिभिरत्यर्थं॥ यद्ममधुं॥ ॐ आक्षवणं कथं  
 ४१



नमः॥ मूलपुस्तके कृष्णाय वराहाय जूनकाय पृथिवी सखी मल्लुयाय नक्षत्रसिंहासनाय  
सनत्सुखे स्वर्गवदिकाय धर्माय अज्ञानाय वेनाशाय उन्मथाय ॥ का॥ ल॥ ॥ अ॥ ध॥ म॥ य॥  
अ॥ वे॥ ना॥ श॥ य॥ अ॥ ने॥ श॥ य॥ य॥ पूर्व॥ म॥ ग॥ दा॥ य॥ ॥ द॥ क्रि॥ ॥ ॥ य॥ इ॥ व॥ दा॥ य॥ य॥ धि॥ म॥ ॥ सा॥ म॥ व॥ दा॥ य॥  
उ॥ रु॥ न॥ अ॥ थ॥ व॥ दा॥ य॥ ॥ पु॥ न॥ १॥ प॥ र्वा॥ दि॥ ॥ क॥ म॥ य॥ ग॥ म॥ य॥ न॥ म॥ १॥ ग॥ ना॥ य॥ ग॥ म॥ य॥ दा॥ य॥ न॥ य॥ ग॥ म॥ य॥ क॥  
सि॥ य॥ ग॥ म॥ य॥ ॥ पु॥ न॥ १॥ प॥ र्वा॥ दि॥ ॥ ह॥ र्वा॥ का॥ य॥ कु॥ व॥ ला॥ का॥ य॥ स्व॥ र्वा॥ का॥ य॥ म॥ रु॥ ला॥ का॥ य॥ ॥ पु॥ न॥ १॥ प॥  
र्वा॥ दि॥ म॥ लु॥ ला॥ य॥ या॥ त्रि॥ जा॥ ता॥ य॥ स॥ ना॥ ना॥ य॥ क॥ ल्य॥ वृ॥ दा॥ य॥ रु॥ त्रि॥ व॥ न्द॥ ना॥ य॥ ॥ म॥ ॥ ॥ मू॥ ला॥ य॥  
क॥ दा॥ य॥ ना॥ ला॥ य॥ य॥ दा॥ य॥ प॥ दा॥ य॥ ग॥ ॥ क॥ ग॥ व॥ र्य॥ ॥ क॥ र्त्वि॥ का॥ य॥ क॥ स॥ ना॥ व॥ त्रि॥ स॥ र्य॥ म॥ लु॥ ला॥ य॥ स॥  
र्य॥ म॥ लु॥ ला॥ धि॥ य॥ ग॥ य॥ व॥ ऋ॥ ॥ ॥ सा॥ म॥ म॥ लु॥ ला॥ धि॥ य॥ ग॥ य॥ वि॥ ष्णु॥ व॥ व॥ क्रि॥ म॥ लु॥ ला॥ य॥ व॥ क्रि॥ म॥ लु॥ ला॥ धि॥  
य॥ ग॥ य॥ न॥ दा॥ य॥ ग॥ क्रि॥ म॥ लु॥ ला॥ य॥ ग॥ क्रि॥ म॥ लु॥ ला॥ धि॥ य॥ ग॥ य॥ वृ॥ ष॥ र॥ ध॥ ज॥ य॥ स॥ त्वा॥ य॥ न॥ ज॥ स॥ त॥ म॥  
स॥ आ॥ त्म॥ न॥ अ॥ न॥ ना॥ त्म॥ न॥ य॥ न॥ मा॥ त्म॥ न॥ ॥ ॥ रु॥ १॥ पू॥ न॥ वा॥ य॥ रु॥ व॥ १॥ पू॥ न॥ वा॥ य॥ स्व॥ १॥ पू॥ न॥ वा॥ य॥  
॥ रु॥ व॥ १॥ स्व॥ १॥ पू॥ न॥ वा॥ य॥ ॥ यी॥ ०॥ द॥ व॥ ता॥ ग॥ धि॥ रि॥ त॥ र्य॥ ॥ दि॥ न॥ ना॥ न॥ य॥ द॥ व॥ १॥ क॥ र्त्वि॥ सा॥ ॥



कात्सनेधवः। सकाशः सकव ह्यथः स्रुत्वा मयसीदु ॥ अरुणसनायः विरुतासनायः यागस  
नायः मधुसनायः मधुयनमसखासनायः अरुणमावाहयामिः सावधिनमावाहयामिः सक  
दुर्वगमानपूषादीनां गन्धादिरिवत्यर्थः ॥ नताधुनी ॥ नमः सेविगुणगदकव ह्यथः जगत्पुस  
तिस्तिगिनागहनवो। ययी मयायगिगुल्लसध्व वि। ल। विरिचिनावायलर्ण कनात्मनः ॥ अथ  
॥ सदा सविह मलुल मधुवली नारायलः ॥ सवसिजासन सनि विह ॥ कयूनवानकवकलु  
लवानकिवीटी लावीहिनधयवयु ह्यनर्ण खवकु ॥ नजावा निधियायूकः नक कचनसनि  
हं। किरीटिनयधनर्ण यधनान विह सिर्ण ॥ यद्यामनः ॥ यद्यकवः ॥ यद्यगर्ह समप्रतिशम  
काश्व वथसंयुका द्वि उजं स्या सदाववि ॥ कर्त्तिगधनीयं काश्व यागर्ण विध्व मिगार्थयः  
विग्नखनकर्ण विष्णु कन्द सं कपिलाग्नि कन्द मयः रुत्रितस काश्व द्वि उजं मर्द पुदक्षिणीव  
बर्लं अथिदवगाग्नि सहिर्ण यथधिदवगानू स हिर्ण वक वृरु मगुल वाद्य खमयवि  
ध्व ॥ उं हः ॥ पूवूषमादित्य मावाहयामि ॥ उं उवः ॥ पूवूषमादित्य ॥ उं ह्वः ॥ पूवूषमादित्य ॥



ॐ ह्रुवः ४ स्वः ४ पूरुषमादित्यः आवाहिगारवः स्वायिगारवः सन्निहिगारवः सन्निवृद्धारवः अरुवः  
गुलिगारवः सूपसन्नारवः वरदागारवः ॥ स्वामिन्मर्चजनान्नाथः यावत्पूजावसानकं । तावत्संवी  
नित्याननः दलस्मिन्सन्निधिं कुरु ॥ यासीयनात्यगादवः ४ श्रीसूर्यः ४ यत्र मंथवः ४ यद्रूदणमिहाया  
दुःपूजार्थं सूर्यमलुता ॥ महामूढा पुदण्य ७ ॥ आवाहनमनामिकया तन्मं गुह्यकरोस्म  
न् ॥ स्थायनं विपरीतार्थाः कनास्थां तद्दीविनी ॥ सन्निधिमुखिवद्धनः सांगुष्टननिवाधनी ॥ अर्ज  
याजामलनेवः अरुगुणनमूयगः । अंगुष्ठाकांतर्मपृष्टं मनामादीविनी गुलिः ४ यत्र मीक २५  
वः ॥ एषाकाः महामूढा विचकले ॥ ३ ॥ ॐ निमूढालकली ॥ अथ च वः ॥ एषाकाः ॥ मारुलु  
रानमादित्यः हंससूर्यदिवाकरी । तयनीतास्करं चैव पथमाववर्लं स्मृते ॥ अथ द्विती  
याववर्लः द्वादशीयादे द्वादशीनामलिः ॥ ४ ॥ ॐ उग्रनयमिगमरुमिगाय ॥ ॐ आवाहनरु  
वादिर्ववय ॥ ॐ हजार्गममसूर्यसूर्याय ॥ ॐ रुत्रिमालं चनाय गानव ॥ ॐ लुकष  
मरुत्रिमालं स्वगयनमः ॥ वायव्यकासदधसि वृत्तं ॥ अथ रुत्रिद्वयममरुत्रिद्वयगर्क



या ॐ हनिमानं त्रिदशसि मन्त्राय नमः ॥ ॐ उदगादमादित्यः आदित्याय ॐ विश्वे नमः  
मासकमविष्णुं द्विषकं मर्जयन् धयन् अक्रिय भाजुर्द्विषात्तत्र धरा स्तनाब्जं निद्वितीयावतली ॥  
अथ ह वसतिः शुभं वनली ॥ धनं धूतं कथं सोऽहं आयत्येवानिलान्नत्र ॥ पश्य पश्य पराशरं  
वसवाष्टीयकीर्तिना ॥ अथैकादशत्रयं च मावतली ॥ वीररुद्रं शुभं सुभ्यः मित्रिण्यथ ऊनक  
पात ॥ अहं वृक्षः ॥ यिष्मकीच शुभं नाधीत्यत्र सुधा ॥ दिशम्यकिं यद्युपनि ॥ स्मृत्कृते वृत्तिस्मृत् ॥  
अथैकादशत्रयं च मावतली ॥ धनं अथ मन्त्र मित्राय अंशुमन् अत्र लय रुमय ॐ दाय  
विद्वत्तं च यत्तं अंशुं विष्णुं ॥ अथैकादशमासाधिपे ॥ सफ मावतली ॥ अत्र लय सुखा  
य वदं मय तानुं ॐ दाय त्रवथ गरुडिनं यमाय सुखं नमः दिवा कनाय मित्राय वि  
ष्णु ॥ अथ ह कं वं त्रय मावतली ॥ अति नां नत्र लय ऊध उन्मरु रुत्रवः कपाली हीष  
ल्लो वसं हान अहं रुत्रवा ॥ अथ सफ मातृ कारिन् वमावतली ॥ वाक्सी मातृ ग्यत्री चैव कीमा  
त्री चैव वीरगथा ॥ वाक्सी च मरुत्याली चामूला ॥ सफ मातृ का ॥ अथ ह लाकपाले दशमावतली ॥  
ॐ दायिन् यमल्ये वनिर्जतिर्वैत्रलसुधा ॥ वायुल्ये वदु वत्रय ॐ शानोष्टीयकीर्तिना ॥ अथ



भयादि द्वादश राशी रिक्ता व वली ॥ मयाय वृषाय मिथुनाय कर्कटाय सिंहाय कन्याय तुलाय वृ  
 शिकाय धनूय मकराय कूटाय मीनाय ॥ अथ वजादि द्वादश व वली ॥ वज्री नक्षत्र व वली ॥ स्वर्ग्या  
 र्गं धर्जं तथा गदां रिशु लं यदी च वज्रं च गानि पूजय ॥ १ ॥ वजा ॥ द्वादश व वली द वगा ॥ वृथ कर्ग  
 धादि रिक्ता व वली ॥ तगा कर्गो दिव्यं कर्ग्या ॥ उद्धदि का ग द न्नं स्वाये नमः ॥ आधादि का ग र्गं गार्ग्ये  
 दक्षिणदि का ग व काये ॥ उरु नदि का ग क राये ॥ पश्चिमदि का ग म हा त्साये ॥ पूर्वदि का ग दिवा  
 क राये ॥ अथ वारुनादि धा ॥ गाय चो नै ॥ पूजा कर्ग्या ॥ ॐ उग्र ग मिग रुमि गुय नमः ॥ आ वारुन  
 समय यामि ॥ ॐ आ वारुन रु रुवा दि वं व वय आ सनी ॥ ॐ रु दुर्ग म मसु र्ग्य सु र्ग्य यि यो र्ग्य रु  
 रिमालं च ना ग य रा न वं ॥ अर्घ्यं शुक्ल वस्त्रं रु रिमालं स्व गाय आ व म नी र्ग्य ॥ गाय त्म का स द क्ष  
 सि पू पू स्नानं ॥ अथ रु रि द व वस्त्रं ॥ दि व व ग क र्ग्य व रु रु रिमालं नि द क्ष सि मनी यय  
 य र्ग्य य वी ति नी उ द ग म द य मा दि त्य आ दि त्या य ग र्ग्य वि श्व न स रु सा स रु स वि शु अ रु ना  
 न दि व र्ग्य म र्ग्य व र्ग्य य न् अ क र्ग्य य र्ग्य ॥ अथ म र्ग्य म र्ग्य ॥ ॐ आ दि त्या य न मः ॥ या दो पू



ॐ जयामि॥ ॐ सविग्नमः ॐ जयामि॥ ॐ सुखीय जाननी, खगय उव, वृषूकटिगत  
रुथ नारि॥ मार्कुअय, हदय, जग वृषू, निवः॥ यादो ॐ यनथा जान, हय मूव हय क  
टि, नारि वृषू, नी र्वव, मधुः, क्षानि युवू जय॥ ॐ जय धृयादि म कुयया कायू जा॥ ॐ मा जू  
हृदि वगत्रय, लासु वाय धृय॥ ॐ जू, थय नय य वृव न न दार्या नाम र्या दीयः॥ ॐ उय न  
यानि गुरु आवा रु रु ना दिव॥ मिगुत्र विर्या नमः दीय॥ ॐ हृडागं मम सु र्य रुवि सु र्य  
हान र्या नमः॥ नैव र्य॥ शुके व, खग वृषू र्या, रुली॥ जू, थय हा वि दु वृ, दि न थ ग रु मनी  
वि र्या, ता म्बुली॥ ॐ उदग म्बु, दि त्थ सवि रु र्या ददि क्ष॥ द्विष न म र्य वध य, अरु का सु न  
र्या, नी वा ज न, सर्व म्बु ॥ नाम सदि न ॥ पूषा जलि द या न॥ ॐ लासु वाय वि द्रुह, मरुय  
ति क वा य धी मदि, त न्ना आ दि त्थ ॥ युवा द या ॥ ॐ मा गे य न्नी द्वा द ग वा री जय॥ वि  
न गा न न था द व ॥ क रु सा दी ॥ सु वृ वृ ॥ सका वृ ॥ सक वृ रु थ, अरु, थ म य सी द उ॥ अ  
वृ, थ य नमः॥ ॐ द म र्य स म व्य यो मि॥ जग न्ते गु जग न्ता थ, जग न ॥ का वृ, थ य, यति म



क नमस्तु गृहात्मार्थं नमस्तु ग॥ सूर्याय नमः ४ यमनार्थं स॥ ॐ न हिसूर्यसहस्रीं गजां  
न जगत्पत॥ अनुरागं यमार्थं सूर्याय नमस्तु ग॥ गीसूर्याय यमनार्थं ॥ ॐ बुधसूर्याय  
दिक्षानपरावात्यक्ष्वी मधुवदुक्तिरुदसी तर्ह्यवेगद समाया अतिनमो मृगं वदुदुव ४ स्व  
नो ॥ गीसूर्याय नमः ॥ यमनार्थं स॥ अथ सूर्यस्तुतिः ॥ अग्निमीश नमस्तु गृहात्मार्थं नमस्तु  
ग॥ अन्नआयानमस्तु गृहात्मार्थं नमस्तु गतिर्थाय ग॥ ज्ञानादविनमस्तु गृहात्मार्थं नमस्तु ग॥ हि  
मध्याय नमो ग्राय वदुदुय चवेनमः ॥ अकृतप्रायदवाय तस्मै सूर्यात्मने नमः ॥ मनुह  
नक्रियाहीनं रकिहीनं ययनमया ॥ कर्तृत्वदात्रिर्गं कर्म कृपया तवयुवर्ण ॥ नमानमः ४ याय  
विनाशनाय विश्वत्मन सफुर्वगमाय ॥ सामर्थ्यरुद्धामविधिविधात कृवा द्विधाताय नमान  
मस्तु ॥ उदयवदुदुय नमस्तु गृहात्मार्थं नमस्तु ग॥ अष्टमातस्वयं विष्णु मृगी मृकिदिवाकः  
वः ॥ हस्तमस्तु गृहात्मार्थं नमस्तु ग॥ नावाय लंभनमादिदवी स विन्यस्तु हिविनाशमान



मृत्पुण्यानीजित्वांस्तु (धृति) ॥ ॐ तिष्ठु त्वान त्वार्थदानं कुर्यात् ॥ गद्यथा ॥ जलांजलिं ससै वृक्षं  
मद्यदानं यमालकं । विगृह्य यानियु (मन) तां स्यात् सुनिर्मलं । जानत्या मवनीधृत्वा यत्रियु लूज  
लन च । अकृतां दण्डं च पूष्य मर्क दुद्वया । अंगुष्ठा य कति द्वा र्था । न तप्य गालिनि १ कि  
थ ७ ॥ दद्यादर्थं मनर्थं च । सविगृह्य न पूर्वकं । उयमो लो समानी य । तत्पार्श्वं नान्यद न्यथा । य  
ति मर्क नमस्त्वयात् दृष्ट्वा दृष्ट्वा दिवा कवी । पुलावै पूर्वमूत्रार्थं । षष्ठी जानित १ यवी । मर्कना  
मनमार्कं च । अर्थदानं मिदं स्मृतं । यादाह वनिनेव । विनूय न विना वृत्तं १ । दद्यादर्थं तु म  
नुक्तं । अनूला मयून १ यून १ ॥ अग्रा न्ययि ॥ अर्थपार्श्वं समादाय । वक्यं पूष्य कगान्निर्गं । इवा  
यवान्निर्गं च वनासिकां समी अत्र ॥ अथार्थक्रमः ॥ पुलावा दोषश्चैव पूर्वले उयनयमि  
गुमरुमिग्राय नमः ॥ ॐ दमर्थं स ॥ ३ वं द्वादश च वले दद्यात् ७ ॥ गथा अर्द्धं च नमिगु न विख्या  
॥ तथा अत्रा मिगु न वि सु र्य रानू स्य १ ॥ ३ वं नृप न द्वादश नाम हि नृपं विवा न दद्यात् ७ ॥ ३ वं  
सर्वगुणी नर्था न दद्यात् ॥ अथ वृक्ष र्था ॥ यादे द्वादश हि श्लेषेव । अथ वृक्ष ससै र्था । वृक्षे



मिहलिष्टेव. नृपनेवपिनावृति॥ वहुर्विंशत्यर्घदानेनावृतिः यत्रिकीर्तिना। आवृतिरिष्टुर्वि  
लो. नृकमावर्तनेन सृते॥ आवर्तनेन श्रुतुर्विंशत्यर्घ्ये कथिना वृत्ते॥ अर्घ्ये नीहि द्विंशत्यर्घ्ये। नृ  
वृत्तः यत्रिकीर्तिना। लघ्वर्घ्ये श्रुतुर्विंशत्यर्घ्ये। मरुद्वर्घ्ये श्रुतुर्विंशत्यर्घ्ये। मरुद्वर्घ्ये श्रुतुर्विंशत्यर्घ्ये। नृ  
वृत्तः यत्रिकीर्तिना। अर्घ्ये श्रुतुर्विंशत्यर्घ्ये। वृद्धिर्मात्रा यत्नतः॥ आवर्तनेन सृते॥ २४॥ अर्घ्ये  
नीसंख्या लघ्वर्घ्ये संख्या १३ २४ मरुद्वर्घ्ये संख्या ३३ ११ ११ अर्घ्ये संख्या १२ १३ १०४ नृवमर्घ्ये २८  
दाने यथा गच्छि कृत्वा पूर्ववदस्य श्रुतुर्विंशत्यर्घ्ये कावर्तुत्वा कमायय ७॥ दीना विरुक्तिवर्त्तु  
श्रुतुर्विंशत्यर्घ्ये श्रुतुर्विंशत्यर्घ्ये। अनन्त्यावृति दीनस्य जयस्य सुखितस्य च॥ दायाः पुत्रानुना  
वृत्तः त्वन्यसादादिवोक्तव। यस्यामृत्या च नाभा कृत्वा यद्वा क्रियादिषु। नृनृ संपूर्णतया  
मिह संप्राप्तवन्दनमयगी। नृनादिदायवर्त्तुर्गर्ग कर्ममया विरुत्त॥ दमस्वर्त्तु मरुद्वर्घ्ये  
सीदयवमभ्यव॥ अर्घ्ये श्रुतुर्विंशत्यर्घ्ये। कर्तव्यं यद्वा नृगदा ७॥ नृनृ मत्कर्ममया विरुत्त। पीणा  
वृत्तवपुद॥ नमः सृष्ट्या यथा काय संपूर्णतया दिहत्तव। सच्चित्तानन्दनृपाय साद्विषय



द्वालनमः त्वमवाहं च सच्चिमां च नः॥ आवया न कर्तुं नाकिर्नः॥ त्वानावला  
रुव॥ दमस्व यत्र सीमनं यन्निबद्धा सितकिं नः॥ त्वानन्दवाधसं दुष्टः काव्यः आदिदिवा कवः॥  
यत्रिपूर्वः ससं वशः यत्रमानन्दसं स्ति नः॥ यन्निबद्धा सिद्धवशः तत्सर्वं कुरुमहमि॥ अन्य  
थाऽत्रलं नास्ति त्वमवशं वलं मम॥ तस्मात्काव्यं तावत् न नन्दवददिवा कवः॥ ततः॥ पूर्य  
जलिदत्त्वा पूत्रकर्म मनुजयसं द्रव्य सकल पत्रिवा नदवगा उयसं हान मूदयादवमृत्वा  
वकीरुताः॥ यत्रिवाशु तं यत्रमभ्यर्तुं तज्जामयं सच्चिमां नन्दं यन्मया यान्याथ यः॥ त्वदाम  
यत्रमदिशुं सर्वसाधकमययं॥ गच्छसर्वस्मिन् तत्सर्वं पुसीदयत्रमभ्यर्तुं॥ पृथितामिमया  
काशीसूर्ययत्रमभ्यर्तुं॥ विश्वविश्वमकामार्थं ममदत्तयद्रमदिनं॥ उं नत्सविश्वविति मनुज  
सकल पत्रिवा नदवगाः॥ यातिलाभ्यनदवमृत्वा वकीरुता विराशु तं मृत्वि यत्र तज्जामि सं  
चिन्त्या पादका मूदया वीवा द्वास्त्य नमः॥ सविश्वं नित्यं॥ गज मूदया मलुलस्तु कस  
माया दार्यया॥ यथा यातमा॥ नित्यं स्वगृहं वाम नोसि काद्या वल्लनीय मर्तुं गच्छति॥ अ



क्रीडास्त्राख्यानमः॥ कवतत्रकवयुषाख्यानमः॥ आदित्यसविष्टाख्यानमः॥ कतिष्ठिकाख्यानमः॥ दि  
 वल्लभगर्भमन्त्रीविद्यानमः॥ अनामि॥ स्वगयुषाख्यानमधुमा॥ सुयुक्तानुर्या॥ तर्जनीर्या॥ मित्रविद्या॥ अंगुकार्या  
 नवमकुदिविद्यास्योपेयविद्यानवात्मयास्यगन्धदिकिवात्मानमख्युतिदूयमात्मानैरावयत॥  
 नविद्यातात्रविह्विकोत्रविः॥ सर्वमिदंजगत्त्रविर्जयतिसर्वग॥ आत्रविः॥ सोहमवहि॥ एवैतन्म  
 याहत्वासर्वविबद्ध॥ महासौन्दर्यनिपाठं॥ वक्ष्येस्वस्तिस्तिगर्भं॥ एवमन्यानिहकात्रिधाष  
 यन्नियतः॥ सदा॥ अर्धस्नानकुसुमायुगासयार्णजनाचिती॥ मनुयित्वास्वभर्तुपावननं  
 गनागर्भं॥ अरिषकस्तुमेस्वर्वा॥ गृहीयाद्दयमनुय॥ दलुवनमयहमी॥ गयाम्बुगत्सह्य  
 के॥ महापार्यमहावागी॥ महाशार्धि॥ वनागय॥ ॥ अथहामविधिः॥ हामननभ्रगद्योधि  
 हामननभ्रगगुरु॥ हामननभ्रगवाग॥ हामनसिद्धिमायुया॥ वाहुधमर्घदानं॥ वसर्व  
 कामसमृद्धया॥ गृहस्थेभान्नलागु॥ सुलिलकावयदुधे॥ स्वगृध्राकविधानत॥ हामेक  
 योद्धिवदल॥ अर्धमिसहसुल॥ आसयुक्तनहामय॥ तिलाययायसनेव॥ सैकवा

२२

६३



वृत्तसंयुतं। वक्रयुक्तं प्रमत्तं च। वक्राकारं ध्वजं च। नाना रजः प्रवेष्टुं च। ह्रीं संकृष्टां दत्तं कथं। उद्य  
त्तं प्रतिमं कुलं। सविता च तत्तं च। ह्रीं स १७ विषदि स्थितं नवा। आकृष्टं न तिगं यथा स रुचिः  
यथा॥ तत्तं १७ स्थितं कर्तुं कृत्वा। ह्रीं स १७ स मायय ७। तत्तं ध्वजं लिखितं न। गुरुयौ जं यथा रुतु॥  
ह्रीं स १७ तत्तं पृथिव्या १७ याय स १७ कर्तुं नानि। आचार्यं वृत्तं यित्वा रुतु। वृत्ते नाना रजः १७ ह्रीं १७ वि  
याय स १७ रजः काय। वेदिकाय स्वधर्मिणि। वक्रमा ल्ये ध्वजं। न्ये ध्वजं वक्रं ध्वजं पूजनं॥ दद्यात्पुति  
कृतिं ताना १७ ध्वजं। गोदं दि। ध्वजं॥ दक्षिणं तत्तं दद्यात्तं ता विज्ञानं सा न तत्तं १७ वयं १७ क  
तत्तं स माय क अर्घदानं ध्वजं रुतु॥ सर्व कामानवाप्नोति। तत्तं ला कं मदीयं॥ ॥ अथ रुतु  
ति १७। गुरुयौ गी मृगना गी तत्तं कथा ७। ७ तं १७ सर्वं मदीयं तानि १७ सर्व याय १७ पुमं च  
तत्तं॥ आयुष्यं पुण्यो गुरुयौ ध्वजं तत्तं सर्व दारुतं ७। सर्व याय विनिर्मकं १७ सर्व यिदु ववर्जितं १७॥  
आचार्यं सखिर्न कुर्यात् पुण्यो गुरुयौ क तत्तं। पुण्यं गुरुयौ सख्यं ध्वजं तत्तं सर्व दारुतं ७॥  
गुरुयौ प्राणि विपुला वक्रं पापं तत्तं मयि। मृगं तत्तं सर्व याय १७ तत्तं ला कं स गच्छति॥ मनु



यं सोमः पाप पुष्पगन्धः। वाग्वृद्धद्विदुः। उक्तिमक्तिरुत्तपदः॥ कल्पनचयवापृष्टः  
उत्तः यत्र मसिद्धिदः॥ यत्र स्य वागनामयः स्वागालाकलिनाययति॥ ॐ तिष्ठवाद्यदानपुष्पा  
गः॥ ॥ अथैककस्यलघुपुष्पागः॥ अमकवागनिवृत्त्यर्थः उद्यन्नतिरुत्तवाद्यदानकविशुद्धः  
तिस्रकस्य उद्धकनीतिनिखावेधः॥ उक्तिरुत्तितिहगत्तादने॥ पृथ्वीत्वयस्यासर्नकत्वाज्जयस  
यत्तिवामपादगलने उर्वस्यत्वात् कुर्वः स्वर्गमिष्ययविश्वसर्वत्रागनिवात्रमयागदो ३०  
यस्यैवायाकुवाजायसूदनोयद्दुर्दुःॐ तिदिग्वर्धकत्वा। नीलार्दकमहाकायकल्याण  
दरुनायम। हेववायनमस्तुत्यमनूद्वां दोकुमर्दसि॥ ॐ तिस्रयाधुत्तगुद्धिपालपतिष्टीव  
कत्वा उद्यन्नयम्वनागमिष्यमृग्युत्रयत्रमयुत्रयवायत्रयुत्रत्वाद्वासीकृत्या॥ दकि  
लहस्य उद्यन्नयमिष्यरुद्धकृतेनामिषात्रकुमुमा। वामहस्यज्जावादकुर्वीदिव॥ विदिमाक  
गानववीवकुमुमा। हृदयहृदगर्ममस्यस्यस्यः। ज्ञानादनामयादकुमुमा॥ निवसिहवि  
मार्त्तयनामय। हानूत्तर्वहृत्तयावकुमुमा॥ दकिषवव। ॐ शुक्लमरुविमार्त्तनिषि



द्वगमनाचय (गमन) कुर्मा। मा म च न (न) वायम कास दक्ष सिद्ध त्व गमनात्प्राव द कुर्मा॥ न  
लो॥ अथ (अ) हा नि दु वं वृमं तमा जा ह्या हि वृमं ग क नि द कुर्मा। मुख उि दया १। रु वि मा लं नि द क्ष  
सि म नी वि ४ स र्वा वि द कुर्मा॥ द कि ल नं ॥ उ द ग द य मा दि त्व ४ नि सि द्ध क ल द दि सा व कुर्मा॥  
वाम न ॥ वि ॥ न स रु सा स रु वि हि ग क ल का व ल त्प वि ता व द कुर्मा। द्वि ष न म र्म व न्ध य नि  
ति क व र्च क्त्वा त्व (ग) मा न्य का व द कुर्मा। मा अ हं द्वि ष न व र्च ॥ द्वि ष ल द्वा क्त्वा व द कुर्मा॥  
अथ पूजा त रु द वं ग न्या स ॥ स रु लु नी र्वा ति वाम क र्च पू व ष उ व ति द कि ली क र्च उ ग वा  
न स्थ ति वाम यो द ॥ शि या दि ति द कि ली यो द। त स्मा दि वा दि ति वाम जा नू नि ॥ य त्पू व ष (ल) ति  
द कि ली जा नू नि तं य कू मि ति वाम क र्च ॥ त स्मा य कू द न क र्च ॥ ना स्मा दि ति ना री। त स्मा द य  
धू ति ह द य ॥ य त्पू व ष मि ति क (ल) ॥ वा द्म (ल) स्थ ति वाम वा री ॥ व द्म मा र्च ति द कि ली वा री ॥ ना री  
आ सी दि त्या स्थ स का त्या स नि त्या क (ल) ॥ य कू न य कू मि ति नि व र्मि ॥ उ र्व स्थ सि न्ध यि न्या र्च क्त्वा धू  
य ॥ धू य ४ स द त्या दि ॥ अथ पू व ष सू क न मा उ (ल) य वा वा न क ल य य ॥ त ग न धा द ग यू थ्या वि



वक्रानि यमकानि ॥ या यमनने वंशी ॥ अथ जानखामवनी गत्याग मया गुणव कग न्यपूया दगद्वी  
 सहित मर्शदानं कुर्यात् ॥ उद्यन्न शक्ति नृवस्य कावाय ४ पुस्तक ७४ वि ४ स्यादिवता अनूप पुन  
 ४ अर्शदान विनिशाग ॥ ० यन्न शमिगुर्मंद ४ मिगुं तर्क्यामि ॥ आवाहन नत्रवि द्वागं सूर्य दितिमा  
 नीतानी ॥ शुकेष्वर्गं वायल्लकासु वृषलं ॥ अथ हि वल्ल गर्क हवि मोलं मवीचि ॥ उदगदादि  
 त्यं वि ॥ न सविता नो द्विषन्मर्क मा मूर्दं तास्तु वा ॥ तिया दलं सूर्यलं कृत्या ॥ द्वे वृण ४ कः  
 यत् ॥ उद्यन्न शमिगु ववीतर्क्यामि ॥ द्वागं सूर्य तान् ॥ शुकेष्वर्गं वायल्लकासु वृषलं ॥ अथ हि व  
 ल्ल गर्क मवीचि ॥ उदगदादित्यं सविता नो द्विषन्मर्क तास्तु वा ॥ अथ पुन ४ ॥ उद्यन्न श  
 मिगु ववि सूर्य तान् ॥ शुकेष्वर्गं वायल्लकासु वृषलं ॥ अथ हि वल्ल गर्क मवीचि न उवगान् ॥ आदित्य स वि  
 गुर्क तास्तु वा ॥ अथ नृव न रि सूर्यय ॥ उद्यन्न मिगु ववि सूर्य तान् ॥ शुकेष्वर्गं वायल्लकासु वृषलं ॥ अथ हि व  
 ल्ल गर्क मवीचि ॥ आदित्य स विगुर्क तास्तु वा ॥ नव्ययो मि ॥ महालूके ३ ॥ सर्वं सूर्यं तर्क  
 यामीत्येवाकी ॥ सा द्वे वृन च नव्यनि दय मेधिक मूर्क ॥ एवं गतं स हर्मु वा नव्यनि नि क

३१



श्री ॥ ॐ दं नानुवा स व स व कार्थी । तथा विधानात् ॥ यावत्समाधि पुनितानुवा री द्वादश वा द्वा  
त्त न हा जे य ॥ अथ मृत्युं जय विधिः ॥ वनिष्ठयो कं ॥ शुभ क स्य व मा हा सी ॥ अथु मि द्वा मि  
सी पुगी ॥ विस्त व ल य धा न त्वं ॥ प स न्ना व कु म ह सि ॥ ७ वी वृ ४ ॥ प स न्ना त्मा ॥ तं पु त्या रु म हा म नि ॥  
म रु ता न य सा द श ॥ मृ ग सी जी वि नी म या ॥ वि धि त त्या ४ ॥ पु व आ मि ॥ स मा हि त म ना ४ गृ ७ ॥ अरु  
म स्य ४ षि ४ ॥ अ क श्च न्ना नू द्यं वि हा शत ॥ द व ता शुभ का वृ ४ ॥ अं तु ग नि गृ ७ ॥ अथ  
य द द यो ये ति न मा नं द द य सृ गं ॥ शुभ का य ति नि व स ॥ स्वा हा नं सि व सि न्य स ॥ ७ ॥ नि न  
गा य नि र वा ये व ॥ ष ७ वी य नि र वा स्य ॥ ७ ॥ व नि ष्ठा य ति क व र्य ॥ दू स नं क व र्य सृ तं ॥ न  
गु ग य नि वी र्था य ॥ वी ष द न मू दा द गं ॥ अ नू द्य प क न्द स म्मा य ॥ रु ति स्य न मू दा द गं ॥ या  
म ग्ग स व रु दि क् ॥ दि ग म्भं का व य क्मा त ॥ ७ वी य स्वा य ७ ॥ ग नि ॥ ना म रि ४ ॥ ष ७ वी व र्य  
॥ इ ग्ग वि ना य कं ये व ॥ न दी र्णं क ग या ल कं ॥ ७ ॥ दि ग्भं म न्ना स्य ॥ व नं म न व द द द ग ॥  
अथ वे ग स्य म नु स्य ॥ ष ७ ग नि पु क स्य य ॥ ७ ॥ पु व श्र व ल मा दो रु क्श मि नु स्य सि द्ध य ॥ अ



शरुत सरुमुवा. गत मरुतु नुवा ॥ यावता वा जय नमः ४ पूणा ह मिति म न्यतः । मरुतु पल वसं य  
 कः जय ह व समाहितः ॥ उर्व कृत्वा पून ध्याति नः ४ का श्या लि सा ध य न ॥ य स्मा द न न म नु ल मृ  
 त्यु जय ति मा न व ॥ मृ त्यु जय स न ४ पा का. मु नि रि स त्व द नि रि ॥ वा द्र ल क्ष णि या वे श्म सु  
 या व द्म द्वि जा न य ॥ आ त्मा र्थ जय हा मां ध्र. क र्ण नि त्थ म त दि ता ॥ य नार्थ म पि क र्वा त वा द्र  
 ल क्ष म नु वि रु म ॥ दा त ग्रा द कि ल न ग. य थ दु श्म न द्वि आ रु म ॥ आ य नार्थ म मे श्म र्थ म य  
 मृ त्यु जय त थ ॥ म न रि वा र लं वे वा. का ल मृ त्वा नि व र्त्त न ॥ व श्म क र्ष ल वि द्ध य. मा न ल क्ष वा र लं  
 त थ ॥ पू न लार् व त दृ ष्टि. त थ वृ ष्टि नि वा र लं । ग ज वा जि ख वा द्म नो. श्म नि क र्म लि स र्व ली ॥ पु  
 नी का र्त्त व स र्व श्म वृ जि न श्वा धि व द्म सी । अ न्या य वि व का श्या लि. स र्व ल क्ष ता नि सा ध य ॥ य स्य म  
 नु स्य य ४ पा का. वि नि या ग म रु षि रि ॥ स र्व म नु य ग स र्व. म न नै व दु का व य न ॥ कि म ग व  
 द्म ना क न. म न सा य यदि कृ ति । त रु त्म ल म वा प्रा ति. ना ग का श्या वि वा र ल ॥ न र्क्षे ण लि पु व  
 श्म मि. आ र म्भ स र्व क र्म ली । आ डी र्थ श्म नि क र्म लि. आ य र्थ वे श्म व त थ । श्म नि य न रि



वावात्स मद्यमृत्पुत्रं यं तथा । आदो विनायकं पूज्यं पूज्यं वाचयं कृत्वा ॥ ओयासनाग्निमा  
नीयं तस्मिन् । अविनिदिष्टं ॥ अथवा । अग्निं यागं वा नमस्ते वा समानं यः ॥ ओयासनं  
न कर्तुं । निषिद्धाद्यादनादिकं ॥ आत्मा हि मुखमासीनः । आत्मा स मयकं पृथुजं यः ॥ अ  
थ यः शोकयासांश्च । यागं वश्यं पदं कर्तुं । तेषां मनः च नो । अथ कुरु मे । अथ कुरुतां गतं । तं  
कृत्वा अंशं गतं । सर्वं मूलं खनादिकं ॥ स्वर्गं आकृतिं विधानं न । तं भाहर्मं समावृतं ॥ आयुः  
कामाद्युत्तमं ना । अथ कुरु याज्ञं कुरु सखाया ॥ आयुर्गं वा स कुरु सखा । न तं मष्टं कुरु कुरुवा । इवा  
न्विने वा कुरु याज्ञं । मधुं विनयं स यज्ञं ॥ अथ विरक्तं कुरु विधिः । अथ कुरु कुलमालं नेश ॥ अ  
थ वा कुरु याज्ञं विधानं । मित्रं नैकं कुरु नेश ॥ यथा कुरु नैकं कुरु विधिः कुरु याज्ञं । अथ कुरु नेश ॥  
यत्नां समिधे कुरु । पूर्णं मायुं न वा प्रयात ॥ अथवा । अथ कुरु नेश । ययं सने व हामय  
॥ अथवा नयं यदव । मृदकं न समाहितं ॥ आसीनः ॥ या कुरु कुरुत्वा । अथ कुरु पूर्वं सखा  
या । वाक्मन्त्रं नो जयन्ति स्त्री । वदवदं गयान् वदन् ॥ आवाग्नेयं कामा कुरु याज्ञं । अथ कुरु



धृतपुनः॥ ययसावायिरुद्रया॥ इयनाश्चनवायूनः॥ यलागसमिधावायि॥ सर्वनागपुष्पकथ॥ नर्वना  
 गपुष्पकिः॥ स्या॥ अगनावायनरुद्रवः॥ अक्षितेनामयने॥ यथाकेरुद्रया॥ उग्रवीउठिकाति  
 वीर्यादिनेवृष्टिगपुनः॥ यमरुमधूनाहामः॥ ययसावायुननव॥ उग्रम्वनसमिद्रिमु॥ हाममाम  
 लकनवा॥ उर्मरुमेललेहमिक्तिले॥ इधूवृत्तिनवा॥ वद्धमानसमिधामः॥ मयः॥ लरुवा  
 व॥ कर्वजसमिधावायि॥ निर्गुठीसमिधावायि॥ तेलनात्यरुद्रया॥ नित्रात्रागस्यभक्तय॥  
 गमीसमिद्रिर्द्रया॥ दतीसावप्रसोक्तय॥ अन्वर्थमकिवागना॥ यनार्गसमिधः॥ स्तिना॥ उ  
 न्मरुसमिधेर्द्रया॥ अयत्मावात्यमृशत॥ कर्वनाकीउवन्नीत्यामानुमूलं वृहामय॥ ग  
 लनात्यरुद्रया॥ वज्रखलेकथेवच॥ मातुर्लिगुग्रवीर्ना॥ हामः॥ कपिलनागनः॥ म  
 धूषितयहामन॥ भक्तिः॥ स्या॥ अजयश्वलः॥ रुवनात्यलमूलानी॥ गर्दनागं॥ पुष्पम्यति॥ उ  
 न्मसूत्रिकायाय॥ मधूषितयसंयुने॥ स्तिनात्यलेरुद्रया॥ त्यलातेवृष्टिगपुनः॥ अथवाते  
 लसंयुकेर्द्रया॥ दोवसर्वये॥ ययान्यमूखजावागः॥ नित्रात्रागस्यभक्तय॥ सर्वपुष्पम



यानि तिले ह्यमघृत पूते ॥ ओदवादां दुवागमार्गं सर्वार्थानि किमिच्छता ॥ विल्ववृक्षसमिद्धा मः  
कर्कशादिजसकमः ॥ अन्तस्तथा दुश्रुतान् यद्यप्येव घृतपूते ॥ इच्छा हि वीर्याकारि ॥ रुद्र  
याश्च न न न वा ॥ निमिषायाश्च समिधः ॥ वक्रावदुहामय ॥ अथवा गन्धुनैव नका गी  
सावग्निकय ॥ आस्यवा ॥ गवस्तद्वैव कलत्रा गमहादेव ॥ गिरि १ रुते वीरुद्रया न्मधुकीन  
घृतपूते ॥ मधुगिरितय हामम्बु सर्वत्रा गयग्निकय ॥ आयुर्वेद वृत्त्युक्तं यत्यत्रा गयग्निक  
कय ॥ गस्यत्रा गयग्निकयर्थं तन्नत नैव हामय ॥ अथवा तन्नम कुल यावमानि लिखतः  
वा तीर्थतोय नद वृक्ष महिषैव समाहित ॥ तत्तत्त रुजवादीनां सर्वार्थमपि ग्निकय ॥  
अथवा तर्पणी कृत्वा निर्गृष्टं पूर्वकिं सखाया ॥ नयसि मूद गमिन्त्या तदा गवस्त विल्ववा ॥ या  
दृश्याददृश्यावापि सर्वत्रा गयग्निकय ॥ अथवा नियतादाया जयन्मर्गं समाहित ॥ ग्निक  
य सर्वत्रा गमार्गं तावदेवान् रुद्रवायव ॥ उर्वहामिद्धि जः कृत्वा तर्पणी जयमववा ॥ आयुर्वाना  
असिद्धार्थं आत्मना वा यवस्यवा ॥ उकारं वा शुक्रं वापि द्वादश हं दश रुक् ॥ यदमा सदि



मासं वा मासं यममथादिवा। अथवा चतुर्नामासान् यत्प्रसक्तं कदाचन॥ तस्यैव मरुति संजातं दीर्घकालं  
 समाहितं। अथ स्य कालं कर्तव्यं जयहामादिकोऽक्रियाः॥ नागकालाय मूर्कं च। इयं स्यात्सनादि  
 की॥ नागमूर्कं मृगसर्वं नाययुक्तं च॥ मृगसंजीविनी निष्ठा। वायुलक्षणां तु याजय॥ अ  
 यमृगजयायाय मर्दवशात्तन॥ यव॥ पूर्वकिं दणकालं तु शुचि कृत्वा समाहितं। मधुभिः  
 ययुकादि द्विर्विहृत्तया द्विज॥ सरुमुमेयुर्गवायि। गतमष्टारुर्न तुवा। अथवा कर्कसं मेवा  
 यिरुद्रयास्तु घृतं पुनः॥ अयामाग्निसमिद्धिर्वातिलेऽक्षेयं चैव वि। अथवा गन्धनं च यय  
 सावागिहामय॥ कपिला। गन्धनं कीर्तय। पुनर्वकिमलीषिणः। गन्धेन च दिनं च त्वं स्य स्यन्म  
 नुमिदं जय॥ साक्षात् मृगायि मूर्कः। स्यात्किं पुन स्य यमृगः। अथवा यय सादवः महिषि  
 शुचुर्न न वा॥ यत्नां गवदिवान्धत्वा समिद्धिर्हृत्तया त्वधी॥ विल्ववृक्षा रुवे द्विषि। साममृ  
 ग्यादि मृग॥ अथवा गवययित्वा च वनं वा पृथिजा रुमः। मर्कलान्नं न रुद्रया ७ आलोदव  
 णि यम्वर्क॥ अथवा रुवर्गं रुद्रा मृग्यं जयति मानवः। विन्यस्यं सर्वं मयि नतां कृत्वा वनं सगु॥



यस्यांगवृक्षमदर्वमनीमर्कसमाहितः। तस्यमृत्युकर्यनासि नवश्राद्धिकर्तार्य॥ यातः का  
लकुवाजानमधिगम्ययुवाहितः। तसिगनाग्रिहास्य नदीकृतानयापृथा॥ पुवाध्वयनत्र  
यानमकुलाननवस्य (न) ॥ ३४ स्वप्राकुगभानिः ॥ स्यात्सर्वयायेः ॥ यमश्रुतं ॥ अथकाश्यानिकमा  
लिपुवश्रामिसमासगः। पीकामावित्ववृद्धस्य समिद्धिवधवारुनेः॥ यवेव्रीष्टास्य रुद्रयात्त  
रुनींशियमाप्रयात् ॥ (ग) कामः ययसाहामात्त रगं गं ययस्त्रिनीं ॥ विद्यार्थी रुद्रया यमुव  
डादे (ग) घृतपूतेः। विद्यां वायुसुथाविलं ल रगं ना रसं ग यः॥ अन्नाद्य कामा रुद्रया द नम  
व घृतपूतं। यलासे समिद्धे कृत्वा वद्ववर्चसमाप्रयात् ॥ वृष्टि काममुर्मपूज दवदर्वीरिय  
वकी। अर्घयाद्यादिरिद्धर्वी याकगेत्ररिषवयः ॥ आयादिष्ट गितिसृति हि व अत (पू) त्यादि  
रिः। यवमानानूवाश्रुन शुचक लयनयापृथा॥ गन्धपूष्यं गथधृयं रुविश्रानं निवदय ॥ ७  
वर्मपूष्यदवर्गं पलियत्युसाद्यव। वनसानां समिद्धिमु रुद्रया त्ययसापूतेः। अयुर्गवा  
सदुर्भवा रुद्रया त्ययसायिवा॥ पूषा रुवावभनिर्त्य वा द्वात्तान् राजय रुतः॥ दन्त हास्य



नववृष्टिर्कृतिविशतिनसंगयः॥ आर्द्रवासाः यथावृत्तः दीनवृद्धसमूहवै॥ समिद्धिर्कृत्तयान्म  
नीसञ्जावृद्धिमवाप्नुयात्॥ नारिमाणुजलसिद्धिः॥ अथनैवृष्टिमाप्नुयात्॥ अग्निहागसमा  
दायसिर्गतसिगमूलम्॥ अनयेवमृत्वाकृत्वा जलवृष्टिनिवावर्णी॥ पृथक्काममुद्रकृत्वा  
यायसीदृतसीयती॥ चतुर्गणस्यैवमुद्रकापुण्यप्राप्तिमानवः॥ योर्ध्वमास्यातिलानकृत्वा  
नाकानविन्दतसती॥ गमवर्ममाणुमालिष्टः॥ गमयनाथरुतलः॥ अन्यत्रानि विनिदिष्ट  
तन्मः॥ अस्माययद्वै॥ विंशतिकलनभंसुगः॥ सितसुगलवृष्टिगान्॥ गीर्थतायनसंयुक्तानि  
हवितायनवादिना॥ शुभकनचसंयुक्तः॥ गतकानरिमकुत्र॥ अथवः॥ अक्रियसंयुक्तः  
ललेत्रहिषत्रयः॥ अचित्रान्नरगंयुगमायुष्टानंयगसिनी॥ एतलसर्वमाख्यातंयन्म  
त्वेयविष्टवृत्तान्॥ अथैवमुद्रकापुण्यः॥ वलिष्ठावद्वविरुमः॥ मृगसंजीविनी॥ वाहः॥ हि  
तायनालिनातथा॥ आर्द्रकुतावर्कतस्यतावकादकिमादयः॥ आदतिगयसंयुक्तः॥ या  
नवमिहाशुगं॥ तावकादकिमादवर्धवद्विनायासमन्विता॥ यदवृद्धवृष्टिद्विष्टुन्मागदि



मृगयुक्ती ॥ यलवादि तदन्तः श्राद्धतिगुयसंयुतं ॥ श्राद्धतिपलवान् व. स्वाहाननसमन्वितं ॥ नवीवि  
 द्विमनू (१४) सर्वमृत्यु रयायहं ॥ मृतमजीविनी यन्तु पलव श्राद्धगीयुता । ततस्त्रियन्तु कर्मन्तु यन्तु  
 वक्तं त (५) श्रुतं ॥ मृत्युजयायभवाग. कथितो मनु विरुमे ॥ सवीजायन्तु मन्तु कि. महा मृत्युजय  
 १ स्मृत ॥ यलवा श्राद्धति (६) तस्त्रिवीजायात्य (०) स्यूना ॥ तता जयन्तु चकमन्तु मन्तु श्राद्धतयश्च  
 ना ॥ त्रिवीज यलवान् व. वद्वि जायन्तता चक्र ॥ यलवादि पुसादश्च मृतिहाता व क कथं ॥  
 रुनादिका श्राद्धतय मृत्तु चकति य मन्तु त ॥ विपर्ययल त्रिवीजं तदन्तः श्राद्धतिगुयं ॥ स्वाहाच  
 मन्तु न यन्तु शुक्लवाधित १ पूना । महा मृत्युजय वृत्ति विरुता कुवनगय ॥ ॐ कात्रे १ मं युग १  
 यष्टि शुक्लदले वथयिवा । मृत्युजयाथ विधिव. दूपास्थयित मापूया ७ ॥ ॥ वृत्तिवनिष्ठा क  
 शुविककल्य ॥ अग समूल त्वं विवदन् ॥ ॥ लो न क ॥ अम्वकस्य वमन्तु स्या. कलं व आमि  
 लो न क । य सन्ना वा द्वा लो मादित ॥ यष्टिमहा व मा व स्य यतनम  
 ॥ मस्य पूर्वक व क लोः सुं उलं व द्वि मय ली । म धित्वा वाग्नि मा धीय. य दू त न्तु यु क ल्य य ७ ॥ मन्तु



लभते न ह कृया द्विविधसु सहस्रक ॥ पायसं घृतसंयुक्तं मायका माद्विजः स्वयी प्रगर्था गति वीजन ध  
 नार्थं विल्वयुक्तेऽयं कृया का मा घृतं तैव वरुणिकामस्तु वं न से ॥ विशा कामस्तु या लोले विषु कृया त्स मा  
 हि स ॥ जय द्वा नियता नित्यः मता कामान वा प्रयात ॥ जन याथा हि विकस्तु दीर्घ मायू न वा प्रयात ॥  
 महाद वं समावाध ॥ नियमक मर्व जय ॥ स च नि कामान वा प्राति ॥ लम्हा सु स्य यसा दत ॥ ॥ मेन  
 क ॥ जय मृत्यु जयं हारी वञ्ज मीति द्विज न्मनी ॥ कृया हि जन्म न कृण विषु वं सै कम तथा ॥ यो लूः  
 मास्या समावाध्या ॥ गुरु लज्जु सूर्यया ॥ सर्व वाधिम मृत्यु न्न यथा विधि समाहित ॥ स्त्रा तु १७ कृ ३४  
 म्ब न धन १७ कृ मात्या न लयन १॥ अली कर्तुं शो द ॥ न यूल्ल ह वा व श्च द्विज ॥ जय अ रोग यय  
 नी य कृ न लुं पु क ल्य यत ॥ घृता की रु कृ या द न्न म व दान स्तु सै ये द ॥ आना रु द ति सु क न इ वी ह  
 मस्तु वी पति ॥ अम्ब कं व मिति म मत्व स्या दि क श या ॥ ७० मी जी वा य य वि श्व त मा द ध ति ॥ इ वी हि रु  
 कृ या रु त १॥ व वृ ल्हा य व्हा सु क न घृत नाथ सु व न वे ॥ यून १ यून जयि मान ॥ इ वि ल्हा दा इ वि ल स  
 १॥ द कि ल्हा व ता मि त न यथा रु स्य द स व १॥ उ र्व वा द वा व श्वि न ति ॥ ग न ना मू र्व दि ति ॥ ७० ला व नू ल

३४



सामनमयिमहवतसंख्यासवयवूतिद्व। उदीर्घजीवः सविनायश्च नायत्वयतिव॥ तत्रुद्द  
वहितमूत्रायदिति दक्षिणवक्तुः संकदग॥ ततः १ स्थिरकृत्य। तृतिहाम। गवसमाययत॥ ००  
लाववृक्षसामनसंगयथा। र्वयजमानं वत्तन। पुजायैवियमस्मासूधरुंदीर्घायुत्वायेयति  
वक्तुः आयः ४ धन्यं यं गमयमायुः मात्रार्थं वृष्टिवर्द्धनं। अयमृत्पुंजयं हाममात्रमत्रविनीयून  
॥ ॥ दानरुमाडोत्तमनकः॥ शुभ्रकं यजामहं ०० तिनिखायां न्यस्य॥ सगन्धैयुष्टिवर्द्धन  
मिति हृदय॥ उच्चैर्वृक्षमिव वक्षनादिति वाक्काः। मृत्पार्श्वे दीप्यमानादिति नाशे॥ पाद  
गुह्यवर्जं धावुं जंघनं कटिभधुयाः। नाशे कृत्स्नद्वयया। ककयाः ४ कयया हति॥ स्कांध  
कणाटिकायां च। कूर्पवमलिदीपक। कनिष्ठानामिकामध्या। तर्जनीं गुह्यपालिषू॥ क। लृषू  
त्रिदूकवकु। नासिकाकर्णवृक्षवि। ललाटमूर्ध्ववृजयां। वक्षोमनुस्यविचयस्य॥ न्यासाकर्ण  
मनुस्यवृष्यवानकवमववस्यत॥ अयमृत्पुंजवकालवकुदानीं यमदानीं। शिषूवृषदानीं च  
गणैवाकं॥ अथनागकुलाः रुमाडोमदनवत्तवगवृक्ष। कुलावृषदानीं कुलमृत्पुंज



या रुवं॥ अष्टलाहः॥ पदानां॥ सर्वथा॥ गयल्ल कथं॥ कांस्थं च यद्वदयं॥ पुनश्चार्थविकाचकं॥  
अयस्मान्न वसीसंस्था॥ लाम्बुक्षुसदाव॥ (६)॥ येरुत्तं च कथिञ्च॥ नोर्थं पुदवमहया॥ सोवर्णं स  
र्वथा॥ गय॥ पुदया नृस्य नादनी॥ रुलाहवमाध दद्यात्त गहली दाव॥ (६)॥ जि॥ (१)॥ रसमकवा  
(१)॥ योर्गस्याद्गुमालकं॥ जांगलं चाग्निमांथव॥ नोर्गस्याग्निं योष्यकी॥ मधु रुवं गथदयं  
कासं च सजलादय॥ वृता रुवं गथदयं॥ दुर्दिवा गयल्ल कथं॥ कीर्तयि रू विमालय॥ दा  
धिकं रुगदाव॥ (६)॥ लावर्णं च यनालय॥ येष्टदु विनागनी॥ अन्नं च सर्वथा गस्य नागनीं स्मृ  
तमवच॥ सवगु सर्वं दक्षिण॥ अधिदेवर्गलाहव॥ महारोचव उद्युगं॥ कांस्थं गुयावधि  
नोच॥ वायुधे सीसकं स्मृ॥ गय॥ सुयुक्तं सथापाक॥ येरुत्तं च कुरु सथा॥ नोर्थं च विगवा  
रूया॥ सुव॥ सर्वदवता॥ रुलसाभा गुञ्जाय साम्बलं दुविनायक॥ गन्धर्वकू सम  
येव॥ जांगलं च सथा स्मृ॥ मथोयका॥ पुयत्तन॥ घृतमृत्तं जय॥ स्मृ॥ कीर्तना वा गल्ल॥  
सर्वदधि सथा॥ पुकीर्तिना॥ यिष्टपुजा पतिर्दिव॥ अन्नं सर्वधिदवता॥ आरुयदा सथा



गुवा. या प्रयात्पु. द. ६॥ ग. १॥ नि. र्थं मृ. र्थं ज. य. १॥ वा. य. विधिना य. त्यदी. य. ग. ॥ न. द. व. सर्व. ल. न्य. र्थ. ग. व. नी. रु. न. स.  
ग. य. १॥ मृ. र्थ. ३॥ यं वृ. ज. य. दि. र्थ. १॥ ग. त्य. जा. विधि. ॥ का. द. वी. य. ना. ॥ मृ. र्थ. ज. य. द. वा. र्थ. व. उ. कु.  
ज. स्ति. न. ग. क. १॥ अ. रु. मा. ला. ध. वा. द. वा. द. दि. ॥ ल. न. रु. पा. लि. ना. वा. भ. ना. मृ. न. कृ. ती. च. धा. व. य. न. मृ. ना. नि.  
नी. व. व. दा. र. य. या. लि. धु. दि. श्वा. त. न. ल. रु. धि. न. १॥ गु. कृ. १॥ मृ. नी. ल. वा. सा. धु. य. द. मृ. या. य. नि. मृ. स्ति. न. १॥ जी.  
जी. ह. द. नि. वा. र्थ. र्थ. दू. व. म. द. च. नि. र्वा. मृ. ना. ॥ उ. वी. म. ठि. ति. क. व. च. जी. न. गु. व. य. की. र्ति. नी. ॥ ३॥ रु.  
उ. मृ. म. म. दि. र्थ. व. उ. ॥ ग. य. र्थ. रु. व. स. दा. ॥ उ. का. व. जा. वा. रु. न. म. रु. उ. का. वा. वे. वि. स. र्ति. नी. ॥ अ. रु. य. १॥  
ग. क. य. १॥ या. का. १॥ यं वा. क. व. स. म. नि. ना. ॥ ३॥ या. य. वि. ज. या. वे. व. अ. जि. ना. वा. य. वा. जि. ना. रु. द. का. ती.  
क. या. ला. च. रु. मृ. या. मृ. र्थ. य. वा. जि. ना. ॥ ३॥ हं. स. ॥ नि. म. रु. ल. वृ. अ. मृ. र्थ. ज. य. १॥ मृ. न. १॥ ग. न्धा. दि. रि. य. धि.  
या. र्थ. य. थ. वा. द. ल. वृ. ज. नी. मृ. र्थ. ज. या. क. दा. न. वृ. स. वृ. ध. वं. वि. धि. १॥ मृ. न. १॥ ३॥ हं. स. ॥ नि. वे. दा. रु.  
१॥ का. र्थ. र्थ. सा. ध. य. स. दा. ॥ ग. वृ. उ. व. ॥ ला. रु. न. दा. म. रु. म. र्थ. ग. ही. रु. द. दि. वा. य. य. न. ॥ वि. नी. ल. ना.  
ट. कं. ॥ ०॥ च. जि. द्वा. मृ. ल. व. म. लु. या. १॥ ना. लो. च. व. द. रु. उ. अ. च. न. ग. द. न. रु. क. य. स. ॥ रु. मा. दी. व. द्वा.



(६७) ॥ सर्वत्राग पुनः सनः सोऽर्थं दानमश्नुते । दत्तं मस्य वि काया ३३ वा ऊच्यते निवेद्य ॥ गुणैः तथा यमं  
 धार्कः कथं कजगमश्नुते ॥ न तदा ना कुर्मया किं गुणैः तन्नाथ सर्वं ॥ गमः ॥ स्यादरु व द्या ॥ धृक् दः  
 ना क मलासन ॥ गमार्थं वा न त्रा गमः । वा सा दानं विधीयते ॥ कलं वा क्का रु वा दीनां वा गमः ॥ भक्तिः  
 मिच्छता ॥ धीः श्री वा सा हि व र्ध्वा दातु शानि युयत्नतः ॥ अकिं स र व वा गना मा र्थं क न क र्म युगी ॥ ॥  
 अथ यामा ऊन कार्ग ॥ धी दा ल्य उ वा च ॥ त ग व न्या निनः ॥ सर्व विषवा गम यु य द वे ॥ दृष्ट ग हा य द्या  
 तेषु सर्व काल मय कृ गा ॥ अ रि वा त्रि क कृ त्या रि ॥ स्य र्ग वा नि ध द व ले ॥ सदा र्म यी य मा ना मु ति  
 व गि वू र्ध्वा रु म ॥ क न क र्म वि वा क न वि वा ना गम यु य द वा ॥ न रु व कि नृ र्ण त म य थ व द कु म  
 रु मि ॥ ॥ वृ ल ल्य उ वा च ॥ व ग य वा से र्थ वि वृ न्नि ज न्म नि ता वि त ॥ क न वा मु नि ग ई न ए रु  
 वा गे दि रा नि न ॥ ये र्त्त त ल्य व लं वि र्णं सर्व द व ने ॥ क र्ण ॥ वि व द व ग हा धा क र्म नू र्वा दा ल्य ता  
 नि न ॥ आ वा र्थ य व मा मृ द्वि मन सा य यदि कृ ति । न रु दा प्रा र्थ स दि र्थं य व ग यु त ता स रु ॥ ना  
 धी न्या प्रा नि न द्या धी न वि व ग रु र्ध व नी । कृ त्वा स्य र्ग र्थ य वा मि ता वि त म धू र्द न ॥ सर्व इ र्ण म रु



स्य. स्यात्सु सदाय हा ॥ देवाना मय धृष्टा सो दुष्टाय ज नार्दन ॥ यः समः सर्व रुतं य. यथा स  
निगधाय व । उय वासा दिना यन ता श्रुता मधु सुदन ॥ ता विन न ग जा य न. न वा ॥ पूर्व मनो वथ  
॥ आवा मः सुखिना रा म न. ला का वा मू नि स रु म ॥ न न र्वा ग र य उ व न व वा ग हि वा वि क । ए रु  
वा ग म दि क वा यि. या य का र्थ न जा य न ॥ अ श्रु ता नि क पू स्य. व का दी न्या य धा नि ती । न क नि स क  
ला य ह्या. य न वि षु नू या सि त ॥ ॥ दा ल्य उ वा च ॥ अ ना वा धि त । अ वि द्यो. य न वा इ ॥ ख ला नि  
न ॥ ग र्वा इ ॥ ख रि रु गा ना. य त्क र्ण द या त्क रि शाय अ हि ॥ सर्व रु तं वा स द वं म हा मू न । स  
म दृष्टा दृ षी क र्ण त म म वू हि स ग म न ॥ ॥ य ल स्य उ वा च ॥ गृ ही त्वा उ स मू ला अ नू क म  
नू तु द्वां श वा गि न ॥ मा ऊ र्ध्व स र्व ग ग नि. कू म ए इ ति अ भि कृ त ॥ ए वी व य स्य नि षु नि क  
म ला ज ल वि न्द व ॥ न अ नि स र्व या या नि. ग नू उ न व य न्त म ॥ वा ग य रु वि वा ला नी. क र्था द्वा  
नि मि मां शु री । वि षु रु का वि । ग य ल य वि क द्र त मा न स ॥ वा वा र्द ना व सि दं व वा म न वि षु भ व  
य । श्री त्वा स मा हि ता रु त्वा व रु ता मा नि वि न्य स ॥ ॥ पूर्व ना वा य ल ॥ या रु वा वि जा क मु द कि



ल। पुत्रं यश्चिमायानु वा स दं वस्तु। अरुव॥ श्रीगन्धर्वकविष्णु वा। प्रयां तु जनादनशानेष्ट  
ह्यायदानास्तु वायश्चामधुसूदनश॥ उद्ध॥ गवर्धनायातु धवायां विविदि कमश॥ नगस्था दशदि  
ग्यथ॥ सर्वतः पातु कण वश॥ नर्वकत्वातु दिग्वर्ध॥ विष्णु सर्वगु संपन्न॥ अत न्यविहं कृषीत न्या  
सकर्मस्य विधि॥ ज्योतिषा॥ गुरु॥ गविर्द॥ गऊं यां तु मदीधवी॥ मधुमायां दधीकण॥ मनायां तु  
गिदिकर्म॥ कनिष्ठायां न्यसद्विष्णु॥ कवमधुमाधवी॥ निखायां कणव न्यस्य॥ मूर्द्धिना वायवीं न्य  
स॥ माधवे तु तलाटु॥ गविर्दं तु वास्तिनी॥ चकर्मधु न्यसद्विष्णु॥ धवल मधुसूदनश॥ वि  
दिकर्म कयास्तु वामने कर्ण मूलयो॥ नासा वक्षु द्वयवेव ग्रीधवे कन्यय दधश॥ उरुवां च  
दधीकण॥ यदनाहं तथाधर॥ दाभादर्वद न्यको॥ वावादी विवूक तथा॥ जिह्वायां वा स दं  
वस्तु॥ तालूक गवूध्वज॥ विकृष्टं कलद॥ गव॥ अन्ननीनासिकाय वि॥ दक्षि॥ तु रुजवियु विन्यस  
त्यनूधारुमी॥ वामकं तु मदायागं॥ वायवे ददिविच्य स॥ धीता म्वरी सर्वगनो॥ हवीना त्यां तु वि  
च्य स॥ कव तु दक्षि॥ लेविषु गत॥ संकर्व लीन्य स॥ वामविष्णु रुर्व विद्या॥ कटि मधु जनाः



ॐ नमः ॥ पृथ्वीकृतिधरं विद्या दयार्णवक धर्मलंथा ॥ वदस्तु नमो धरु कदया र्था गणायिनी ॥ कृदा  
 पृथ्वीधरं देव यार्थ्या ॥ कलवं न्यस ॥ स्वयं भुवं मयम ॥ उ वृष्टि वग दोधनं । वजा यूर्धजा  
 नमः ॥ जं घया न श्रुतं तथा ॥ उ लु या न्ना वसिंदं व पाद पृष्ठ मिता जसं । जं गु त्यां गी धरं न्य  
 स्य र्पं कजा दीदि सं धिषू ॥ वाम कृयं गुण कर्णं विष्णु वका मि न ऊ स । नख वृ मा धरं देव यो  
 दं पृष्ठं य स त्या द त ल श्रुतं ॥ मना वृद्धि व रं कारं न्य स देव जना र्दनी । उर्व न्या स विधिं कृत्वा  
 सा कान्ता नाय ॥ ७ ॥ ह व ॥ विष्णु वा य ग न्नी ना व न या व किं चि न रा व ॥ उर्व न्या स विधिं कृत्वा  
 य कार्यं शृ ल म द्विज ॥ देव वृ न तु क र्णं शी सर्व सिद्धि पुदायिना । वृजा कालं तु द व स्य स्नान  
 कालं तथे व च ॥ क्षामाले म व क र्णं शी गि र्म श्री सू व नि त्य ग ॥ अत र्पं सर्व रू ग र्था विष्णु लो कं  
 स ग वृ ति ॥ विष्णु लो कं स ग वृ था न भान म ॥ ॥ ॐ नमः ॥ य व मा र्थ थ त्व या मा र्ज न म नु स्य  
 यं ल स्य ॥ ॥ वि ना व र्मि हा दे व ता रु न मू क स्य इ वि ग मि ति वी र्जं अ श्रु ता न न्द । भा वि न्द ति ग कि ॥



न फहाटककं न किं लकी समस्तारिलविताथे विनिथाग ॥ १ ॥ नमः यत्र माध्वय. यवूयाय महा  
समं। अरूया वरूयाय. द्याविनयवमात्मन ॥ निष्कलमवाययुद्धाय. ध्यानयोगवगायव। नमस्तु  
यव अमि. यरुत्तिष्ठ शुभवच ॥ ववाहना वसिंहय. वामनाय महात्मन। नमस्तुत्यापव अमि  
यरुत्तिष्ठ शुभवच ॥ ववाहना वसिंहनु. वामन विष्णु भवच। नमस्तुत्यापव अमि. यरुत्तिष्ठ  
शुभवच ॥ त्रिविक्रमाय नामाये. वैकुण्ठाय नवायच। नमस्तुत्या ॥ १ ॥ ववाहना वसिंहना. वाम  
नमः त्रिविक्रम। रुयपीवर्ग सर्वेण दधीकं न दवागुरु ॥ अयवाजितव काये. धनुर्किं यत्र  
मायूये ॥ अखण्डिगान् लोकेषु सर्वदृष्ट दवागुरु ॥ रुवामकस्य दूविर्ग. दृष्टं दूयाविर्ग। मृत्यु  
वधैर्लिरुयदं. दूविष्ट दूययत्तुर्ल ॥ यत्राये ध्यान सहिते ॥ ययुर्कं वारि वारिकं। गंत्रस्यर्गमः  
हावाग. पुष्पागं जवया जव ॥ ददय वासदवाय. नमः कृष्णाय खग्नित। नमः यवूवनं गाय  
कं वायादि वकि ॥ १ ॥ नमः कमलकिं जत्क. पीतनिर्मल वासमं। महा रुवविपूस्क. धृष्ट  
यकाय वकि ॥ १ ॥ नमस्तुत्यापव अमि. यरुत्तिष्ठ शुभवच। दीष्टा दूत किं निधुत. गयी मूर्ति



मर्गेनमः॥ म हाय कूववा हाय (ग) वहा (ग) वहा गिभ ॥ त क हाट क क शन. कल त्याव कला वर्नाव  
 का धि कन ख स्यर्ण दि द्या सि रु न भा मुगे ॥ का थ या या गि क स्वाय मृ ग इ ॥ साम मृ र्थ ॥ तु र्थी वाम  
 + न नृ याय. क म गं गं न भा न मः॥ व वा हा (ग) व इ ॥ र्वा नि. सर्व या य रु ला नि य. म र्द म र्द म हा द रु. म  
 र्द म र्द य त रु ली ॥ न व सि रु क वा ल स्य. द क पा क न र वा हू ल. रुं ज रुं ज नि ना द न. इ र्वा नृ स्या लि  
 ना ग न. मृ ग इ ॥ साम ग कृ ति. वृ षि वृ मि न नृ प धृ क ॥ पु ग मं स र्द इ ॥ र्वा नि. न य त्व स्य ज नो द  
 न ॥ १ का रि कं द्वा रि कं च ग थ गि दि व स र्द व ॥ वा रु धि कं ग थ स्य र्ग. ग थे व स ग ग र्द व. दा धा र्क  
 स नि या गा र्क. ग थे वा ग रु कं र्द व ॥ न मं न या गु (ग) वि न्द. क्ति चि क्ति चि गु व द नो. न रु इ ॥ र्वा नि वा  
 इ ॥ र्द. इ ॥ र्द या द न स र्ग वी. ज नू थ म म ति थ स. य त्रि ना र्थ स व य थ. गु द या ल द्धि वा गं थ. मू र्द  
 वा र्ग स व रु ली ॥ वि रा दी न ख जा न वा ग न. त्व ग रुं ग र्द हि क्ति ता न ॥ का म ला र्थां स थ वा ग न  
 पु म र्कं थ ति दा नू ध न ॥ अ म्भ वी मृ ग रु क्ति थ. वा ग न न्यां थ दा नू ध न ॥ य वा त प र वा वा ग न. य  
 व पि रु स मू रु वा ॥ क रु रु वा थ य वा ग न. य वा नृ स नि या ति का ॥ अ र्ग त व थ य वा ग न. लू ना



विष्ठाटकादयः॥ न सर्वेषां मया कुरु वासुदेव प्रमार्जिताः॥ विलयं या कुरु त सर्वं विष्णु रञ्जय। ल  
ननु॥ कथं गच्छन्नुवा। गवाः स्रवकादिहतादयः॥ अथ गानन्द। गविन्द नाभो रञ्जय लीयिता॥  
नम्रकुरु सकला वागाः॥ सत्यं सत्यं वदाम्यहं॥ सत्यं सत्यं वनः॥ सत्यं मुक्तिश्च कुजमुच्यते॥ वंद्य  
मुत्पन्नं नास्ति न देवैकं गवास्त्यनी। स्थावरे जंगमे वापि कृत्स्नं वापि यद्विषं॥ दन्ता रुवं नखा रुग  
माकाशं पुरुवं विषं। लूनादिपुरुवं यच्च विषमत्यन्तं॥ स्वदं॥ नमनय कुत सर्वं पूजितस्य ज  
नादने॥ गृहाभ्युत्थं गृहं श्रेष्ठं तथैवै गकिनी गृहान्॥ वं गालांश्च पिशाचांश्च गन्धर्वान् यद  
वाकसान्। गच्छन्ती पृथगनायांश्च तथैवै नायक गृहान्॥ मुखमण्डलिकां कुत्रात्र वती वृद्धं वं व  
गी। वृद्धिकाख्यानं गृहं श्रेष्ठं अनन्तं तथामातृ गृहानपि॥ बालस्य विष्णुश्च त्रितं कुरु बाल गृहानि  
मान्। वृद्धानां य गृहाः कश्चिद्वै यवै बाल गृहाः कश्चि० न वसिष्ठस्य न दृष्ट्वा दन्धे या कुरु कथं कु  
वि। के बाल वदनाख्ये। न वसिष्ठो महानवः॥ गृहान्। गवां निः॥ गवां कुरु कुजगताहित  
॥ न वसिष्ठो महामिह। क्षालामाला कूलानना। गृहान्। गवां सर्वे लखादखादाग्निं लायन॥



यथा गमय महांत्याता यदि यथ महांत्याता ॥ यानि वक्तुं न ता नि ॥ ग्रहणीया अदा नृणां ॥  
ननु कथं यथा गम ॥ क्षासा गदरका दय ॥ तानि स वृत्ति स वृत्ति न ॥ यत्र मात्मन ऊना द  
न ॥ किंचिदुपसमास्तु य ॥ वासुद वासु नाग य ॥ किं प्रो सुदर्शनं च कुं ॥ क्षासा जालो निरीष  
र्ण ॥ सर्व इष्ट पुण मने क नूद व व वा यग ॥ सुदर्शन म हा क्षासा ॥ किंच किंच व मान य ॥  
सर्व इष्टानि वक्तुं ॥ कथयानि विरीषण ॥ याथादि नि पुती यात्र ॥ द कि ॥ रुत न सु  
था ॥ वक्तुं क वा तु स वृत्ति ॥ न व सिं ह ॥ स्व धा र्जिने ॥ तु शीत विष्णु व त थ ॥ या श्व त ॥ वृष्टी  
य त ॥ वक्तुं क वा तु त ग वान ॥ व दू वृणी ऊना द न ॥ यथा विष्णु र्जगत् सर्व ॥ सद वा सू व मान  
र्ष ॥ न न स र्थ न स क ले ॥ इष्ट म स्य पु म म्य तु ॥ यथा विष्णु ॥ स्मे त स र्थ ॥ कथं या ति व वा  
ग कं ॥ न न स र्थ न स क ले ॥ इष्ट म्य तु पु म म्य तु ॥ यत्र मात्मा यथा विष्णु र्जगत् सर्व ॥ दानं स्य विगी  
य त ॥ न न स र्थ न स क ले ॥ य न्म या कं त थ नु त न ॥ भानि वक्तुं नि व वा नु ॥ पु म म्य त्व स र्थ  
व य त ॥ वा सु द व म वी वा ल ॥ कू ॥ ने ॥ स मा र्जिने म या ॥ अ य मा र्जिने ॥ भ वि न्दा न वा ना



नमस्तस्मै ॥ तवास्तु सर्वदृष्टानां पुण्यं वचनाद्वयं ॥ भक्तिं सकलभाग्यं गुरुं सर्वविधा-  
 तिव ॥ हृत्तानि च यथांती ॥ संस्तुतं मधुसूदनं ॥ उगत्समस्तं वाग्वृत्तं गुरुतयं वृत्तं ॥ अ-  
 या मा ऊनैर्कं लक्षं विष्णुना मा तिमि न्नि ॥ उगत्समस्तं विष्णुना वसंतं वा जना दना दं स्वयं  
 वया गतं ॥ हर्षं मया द्रष्टुं मया मया स्वस्तं वत्तं वया वया वया वया ॥ भक्तिं वस्तु निर्वया  
 सु ॥ द्रष्टुं मया वया वया ॥ यदस्य द्रष्टुं किं चि ॥ कुरु कुरु कुरु कुरु ॥ स्वास्तु मया निर्वया  
 सु ॥ हृत्तानि च यथांती ॥ यत उवा गतं यथांती ॥ गुरु वया गतं गुरु ॥ उगत्समस्तं विष्णुना वसंतं वा  
 कुरु कुरु कुरु कुरु ॥ विष्णु कुरु कुरु कुरु मया मा ऊनैर्कं यथांती ॥ अत न सर्वदृष्टानां पुण्यं  
 यास्तु संप्रय ॥ सर्वदृष्टानां थय कुरु कुरु कुरु कुरु ॥ ॐ स्वास्तु मा ऊनैर्कं ॥ ० ॥  
 गुरुमस्व विना यक भक्तिं अयि सर्वभाग्यं ॥ ॥ अथ सर्वभाग्यं यतिमादानं विधिं व-  
 कुरुं यथा ॥ गुरु यतिमानां कातं गुरुतद्विधिं वया ॥ कर्म विधा कसां ॥ अनूकं वया ॥ ग-  
 वृत्तं भाग्यं विधिं कुरु ॥ गुरुं गुरुं वया ॥ गुरुं वया ॥ गुरुं वया ॥ गुरुं वया ॥ गुरुं वया ॥



न वदन्त न विदन्ति नासा गुण्यस्तर्क्या तर्क्यन्याविद्यार्धगमन। दंष्ट्रा दंष्ट्रा धन्युर्दूरा त्यागि म  
दक्षिणी॥ उग्रनरि मूर्खयावत्सुहृदुःखाश्च याः कृष्णविनीलूकेण वागमर्त्तः पुनितूर्य्यं युकल्ययन॥  
उग्र उग्र उग्र ॥ गतं मस्या ह्यमर्द्धं वा हस्मानिष्कमिह ननु ॥ तदवयति मादार्तं कर्मणि निष्कयिस्व  
न ॥ कर्मणि निष्क उक्तं गवि। गव मूर्ति स्वयिः स्वर्थ ॥ स्वगः मूर्तिस्त्वा वक्तुं दन स्वग क्त्वा वा ॥ अ  
भा स्यात्थं न वा दद्यात् मदादार्तं न वा धियो। पुनितूर्य्यं क्रातिवागस्य ५१ स्व। भा का वदं रव ॥ यथवा  
मः पुवाधक दहस्तः सततकुर्मा। गृहल पुनितूर्य्यं सुहृन्ना गेर्द्धि आरुम ॥ मर्कुलाननर्तद  
द्यात्सुर्व्वनीत्या कृणावर्त्तन ॥ वार मिथ्यवृत्तीया तदूर्य्यं धा धिनिः सरु ॥ अ वा र्थं यजमानकु  
अनूयायात गतं यद ॥ यदानीत्यर्थः ॥ दं वगूल नो गम दो रिगूल दाना धुर्क ॥ तद्विषयम  
वीति मरुर्द्धव ॥ निष्कर्षं क्रुय ग स नियात मल मूग वा गम दो दान वि। ग धा ना क क्त दि य य मि  
नि ॥ ॥ अथ सर्वनागरु वयति मादान विधिः ॥ कर्म विद्या क सात्र ॥ अथ कर्म क्रियाया यो  
हर्द्धु धा धि वि य य यो। कृष्ण सरुत्वा कृणा अ गदद्यात् धा धि कर्मि त ॥ सर्वपाप पुत्र स्वर्थ म



थद्याधिविद्यय्ययः॥ आधिविद्यय्यया आधिमूर्तिः॥ आर्गकादवतायगु. नगवृद्धाधिवदता। पाथलसूर्य  
 ४ सर्वेषां वागमलमधिदेवता॥ आर्गका वाग॥ नगसादवतापृथ्व्यर्थः॥ नग आधिमूर्तिदानसूर्य  
 त्वेनपृथ्व्यर्थः॥ नगवागपुतिमामानंनर्गनस्या ह्येव ह्येव ल्यनननमूर्क॥ ॥ सूर्यपुतिमा  
 नमाह॥ रुम्नः यत्नारुदह्मिह। तदह्मिह युक्त्ययः॥ सूर्यं दित्तावनययः ददधनं कवदयः॥  
 आधियुतिमायामथं गदवदयविमावमितिमहाध्वं॥ नग गदवपुतिमामानमित्यननसर्व  
 वागमूर्तिवृत्तानिक्कादिविधानस्यतनेवाकं॥ अस्यसूर्यपुतिमामगविषयत्वनवाविगाथश्च॥  
 मागुगद्वादशैवाः रुक्मासैर्मलुलं रुम्न। तत्यादनारुवयाशां रुक्मा कुयीवदिकां॥ आवा  
 र्थवृत्तयाककि. नमः संस्कारपूर्वकं। नकिनपुतिमथानकिपूजयदित्यर्थः॥ वृत्तिमहाध्वं॥  
 रुम्नायवाससांवागे. पुतिमामधिवासाव। अर्द्धवागेयूगाविषे. ध्वं कुर्किर्मलुयादहिः॥ याया  
 यायनमांसादि. वलिनिक्षिप्यमनुग॥ ॥ मनुमाह॥ आदित्यावमवावृत्तादवाहनानिय  
 न्तम॥ वलिनाननदहन. नकि कर्त्तुं सवर्णः॥ जागृयाद्वसिष्ठात्वा. नवयन्वा मसीन



व॥ निर्मल वन्दव कृष्ण कुमाल्या नल यनः॥ सार्वकावः सयर्थानि मलय स्याद्विदिकां॥ विदि  
 कायनी स्वर्थः॥ मलय नीव कुव मुवा तनम धृष्ट दलाम्बुजं॥ निखित्वा पिष्ट वृक्षेन तणा पर्ययनि  
 कुमातः॥ गमय मलय लाया कावल पित वदिका र्या यद्यनि खदि स्वर्थः॥ तिलानां यत्र व कुवे कि  
 रिडा ने स्रथ धृष्टिः॥ पले धृष्टु किर्दी खावा गामया गुरु वन्तव॥ गमल ये व कुरोः पूर्ण मो वल  
 द्वाक वलनं॥ लायिगां यं व गयान वसुल काल गमिनी॥ यति मामयि विन्यस्य तद वदिका क  
 री॥ दीयमान यरा वरु सा नु सिन्दूर ह धिनी॥ दिशा त वल मयनी व क प्र गंध वाससी॥ मणि गद  
 मान विन्द स्या कर्णिका र्या निष ड्वी॥ सगि सयनी॥ मूल पूर्व दिक् गण १॥ कु का गम व वृक्ष समः॥  
 मूल आदिता ग॥ उर्व मन्द व क ह ध्व न दं गालि गि ल कि ल ॥ मधु मः पूर्व दिक् ग॥ २॥ व व ल ना नि  
 विन्यस ॥ यथ स्व नाम म कुल ग न्य वृथा क ता दि रि ॥ पूर्व दिक् वा वै ध्रुव र्य की ना हा नी नि व द य  
 ॥ कण व सहिता विषे धृष्टु किर्दी खावा गामया गुरु वन्तव॥ निर्वृत्त न वली वसे य कां ध्रुमि क व ल ॥ अश्व  
 स्मना नु ज स्मना दली का र्थ संग मात॥ वाजे द्वा वा वल क ले मृत्तिका नी स व न्द ने ॥ मृत्तिकाः



[illegible]



कर्मिणः समगर्हणमपि न ॥ त्रिः पुष्ट्युत्तमः ॥ किं वा च यद्वा क्लेशः सहो गेः स्नानकलनमपि  
वरिषि शस्ययै न ॥ मार्क्ययत्र यथा पूर्वः दर्शनं न वा ससा ॥ वृत्तवृत्त्यतिगृहीयात्सदकिं  
मथः पुत्रः ॥ न कर्तव्यं वागिर्लं आदृत्य प्रकियत्यर्थः ॥ उरुना हि मूर्खः ॥ तव कुमाल्या नूत्नयनः ॥  
किं यत्तुर्लानिर्बुद्धिः वक्षाना नुविभाजनं ॥ सति सै रव वेदुविभाजनं कुर्यात् ॥ पूर्वहि मूर्खमात्रा  
र्यमस्य र्यपि मर्दुता ॥ पुदया दक्षिणं तस्मै मधुसूतसमं यस्मिन् ॥ ॥ पुतिमादानं मनुमा  
ह ॥ पश्चाद्भवः यद्यकत्रः सफाश्च वथवाहनः ॥ पुतिमानं न दहनं ॥ दुष्टा सर्वजगदुत्रः ॥  
जन्मनियत्याय मन्त्रजन्मनिवाहता ॥ सयस्ययायस्यया र्या ॥ तत्सर्वं मयत्तमो ॥ पुत्यया र्ज्ञानं  
॥ मनुजानं न दत्तारं ॥ पुलियस्य कमायात्रा ॥ आसीमानं मनूवञ्च ॥ तन्मूर्खं नावला कयत् ॥ आचा  
र्यस्य नूत्नः ॥ पुविष्ठा रवनीनिर्ज ॥ आचार्यस्य पुतिगृहीत्वा तद नूत्नं ति महार्कवशा ॥  
॥ दक्षिणं दत्त्वा कत्वा बाधनमन्विना ॥ धनं न विवर्ष्य तर्ष्य दीनानाथान् वस्तिनान् ॥ मंगल  
धनिनागायेः स सर्वेषां धियत्तवे ॥ मनुहिर्मनुहिः ॥ स्नातः ॥ रुतको रुक मलुर्ल ॥ यमेन यगाः



यूष्मद्वाययित्वा न द्विजान् ॥ तद्वद्वान् दद्वान् वा क्रियाया दुष्प्रसिद्धयः । सिद्धने रुजयित्वाथ  
 स्वयं कुंजीत वन्धुहि ॥ यथं वाग्मः १ पुवाधनं वाजयन् दद्वान् दयः १ तर्वा तर्वापुति द्दन्द दाने वि  
 श्रापयत्ततः ॥ पुति द्दन्दः १ पुतिमा ॥ ॥ अथ स्यपि नाम रुद्वान् १ पुथागः ॥ तर्वा डाग्म कनिदानया  
 यश्चिह्नं कृत्वा धादं दग्म रुद्वान् मलुयं विक्षय तदनन्तरीन् मलुय चतुर्थं न विरुतां ॥  
 रुत्तानेन वदि कृत्वा तं कदान दिना नृवादि पूर्वक दग्म कालो संकीर्णमूकामूकान् यतवयात  
 कजनिता मूकया धया वच्चुवी वा विवोधन नागर्थं किष्वा वाग्मर्थं वा मूकया धिपुतिमा दानं  
 ह्यर्थपुतिमा दानं च कनिष्ठां तिसं कस्य यः ॥ निदानां द्वावर्णं नतिकचित् ॥ तत्तागलपतिः  
 मिष्टदवर्णं वसं द्दग्म यूष्मद्वा वना दी आवाय विद्वन्निगु जायक ववन्म निरुथा ॥ अ  
 त्विजधत्वा १ ॥ जायकानामनियमः ॥ ततः रुताय वा से आवाय वा जो यत्तद्वद्विद्वत्सव  
 र्णं कर्तुं । तद्वागपुतिमा ममूकया धिद्वान् मधिवा सया मीति आवाच नमा कनना मनुलपू  
 जय ॥ ततः पूर्वक यविमानां दिनं कवद्वयधृत यद्वापुतिमा मा घृति १ ह्यर्थ आदित्यामि



मिमोवाष्ट्रकवलसूयाधिवदतामधिवामयामीत्यावाञ्जननेवपूजय॥ अथदवलीगमृषि ८  
सूयाधिवतामयणीकृच्छ्र॥ तत्रआवाथाधिवाममृषिः ८ सरुयलेयाद्वरि ८ प्राच्यायायसमा  
सादिवर्ति॥ आदिद्यावसवा नूदादवाहतानियन्नम॥ वलिनाननदहन नमकिंकुर्वन्नुनिर्य  
न॥ ॐ तिमन्कुलदया॥ तत्रैवमवजागवर्लकुर्य॥ उवमिस्नात्वा नवाहनगुक्तावासागुक्ता  
त्यानूलयन आवाथायिथविधिमलुयपूजाविधयवदहयविवर्तुलैवकुवसुवागममय  
नायलियातन्मध्वनानावर्लधिष्टवृत्तनाष्टदलमर्जुलिखित्वा नश्यवितिलायथमकिणि  
ककुव ८ पयाष्ट्रकालमिगानवागी नकुर्य॥ तद्वयवियलद्वयनवलवकुवयनवाद्यदि  
ननामयागुनिधायनसूभलिष्टवृदलैकृत्वायालावर्लकृत्वायैवगर्ग॥ मध्विनीवागपुनि  
मा मधिवदतापुनिमात्रपूर्वकिमनुखाकलिंकार्याचस॥ तत्रसूर्यपुनिमासोवर्ल्यधस्त  
था॥ ॥ तत्रसूर्यध्वनी॥ दीप्यमानपुणवर्कसा नुसिन्दुवहविगी। यद्यदधनैहसाखाध  
ववर्कद्विस्तवनी॥ दिवाहवर्लसैवनीवकमुगमधवासमी। सांगहमानविन्दस्यकलिंका



२ आनाह इति दश। स्वकिनामिमांतामिति पञ्च। सन्नं व्याप्ति पञ्च।  
दश।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥



तामिह्यनूवाकः॥ ततश्चतुरिः॥ वाक्त्रलेनयूनाधिकमयूतं तदद्वैवातदद्वैवासूर्यमर्तुयायु  
कमसूक्तवत्रागयतिमादवतामर्तुजय॥ सूर्यातनगहलमनाननकगमनानुपधानजय  
संख्यातामूनसंख्यायायथागकिजायय॥ तत आग्रायांकुलेसुलिलवास्वभावाकवि  
धिनानिस्त्रायेनववृणयलेकृत्वाकर्ममिवायववृत्तितानुकुमलेशकृत्वा॥ हामसंख्या  
वत्रागदवतासूर्यायावद्वसंदसुमसूक्तगतिजंगदवतामेवगतंजुष्टाविंशतिर्विजंगह  
मयपधानहामाथक्यामूनसंख्याकल्या॥ अथहाममनु॥ पधानदवतायास्तुर्लिंगकानाममनु  
दवः॥ यागानेवस्त्रायाः॥ ॥ अथहाममनु॥ पधानदवतायास्तुर्लिंगकानाममनु  
वा॥ सूर्यास्याकनउद्यतयतिनृत्वावा॥ अथनृवस्यकाव्ययुगः॥ स्वस्वनादः॥ सूर्यानिद  
युक्तुकनूतिगुक्तस्य॥ अग्निर्मूर्धस्यगभवकस्य॥ उद्वृष्टस्यतिवृष्टस्य॥ कयाननूतिवाहा॥  
वृहस्यगच्छतिवृहस्यगं॥ नन्नादवीतिगनं॥ अथायस्वतिसामस्य॥ कर्तुंकव्यनितिकता॥  
नन्नागर्भनूअग्निनः॥ याउकृत्तिकल्यादीन्यष्टावक्त्रेवाक्त्रायेकैकमनु॥ अवायः॥ स्विष्ट



[illegible]



नमः कृतामूकामूकाद्यतयातहं तुकामूकश्याधियावच्छरीराविनाधनसमूलदयनद्विपुत्राश  
र्थममूकश्याधियुतिमांसायस्कावा ममूकगमगामूकगमार्द्धमूकगमगामयामूकगमर्द्धमूक  
गमयमपुददः॥ ति श्याधियुतिमां दद्यात् ॥ ॥ गतामर्क्य (०७) ॥ यथा हवः यद्यकवः सकाश  
वधवाहनः। पुतिमाननदहनः। दुधत्सर्वजगद्गुरुः॥ ॥ रुजमनियत्याय मन्यजमनिवा  
दगी। मयत्ययायत्ययाख्या। तत्सर्वं समयत्त्वसो। यद्ययगवि। गवताविदितः साधन  
दननर्क्यव० नीयः॥ गतः संकल्पपूर्वकं कृतस्यामूकदानस्य पुतिष्ठासिद्धर्थः॥  
दं सुवर्णं दक्षिणत्वनतुल्यं संपुददः॥ ॥ ति दयदशुशुर्णं सुवर्णं वि। गवतउकं वायं  
थागकिवादशा॥ गतः सूर्याधिदवतापुतिमां गवेव संकल्पपूर्वकं तस्मै अन्यस्मेवापूर्ववदद्या  
त् ॥ यथा हवः॥ त्यादिमर्क्य (०७) ॥ गतादक्षिणं दत्त्वा पुतिषत्यासीमां गदनूवृत्ततन्मूर्खनयः॥  
७॥ आचार्यलनूज्ञानिजगृहं पुविश्यात् ॥ त्या द्वात्रयालस्यधुसंकल्पपूर्वकं यथागकिद  
क्षिणं दत्त्वादक्षिणदिस्मत्त्वा एहीषमानो व। धसवीर्यत्वायावांशयवाग्निनीधेन नर्विवधाउ



(अथ वाचः संवृष्ट दीनानां धनं ह विदकि एव कुदिना सीताया वृष्टि कृपा पित कल (अथ वाचः संवृष्ट  
 धनियन्त्र वायं मे मन्त्राणि मन्त्रिणः स्नातः कुमात्या नून लयनः पूज्यं ह वाचयित्वा गतं तद ह वा  
 तद ह वा वाच्यं न ता उच्यित्वा सी कल्या वा स ह मिता दि युगा मु जी गति ॥ ॥ इति श्रीम  
 कामध्वन रुद्र सून श्रीमन्ना वायं ल रुद्र सून श्रीम कामध्वन रुद्र सून दिन कवर रुद्र कर्ण कर्म विपा  
 कसाय सर्वना गहन यु क वर्ण ॥ ॥ अथ वागवि (अथ ह वासि ॥ तगु वागमि विष्णु ॥ कः  
 विद ह वायं व रुवनि ॥ यथा कया दयः ॥ कविद ह वायं वायं व रुवनि ॥ यथा वाग (अथ ह  
 दयः ॥ कविद ह क दयः उर्व रुवनि ॥ नयि द्वि विष्णु ॥ अनियत द (अथ ल्यन्ताः स्नात दयः ॥ नि  
 यत द (अथ ल्यन्ताः नीर्षादि वागमः ॥ तगु दोद रुवायि वाग रुवा ल्य श्रुतं ॥ ॥ तगु दोद रुव  
 नालि ॥ कर्म विपा क स्रक्ष नि (अथ ॥ वृक्ष रुवा गु वृक्ष वा गु वृक्ष ल्य रि म र्ख लं ॥ आत्मा (अथ जीव रु  
 नर्न य व दाय पु का लर्न ॥ य व पी उ क व र्ख व नि वि द्वि पि नि ता नि ता ॥ गुरु (अथ सी गति न रि यी य  
 व रु ल्य ग का रि ता ॥ य व रा ग स हि वृत्त य वार्थ य रु नि सदा ॥ उने श्रुते ॥ सम स्रक्ष नि दाने  
 रु स्य स रु व इति ॥ ॥ याध ॥ कयी स्या रु ग मा व (अथ ॥ रु ग मा व र्ख क्षा य उ ला दि यु नि व र्ख ॥

४८



[illegible]



मान्निर्गतिं विषयं वृत्तं गत्यर्हं दद्यान्मनुजं संयुतं । खगः पृथ्वायनं (ग) सो द्वादशमासं गयीत नृणां यद्यना  
न नदरुन पीलितं सुवलिमुम ॥ वाजयन्तं यद्वदानं मेधितं मेवाकं ॥ ॥ अथ कथं पुनिकृतिदानी ॥  
वक्रा ॥ ॥ धर्मज्ञानात् विद्वान् यथायथं दद्यात्तियः ॥ वाजयन्तं यद्वदानं मेधितं मेवाकं ॥ वागयीति दानं ॥  
पूर्वकिं न विधानं न पुदद्यात्यतिवृत्तं ॥ पूर्वकिं विधिनामं कविधिः ॥ पुनिकृतिं लक्ष्मणं कर्म  
वियोकसा ॥ वाजयन्तं यद्वदानं मेधितं मेवाकं ॥ दधनि नृणां दद्यात्तियः ॥ दद्यात्तियः ॥  
अथ ॥ ॥ अथ यद्वदानं मेधितं मेवाकं ॥ वाजयन्तं यद्वदानं मेधितं मेवाकं ॥ दद्यात्तियः ॥ दद्यात्तियः ॥  
मिश्रान् । अलवन्तु यद्वदानं मेधितं मेवाकं ॥ दद्यात्तियः ॥ दद्यात्तियः ॥ दद्यात्तियः ॥  
कथं वागः पञ्चम्यति ॥ आदियद्वदानं मेधितं मेवाकं ॥ दद्यात्तियः ॥ दद्यात्तियः ॥  
स्नानिवा ॥ घृतं धनं गुणं धनं विधानं स्यादक्षरं नित्यं ॥ ॥ मरुत्तं वमात्तं ॥ गुणं धनं  
विधानं स्यात्तियः ॥ यद्वदानं मेधितं मेवाकं ॥ दद्यात्तियः ॥ दद्यात्तियः ॥  
याजीर्विचित्रं मनुवि ॥ गमयन्तं यद्वदानं मेधितं मेवाकं ॥ दद्यात्तियः ॥ दद्यात्तियः ॥



स्ययविकल्पयत् ॥ पाद्वरवीकल्पयन्नन मूदखादीमवत्सका ॥ मूखनिव ॥ ३ रुमागुठ ॥ धन ४ स्याः  
सदासाववकुष्यी ॥ सावासा मधुमायाका ॥ कनिष्ठासावकेनकु ॥ वकुध्म ॥ (ननवत्स ४ स्यात् ॥ गृह  
विरुानसावग ॥ धनवत्सो घृतासोमो ॥ सिगसु ॥ वरावृणो ॥ गकि कर्षु विद्रयादी ॥ धुविमका  
लका ॥ ॥ धुकि मूका रुती ॥ सिगसु वनिनासा ॥ सिगकी वत्सकस्य ली ॥ कस्यल ४ सा ॥ तामगलु  
लपृक्षोमो ॥ सिगवा मवलोमकी ॥ गलुकी ककूत गलु सुलं व ॥ विद्रमगुय ॥ गधमो ॥ नवनीगसु  
नान्विगो ॥ कोमयूको कास्यदाहा ॥ विन्दनीलकणावकी ॥ सुवर्णगं गहवलो ॥ वाजगखूवसंय  
गो ॥ नानादलमयेदने ॥ धालगन्धकवकुको ॥ दने वयलदिती ॥ गन्धकवकुको ४ कयवादि  
युविगी वाजगयाग घाली घया ॥ ॥ स्यवव वयित्वागो ॥ धूयदीये सुधार्चय ॥ ॥ धनस्य पृ  
धिवीसर्वा ॥ यस्मात्कगवसंनिता ॥ सर्वयापहवानिह्य ॥ अग ४ भर्कि वयकुम ॥ अयंकूजाम  
कु ॥ ३ रुनं किमकुल मनुकुतिमरुल्लव ॥ मदनवत्तादी कुयूजामकुनाक ॥ यालक्षीसर्व  
रुगाना ॥ यावदह सवकिता ॥ धनवृथल सादवी ॥ ममभर्कि वयकु ॥ ॥ दहसुयावन



डा. लं. लं. क. व. स. य. प्रि. या. स. दा. ॥ धे. न. वृ. य. ल. सा. द. वी. म. म. या. र्प. य. या. रु. दु. ॥ वि. श्वा. र्वा. क. सि. या. ल. श्री. ॥ स्वा. हा. या.  
व. वि. हा. व. सा. ॥ व. डा. र्क. ग. क. ग. कि. र्वा. ॥ धे. न. वृ. या. मु. सा. ग्रि. थ. ॥ व. रु. म. र्वा. स. या. ल. श्री. र्वा. लि. श्री. र्वा. न. द.  
स. य. ल. श्री. र्वा. ता. क. या. ता. नां. सा. धे. न. र्वा. व. दा. मु. म. ॥ स्व. ध. र्वा. यि. न. म. र्वा. नां. स्वा. हा. य. रु. दु. जा. न. था. ॥ स.  
वृ. या. य. रु. वा. धे. न. स. सा. क्का. कि. य. य. रु. म. ॥ उ. व. मा. म. श. नां. धे. न. वा. क्का. य. नि. व. द. य. ॥

पू. रु. द. (म. पु. ति. ग्र. रु. ॥ वि. ध. न. म. ग. धे. न. नां. स. र्वा. सा. मि. रु. य. श. न. ॥ स. र्वा. तां. स्व. न. य. धे. न. रि.  
ना. ना. व. रु. मा. दा. धे. न. नां. ॥ ग. ग. ॥ ग. सा. द. ग. या. द. मु. कि. ॥ क. ल्प. दी. ना. म. र्वा. वा. ना. ॥ या. मु. या. य. वि. ना. लि.  
न. ॥ य. श. न. क. द. ग. धे. न. व. ॥ ग. सां. स्व. न. र्वा. व. आ. मि. ना. मा. नि. व. न. वा. धि. य. ॥ पु. थ. मा. रु. उ. धे. न. ॥ स्या. न. य.  
ग. धे. न. रु. था. य. वा. ॥ ति. त. धे. न. रु. ती. या. व. य. रु. र्वा. ज. ल. धे. न. का. ॥ की. व. धे. न. र्वा. वि. र्वा. ना. म. ध. धे.  
न. रु. था. व. वा. ॥ स. क. मी. ग. क. वा. धे. न. र्वा. धि. धे. न. रु. था. वृ. मी. ॥ व. स. धे. न. र्वा. न. व. मी. द. ग. मी. स्या. स्व.  
वृ. य. ग. ॥ क. ता. ॥ स्या. र्वा. व. धे. न. ना. मि. ग. वा. सां. रु. ना. ग. य. ॥ क. रु. ग. व. न. क. ल. ग. ॥ य. वि. मा. र्वा. व. या. श.  
ग. ॥ स. र्वा. धे. न. म. या. व. क. चि. दि. क्का. मि. ना. न. वा. ॥ न. व. नी. न. न. व. र्वा. ग. थ. न. यि. म. रु. व. य. ॥ स.

५०



वर्द्धादिधनावयिषु उधनूधमानितिदिशति॥ उगधवविधानस्यादतयायस्कग॥ स्मृता॥ उक॥ ध  
नूदानमकालरुलवाह॥ ॥ मन्वावाहनसंयुक्तासदायवलिपवलि। यथाशब्दापदानथा। उ  
किमुकिरुलपदा॥ उउधनादयादया। उयनागदिपवस॥ वागनिर्हलार्थदानरुनकाल  
नियम॥ ॥ लीनक॥ लीनकाहं पुत्रआमि। भानियस्त्रयलानिनी। पुयुअनं पुमन्यर्थ  
यस्त्रालमृषिहि॥ यूना॥ विपुलविद्ववायेव। कावयकांतिउन्मस। नदगवाउरुवाव। वदु  
सुथायवागया॥ वामाहर्गत्रयव्यय॥ पुतिमीवहिबल्लयी। एकल्याघाष्टविपुल। गित  
यैलाऊयरुग॥ आश्रमकावययनी। तगकलायथाविधि॥ अग्रदक्षिणमासीनं वाससाव  
ष्टुदक्षिणं। उदक्षरुतत्पुनग॥ पुतिमीवहिबल्लयी॥ ॥ श्रीमाधायशुक्रयान्मधुपुवाश्र  
रागया॥ अक्षिपुहतिपुयंगी। पुष्टुचैशुक्रयान्मधुपु॥ अक्षिपुहतिनासिकास्यामिगिपुकेनय  
कल॥ आश्रमिमश्रुपुतिमी। कांत्तनीशुक्रयान्मधुपु॥ सोविष्टकगमान्त्य। काम। नयसमाय  
य॥ अथश्र। नयसमाय। यश्रीतिषुइदक्षरु॥ कलापुदक्षिणंयश्रीसंल्यजंत्यावर्कपुन



॥ अग्निहोत्रं पुनर्मादया. दक्षिणं मृत्विजं स्वयं। वासश्च दत्त्वा विषाक्षं. सहस्रं हाजयत् रुतः॥ द्विजाग्र  
ययधं गच्छि. दत्त्वाथ स्वस्तिवाचनं॥ चतुर्दशैकं कथयत् वर्णं चतुर्दशैकं॥ ॥ तदूर्कं कालिकायूना। ॥  
ॐ दैव्यं अतमाख्यानं यः शृणोति सकृन्नरः॥ वाजयन्त्यं तस्य न कदापि हविः श्रुतिः॥ ॐ मित्रं य  
होति॥ अथ दत्तं दत्तं॥ कर्मविद्याकसूत्रानि। ॥ शुभास्तुत्याहिगमनं विद्वद्वः सूर्यमावर्णं। यत्र  
दत्तं कर्तव्यं। चत्वारो दत्तं दत्तं॥ सिंहो वत्सा कनकु॥ अन्नदाही दत्तं दत्तं गवदाही सगर्  
द्वीति॥ ॥ तृतीयो दत्तं दत्तं॥ गन्धः॥ यत्र पुनः कुर्वन् कर्म पापापि पुनश्च तस्य॥ तत्रैव  
सदा नीतं दत्तं दत्तं सुदनसः॥ अथ यत्र सखायं पुत्रं पुत्रं पुत्रं। जातं दत्तं दत्तं  
वा दत्तं हाजयत् रुतः॥ सुवामांसा यहावायेर्वलिः सर्वं गलस्यं। सहस्रकलणं स्नानं। तत्र  
ऊनमवयवो दत्तं दत्तं जवहाऊनया नृत्यतां रुतः॥ सुवादिवलिबधिकात्रिंशदनं स्नानं। व  
दस्य वृद्धं यूरुषस्तु कनविष्णुः॥ नीतं दत्तं तथैकं दत्तं दत्तं दत्तं॥ उष्ट्रं दत्तं दत्तं  
तः स्यात् रुत्याय स्यान्नेये रुतः॥ सहस्रकलणं स्नानं वृद्धं गलस्यं कावयः॥ वा दत्तं हाजयत् रुतः॥

२ ॐ नि कर्म वि वा क स ग्राह ॥ ॥ अथ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ कर्म वि वा क स ग्राह ॥ ॥ मंगल वृच का य वि सत न का य वा न न ॥



कक्षा जयदेजातवदसं ॥ ॥ माह्ववतकुयि ॥ उल्लूकनमहगस्य प्रकृष्टादलिधवनमिति ।  
दुललगतवृद्धलनमकानवाकेविल्यर्थः ॥ ॥ अथभगतायाकं विविधद्वन्द्वं ॥ देवस्वरुवत्त  
वेवजायगविविधद्वन्द्वः । द्वा नामहा द्वन्द्वेव नो जावेष्मव नवच ॥ द्वन्द्वं नृदुर्जं कृष्टा न्महानृदुम  
हा द्वन्द्वम् । महानृदु जय जोषु वेष्मवतद्वयं जयत ॥ ॥ अथ सर्वद्वन्द्वं कृष्टदानी ॥ यादो ॥ अ  
गवदाही द्वन्द्ववान् जायतं तगुनिष्कृतिः । नवकर्म समानीयः मृग्यं वा वलं दृष्टं ॥ लादिगीकाष्ट  
वादिगीः स्त्रायथ रुद्रलायनि । यत्रिमालं तलुलानी । डालयं चकमिष्टागं ॥ विगुद्धास्तुलायाया  
॥ अथ तव सुलवद्वयं । मधूनायाथ वाश्च न खे । लुनाथ गुगुनवा ॥ तेलनायां तमावागी । पूवयं च  
किं नानवः ॥ अथ तव मूक्ये वद्वयं रुद्रगन्धपूष्ये मथायये ॥ कामश्च पूर्ववत्कायः । समिदायं च नृ  
त्कटः । स्रवः । लूनयथा गच्छावा द्वा लयनिवदय ॥ तस्मै द्रुतवगवृत्तं शुतगीलाय सैच्छती । मृग  
लामनविधिवत्कृजयित्वा द्वन्द्वीनवः । महगदवदवंग । वासूदवयवात्यवा । कृष्टना ननद  
रुनः । द्वन्द्वः । द्विष्टं युगमश्नु ॥ नकाकर्वं स नियतं । नृतीयकचवुर्थको । यादिकं मासिकं वायिसा



म्वत्सविकमववा॥ यनक सततागत्व मीतमूषू दवालिच॥ द्विगीयह नगलय तथा गव दवालि  
 व॥ नागयतां मम किं पं वासदवमरुध्वो॥ अयत्र वकादि लि॥ कू मृ पूजात्रोदलवे वूवनवा  
 कू रदानमकुस्था रुयय काशकत्वा ता हाभा यन्य नम नयू र्वव ७॥ तिलस्तन व ४॥ सूव (धू) न  
 यूगं॥ अथ यव॥ रुमा डोनावसिंह॥ तथा महा दवग सु वीधो दवस्य मृ द्धनि। सततन व सि  
 हस्य कथा द्वाका वय दध ४॥ हर्म व राजनं च व तस्य धाय ४ युग सति॥ हर्म ल क हर्मन व  
 सिंहमकुल॥ नत्य क व लीत॥ ॥ अथ दव न र्य ली॥ तगा दो तिल युतां ज लि प अ लो ग वि  
 र्दता य सी व न र्य थ ७॥ तग म कु॥ या सो स व स्व नी नी व कू सा। गग स मू रु व ४। रिवा ए दव  
 दाहन मृगा ग वि न्द सी कू क ४। दवा य न रु थ त स्मे ददा म्भ ग लि ला द क॥ तथा॥ न र्था व न  
 म्भ दा नी व अ यु ग सा य सो मृ त ४। रा गो द व वि ना ग य त स्मे द र्था गि ला द क॥ दव न र्य ल म कु १॥  
 रि या रु म्भ य रु व ल मि जि व मु रि ला व न १। म म्भ यी त ४ स र्व द द्या स र्वी म य य नि र्द व ४॥ दव  
 न र्य ल अ र्शा रु व न ना य यू ना ना सी र्वा अ रु ना ४ यू व्या लि च व का नी ति म रु र्ध व ४॥ • ॥

५२



अथ दानयुक्तिदानं ॥ कर्मवियाकसानं ॥ शिवाङ्गमपुनरुक्तं ॥ नकाकमिनिनाङ्गन ॥ तन्म  
पुनरुक्तं ॥ तन्मसायुधं ॥ अथ दानयुक्तिदानं ॥ कर्मवियाकसानं ॥ नकाकमिनिनाङ्गन ॥ तन्म  
स्वनीचवाङ्मनी ॥ योगकुरु दानयुक्तिदानं ॥ गृह्णाति ननसंताय ॥ दानीतवतिमानवशा ॥ वातायर्गसंग  
यनं ॥ कर्माच्चमधूमिष्टिगेश ॥ वसालयेनवेहमा ॥ जातवदसमनुग ॥ नामांसदसुजय ॥ दयुग  
जातवदसं ॥ नकाहिवयुदानं ॥ वाङ्मनीतना ॥ ऊयदग ॥ हामासुदसु ॥ विष्णुसदसुनाम  
जातवदसया ॥ युत्यकमयुगजयसुदरुने ॥ वरुमन्तिमरु ॥ ॥ वलिदानयुका  
वमारु ॥ वायसंकाश्यागुम ॥ धुते ॥ अथे ॥ यत्रिस्तुतं ॥ निदिद्यगभ्यपूषाये ॥ गृहेपूजाविधा  
यत्र ॥ देवालयदिद्ययद्वानिदिद्ययत्रुव्याथ ॥ मनुमारु ॥ पुगृक्रीष्टवलिचर्म ॥ दारुवृ  
यमहादान ॥ अरुवस्यसूर्यसिद्धि ॥ येयद्वर्तमरुगुरु ॥ ॥ अथिकाहिकादिदानरुनालि ॥  
कर्मवियाकसानं ॥ तन्मनीथावृथपालिदिनका ॥ निदययय ॥ आचारवदिनायय ॥ यत्रधर्म  
स्यनिदक ॥ अथमनिनगायय ॥ तानतानुदानसंरुक ॥ दानीगृह्णातिनमा ॥ यकनागदानी



व ॥ दिवा गुल गिवा गुल च दूना गुल वल च ॥ मीत वल सत वल वल ॥ मीत वल सत वल वल ॥ मीत वल सत वल वल ॥ मीत वल सत वल वल ॥  
 निष्कृति ॥ वा नाय लं पु कृ वी ग. कृ कृ वे वा ति कृ कृ की ॥ आ अ हा भा या द ति रि न र्श रु न स रु सु की ॥ स  
 रु काल पुवा ले य. म ध कृ कृ रु या रु थ ॥ जा त व द स म रु ल. द श द्ध म व ग कि त ॥ स रु सु क ल म ल  
 न मी व व स य का व य ॥ अ र्श रु न स रु सु मि त्य र्थ ॥ स्नान नू ड ल ॥ व ति पु का व मा रु ॥ कां भू या गु  
 म ध यू य. पा य सा य स म कृ वा ॥ नि कि या रु ध उ ऊ ति. कृ म मे ॥ ग व क र्म मी ॥ ग भू धू या दि हि ॥  
 मे व स्नान नू ड ल ॥ पु रु यि त्वा स हा म न. ज ल क र्म न स य र्ग ॥ म धा दि क व लि द शान्म  
 रु नान न स य र्ग ॥ या रु क श्या हि क या व य य म व व ति ॥ अ रु ॥ गु रु ॥ स हा म न ति वृ धि क हा  
 मा यि मे व स्नान नू ड ल ॥ पु रु द्री व व लि च म मे का हि क म हा द व ॥ आ रु व स य स र्वी सा द्वि. पु य रु  
 त म हा गु रु ॥ दि वा दि द व वृ द्या हि क श्या हि क र्था दू रु ॥ न व व व लि दान स्नान वि ण य मा रु ॥  
 द्या हि क र्था द व मा रु स्नान गु रु व लि किय ॥ आ हि क न दि क ग स. स नी य वृ व र स य ॥ वि  
 श्वा ना य न न द या वा रु धि क म हा द व ॥ वा रु धि क द व व ति वि ण य मा रु ॥ ॥ वि श्वा ना य

५३



गनं कृत्वा मलुनं गयी ० की। वडुष्या दं स्कावयित्वा यदं वृद्ध पयतन ॥ कूरुं सै स्कावयय रु गयी  
० स्कावयिसं यत ॥ तस्मिन् कूरु वलिंदया रुगना पृथया ये सै। लाजों श्रमधूनों श्रेव सयि ॥ धि  
० कभं वव ॥ वक्रवासा वक्रपृथी गृहीयाद वृत्ताविधि। गन्धयुष्यादिकं वक्रं यथाडागस्य गभन  
य ॥ सूना अ निषिद्धा ॥ गीत कनकु विगव ॥ विष्णावाय गनं यदा मूलं येत्यदु मस्य वा। गीत क  
व विधीनन सै यगश्च रुव दलि ॥ वलिरुर्ल क पूवसु ॥ क पूवसु रुवीय क ॥ कभलं या य सै  
येव तिसां श्रेव सत नृत्ता ॥ कांश्यागु विनिक्षिप्य स्वर्णतद्वय विन्यस ॥ पूर्ण क म न स हि गी  
वलिं तग विनिक्षिप्य ॥ वृद्धयित्वा यदं धूय दीयादिरि व गति ॥ य गृहीष्ट वलिं च सै क नि  
तस्य कवा यदा ॥ यकि वा रुन। गविन्द वना रु व दन पुरा। असू न प्र सूव। प्र व न व सिं द ग दा  
धव ॥ उषू क व ति। गव ॥ उषू क व म रु गभन समीध वलि मा रु व ॥ ना उ वृ द स्य मूल वा व  
लि ॥ पूर्व कि उ व दि ॥ पूर्व कि गी त कवा क ॥ अ ग म रु ॥ गभ की व ध व ला का व। गि मूल ध व। ग  
यता। तस्माद् वलि त द व म। गिन ग नि व र्ण क व ॥ य गृहीष्ट वलिं च सै क ति तस्य मदा ग रु। पृक्



नत्वं सख्यसिद्धिं कर्तव्यं विधायति ॥ सततं कर्तव्यं विधाय ॥ सततं कर्तव्यं विधाय ॥ सततं कर्तव्यं विधाय ॥  
 माह्वं ॥ पूर्वं कर्तव्यं विधाय ॥ तमावलिं वृद्धाह्वं ॥ पृष्ठं कर्तव्यं विधाय ॥ सततं कर्तव्यं विधाय ॥  
 वस्य सख्यसिद्धिं पुयं कर्तव्यं महावलिं ॥ ॥ अथ महाकव्यं गुरुं ॥ कर्मविया कर्मगुरुं ॥ मः  
 हाह्वं गुरुं कर्तव्यं ॥ गृहीया आ वृजं कर्तव्यं ॥ जलकादं कर्तव्यं ॥ यादं गुरुं दाह्वं कर्तव्यं ॥ चाह्वं य  
 लं साकयनीं कर्तव्यं कर्तव्यं गुरुं कर्तव्यं ॥ जातवदं सततं कर्तव्यं ॥ सध्वं कर्तव्यं कर्तव्यं ॥ अथ कर्तव्यं सततं  
 सततं कर्तव्यं कर्तव्यं कर्तव्यं ॥ जयं सततं कर्तव्यं कर्तव्यं ॥ दशाह्वं सततं कर्तव्यं ॥ मृत्याय विधाय कर्तव्यं  
 ताजानं कर्तव्यं कर्तव्यं कर्तव्यं ॥ कर्तव्यं कर्तव्यं कर्तव्यं ॥ गुरुं कर्तव्यं कर्तव्यं ॥ विनिदिध्वं कर्तव्यं विनिदिध्वं  
 सततं कर्तव्यं सततं कर्तव्यं ॥ पृष्ठं कर्तव्यं कर्तव्यं ॥ महाकव्यं महाकव्यं ॥ अथ कर्तव्यं सख्यसिद्धिं पुयं  
 कर्तव्यं महावलिं ॥ ॥ अथ दाह्वं ॥ कर्मविया कर्तव्यं कर्तव्यं ॥ गुरुं कर्तव्यं कर्तव्यं ॥ यवदं  
 कर्तव्यं कर्तव्यं ॥ गुरुं कर्तव्यं कर्तव्यं ॥ जलकादं कर्तव्यं कर्तव्यं ॥ कर्तव्यं कर्तव्यं  
 हायं कर्तव्यं ॥ पूर्वं कर्तव्यं कर्तव्यं ॥ दानं कर्तव्यं कर्तव्यं ॥ कर्तव्यं कर्तव्यं ॥ साध्वं कर्तव्यं

७४



धनन॥ ॥ रुमादोयाय ॥ अनूलयनगन्धनां यदाननरिमानव॥ न कदाचि नमनादाहं दहवादाह  
 मायूयात् ॥ ॥ अथ यस्मान्नरुवविनायकदानी ॥ रुमादोमहावृक्षवृक्षवोधायन॥ वाक्महाभस  
 नाधनः स्रयस्मात्रीरुवन्नव॥ वधुतस्य पुनीकारं दानहामक्रियादिरि॥ यत्ननवातदध्वनः गदध्व  
 नचवायून॥ विनायकपतिवृत्तिः कृष्यस्त्रिभूतः गहनं ॥ वाजगीवगधनागः मयवीर्यकल्यथ  
 न॥ यच्छनययनागः रुसं वत्नेः पुकल्यथ॥ विनायकाद्धमाननः आखंदवस्यकल्यथ॥  
 तस्यायुः गयदयानि वत्तानि विविधानि च ॥ मालिञ्जनयकूचीतः वृक्षीतस्य गहनं ॥ पूर्वधूम्र  
 पुर्वकृष्यस्त्रिभूतः ॥ वाजगीरिद्वि॥ यद्वाद्वादगहिः कृष्यादिसृष्टिर्वाययत्नन॥ मधुयस्यवतु  
 र्हागं वदिकामयिकल्यथ॥ विनायकस्यापितगाः अथिवासनमिष्टागः ॥ वदुर्किर्वास्त्रिभूतः सा  
 द्धमाचार्यः सर्वभक्तविता ॥ वाजगीजागत्रलंकृत्वा मधुवाजोवर्तिरुवत् ॥ मस्यामोशनसहिनं  
 गधकीरोदननच ॥ आचार्यः पुयगारुत्वा मकुलाननसंयतः ॥ पूर्वस्यादिनिर्गदया वलिं  
 वेसार्वकामिकं ॥ आदित्यावसवा नूदादवाहतानि सर्वं ॥ मय्याः पिसायाजकिन्त्यः भक्तिन्य



[illegible]



भनीत्यतिमनुल. नृक्षींष्टुदमुवृजय॥ तन्नामधुंदिनयाक. प्रतिमादिकिभयुगां। मनुलान  
नदद्याच्चसवागीषाद्युखः स्वयं॥ उदघृखायविराजय. वाक्कभयागिरुकिता॥ विनायकप्रयत्नाकिरु  
वविप्रविनायकः॥ त्वंदवेः प्रार्थितः पूर्व. विप्रविप्रयत्रायले॥ वाक्कलभसवाधन. यज्जातममवे  
कन॥ पूर्वजन्मविघाकेन. कपस्मात्राननादिक॥ जायुंवायधवाधिर्थ. नासिर्वैवायरावर्ण॥ त्व  
दद्यात्तः पुदानन. वागमागुविनायक॥ वदुर्ध्वं वाक्कलभं दद्यात्तुक्कावदकिर्ण॥ उर्वकृत्वाग  
लपत्त. दीनमर्षः॥ सखीरुव॥ विनायकस्यवदधृरुषीमालिकुसराः॥ सदितं जन्ममितिभ  
यः॥ स्वकेः स्वसमधोकेनलयतिमनु॥ हामसंख्यावाक्कलभं तं स रुचंवा॥ पूर्वदयावि  
नायकाधिवामनादगात्। वदुर्ध्वं कृ॥ वृहत्तमासीरुव. वीभन्यामवकृ॥ आचार्यलस्वभरव  
यावदुर्ध्वं लभः॥ काम्यः॥ उर्वयगुयगुवदुर्ध्वं वेदानां मनु॥ यात्रायर्णवाविहिर्नगुन  
द्विदामलार. स्वभरवरीवसर्वकाम्य॥ कर्मवियाकस्यलवीप्रवदुर्ध्वमोवधृकत्वादिति  
महाधुव॥ अधिवामनकाले॥ कापूजा॥ पूर्वदुर्ध्वं द्वितीया। तन्नामगीपूजयित्वादद्यात्॥



सामान्यार्णकदानमश्रयस्मादहवमिति महर्णवः॥ ॥ अथ स्कन्दायस्मादहवः॥ महर्णवकर्मवि  
याकसमूहय॥ उत्सर्गकवर्णयस्तु वक्रो मृगयया॥ १५४॥ सैकमर्गवे स्कन्दायस्मादहवः॥ १५५॥ न  
गादशस्त्वजिक्तां कुंरुनिलास्यापि जायते॥ अयस्मादीहवः रूपा पूर्ववद्वलिमाहवः॥ पूर्ववदिति  
स्कन्दगुरुवाकाविधिवृत्तं॥ सव॥ स्यात्युगसावदुजयः सत्यातकविनागन॥ लक्ष्मकवृत्त्याज  
कायः मृत्युनागयवंधुर्व॥ कावयद्विधिना कर्मवशुमार्गद्विजन्मना॥ १५६॥ तस्यैव द्विगुणं यदे  
सुष्ठुलमिति मे॥ अथ सिके वात्मना॥ मधिगवाहवद्वि॥ हामश्वसुसुहृन्त्याश्चिनाय  
क्रियते नृयः॥ मनुस्यावादर्ण॥ १५७॥ हामः कार्याविचकाले॥ नरुदायविनागभयः प्राजायत्या  
नियामुग॥ सालकावायदागया॥ धनं प्रेवययस्त्रिनी॥ कवित्रयं यत्तनं कौकमादिनसे  
१५८॥ वक्रवर्णवक्रुहस्तं मणुलीयविकल्पय॥ नगदद्याद्वर्तिम॥ १५९॥ वागी मनुलसंमतः॥  
वक्रमास्याश्चरे॥ स्कन्दगुरुमश्रयितनः॥ अथ स्कन्दायस्मादहवः रूपाय नमः॥ १६०॥ तिपूजा॥ वलि  
स्वद्वयमाह॥ तिलविष्टदधिदीवः कृणवापूयसकवः॥ वाजमावाश्रमद्राश्रुनिय्यावाः कन्दमृ

५५



नर्क। यत्कर्मसर्ववति। पूर्णकर्मयुगावलिः। तिलविष्टादिकीकांश्च। याचकत्वापदं धृतं ॥  
वस्तुद्वयनकलर्गं। वक्तुं शक्यं तत्रैव हि ॥ मां सर्वनायकम्। अन्यथा स्यात् ॥ वलिदानं मनु  
माह ॥ वालधीनं स्वनमदत्तं। वक्तुं शक्यं तत्रैव हि। यमद्रीवर्तिनं वसं। पूजा हि ॥ मरुपूष्टिमन  
॥ वलिभर्तृविधानं न। दत्तं वागम्यमन्त्रिणं। अग्निं युतिष्ठायात्ततः ॥ स्वाहा कृतास्त्रा देवता ॥ य  
ष्ट्या ॥ स्वीयमनुयायि हविः ॥ कीर्त्तय सर्वय ॥ स्वाहा कृतिर्देवता उदिष्वस्वाहा देवस्य ॥ स्वाहा ॥  
ॐ स्वनायां मनुयायि रुद्रया ॥ ॥ अथ यत्र भगवतः ॥ धृतिं यस्मान्नवागीत्या। सतदायस्य  
भक्तयः। वक्तुं शक्यं तत्रैव हि। नूदद्यात्सदक्षिणं ॥ ॥ अथ यत्र कर्मविद्याकर्मगुरुः ॥  
गुप्तोऽस्मिन्निवायसु। युतिकूलं समाचरेत् ॥ सायम्प्रातरेवैतत्कुरु। कुर्याच्चान्द्रायणं नव ॥ स  
हसस्यतिमनुल। वक्तुं शक्यं रुद्रया रुद्रा। कयानं नूतिस्वकीं तु। जयं द्वापुलतव्यं ॥ कुर्यात्  
हिवष्टिदानं च। मन्त्रावागम्यभक्तयः ॥ वक्तुं शक्यं तत्रैव हि। हामसंस्थावाक्षी रुद्रगर्तं मरुस  
मयूनी वा। जयं ययं संस्थातिमरुद्वैव ॥ ॥ अथ इन्द्रधनुर्दत्तं ॥ भगवतः ॥ सौगन्धि



कस्यहवत्तः दुर्नमः गः पुजायते। लक्ष्मककुयमानां रुद्रयाजा नवदसं॥ जातवदसं ह्निमन्तु  
न॥ ॥ अथ वसुगन्धर्वद्वी॥ लक्ष्मगतयः॥ मधुवोत्रमुपूवो जायते वसुगन्धर्वान्। सदयान्मधुध्व  
नूच उथावार्थद्विजातयः॥ मधुध्वनूविधिः कयद्रवउकः॥ वसुदात्रादायलदि॥ ॥ अथ लक्ष्मनाद  
वायुद्रवी॥ कर्मवियाकसमूचयः॥ भारयित्वा यना अमु उकवमुविगर्हिनी। सा न्मादवागयूक  
स्यात्कृत्वा दायायलंगथा॥ कथा सा तस्वर्गमन्तु जय द्वाक्षलगत्यर्ली। सा तस्वर्गामन्ता यद्वागिति ॐ॥  
मृचः॥ ॥ अथ धनूर्वीगद्वी॥ कर्मवियाकसमूचयः॥ अनिच्छनी मकर्ताय उय उक यत्र लि  
यी। वला दाकम्य समनः सर्वसन्धिवृद्धनी॥ ती वा माका ल्यवृथिमान धनूर्वीगयूगा रुद्र॥ द्वा  
नीतदयनूत्यर्थ महिषी दानमाचनत्॥ कृत्वाति कृत्वा कृत्वा वा दायायलमथ यवी। उग्रन  
ग्रजयल्लेव गत्वा द्वाक्षलगत्यर्ली॥ नाम गुर्य जय न्मा ल्वा वागल्ल्यर्थमात्मनः॥ स रुचुनाम  
कं वायिः लार्गं सम्य विधानतः॥ अथूतानक ल्मा विन्द स्यतनाम गुर्यद्विजः॥ अथूतगितया  
वृत्त्या जय उगस्यल्लकया। यूनवसूक जय द्विद्वी ल्मा वागल्लसमूचयः॥ महिषी सवत्सा॥ प



इथा नमहिषी कृष्णां सवत्सां पूजयन्तु गणेशं ॥ वृत्तिवद्वा भूत ॥ महिषी दानमनु ॥ स्वास रुद्र उक्त ॥ उक्तं  
स्वासरुमुनामादीनामपि वृत्तिमहोर्लव ॥ ॥ अथेदं रुद्रमल रुद्रसूर्यमूर्तिदानी ॥ रुद्राक्षो वृद्ध  
गणेश ॥ विश्वामयनियामृता ओषध्यादिपुया गणेश ॥ रुमली जायन्तस्य दहिना गीव ॥ ॥ स ह ॥ व  
आमि गत्युगी कारं दानदामादि कर्मत्वा ॥ यावत्तावत्कतिश्चैकु गिरिहस्त्या मथयिवा ॥ उक्तं  
नवास्वर्ग क्त्वा वसूर्यपतिकर्तिगुर्ग ॥ कृथादि रुद्रासू द्वां रुद्रयद्रय सूर्यविता ॥ यथा यः  
विस्तिर्गवक वाससा समलं कर्ता ॥ कृकमना किर्ता सम्य ॥ रुद्रमात्ये वलं कर्ता ॥ स्त्रायिर्गयं व  
गर्थन ता मुया गायत्रिचक्षु ॥ या रुद्रस्य ववनी मालं यलाना मयूकं विदुः ॥ नदद्वं वा तदद्वं वा  
यथा विरुवता तद्व ॥ या रुद्रिना नामयत्रि विच्यमदकं संकृत ॥ उर्वरुता नूता मूर्ति मा वार्य  
॥ पूजयत्सुधी ॥ गन्धमाल्ये ॥ सूत्रलिहि ॥ दं सगुविषदि कृत्वा ॥ उववावे ॥ धा उग लि नैवयया  
यसं किय ॥ आ ॥ गथादि निरुमथ कर्तुं ॥ रुद्रमीयु लि ॥ समिदायति ले ध्यायि मेने वलि  
यथा कर्म ॥ विरुद्वानां गव रुद्र रुद्रजी गव दसी ॥ यदस्य कर्मल ध्याति सिद्ध कर्मा मः



शुभं। अथ नृक वता ता। ग क ल ल ल य न र व ७॥ अतिथि कादि कं सर्वं भक्तिकर्म पूरः सत्रं। सखा सनाः  
य विद्वस्यः क र्त्तव्यं वाक्क ले ४७ ॥ १॥ पुनीता मा कथय य न्ति व द्वा द्वा द ग भव च। ग ४॥ ता त्वा गु चि द्द व ४  
७॥ कृमा स्या न ल य न ॥ ७॥ कृमा लो १॥ अतिगु। आ या यी य द्द द्द र व १॥ पा द्द र वा या य वि द्वा य द्द यो  
त्यु ति कृ ति ७॥ र्त्त ॥ दान म नु ७॥ स ह मु कि न ॥ अ द व ४ र व ग ४ पू या ग र ति मा न। स र्व द व म य व द्वा ३  
ज ग द्द कृ म्म यी त न ॥ ७॥ अ व द्वा दि पु या। ग न्ते य वा य द्द म ल्प कृ ते। वि पु ल्प यो द म स र्व य य ग र्त्त  
दु म ल्प म म ॥ पु नि मा यां पु दान न ॥ ७॥ द द्वा द्वा द्द र व १॥ ७॥ म ल्प द्द र्त्त स र्व व स द्वा द्वा द्वा द्द ७॥ ७॥  
द त्ता थ त दान ॥ मा द्वा यी यो थ र कि त १॥ आ सी मी ता द न व द्वा ७॥ पु लिय स द्द मा य य ७॥ अ अ र्त्ता चि वा  
द्व १॥ ७॥ द द्वा द्द र्त्त व द्द कि ल्प ॥ ७॥ दानं य वा यो क्त्त द त्ता म स र्त्त ति र कि त १॥ पू र्व क र्त्त वि यो क्त्त  
ल ७॥ ७॥ म र्त्त र्त्त स र्वी र व ७॥ ॥ अ थ क र्त्त क क र्त्त द व द्द म र्त्त दि दान ॥ ७॥ द मा डो य म र्त्त र्त्त व द्वा  
यू य ना १॥ ७॥ अ न्न वी वा र व द्द र्त्त ॥ सा क र्त्ता र्त्ता य ग क र्त्त १॥ द र्त्त र्त्त य गी का र्त्त दान द्वा मा र्त्त र्त्त व न १॥  
य ल न व र्त्त द द्द न ॥ द द्द र्त्त न व य न १॥ स र्व र्त्त न य ति कृ ति क र्त्त द्द र्त्त र्त्त र्त्त १॥ य थ वि र व सा  
व ल गि न र्त्त व द्द व न न ॥ ७॥ द द्द र्त्त र्त्त र्त्त न य न ॥ म य वि र्त्त स र्व स न ॥ द्वा द्द र्त्त र्त्त व वी र्त्त न ॥ ना ग य र्त्त व वी



तिर्न ॥ नागधसोवर्षा वाजगावा ॥ धनवेकुल सर्वेषु तलु सायवि न्यसे ॥ तलु लाना यदी मानी आला  
नी तु वरु यी यदा स्व विरुक्ते न व गगयुजाय कस्य ये ॥ गन्धमातो ॥ सुवहिरि ॥ १ ॥ धनवे कुवि वि  
धे वधि ॥ उयचात्रे ॥ धातुग रि वाचार्य ॥ सर्वेषु सुवि न् । मूलमकुल सर्वेषु कार्ये वदस्य वाचनी ।  
मूलमकु ॥ लेवयैत्रा कना वदस्य मयणी । कामधनग केरु ॥ सुवि न् सर्ववि स्तुत ॥ स्वगृध्रा  
कविधनन वा ॥ १ ॥ सैस्वायनी रवन् ॥ समिदा सु तिले मन्त्रा निर्मा सुग निधमया गुप्तकै क  
वूदायति वागयि नवितिक माता । सैस्वावाश रुवन्ती युक्तकमिह गृध्रम ॥ इत्वा इत्वा च  
सैयातान याग कथादिधनन ॥ १ ॥ अग्र ॥ पूर्वलि वद ॥ १ ॥ स्त वय कलनं दृढं ॥ वाससा वरु  
यित्वा वर्य वय नव सैयुर्ग । अथ स्ताना द्रुज स्ताना द्रुत्मी का सैगमा द्रुदात् ॥ यदक कथा मृति  
काच वाचना गुनुसु स्तथा । गन्तारिष के कवीन कामा न्क रयु री गुवी । आवाहिषा दिहिसुद  
द्वि वल्हा दिहिववच । यवमानानूवा कन गन्ता वा कनये वदि । गन कलनं स्त दकन जस्य  
असैयाग विद्विष्यर्थ ॥ गत ॥ १ ॥ कुक्रामवधव ॥ १ ॥ कुक्रामाथानूलयन ॥ मूलमकुल वयूनस्त



स्मेरुगवर्गार्थिनः। दशांशं ददवदवस्य। प्रतिमं लिङ्गं तस्य तु॥ मन्त्रं लभनन विधिं वत्स्यात्वा यत्र यत्र दद  
स्वः॥ पुनर्युजमानः संयुक्तं गिरिगिरि॥ अर्थिनोति॥ यथा वाच्यं निगृहीयात् कदाचिन्मेव दद्यादि  
ति॥ मन्त्रः॥ ददवदवमन्त्रं लभनन वृत्तं लक्ष्मणं कर्तुं। अन्तर्चोर्थात् यत्पार्यं कर्तुं जन्मानं न वमया॥ गेन  
य ऊर्तिर्गकार्थं मसं ममददुर्जं। तददानं न ददुर्जं। पीतामूर्तं वक्ष्यामि न॥ उदया विधिना न न  
र्गं कर्तुं पुनर्मनि वः॥ ददाति विप्रं यथाय सकार्थं द्विपुमं शुभं॥ यत्प्रादुर्वाचनं कर्त्तुं। द्वादश  
नयि अजय ७॥ ॥ अथ सर्वगिरि वदनं रुचं॥ कर्म विद्या कर्म मन्त्रय॥ शुक्ति स्मृति निविद्वानि  
यानि दानानि सति ते। अजात्रमहिषादीनां तत्पुति गुरुका वत्सत॥ निविद्वेया विद्रमना द्विः  
जायुः सवक्षदयि। वदस्य वद विद्यायां दस्य वाचादि हिर्मृगो॥ विद्यादन्धनं न मुदि मन्त्रं  
दुर्बधिकं कर्त्तुं॥ गजगदं ध्वजं गच्छ वासं लभेय जीवना ७॥ वासं लभेय यदवन्मत्सर्वा  
द्विष्य जायते॥ वदनादा वत्सत ददुर्जं सुदयं लभेय॥ कदापि कर्त्तुं कर्त्तुं न वदुः य  
नमथायिवा॥ गुरुहि वत्स वासी सि दद्यात् कर्त्तुं कर्त्तुं तथा॥ तद्विष्णु विमलस्य अरवस्यागा

ॐ



[illegible]



[illegible]



पुद्गलः॥सामान्यालंकारदानमपि पाठुना गवमिति महर्षवः॥ ॥अथ कामलाद्वयं  
 नूतनं॥रुमादौ महर्षव वृद्धलोभतमः॥कामलीरुक्त्वोवः॥रुमादौ वृद्धलोभतमः॥  
 कुर्याच्च यद्विवाजानं विष्णुर्विहिनमूरुमं॥सर्वलोभनयथा गच्छेत्तदा भोक्ति कद्वयं॥नाः  
 सिकायां तथा वदन् मूरुवीर्यं च वाजर्तं॥एवं कृत्वा गवत्सर्कं घृतं दात्वा विन्यस्य ॥७॥  
 वञ्चनं सर्वं शुभं॥अथ कामली ॥ समर्चय ॥ वाक्पुल्लं ह्यर्चितां गच्छेत्तदा यजमानं नरकितं॥उ  
 यवावेः॥धौ उगतिं द्विजं सख्यं च रथा॥द्विजं गवर्तं॥अथ यथादिनिहा मथ्यं कर्तुं  
 ॥सुलुलं गुरुं॥समिदा अतिले सुगुयाला ॥समिधः॥सृता ॥मनु गवूतं गयणी  
 समिदा अकृती रवे ॥तिलं मां श्राद्धतिरिक्तं ॥स्विष्टकृती जय ॥सुययं दवली क्री  
 रं सितवसुलं वदय ॥निक्षिपत्यं च वत्तानि मृत्तिकांश्चापि वाचनं॥अथ सुनाम्नः  
 सुनां दत्तां कासीं गमादुदात्तं॥यं च त्वं कयन्तु वानित्यं ॥वृत्रयं कीर्तय विष्णुं॥तं नातिथं  
 कुर्यात्॥आथादिष्टादिभिः ॥कुमा ॥दिने अथ वत्तं नित्यं यवमानं नयेदिति॥गवूतं सुय







गुर्वक्षयः सत्यमन्यासिगर्हणं ॥ यत्राहं सामर्मरुथा. वधूयैरुवर्णनथा ॥ वायवीयः वातश्चाधियुगल  
वीति ॥ ॥ अथवातद्वयमुपदानं ॥ हमाहोमहाधूवचवोक्षयनः ॥ रुविलंकावयं हामधनं दु  
दलति ॥ वल्ले ॥ ॥ नैदरं तदहं नः ॥ गवृषामय दृष्ट ॥ तलुलायविर्महाय. वायुधयनिवदय ॥  
आरुकरिणयं वायि. तदहं वासुगकिणः ॥ वदयुवतु वृक्षाय. कास्यपागवतु वृष्यं. वायुदेव  
तमनुध. हामगणयकल्यय ॥ समिदायवर्कल्ला. लतमक्षरुवद्विजः ॥ अष्टाविंशतिववा  
थ. मकुलाननतं दि. ल ॥ वायुयवसिहगाना. मकस्वीला कयावन. वाहनस्यपदानन. वा  
तश्चाधिविनाशय ॥ अननकतमागल. य. अकनविधाननः ॥ वातश्चाधिविनिर्मिका. तीव्रजः  
सुखमक्षत ॥ वायुवाहनं यनमः ॥ रुविलयूजा ॥ पुतिउद्ययुथमनु ॥ ॥ अथवातकवात  
मनी ॥ ॥ ॥ वातवसुपुवालानां. हवीस्यादकवातवान. सवस्मिंमहिषीदशा. त्यद्यवागस  
मन्त्रिणी ॥ वसुमधि वकभव ॥ महिषीदानमनु ॥ ॥ असद्वेउक ॥ ॥ अथवातवकवात  
विकृतश्चीनावायलदानं ॥ हमाहोवमहाधूवचवृद्धवोक्षयनः ॥ सवधूगिमनवातवकवा



न जायते न वः। सर्वभूतगमनं वा न। यिरुवानपि जायते ॥ लक्ष्मीनावायर्लं वृथैः सर्वलूनयकल्प  
येत। यत्ननवागदद्वेन। तदद्वेनाथवायूनः ॥ लक्ष्मीनावायर्लं वृथैः सर्वदा सार्वकामिकैः। यद्वासन  
गतीकृत्वा द्विवदवै वकुर्जु ॥ दक्षिणधः कवयर्धैः स्वमृद्वकवयसत ॥ वामाध्वकवयवर्क  
लक्ष्मीपृष्ठयवः कवः ॥ वामात्संगगतालक्ष्मीः वत्तयागुकवारवः ॥ दक्षिणधुजादद्याः पृष्ठद  
वस्यवक्षिणः ॥ गवूर्धवा ऊर्ध्वकृत्वाः द्विवदवस्यवारुनी। यक्षेत्रतस्य सोवर्लुः सर्वलूनचनानि  
का। वक्षेत्रतानववित्रैः यत्रिक्षयाति कोठुर्कैः। मकादामयविद्विर्कैः चन्दनागुवत्तयितैः ॥ अर्ध  
यत्कर्मैर्यग्भैः लक्ष्मीनावायर्लं वृथैः। यत्ननवमलीयैव गवूर्धवा यत्रिहितैः ॥ गताविपुन  
माहूयः स गीर्ललक्ष्मिनि। स्वयं रक्षा समानीयः पूजयद्भक्तकुलैः ॥ कौकमागुवकप्युः  
वैः वृथवीर्गागुलीयैः ॥ पूर्वकिनविधानेन। हामैतगुठुकावयत् ॥ मकुक्षानेन तदद्याः सर्वता  
कनमस्तुते ॥ लक्ष्मीयतद्वकिनन्दनैः। कीवाविगमयितववसामगया। गविन्ददामादववाग  
वर्कैः विनागयागुठुकायिनाविवर्त ॥ लक्ष्मीनावायर्लं वृथैः मूर्तिदद्याच्चरकिनः ॥ आवायवाः



सखीनित्यं जायतनागसंगयः॥ पूर्वोक्तं वागवृद्धं नानायायल दानाकनस्यर्थः॥ वागयिरुह  
वः॥ भविष्यदमादववागयिरुमित्यर्थः॥ ॥ अथवागयिरुहवः॥ कर्मवियाकसमृद्धयः॥ न  
गुर्नगुर्नगालरुर्नवाभगियाद्विजः॥ सवागयिरुवागीत्यात्कर्तुं वादायलं वरे॥ ॥  
अथवागवकहवः॥ भगानयः॥ वकवमुपवातानां हावीस्यादकवागवान्। वादायलद्वयं  
कुर्यात्। नगडागस्यभकयः॥ ॥ अथयववृद्धवोधायनः॥ सवधुगिमेनवागवकवा  
नजायतनवः॥ नगडागस्यवृत्त्यर्थः। षडर्थककुमात्रवत्॥ ॥ अथवागवागयुतिमा  
दोनः॥ कर्मवियाकसावः॥ वायुतर्यकवः॥ यगुः॥ वागीधोवात्समस्तः॥ विकीर्णकः॥  
याः॥ श्वस्याः॥ सर्वयकुलवाहनः॥ अगानकविधिः॥ अथयवः॥ कर्मवियाकसंगुहः॥ दवा  
नां वाक्त्राणां वाधनायहवक्षरुथः॥ स्वामिडाहादागवागीः॥ सतवदयिनिकृतिः॥ ककु  
तिकुकोकवीरः॥ वादायलमथयवः॥ वागआवाकुमनुहिः॥ जयदयुतसंख्या॥ अग्नि  
वस्मात्सर्ववायिजयवृद्धदयादयि॥ पुष्टवमयुर्नजयाहामध्वः॥ आर्जुदयी॥ यथानकिद



मदानं प्रतिमहार्कवः॥ ॥ अथ यत्र कर्मविया कर्मगुरु॥ गुर्वुपुष्टिर्गियाभा. वागवागीतवन्त्र  
वशनामपुथलकवीत. जयं हर्मवशकथ॥ अथ यान न्यामविन्देति नभार्कनामपुथ॥ हाम  
वसंस्थासदुसादिलकाकानिमिकानुसावला॥ अथ दृश्यं महाविष्णुर्महानृत्तिं हामहावना ह  
प्रदवता॥ ॥ गउयउ॥ ॥ ननु वमायतिवितिनामपुथमूक॥ ॥ अथ वकयिरुहनालि॥  
कर्मविया कर्मगुरु॥ अथ यममदायमु. कलोषधमथयथा. पुथाजयन्त्रव॥ ॥ सार्थ. वक  
यिरुपुगाहव॥ अथ रुवगरीवक्रा. वग्रीहमितिगुया. ववार्थापुद्देहेया. डकयि  
लावनरुथ॥ अथ रिषदिधमववलायायि कानिचायायधदीनि कूयानि॥ उशुदय  
मयुर्गपुष्टिर्कवतिमहार्कवः॥ अथ यत्र भतातय॥ मयथा वकयिरीत्या. सदथासर्वि  
षाघटं. मयनाईघटं वव. सहिवर्धविउदय॥ अथ मयययायि कानिचेमासिका  
दीनिषउदययनानिभकिगाकूयानि॥ ॥ अथ। मरुहनालि॥ कर्मविया कर्मगुरु॥  
अथोमा। मनिदीगीव. कयायायि वलिननव॥ मयुर्गपुष्टिर्कवतिमहार्कवः॥



अथ यथा धिमा प्राणी स्ववमाह सदा निव ॥ द्वायायां वृद्धाद वालयाय ॥ ॐ नमो वरुति मनुहि जयदशरु  
वायुर्न ॥ अथादिष्टिहाम ॥ स्याच्चरुसर्विषायुर्न ॥ अमृतमिति पुष्टीर्न वधुत ॥ अथायव कर्म  
विपाक समुच्चय ॥ ॥ ग्रीही कृष्णयै कुर्याद्रायशा अयुर्न जय ॥ तिलहाम सह मुच जय नृत्य जयत  
था ॥ तिलहामाद्यादिति हि ॥ जयापि सह मु ॥ ॥ अथाग्निरुहववमुदनी ॥ महार्णवहमोक्षोचर  
द्वयोधयन ॥ विद्युक्कविशकृष्ण ॥ ग्रीहीरवतिमानव ॥ दानैव श्राम्यगयल सर्व ॥ ग्रीहीरुविना  
गर्न ॥ क्षीमवर्जसमानीय वरुमृत्युवयद्वरु ॥ मृकाहलाभिवध्रीया दमुपान समनत ॥ क  
क्रमनाक्षिर्न सम्यक् कुर्यात्पुत्रधृतिर्न ॥ तलुलावविर्न साय तलुलाय स्वगकि ॥ रुवकीति ॥  
व ॥ उयवाये ॥ धाउगति वावायैयु जय रुदा ॥ हामैवायि पुकृवीत समिदायतिले ॥ कुमा  
७ ॥ उद्धृष्टस्वर्द्धविष्णु वथ ग्राहति किं रुथा ॥ मने ॥ कुमल श्रुया त्विष्टरु स्यारुग ॥ यव ॥ रु  
त्वाहृत्वावर्मापागा न्याये सर्वनिवधु ॥ सैत्वा वाष्टा रुवगन मष्टाविनतिववेवा ॥ सैयाने  
नानिमृष्टा सर्वमवहिनागिन ॥ अक्षयामिति रुकन यथाहिर्न गाये वय ॥ वाससामार्ज



नैक्या त्मार्जय दृक् मूर्ध्निना। आचार्या याथ तद्वर्ग दद्यात्तत्र सदक्षिणं ॥ मन्त्रधनत विधि वदति  
 क्षिप्रमव १ पुत्रि १। मूर्ध्निना पुत्रवागस्त्या लाया मूर्ध्नि यति १ पुत्र १॥ क्षी मव मुपदानेन तु क्षयाधि  
 यथा देव। वाक्। लय सुध नयथा दद्यात्तत्र सदक्षिणं ॥ ततः १ स्नात्वा पुत्रि कृत्वा गन्धमास्त्यायाम्  
 शित १। वाक्। लेव न्येति १ सार्द्धं कुंजी तस्मात् स माहित १॥ अगस्त्य १ रवने मानं १ ति मन्त्रे वस्तुन  
 स्तुतुर्जनं ॥ वासमा पुकृत्वा नान्यत वा ॥ ॥ अथ। मरु पुति मा दानं ॥ कर्मविषाक साव ॥ ॥ ५४  
 रु १ ये च कवस्तीक्ष्ण दक्ष १ ल वया न धृक्। दक्षानं च विना दक्षिणं कृत्वा कृत्वा कृत्वा ॥ द  
 क्षि। लय १ कवा वाप द्वा विनिर्पे वा अगस्त्य क विधि १॥ ॥ अथ त्व। द्या वरु वा नि ॥ ततः  
 कृष्ण रु १॥ तन्नि दानं कर्मविषाक सधनि ॥ ॥ अथ कृष्ण वागस्त्या तदानी निचतुर्दश  
 । वस्तु रु १ पुत्र दद्यात्तत्र तत्पुत्र गमस्त्या । य वरु त्वेन दायित्वं विधत्त विषदायिना अ  
 दक्षि दक्षि मध्या स्तु दानं य वस्तु ता पुत्रो ॥ इष्टि किं ता यथा गित्वं य वस्तु विना गतं । य वस्तु  
 य विना गित्वं तथा य वस्तु विद्यातनी ॥ ॥ अथ कृष्ण रु वस्तु दानं ॥ रु मा दो वृद्ध लो गम १॥



वाङ्मनीयातथश्चमु. सकृच्छीजायतेनरः। वशा मित्त्यनीकारं। सूर्यदानं विधानतः॥ यत्न  
वातदध्वने. तदध्वनाथवायूनः। सूर्ययुतिकर्तिकृष्यान्कदलीञ्चैवसंनिधिः॥ कृष्टाय हतदहना  
मन्त्रार्थकानयच्छरी। सर्वलूनयलाद्धन. पण्येष्वेवलीकृताः॥ सूर्यमुद्विजुजः कार्याः। जात  
वत्र। धिक्किन्तः। वक्रवस्तुलसंवष्ट. कृष्मना नूतययः॥ वीरान्। धृतवस्तुल. धृतयष्टेधृत  
दनेः। तलुलायविमंस्तु। लाजा रुतसमन्विताः॥ तलुलानां यरीमार्ग. दातमार्गयकीर्ति  
नी। गुणाध्वयनसंवर्त. वाङ्मनीयमानसं। सर्वविद्यासूक्तल. दविर्दवाग्निहागिनी। गुरु  
माद्रुयतस्तार्ग. पूजयस्तुमास्त्यकेः। तताहामं पुकृष्टीत. समिदाष्टतिलाकतेः। लाजांश्च  
मधूनामिष्टान्. कृत्वा वाष्टाहवर्जताः॥ मकुलवेदमयशा. दूर्जगुहाधियदवगी। रुद्रयात्र  
गथास्तु. समिदाष्टववृत्रधिः॥ तथेवष्टाष्टसंयन्त्र. वकिताः। त्वमेनउ। समार्जनीपुकृष्टी  
न. तथासिनीसरीवकः॥ गन्नादश्चनूवाकन. मर्कि कृष्याद्वि। णसतः। तस्मै कृतवतनागी



दद्यात्तु कियुवस्मर्तु ॥ मनुष्यभनविधिवत्प्राप्तुवाय दूद दूस्व ॥ आदित्यमर्चय माल सर्वभागवि  
नागक ॥ सहस्रमुक्तिवत्सम्राज वैधतिमि वनागत ॥ द्वादशमनुयीद ह जगत्तु कृदिवाकवा पूर्व  
कर्मवियाकार्त्त कृष्णसांशु त्रिनागय ॥ सुचिदानमनु ॥ कदली सर्वदवाना मादृता सर्वलर्म  
दाल ॥ गशावयावृत्त्या दव कन्या हि व वत्र ॥ साविशानक योवेव कार्थि वृजितायवा ॥  
आमर्षय गज सर्व कृष्णजात मयानूद ॥ कदली दानमनु ॥ गत ॥ स्नात्वा पुंशु जीत पाद  
लेवधुहि ॥ सह ॥ ॥ अथयव ॥ मतागय ॥ बुद्धदान वकस्यान यापु कृष्णयुजायत  
। पायशिरुं यकृवीत तत्याग कविगुह्य ॥ पायशिरुं वप्रायिक ॥ वत्वाव ॥ कल ॥ का  
र्था ॥ पंचयत्नवर्षयुता ॥ पंचवत्सु समायुक्ता ॥ सितवत्सु वद्विता ॥ अथस्थानादिमृग  
युक्ता ॥ सी ॥ धदिक सपूजिता ॥ कषाययव कायता नानाविध रुलान्विता ॥ सर्वोषधिसमा  
युक्ता ॥ स्नाया ॥ पुनिदिर्गता ॥ वीशमपूदलीयदी मधुकां रायविन्यस ॥ तस्या यविन्य

५५



सद्वर्गः पूजनीयः वरुणः । यला ह्यर्द्धं यसा वरुणः । त्रवारुणं न विनिर्मितं । यजन् नृषः सुकृत  
शिकारं युतिदा सर्वः । यजमानः १ गुणेर्न च । मास्यधूये र्यथ विधिः ॥ पूर्वदिक् रवे तता । वाय्व  
न वज्रया वि १ । वायय यूः स्वकान वंदा । नृग्वेद पुरुती नर्गने ॥ दग्धं । जन तता हामा । गुरु  
भी नियो वः १ सर्वः । तगुक् । लु विधीतयो । घृता के मु गिले र्यवे १ ॥ द्वादशमिदं कर्म । स मा र्थ  
द्विज यूगवः १ । रुद्रा स न यजमानः । मरिचकं समा च १ ॥ पथमदि न उ व गुरु हामा नैकत्वा  
युतिदिन मात्रा र्था यि जमान ध्रु गुरु र्जा वासुद व पूजा व कृ र्था ॥ रुद्रा स न विनायकं भा ना व  
कं ॥ या वा यग विधिः १ पूर्वमूक १ ॥ मनु १ ॥ वाय्व । लेर्मिलित्वा यस्मि न्दया वा न गुरु मा व र्कं द्वा  
दशधा विरुद्य युतिदिन म के कं । न म र्त्वा या या रुति हामः १ कार्यः १ ॥ हाम पु र्ये व घृता का स्मि  
ला य वा वा ॥ तता दद्या यथा गका । गुरु रु म तिला दिकं । वाय्व । लय सु थं द व । मात्रा र्था य निः  
व दयत् ॥ मनु १ ॥ आदित्या व स वा रूपा वि । ग्वेद वा म व रु ल १ । पीताः १ सर्व यथा रुनु । म म या  
य सु मा व र्ण ॥ ॐ । ए दी र्थ म रु रु क्ता । त मा वा र्थ रु मा य य १ । उ व विधीने विहिने १ । घृत क रु



द्विगुचमीति॥ ॥अथयवर्णनामयश॥ कृष्ण। भवधकावीत्या नवकाकः सनिष्कृतिः। स्यापय  
 न्घटमकीकु पूर्विक उद्यसंयुतं॥ वक्रव न्नसिकर्गं वक्रपूष्याम्यवावृती। वत्तगर्ह उतैकृत्वा  
 स्तपयद्विभदिनि॥ कूलुस्यदक्षिण उत्यर्थः॥ तामुयार्णयसंरुण तिलपूर्व सूपुजिनी॥ त  
 गुकल। ग॥ तस्यायविन्यसद्वर्हमनिष्कमिर्नयमं। यऊत्य नूयसुकन पायैमभम्यतामिति  
 ॥ ऊऊत्य ऊय॥ सामयावायलं कृष्ण। तिललतग कामतः। दर्भर्ण सपिवा कृत्वा पावमा  
 यातिषवनी॥ दर्भर्ण हाभायादतिहिः। विदिनंधर्मवाऊत मावा श्यायति वदय॥ यमाम  
 हिषमावृता दलुयालि कृयावरुः। दक्षिणभयति ईवा ममयायैयपाह उ॥ कृत्यत्रायवि  
 सृष्टेर्न मासी। गुरुकिमावयत॥ ॥अथयवर्णिलिवगीतायां॥ यानवा रुकिवेऊरु नूयवा  
 गी रुवकुसः। सीतायनीयकृष्टीत तगवाना रुर्णकवः॥ सीतायनीयति सीतयनी॥ ॥अ  
 थकूरुहृषदानं॥ रुमाजीमरुर्णवेववाययवा। अथकूरुहृषदानं वृषदानमनरु  
 मं। यत्कृष्ण। कूरुवागर्हः। गवीवस्रवकावकं॥ यलेहिहिमु कृष्टीत दास्यामकनवायूनः।



वाजतं वृषतं गुणं रुमं गं राखतं तथा ॥ महं नव (म) सयाच कूर्वीत तमधिष्ठितं । सो कर्णं प  
तिमद्वच पृथक् न कुमल ॥ यत्ने सिद्धि रित्यादिमानन ल्यर्थः ॥ यथा विरुव मानन विरुम  
धन कावय ॥ वृषसु पुष्पान्त्वा य (म) कमान उव कार्यः । यत्ना एक कांत्यया पुष्पा यय लं  
विच कल ॥ अत यथैव कता ॥ अत वसे वलीकत । वाक्कल विद्यया यक स्वा वा वी स यगति  
य ॥ गृह मा कूय ल क्ता । यथा विधिस मज्जय ॥ कसू व क टके वृसे मी लो (म) वा कुलीय  
के ॥ हामे वृ वृ व ल्क्या मने मी ह भवे कथा ॥ सति चर्वा य तिले र्दम ॥ अष्टा रु व स  
ह सु सत्या ॥ शुद्ध कमनु ॥ मने रिति वरु व व न नाना क्षी या शि प्राय ॥ उद व र्वा य  
वि ह य मला द व स मनि (म) । वाक्कल या धि भा द द्या मनु क्षान न धर्म ग ॥ अष्ट मूल  
व धि कान कय या व स र ध ॥ अत मो न्द न्द र्द स र्द मथ वा वि गु म व व ॥ त्व (म) दा व ज नि  
नी य व मनु ज्ञा न्य थ वा रु व । स र्द कर्म वि या कालं पा र्द नी ना थ स र्द ग ॥ कष्ट हा र व  
स र्द ग व क मा या र्द नी य ग ॥ अष्ट मूल ध ॥ अत य ॥ वाक्कल दा वा ष्ट मूल वि ति मने



नववृक्षसकर्मविद्याकात्मिमिति मरुत्तुवृक्षाहमवकात्रयित्वादया ७॥ ॥ अ  
 थहीनकूरुहरी ॥ भगताय ४॥ वाभुलीगमनवेवहीनकूरु १ पुजायते ॥ अगुपायशि  
 र्हेलिंगहानिरुववश्रुत ॥ ॥ अथवककूरुहरी ॥ भगताय ४॥ दीकिगमनीपुसीगन  
 जायतवककूरुवान। तत्यातकविशुद्धर्थ। पुजायत्यवकुदूर्य ॥ ॥ अथपुषिरु  
 कूरुहरी ॥ स्वसुतागमनवेववककूरुपुजायते। तनितीगमनवेवपीतकूरुपुजा  
 यते ॥ तस्यप्रतिक्रियाकर्तुपूर्वतः कलसंयस ७। पूर्वताहामदभत ॥ कल। १। पु  
 याकु कूरुवा। गमकातिपुष्टानि क्रिय ७॥ पुनिदिनकात्रयलदभं १। होमाघृताके सि  
 लेयेवेघृतनवाद्याहतिहिः कार्य ४॥ पीतवसुसमायनैपीतमात्यविरुषिनी। व  
 ककूरुपु। वकवसुदिरुषिनी। तस्यायत्रिन्यमद्वीरुमयापुसुवध्वरी ॥ सुव  
 लूलिद्यापुष्टवावी ॥ अथव ४ यत्रिमालवावी ॥ दवानामधियादया। वडीवजानिकेत  
 न ४। गतयः ४ सुरुताका। ममयार्यश्याह ७॥ ॥ ममसुसमूत्रार्थ। अथयययथ

७॥



विधि। दद्याद्द्वंद्वं सरुसादीं स्वयायस्थापयन्नयं ॥ अथ यथागच्छमांशुकुक्षुह्वनवद्वलमूर्ति  
दानाकांक्षं यः। कृष्टपुतिमायात्रक कृष्टादिदवतायेनमः॥ यीतकृष्टाधिदवतायेनमः  
तियुजा ॥ ॥ अथ उत्कृष्टकृष्टरुर्वकृष्टकृष्टरुर्व ॥ भगतातयः॥ आरुजायातिगमनं उत्कृ  
कृष्टपुजायतं। स्ववधूगमनं चैव कृष्टकृष्टपुजायतं। स्ववधू स्वयुगलाया ॥ तनका  
र्थं विष्णुद्वर्थं। सागुक्त्याद्विभवता। दक्षिणहोमः सर्वगुह्यताकेः। कियततिलेशः। यद्यपू  
र्वकृष्टाद्व ॥ ययथा ॥ निष्कपयस्थपुतिमादानीं ॥ सुवर्णवर्चकनरागपुतिमादानीं ॥  
संहितामागुस्थयावायर्ण ॥ अथाविधिः पूर्ववत् ॥ ॥ अथ विगुक्तृरुर्व ॥ भगतातयः॥  
वृक्षदानवकस्याक जायतं विगुक्तृवान्। प्राजायत्ययंकत्वा दयं वृथावलपय ॥  
॥ ॥ अथ पूर्ववत् ॥ भगतातयः॥ ओं पूर्ववरीनामयोरा नवकाकपुजायतं। प्राजाय  
त्यगर्तकत्वा तानुपवर्णतं दिशि ॥ ॥ अथ कृष्टवागपुतिमादानीं ॥ कर्मदियाकसात्र  
॥ कृष्टः कृत्रितसर्वः। भूतलयकायवीतधृक्। अवत्यालरुनः कृष्टः। मुनिः ॥ किंकिरीयू



॥ जगत्कविप्रिय ॥ ॥ अथ त्वग्दासद्वय ॥ कर्मविद्याकर्मसूत्रम् ॥ यन्मर्थं साधतेत्यर्थं सत्त्वग्दास  
 मृतास्तव ॥ वाचायनगुर्यकृत्वात्यदयादासधनित्वा ॥ वेद्यकोकानिप्रियायनकावाधनलशोजन  
 ॥ सोमार्थात्कदानयित्वग्दासद्वय ॥ ॥ अथ दृष्टमन्त्रिद्वय ॥ कर्मविद्याकर्मसूत्रम् ॥ गुर्वतत्त्वस  
 दासाच्चगविमथूनकाधनतः ॥ दृष्टमन्त्रिद्वयसौक्यं ॥ कुर्वतत्वातिदणतः ॥ प्रायश्चित्तं यथासाध्यं  
 ततादासात्यमृशम् ॥ यत्तु दं द्वादश दं वतिमहाधुवः ॥ ॥ अथ यामाद्वय ॥ कर्मविद्याकर्म  
 सूत्रम् ॥ अनन्तवर्तितायार्थाविषयान्तरं जन्मनि ॥ सान्जन्मनियामादानस्तवत्त्ववर्तितामलि  
 नी ॥ संपूर्णतन्निवृत्त्यर्थं मयवाप्तगुर्यस्तव ॥ ॥ अथ यच्च द्विजान् दाता ॥ यान्त्राणस्तैस्त्वयान्ति  
 तान् ॥ ॥ अथ ददुद्वयममामदध्वनद्वय ॥ दमाद्वयमहाधुवो धायलः ॥ वाध्वननथ  
 यादिस्यादद्वयानीस्तवन्नवः ॥ हिंसात्वीर्यम् ॥ नस्यायनमनैवश्वसूत्रं धुनितुकावयम् ॥  
 सूत्रधुनितुकावयत्वात्त्यादनायथवाधुनः ॥ उमामदध्वनैवृयवृषकाधिविर्तिपरी ॥ यत्तु  
 ऊर्ध्वद्विजुजा ॥ मर्माकृत्वाधिवदलः ॥ नकवकास्तवैरुग ॥ निनगधुमहाधुजः ॥ अदमानाति  
 शूलैव तस्य दक्षिणहस्तयोः ॥ दवीपृष्ठगताश्चेका ॥ ववदध्वनवः ॥ कवः ॥ वाभासीगगता



दवी. निवृष्ट कयासिका॥ वृषकावृष्टाः काशी. दीर्घा लं कृता रवः॥ तस्मिन्नाशयदव  
गममया सहिर्गुर्ग॥ वृष्टे माली सुधाग. म्. मूलमनुल वृजय॥ मूलमनु॥ नेवयः  
द्वयः॥ ततो वाक्मलमादूय. दत्रिर्धर्मका विदो. वृष्टी गुली यके स्या. वृजो रक्षा पुक  
त्यय॥ कामैवकावयकन. समिदायगिले वयि। मनुष्य वृदगायगी. सर्वगति वि  
निष्ठियः॥ वृदगायगी तुले. (३॥ सर्वध्ववाय विद्वद. मूलदमायधी महि। तन्ना वृ  
दः पुत्रादया॥ यद्वापि यम्यकनेव. समि. (३॥ इहया सधी॥ कदु जायति मनु  
सा. इहया दाशमादग॥ तिलांश्च मूलमनुल स्थवं मनु कमा रवः॥ पूजाययि  
वाक्मामको वागयगी वा काम वृदगायगी शुभकादि मनु वति मरुर्गुव॥  
गथा वृष्टा दासनार्क. मिथुनं वाक्मल यगु। वृवलाय विविच्य सै. गक्षान विनिव  
दय॥ मनु लानेन विविच. ददुवागी जिनात्मवाने। केला सवासी रगवा. नमया  
सहि रः यवः॥ विनपुष्ट रुवा ददुवागमागु वृयादु॥ नगस्थ वाक्मल नम्यक



पुनियत्य दमायय ७॥ वा द्वा लभन राजय ज्ञायि. स्वयं कुजीतवा ग्यत ८॥ उर्व दत्तामहा दानं  
 ददवा गत्यम यन ॥ दमा दो ददु र्व सूर्य दान मय कं ॥ ॥ अथ ददु म धु ल रु र्व ॥ तन्नि  
 दानं कर्म विवा क स ध नि ॥ निदानं ददु रा ग स्य. वा द्वा लभ ग व हिं स र्व ॥ ॥ भता ग य  
 ८॥ स्या स्य द्वा लभ रि ग म न. जा य तं ददु म धु ली. कत्वा ला द म र्थी धनं यल स वि यु मान त  
 ९॥ का र्थी स तान स र्थ कं. स क धा न्य स म न्त्रि ता. दद्या द्वि पा य वि दू य. वा र्थ म द्वा य ता  
 मि ति ॥ ॥ अथ लू कि त्व रु र्व ॥ भता ग य ८॥ (ग ग द्वा लू र्वा की चै त्र. पा जा य ल ग र्थ च र  
 त. वृणा क म दिनी दद्या. कृ लू या चै व रा व र्थ ॥ लू य रा व य य स्त्रि नी. दद्या दि ति म रु  
 र्थ व ८॥ ॥ अथ रा व र्थ व ल वि धि ८॥ वृण द्वा लू र्वा र वि धि ८॥ ग तानी क उ वा च ॥ र ग  
 व न क न वि धि ना. (भ ग र्थ रा व र्थ न र्थ ८॥ च त्रि र्थ रा म च नु स्य. वृ ना लभ नि वि (ल स क ८॥  
 क र्थ र्थ वृ लू वा ध र्मा ८॥ नि व ध र्मा अ (ग व त ८॥ सो रा ल्भ च त्रि (ल स ल उ च ग र्थ व (ल वि  
 धि ८॥ ॥ ति दा स वृ ना लभ नि (ग द्वा लू र्वा र वि धि र्थ व त. गृ लू न्म र्थ त या य र्था. व द्वा लू र्वा

६२



दिशिर्विश्वः॥ सार्थं वागस्तथा वाजोऽगुर्विहृतान्॥ (स्तुतिः) ॥ विधानं वाचकस्यैव गृह्यतावद्वि  
भास्यते॥ शुद्धं वासागृहोदयः नयत्सविनयान्वितः॥ पुदक्षिर्लंगतः कृत्वा यागसि  
द्धेवमेव हि॥ नान्यच्च माह सर्वथा मन्त्रार्थं गुर्ववन्तु यः॥ नमस्कृत्य दध्नीं शीघ्रं निव  
मल्लितिवान्कृतः॥ नान्यत्तानुयन्त इति सर्ववर्णविश्वस्यते॥ गृह्यार्थं पूर्वमात्रे॥ अ  
वेष्टनीं करिष्यात्कथा॥ करिष्यात्तथा विष्ठाः गृह्यार्थं गतः सहा॥ यत्र सैक  
नजावाजनं नवास्ते गृह्यपृष्ठं गतः॥ वाक्मूर्ध्नि वाचकं विष्ठाः नान्यवर्णिनः मादवा  
गृह्यार्थं वाक्मूर्ध्नि जाडाजनं वाचका नवर्कं वज्रं॥ अथार्थमात्मना वाजनं वृज  
यद्वाचकं नृप॥ मासिपूजं नृपः प्रष्टुं दातव्यः॥ स्वर्णमायकः॥ वाक्मूर्ध्नि नम  
हावाहा॥ दोदधौ करिष्यन्तु॥ वाचकाय नृपः प्रष्टुं वेष्टनीं नायिष्ये॥ सदा॥  
गृह्यार्थं पुदागत्या श्रुत्वा नः स्वर्णमायकाः॥ कारिष्यादिमहावाहः कारिष्ये



मा वदवहि। अग्निहोमं। गगनं च। अग्निहोमं तथा नृप॥ सो गामर्तिं वाजयथा। वेपुर्वं च त  
थ विहा। माहृष्टं तथा वाक्मी। पो लुनीकं वरुयते॥ आदित्यस्य महावाहो। वाजसूयाश्च  
मधया॥ रुतं वायाति वाजं नृप। मासे द्विदिगहिः कुमा०॥ समायकं कमलिं तथा। स्वर्गक  
तर्पयन् नृपा। वाचकं वाक्मन्त्रं। श्रेवः सर्वकामेः पुपूजयते॥ नैधमात्यानि दिद्यानि व  
स्तुानि। रुतं वायाति वाचकाय वदयाहुः। तता विषा न्यपूजयेत्॥ दिवर्धं वज्रं त्वम् १०  
गवः कांस्थाय दाहना॥ दत्त्वा तु वाचकाय ह। पुनस्त्य रुतं मा प्रयात॥ वाचकः पूजि  
ताय न। वसन्ता रुत्ये दवता॥ तस्माद्धानं सदा प्रवृत्तं। तस्मै दयं विद्वद्भ्यः॥ अक्षयस्य  
दिवा। शुक्रं वाचकः शुद्धयान्वितः॥ रुतं किंचित् न रुतं। रुकावर्धनं तदिदं॥ वि  
सृष्टमकुर्त गीतं। स्य स्यादवपदं तथा। कलंवससमायुक्तं। वसन्तावसमन्विता॥ य  
उर्ववाचये जाज न विषाया स उच्यते॥ अनायथा वाचमाना। कूया सो विद्वद्वागक  
॥ ॐ रुतं रुतावसयस्मि। वाचकाया सस रुमः॥ दा। गेध पटन वाजन्। सदगः पुव



नः स्मृतः। पलम्यवाचकं कृत्वा यत् नृपाश्च नरेः। तत्र कुतः सह संल. वा शतं कृतं  
नन्दन॥ यत्ने कर्मागृहाः सर्वे। कर्मास्तु सवाचकः। देवकर्मलिपिगुण. पावनः। यत्र  
मानुष। वाचकश्च मतिः। श्रेयः. तथा विपुलं उक्तं विना॥ नृप सर्वं नृप. प्रक. विद्वत्तयाः। यं कि  
यावनाः। निर्यने मिलिका का म्या. दद्याद्देवकर्म नृप. वाचकाय महावाहा. शृणुया  
यस्तु मानवः। वेभ्रस्व समथवीव. नृतीयायांचि स. पुन। कारि. कामथवा मा म्याः  
संप्रश्नः। पथमाहवत्॥ दिव. आदि सवसुं च धाम नृप. धर्मं तथा। दातृयं पथमीन  
स्म. अवके. सुगुह किं नः। सात्र हर्ग वयवाच. कस्मैदयं समननः। अथ सर्वे कथ  
कार्य. अवकेः। पूजनं नृप॥ वाचकस्तु यथानिर्णय. सखमा र्जनना धिय। नत्ती शत  
यथ द्वे. सथ कार्यवदानव। नद्व मीन लाम. आद. कर्ण पा वृषिसरु म। उपा  
न हो काल या. गो. का स वे कं थ लाम. गो॥ यदा दारु नग क्रांति. मा वका न्का  
अनस्यु। नदा दद्या नम भवकं. विरु. भर्जन का वय। दक्षिण कथिगानि त्या



मासिमासिरुवकुया।नेमिरुकीरुवडाजन.गुरुदिषुयव्वसु॥अमलवाससीराज  
 न.गंधमास्येविरुवर्ल।समाययव्वलिविरा.दागर्थरतिमिदुगा।इत्थापुर्वसमायि  
 पूजयदायकंनुय।आत्मानमयिविकीय.यः००सदलं००॥वमयुल्लरुवडाज  
 न.न्यानिह्यदकिल्लरुव०॥समाययव्वलिविरा.संथाहलगवांश्रिव०॥००थयकथि  
 तोराजन.पूनालश्रव।लविधि०॥ ॥महालूककुमदाहावग॥अतःयव्वयव्वआमि  
 यानिदयोनिहावग।माद्यमासंनुविपुल्या.राजन्यव्वलियव्वलि॥स्वस्तिवाश्रदि  
 जानादो.गतःकार्ययव्वरुन॥कार्यवाचकवत्रलपूजादिषुसकपूजादित्र।समा  
 ययव्वलितगः॥स्वगच्छातय्यथिद्विजाना।आदोववाचकंपूय.वसगंधसमन्वि  
 तं।विधिवद्वाजयडाजनमधूयायसमूहम॥तमाभूलपथा।गन.यायसंम  
 धूसचिवा॥आलिकाहाजेयडाजन्दशास्त्रेवगुजदन॥अथपूयेधुधूयेधु.मा  
 दकेधुसमन्विन॥सहायव्वलिनाऊनु.रुविष्णुहाजयद्विजान।आनल्लकमृ



लहले. सूर्ययश्च द्विजा रुमान ॥ आत्रयवर्वासाय. जलकृष्णाय दायय ॥ विवाद्य  
 वृत्तिगथ. वासां सि विविधानि च ॥ उद्यागं राजनं सार्व. कामिकं गन्धमाल्यैः ॥ शीघ्रय  
 वृत्तियानं तु. दद्यादन्नं ससंस्तुतं ॥ अलये वृत्तिविषया. राजनं यत्र मूर्तिर्गतिः ॥ शत्राश्च  
 दद्यात्तु ॥ कर्णपर्वलि विषया. राजनं सार्वकामिकं ॥ गल्य  
 यवृत्तिराजनु. मादके. सगु अदन्तैः ॥ सधृये सूर्यलेखेव. सर्वमन्त्रं यदायय ॥ ग  
 दायवर्वायि गथ. मूद्रमिर्णयदायय ॥ श्रीयवृत्ति गथत्रले सूर्ययश्च द्विजा  
 न ॥ आश्वमेधिकमासाय. राजनं सार्वकामिकं ॥ द्रविर्वं गतथयार्थ. वायसं च वृत्त  
 जनं ॥ यात्रालयात्रालयाजन. यथा बहुत्रतर्क ॥ समाश्वसर्वायुयतः ॥ संहिता ॥  
 मुकाविदः ॥ संहिता राजनं ॥ शुद्धं दलनिवन्माथ. कामवन्महि संवृता ॥ मुक्ती वत्र  
 धत्रसुगु. पुत्रिकृत्वा सलं कृतः ॥ अर्चयं तु यथा न्यायं. गन्धमाल्यैः ॥ पृथक् पृथक् ॥ त  
 श्रेष्ठैश्च ययैश्च. यावुके विविधैः ॥ शुद्धं ॥ हिनन्त्यं च सुवर्णं च. दक्षिणं नृपदाय



य०॥ सुवर्णं गद्यमानयत्र॥ दवताः कीर्यत्सर्वानवनावाय॥ तथानमार्गं प्रेष्टुमास्त्येष्टु  
 स्वर्णं कृत्यद्विजा रुमान्॥ नर्यथ द्विविधेः कामे दाने वत्तादिके सुधा॥ उक्तवत्सर्वविषय  
 था वत्समवाचन०॥ वाचकीरुगत्र॥ यष्टराजयित्वा स्वर्णं कर्त॥ नर्यांश्चाह्वानिदं यानि शुक्ला  
 शुक्ला उक्तवत्॥ ॥ इति॥ नर्यां ये वृत्तां चार्वांगत्वं त्यज्ये यथा॥ अह्वानि शुद्धया दीयन् कयानिः  
 अह्वानि वत्सु निता निदं यानि यानि शुक्लं त्यज्ये नरावता न कयि ता निदं यानी मिमहा पूर्व  
 ॥ वायुः॥ लोको यथा गदि॥ रुक्मा वत्सवत् वरु॥ मरुदाना निदं यानि वत्ता निदिविध  
 निव॥ गवः॥ कास्थायदाहृष्टकयाश्च सुमनो रुवा॥ सर्वकामयुल्लयता याना निवि  
 विधनिव॥ गवना निदिविधनि॥ रुमिष्टसि नि काचनी॥ वारुना निवदं यानि॥ दशाम  
 काश्च वा वत्स॥ गयनी निविकाचेव॥ त्यज्ये नराश्च स्वर्णं कर्ता॥ यद्यद्गुदं वरं किंचि॥ किंचि  
 दस्मि मरुदसु॥ नरुदं यं द्विजा तित्य॥ आत्मा दा सधु सुत्रि॥ ॥ आत्मा विरु॥ सा दा स्या  
 मृत्यान्ना॥ सुगवः॥ इति मरु पूर्व॥ ॥ उर्वक वा तिया विद्वान्॥ दानं यद्वयुति विती॥ सर्व  
 यद्गुदं लोका सुदं॥ मरुमादत्त॥ ॥ इति रावत शुक्ल विधिः॥ ॥ यद्यप्येवमिदं



गमागधवत्तविधिनाका. दक्षिणवत्तद्विधिनाका. तथापि यथा हवाचनवाचकयस्तकय  
जायायसदानं चत्यावगुक्तमिति महाध्वजः॥ ॥ अथवत्तनामत्तद्वत्त॥ अनातयः॥ न  
रुहावीचयनया. रुवत्तवत्तनामत्तकः॥ लाहयलनगंदया. इयाशुसपुवासर्व॥ ॥ अथ  
रुवत्तवत्तनामत्तद्वत्त॥ अनातयः॥ कावकाधवत्तद्वत्त. नूदत्त. इयाजायगा. सन  
त्यायविगुह्यार्थ. दयाद्विद्वत्तसिर्ग॥ कावकाधनित्यनः॥ ॥ अथकंपूतिद्वत्त॥ अना  
तयः॥ तेलज्योत्तारवत्त. नवः कंपूतियीति नः॥ उयाशुसाथविषाय. दयाहलद्वत्त  
द्वयं॥ ॥ अथनीलुमत्तद्वत्त॥ अनातयः॥ वसुहावीचनीलुमत्तः॥ सपुदयात्त. अ  
तर्न. रुमनिखु. ययमिर्ग. वसुयुग्मद्विजातय॥ रुमनिखु. ययवसुयुग्मवद  
यादित्यर्थः॥ वसुयुग्मयीर्ग॥ दानमकुतादर्गतिगदर्गता॥ पीतवसुयुग्मय  
स्मा. दासुदवत्तवत्त. पुदानारुस्यमविष्ठा. अतः॥ अर्किययद्वत्त॥ समरिद्या  
हावात्तवत्तमयिवात्तद्वत्तयित्यर्थः॥ ॥ अथगजवत्तद्वत्त॥ अनातयः



१॥ विश्वस्तु माया गमनः गजचक्रमापुजायता न त्याय स्य विनाशाय. पायश्चिरुं विधीयते ॥  
 विश्वस्तु माया गमनः गुणनत्यादं भग. मप्यायिके ॥ पायश्चिरुं गवदन रुक्म नृपादान नृ  
 पानिष्कृति नृयते ॥ दयस्य निमित्तं वभत्समृच्चया विकल्पावेति मरुत्तु व ॥ कृत्वा नृ  
 यमयी धनं निष्कृतिं गतिं संख्यया। सवीयत्कनसंयुक्ताः कृतायान रुसंयुगा ॥ सु  
 वर्णं गृह्णदय उयत्कवा ॥ नाण नृयत्कवा ॥ १॥ धनं नृयमयत्कवा ॥ दद्याद्विपायवि  
 धिव. दिमं मनु मूदीनयन ॥ सूत्रली वे सुवीमागा. निर्यं विष्णु यदं लिगा। अदानं  
 उमयादरुं. ममयायं यथो रु ॥ ॥ अथ चक्रमलुल रु ॥ भगताय ॥ न  
 कूलस्या विहनन. जायतं चक्रमलुली। निष्कृदयमिर्तं दया. न कूलं स विष्णुद्यति  
 ॥ न कूलः सो वलुना जतीया ॥ ॥ अथ कृष्णमलुल रु ॥ भगताय ॥ मयूनया  
 तनं च व. जायतं कृष्णमलुली। निष्कृदयमिर्ता दय संनस्वर्णमयः ॥ निरवी ॥ ॥  
 अथ। श्वतमलुल रु ॥ भगताय ॥ दं सद्यागीरु वं श्वतस्य स्या कृत्तमलुली।



नो यथैव लयमिदं हं संप्रदादिगुह्यति ॥ ॥ अथ विसर्गद्वयं ॥ तन्निदानं कर्मवियाक  
सूक्ष्मनि ॥ ॥ विसर्गस्य निदानं द्वयं सत्यं न च स्यादंगनं । सत्यं तर्हि नूनं नैव तर्हि निवृ  
त्तिरुच्यते ॥ ॥ कर्मवियाकसमृद्धयः ॥ अमं श्रुत्य पदानां विसर्गस्याधिमानुर्वजमा  
सं वृत्तिं वेयां कथां दृष्ट्वा दत्तं यत्स्मिन् ॥ ॥ अथ विसर्गद्वयं नागदानं ॥ हमादोच  
महात्मा ववो धायनः ॥ सर्वं मुयेः स्वादयति । स विसर्गः तदेव नरः । दानं नायगमः का  
थः । हामनेव विगतः ॥ दानं न वञ्चमा । लन ॥ चलनं वा तदद्वयं न तदद्वयं नाथ वायु  
नः । कथान्तागं सर्वं लूनं । रुत्तयञ्च कस्य न । मानिश्चानि वदयानि । पृथक् दत्तय  
चक ॥ न त्वं पृच्छं तथा दयं । वदं ता वनया सुत्मा । उर्वदत्ता गुह्यं नागं । कृत्वा मनान  
लवय ॥ न क्व वञ्चमं वञ्चः । ता मया गीयन्ति न्ययः । यागस्य च यत्री मानं यता  
नाम हृदयं विदः ॥ उच्यते वा त्रैः यागः । त्रिः । न च यन्नागमरुमं । आवायः । सर्वं गमः ।  
धर्मज्ञः सुविज्ञः न दः ॥ हामं वापि पृच्छीत । समिदाग्रं तिलं ॥ गुरुः ॥ न मां सुसर्गस्य



ॐ निशि रि मन्त्रेयथ कर्म ॥ अक्षरुवसहस्रं वा ॥ अक्षरुवगतनुवा ॥ अक्षरिगति  
 मवाथ परिमार्गं वृथ गुरुव ॥ परिमार्गं हामसंस्था ॥ सापथकं कृत्वा वा कृतिं स्यात्  
 १ पाण्डव की कृतं स्वयं ॥ आवाथा शानिवात्यथ जागिलं कुवि सचिलं ॥ समाजं न  
 मनुमाह ॥ अरिमुसायवाहीरि ॥ कृमि कृन्नादिरि १ कमा ७ ॥ स्वस्वायथ सीरुवनि  
 गगगुवा ययवागत १ ॥ गगगति यथवा गगदय गगानिरुवकीत्यर्थ १ ॥ गुनुवृच  
 सृगभिच ॥ प्रतिदार्चनं निक्षिप ७ ॥ एकल्य कलर्ग कृत्वा ॥ दक्षिणकी जले १ गुरु १ ॥ न  
 मोमुसथ्यत्य ॐ नि साईतलिङ्ग के वयि ॥ तन्निङ्ग के वरिथ कर्त्तिग के १ ॥ तानाह ॥  
 हिन च वक्ष्मि स चय १ पवमानानुवाकत १ ॥ आयादिष्टामय ॐ नि गन्नावाक मूदीव  
 य ७ ॥ सृगभि कर्त्तवादि ॥ प्रतिदार्चनं दवदाव स ऊव स वृक्ष ॥ उत्सादितां गं वृचिर्वा  
 तिथयदुवृच चने १ गत १ गुरु १ ॥ सुव्रधव १ गुरु १ ॥ कमात्या नूलन यन १ ॥ स्वयं सम वृथिना  
 गं १ ॥ धयुष्या कतादिरि १ ॥ सव्यदेवत्य मनु १ ॥ आवाथा यिसम वृथ १ ॥ अनकवस



यथाज. मा. चा. यथायिनिवदय ॥ उत्सादिता ३४ याद्विगा ३४. ५१ तत्पूजनीरिनी ॥ दानमनुमा  
 ह ॥ याधरु पृथिवीकृत्सां. स। नेलवनकाननी। दो. ना. द्योयस्यग. या. व. वा. स. देवस्यग. अ. डि  
 ली ॥ स्त्रीयदाननना। ग. सो. दुष्टा. या. धिमया. रु. दु. ॥ वे. स. र्यकविकारवा. त्व। दा. व. क. ति. ग.  
 तथा। न. क. दा. या. रु. व. वा. यि. मा. न. त. १. यि. न. ता. यि. वा. ॥ जू. ग. य. र्य. ग. स. र. ह. ग. वि. का. र. व. भ. य. या.  
 रु. दु. ॥ ५१ व. द. त्वा. रु. ग. ना. ग. मा. चा. यथा. स. द. दि. क्षां. ॥ ह. मो. य. ल. म. नि. व. सा. ग. ने. १. ग. य. द.  
 व. उं. ॥ आ. चा. यथा. ल. स. न. न. १. स. व. गृ. द. प. दि. ग. त्सा. धी. ॥ वा. द्म. धन. रु. अ. यि. त्वा. रु. स्व. र्य.  
 रुं. जी. न. व. ध. रि. १. अ. ग. य. य. या. ग. १. ना. ग. म. त्य. ध. र्क. र्क. स. सा. य. ज. ग. गु. न. ना. दि. नि. दि.  
 या. ना. ग. स. य. य. क. म. व. व. र्ण. स. य. य. न. मा. मु. स. य. र्य. ॥ न्या. दि. म. न. व. स. र्वा. वि. ग. ॥ या.  
 या. वृ. त्या. त. द. क. म. रि. म. नु. दा. म. कृ. त्वा. स. या. ते. व. ग. नि. स. मृ. य. रि. वि. श. ग. नी. १. य. पि.  
 त्वा. ना. नि. र्ण. व. न. ना. दि. ना. न. ति. य. ना. ग. य. न. १. स. य. य. म. न. ध. या. या. या. य. स. वा. द. त्वा.  
 न. व. य. वि. या. न. रु. अ. य. न. ॥ ॥ ॥ ति. गी. म. डा. म. ध. व. रु. द. स. वि. स. न. गी.



मन्त्रावायन सहस्रगण मन्त्रावायन सहस्रगण दिनकर सहस्रगण. कर्मवियाकसावदहन  
दकदगशाधिवागहनानि ॥ ॥ ० ॥ अथनिश्चयतदहेकदगशाधिवागहनानि ॥ त  
गुपकद्यानहन ॥ गमनातय ॥ सहायायकयातीव जायतेयकद्यानवान. निष्कृण्यमि  
दहम. सदयावृद्धिजातय ॥ अह्वयवैषुयकार्यमात्मनाहिनमिद्धना. सकधान्यानि  
दद्यात्. गमदानेनगुकावय ॥ अह्वयराजनमारुतुनअह्वयविधिव्रितिमहार्णव ॥ ॥  
अथसहाहन ॥ कर्मवियाकसमूत्रय ॥ अनिर्दशिया ॥ गमःपीत्वा. ययःसहाहनकवान्नव ॥  
उपवासगुयैक्यात्. हाजयद्विगतिद्विजान ॥ ॥ अथव्रितिकीगहन ॥ कर्मवियाकसुध  
निष्कृ ॥ अनिर्विक्राकतायाय. निदानेधन्यश्रीवना. निष्कृतिस्त्यवान्दवा. पाजायत्यमथ  
यिवा. विधयाअतिविक्रीगःमूलवकुहनस्तथा. वज्रदंकाहीषलघु. यागवायमहन  
ति ॥ ॥ अगानकविधिः ॥ अथयनी ॥ गमनातय ॥ अजा निद्यातनयेव. अधिक्रीगःपुजाय  
न. अजातनयुदानया. विविगवसनान्विता ॥ अजायाःपुजायत्यत्वा. पुजायतिमनुष्य  
जा ॥ ॥ अथवृत्तप्रगजदानी ॥ रुमाजोमहार्णववृद्धगोनमः ॥ सर्वोत्तरवत्सयूक. क



विर्लयाय कारकं ॥ ज्ञावा र्थः पयगात्मा तु. तस्य याः सर्वे समागताः ॥ उपवातेः वाऽपि ननु  
य इन्द्रियैः ॥ तन्मा वा द्वा मा द्वा यः सर्वेऽपि मा र्थ का विदं ॥ तन्मा र्थं पश्य व मा र्थं  
मनः न च कारय ॥ अमलेः यो नातिकेः स मयकः स हि नाऽपि नु वा दिगेः ॥ चत्वा र्था दि न  
जायते य पश्य द ना द य ध्वयः । सार्वभौ मा द या चं च अ द्वा ता सा य या मि ता न ॥ समिदा  
अतिले हा मा गजस्य पीत य रुक् ॥ गस्मे द्वा ग व रं स म् ॥ गज पीत्यर्थ मा द त ॥ मनु  
धन न विधि व द या रु कि समन्ति त ॥ पा द्वा ख मु बु दी वा द्वा द्वा ख य नु स्या वा रु नी ॥  
उवा व ग धु द्वा ना. गजाना ना य क ध्वयः ॥ दिग्द कि ना वृ द्वा त मा व र्ण द्वा य य उ व रु  
॥ अन क रं रु स पृ थ. त मा वा र्थ म् द या य र्ण । वा द्वा द्वा ना ज यि ता च स्व यं रु श्री त वा  
य त ॥ उ व र्ण रु व र्ण द्वा धी न रु द्वा द व न् अ ति ॥ यो ना ले त ना दि किः स हि ना केः  
गल य ति पु का ग के मि रि त्रि त्थ य ॥ य द्वा वे दि केः स्मार्क ध्व नि मि मि रि ॥ य द्वा ता  
व ता दि स हि ना के मि रि ॥ न च उ वा व ग धु द्वा न् अ क ॥ चत्वा र्था दि न् अ जा ॥



[illegible]



न॥ न्या। अधवृद्धं कुर्वीत स्कन्धेऽक्षरानि वन्ति॥ वस्तु य। भन संवत्सु स्क। धस्क। धृथक य  
थक॥ रुद्रिदायीजकं कृष्णं वाक्मन्त्रे निवेदय॥ इह नाभे वनं दत्तं कुर्वन्त न वीरु  
न॥ नात्री वरुणायाधु। न्या। अधस्त्रपदान ग॥ ॥ अथ वरुणायाधु दानं॥ रुमाक्षी वृद्ध  
गोतम॥ वृद्धं कृष्णं कृष्णं यन्तु संनो जीवन्तान् रव॥ वस्तु मिगत्यगी कारी सर्वसाक  
हिताय॥ सोवर्णं काय यद्दत्तं मन्त्रं स्कन्धेऽक्षरानि॥ यत्ताद्वनं गदद्वनं गदद्वनं  
थवायुन॥ कृष्णं क्षीयमयस्त्रुं न नर्तयन्ति वस्तु य॥ अनुरिष्टा गथा वाङ् कृमान्  
नलाचने॥ अरुत न नर्वनाथ वाससाय विवस्तु य॥ तलुलाय विस्त्रुयः पूजय  
द्वय वात्रत॥ अथ वरुणायाधु निवेदनं मित्रिमन्त्रे न्या दित॥ आचार्याः पूजय दादो  
पूजय स्वयमवत्॥ रुमं वा पिपुर्वीत समिदा अतिले वपि। अ। गन्धर्वक यनं का  
र्यं मन्त्रा आया कृमा गन्त॥ यदद्रुवा जयन्तं य॥ समिदा भयको रित॥ आर्थे ना  
सादि का अश्वा वादगी हि सि लाहति॥ ॐ भनद (ॐ कलणं स्त्रायनं भस्त्रु गी रव॥



गनारिचकी कूचीन. आधादिष्टादि मनुके ॥ यदुभा निधु कर्तु आ. वास्रले दयावने ॥  
 स्नात्वा दद्यात्तु मनुके. वृजिताया कुलीयके ॥ वनस्पतीनां युवना. विष्णु वृथा निपूजित ॥  
 तस्य दक्षिण ॥ सर्वान्मख ॥ सर्वदक्षिणां ॥ सर्वकामार्थ वृद्धो म. पीता रुतु दान ॥  
 वृथा वृद्ध कुंदनन. नाजी वल्लभा त्मन ॥ सर्वविनाशयद्विषं. वृक्षानां युवना मसि ॥  
 सर्वदत्ता तु गदानं. सुखी नाजी वली रुतु ॥ अथ यथा वास्रले लघु दद्यात्तु कृत्वा च द  
 क्षिणां । नमस्तु लघु तथा चार्थ. गने ॥ गतय दं वृत्त ॥ गत ॥ स्नात्वा वृत्त उशी ग. वास्र  
 लान पि हा ऊय ॥ ॥ अथ यथा वल्लभा ॥ कर्म विद्या कर्म गुह ॥ अग्निमाना द  
 ति का धा. दनि स्तु हा रु या दयि । या धर्म निधु र्य जान. ना च थ क व न न व ॥ सपृ  
 य. लालित वरु. वली गच्छा नय श्रु ॥ न क रु चं य क र्था च्च. निल प र्त्तं पदा रुतु  
 ॥ हार्म य नृ चृ ता र्था च्च. निले व र्त्ता रु र्त्त गती । स रु र्त्त वा या दति रि ॥ क र्था द्वा द्वा  
 हा जन ॥ ॥ अथ नाजी वल्लभा ॥ उ मा म रु र्त्त व र्त्त वा द ॥ य व र्त्त वल्लभा रु दन. मृष्टि



घागनवेवदि। असत्यवदनावेव। श्रीहृशीलयुगसुधा॥ नाशिवलीयजायत। नदागत्यायन  
रुथ॥ वात्यायलंवागिहृथं। यतिवात्यायलंवन॥ आगनोदलसूकन। नगमस्यरुनद  
नि। कृष्णालुहामः कर्तुश्चः सामानूदाजयसुधा। यत्किंचदसिर्मासम्यक्। जयदयुगसं  
स्थाया। वात्यायलंदीनिशक्तानि स मस्तानि वानि मिहानूसावत॥ सूकनहामः सामानू  
दतिवतभाष्टयः॥ ॥ अथसयिरुवतद्वन॥ कर्मवियाकसमन्वय॥ वाओला  
दिवतः॥ नृपुन। याशुजानसुथेवदि। कुंकसयाटलगनः॥ यिरुदकीवजायगं॥  
वतवानपिजायत। तस्यायसायनरुथ॥ रुकुगिहृथं कृष्णवात्यायलमथवनं।  
तथाविरुवतादया। तिलानवदविदतथा। यमसूकनविथुन्य। सयिबामधूसदनं॥ स  
हर्मुहृदयादय। यमपीत्यर्थभवत। यत्रयिर्वासेमितिषा॥ नृपुनमधूसदनमृदि  
शसयिबामकनयसहसुमस्यधिकंशुदया॥ यमपीत्यर्थवनथेवदशुदया॥ सूक  
सयिबामवृत्त्यासहसुहामंतिमहापूर्वः॥ ॥ अथददिलीगवतद्वन॥ नगान



प॥ मिहृष साहिगमनं दक्षिणी गवली रुव० ननायिनिः कृतिः कायाः अजादाननय  
 त्रन॥ ॥ अथ वामांगवली रुव० ॥ अता नय॥ माहृष साहिगमनं वामांगवली रुव०  
 ननायिनिः कृतिः कायाः सम्यग्दास्यदानन॥ सम्यगस्यैकस्यैवार्थ॥ दासी दानमनु  
 ॥ ॐ यदासीमयादरुं जीवत्स युतियादिता। सदाकर्मकवी सांख्य। यथैवं रुदमे  
 न॥ ॥ ॥ ॐ तिगीमदामध्वरुदसू विस्तुनगीमन्ना नायलसूतगीमदामदुषू  
 सूतदिनकरुदकृतकर्मवियाकसात्रनियतदहेकदणशायितत्रागरुवालि  
 ॥ ॐ ॥ अथनियतदहेकदणशायित्रागरुवालि॥ तगुनित्रात्रागरुवालि॥ सखा  
 नि॥ ॥ वृक्षद्वय॥ नित्रात्रागनिदानेनस्यनिः कृतिः नवाद्याद्वै समादिष्टं जयह  
 मादियुर्वव॥ ॥ अता नय॥ नागरुव्रीचसूतगीमद्वय॥ नीर्ववागवान्। सीसंय  
 लननं दद्यादद्याश्चसुवासर्व॥ नागः सीसं ॥ ॥ अथयत्रकर्मवियाकसमूह  
 य॥ ॥ गुर्वयवाधीनित्रसिः नागवान्जायतनव॥ रुद्रातिरुद्रुर्वीनवालाय

१६



लमथयनी। उ। यथा निपुदया च। तिलपार्श्वे तथेव च॥ ओ। यथा निमित्रा वागदुना लि॥  
 जूथयनी। कर्मवियाक संगुह॥ वा। यथा यवगना दीर्णा। वृत्तानां त्यागकावलात्। निमित्रा वा  
 गयुता हया। रुन्निष्कृतिव। अ। श्रुत॥। ग। रुत्या यावर्ग कर्षा। त्यं वा। अदि यथा ऊर्नी। उ। य  
 रुचं जय चैव। ह। म॥ कू। म्। लु। मं। कू। क॥। रुचं दिति। ग। य॥॥ ॥ जूथ निमित्रा वागदुना  
 यवी न दानं॥ रु। मा। दो। म। रु। धू। वं। च। वा। य। यू। ना। ल॥। उ। यवी नं सव। धू। न। नि। मि। र्ति। र्नु। य। ला। द्य  
 न॥। तदद्वन नदद्वन। यथा विरुव गोपिवा॥ उ। रु। वी। र्थं। वा। उ। र्ता। वा। तावत्या सैख्यमा  
 कृती। वा। द्य। ल। म। यवद्व विद। अ। गि। या। य। नि। वं। द। य॥॥ म। नु। ल। न। न। वि। धि। व। त्यं। जि। ता। या  
 गुलीयके॥। धा। ग। वि। धा। मा। उ। ग। नां। यत्र मात्मा च रुर्म स्व॥॥ विना गय रुम किर्षं। वा। ग  
 वं गीमित्रा गती॥ दानमनुवद्वयका भत्सा रुवीय यक्षी यवी नं। वद्वय दानमिति  
 वद्वय पूजा विधा यदशा॥ जू। ग। सा। मा। न्या। तद्व। दानं रुवती ति मरु धू। व॥॥ ॥ जू। थ  
 कां। ग। नि। म। त्रा। वा। ग। रु। नी॥। ना। वद॥॥ वद्व। वा। वी। यदा। ग्री। या। दि। न। यो। पा। र्श्वे। वि। ल। य। ग॥॥। उ। कां



(मनमित्राग्री तवतीत्या रुना न दः॥ अक्षीर्णां तूनीत्य त. सूक मक्ष रुनीं गती । जय चन  
 घृता र्यां च रुद्र या च तथे वेदि ॥ ओषधानि य दशो च वि पान द्वादश मा जय ॥ च नूयुता  
 र्यां पुन्य क मक्ष रुन गतीं सकल सूक न रु मष्टि मरु लूवे ॥ या न स्क न गृध्र ॥ अथ तः  
 भीष्मि गल य ऊं या पी पु का ल्य गु वी वि मा र्षि व रु र्क्षा त्व क (मे ता र्यां ग्म दाना कू वू का  
 दधिय स भीष्म ॥ तला दा द्वि वृ दामि म मि त्य द्ध व द व रु के वि नू या द्ध (य त य द्ध म रु  
 ग या ॥ अथ वि ग य रु मि त्रा मा रि ना यी दि ति ॥ ॥ अथ सू य वि रु रु न ॥ भ ता त  
 य ॥ ओषध स्या पि रु व ल्म सू य वि रु ॥ पु जा य तं । त न सू य ॥ पु दा त यो नि ष्के क स्य  
 य थ वि धि ॥ ॥ अथ (य क रु न ॥ पू र हा नी च पु न्धा जा य तं (य क ल ॥ स दा । उ या  
 अ दि व र्म सा पि द श्या त्य न ग तीं ग य ॥ अण ॥ उ द्या ना म ल्य सा ना र्थः स र्य कृ त्वा न्य व भ  
 न ॥ व र ल्म त य न क रु मि ति म नू क पा य धि रु ॥ ॥ अथ म रु क व ली रु न ॥ भ ता त य  
 ॥ जा ल्य रु म रु ग म ना जा य तं म रु क व ली । त त्या न क वि रु द्ध र्थ पा जा य ल्य व र्म च



३७॥ ॥ अथ कर्षुवागहवाति ॥ कर्मविया कस्रधाति ॥ कर्षुवागनिदानानि ॥ तायन  
शीलिसु नयः ॥ येषु च कर्षुते दैव ॥ तथा वा कीरिद्यातनी ॥ ॥ तय कर्षुययहरी ॥ कर्मविय  
कस्रगुह ॥ मातायि रुगुनृधं च दववा द्रलयास्रथा ॥ गृह्णति निदीवृ द्यायः ॥ कर्षुस्थिति  
स्य ॥ भाति ॥ ॥ यूपययसुवैरुस्य ॥ नकिः ॥ रुद्रवृषुया ॥ ॥ विवल्थनकवस्रुधं ॥ दानाद्वा  
द्रलराजना ॥ ॥ ऊयाद्वा माचुरुवति ॥ मेवमनुलभकि ॥ ॥ ऊयहामसंस्थाशरुव  
ताययताना ॥ ॥ अथ कर्षुकिमिहरी ॥ कर्मविया कस्रमृचय ॥ सद्यवावाविहीनय  
गभीद्वागनादतः ॥ स रुवृमिकर्षुसु ॥ तस्यायस्यापनरुय ॥ दद्यानीलवृवायं च  
य ॥ ॥ कविधिनानवः ॥ विहीनयुचन ॥ ॥ धिनावृवदानसं ॥ एतान्वा नृकु क्वाचन क  
वन ॥ ॥ ॥ अथवाधिर्यहरी ॥ कर्मविया कस्रधाति ॥ ॥ वाधिर्यस्य निदाना  
नि ॥ ॥ शीति ॥ ॥ सुति ॥ ॥ लंघनी ॥ ॥ उन्माग्नवृकितावेव ॥ महानद्यादिधानकमिति ॥ ॥ ॥ गता  
नयः ॥ ॥ स्वस्रुवागीरुवधिवानवकाकपुजायन ॥ ॥ तनकार्यविशुद्धार्थं ॥ यतिवाद्याः



यदीयं ॥ वतानं युक्तं दद्यात् सर्वं यत्नं संपूर्णं । वाक्प्रायश्चित्तं उर्वदविद्वत्पुल्लसंयु  
तं ॥ ॐ मंमन्तं समञ्जस्य वाक्प्रायश्चित्तं संपूर्णं ॥ ॐ मंमन्तं समञ्जस्य युक्तं दद्यादित्यने  
यः ॥ सर्वस्वमिजगन्मातः ॥ द्रव्यप्रायश्चित्तं । द्रव्यकर्मकाविलं यार्थं ब्रह्मसंयममन्त्रवि ॥  
॥ ॥ अथ कुरु कर्तृत्वं हरे ॥ ज्ञातातयः ॥ ज्ञानं कुरु नित्यं चैव कुरु कर्तुं ॥ प्रजायते । ज्ञाया  
दद्यात्सविपायसायधनं स कलिका ॥ ॥ अथ कर्तुं वागप्रतिमादानं ॥ कर्मविपाकसा  
नं ॥ कर्तुं वागः कलस्य ॥ सकयालाजयस्त्रिः ॥ अज्ञानकविधिः ॥ ॥ अथ कर्तुं  
पुरुषं ॥ कर्मविपाकसमञ्जस्य ॥ मेधुनं नृणां यात्यिनाः कर्तुं गूलीतवकुसः । सचैव  
वधिवः कश्चिन्त्ययालसस्य नयवान् । निर्वर्तिविगतिर्कंदया । वाक्प्रायश्चित्तं द्वादि  
विष्णुपकालिकान्मंणः । अथ वागस्य ज्ञानं ॥ वेष्टुवामन्त्रः । पूनयसुक्तं । न द्विष्टुविति  
श्रुतं ॥ जयसंख्यावाक् स कुरु मयुगलतमयुगं वा ॥ अथामाजुनया । ० न । मन्त्रि  
सतिर्नयिवः । ज्ञानं वाक्प्रायश्चित्तं । उदयादिति तथ ॥ अथ वक्ष्यमानः ॥ गूलवि



विष्णुयः॥ ॥ अणुनगुवाग रुवा वि॥ कर्मविया कसू धानि॥ ॥ अकि वागनिदानानि चत्त  
नीति पत्र अण॥ कृत युगा न्य द॥ रु द॥ यव ना नी नि वि दली॥ न ह्य वश॥ यद॥ लन॥ सि यो द  
४॥ य हं ऊ न॥ ॥ ति॥ कर्मविया कसम अय॥ यव दृष्टि विद्या न॥ रिष मिथ्य च व द व  
कामात्य व सि यं द द्वा॥ न गुवा नी त व न न॥ वा नु य लं य वा कं व॥ वी वा ग द्वि य रु ऊ  
नी॥ क र्या द्वि य॥ स य॥ लू ति॥ च व ल स र्पि या त था॥ अक्ष रु व स रु मुं रु॥ रु द या डो ग  
म क थ॥ व र्चा दा अ॥ से म रुं रु॥ ऊ य दा र्श स का च न॥ द या द्वि पा य वि धि व॥ न गु वा ग  
४॥ य म म्य ति॥ रु ऊ न मू द्र पु धा नी॥ मू द्र न् वृ द्वा॥ ल द या॥ न गु वा ग नू ये रु य॥ ॥  
ति व द्वा॥ लू ॥ य ति दु र्वा स र्वा न्द्र य॥ व र्चा दा अ॥ सी ति द म् क व म नु॥ ऊ य स र्वा  
म रु पा य य ता का रुं या॥ अ॥ अ म व क्ति त मि ति॥ ल य ॥ ॥ अ॥ ध नं गु य य रु नी॥ क  
र्म विया क सै गु रु॥ द म्य नी र्वा य वृ लं रु॥ मे धू न या नि वी अण॥ स नं गु य य रु नी  
द द्वा र्वा मि ति म नु त॥ ऊ य रु मी व क्ति त॥ ल क्वा वा द्वा ल रु ऊ न॥ स रु स क ल म



स्नानं नवः कृत्वा द्विजं रुमः ॥ पूर्य गच्छेन्नद्विषिकायुशतं ॥ मृगवमनः ॥ जय हामया ॥ स  
 र्वा जगत्पुरुषं ता ययता का ॥ वगच्छेन्नयूनवनिधे कुवदादिह्यननजय हामो समुच्च  
 यतं ॥ स्नानं नवसो वसु कर्त्तुं इत्थं ॥ समस्ति कुव सनी ॥ अदि न्या तत्रे ॥ कृत्वा दिति मदा ध्ववः ॥  
 अथा यवः ॥ भता गयः ॥ घृत वीरं मुपू वषा ॥ जायत नं गवा गवान् ॥ उया अ सय दशा  
 द्वे ॥ घृत धनं विधानतः ॥ घृत धनं विधिः ॥ कृय रुव उका ॥ अथ नं गवा गः ॥ यतिमा  
 दानं ॥ कर्म विद्या कसा व ॥ शुद्धा द्विवा ग सुली ॥ या ग रुद्ध व दामयः ॥ अगानं  
 कविधिः ॥ ॥ अथ न्यत्वरुवः ॥ भता गयः ॥ यि रु हा य तना दीना ॥ मा रु हा न्यः ॥ पज  
 यतं ॥ नव कानं पुकृ वीत ॥ पाय श्रि रु य थ विधिः ॥ पाजा य यानि कृ वीत ॥ निं  
 द्वा सु विधानतः ॥ वतानं का वय ना वः ॥ सुवर्ण यल स र्वा या ॥ स र्वा या य विमान  
 न ॥ स र्वा यो य मयं वः ॥ ना मयार्ण उ वृ व व ॥ स र्वा यि यल न वः ॥ पृ व व दि गिय  
 ले च उ किं द्वा र्वा या ॥ ना मयार्ण रु व न व मि ति य वि ला वा रु य का व ॥ ल स र्वा ॥ न ग



त्यार्णवश्चमार्गवासदवमूर्तिस्तुयनार्थं. रुमनिष्कलकरुं श्यादवः॥ श्रीवत्सलार्चनः॥ य  
दकलनसंवदश्च. पूजयन्विश्वानरः॥ नोकादिजायदागशा. सर्वोयस्कवर्मयुगा॥ नोका  
मयलक्ष्मीर्कृतविष्णुपुमिसमा॥ उयस्कवः॥ सोवः॥ धूमनोकादलुः॥ पूजायुवसुक्  
न॥ वासदवजगद्द्वय. सर्वरुगागयस्मिन्. यागकाधूवमर्गमा. तात्रायाप्रितान  
कः॥ सुहृदीर्घपुलगाथ. वासुकीर्गविसर्गयः॥ अन्यस्थायियथगकि. विपुस्थाददि  
धर्मादि॥ ॥ अथनीललावनत्वरुवी॥ भगतागयः॥ भगतागयः॥ भगतागयः॥ भगतागयः॥  
ललावनः॥ वासुकीययुदागयः. मरुनीलमालिद्वयः॥ ॥ अथकयिलादीत्वरुवी॥  
भगतागयः॥ नीतिदत्तकयिलादः॥ स्या. द्रयाश्चादिवसद्वयः॥ नीतियलगादशा. दल  
कृत्यदिजातयः॥ नीतिः॥ विरुवी॥ ॥ अथमन्ददृष्टित्वरुवी॥ कर्मवियाकर्मगुरुः॥  
उक्तिः॥ सनयज्जादित्य. यन्मृदयकमन्त्रवः॥ मधुगन्मथालुक्. यान्कमन्त्रिष्ट  
उवसः॥ नन्दगान्धवावन्द. मरुवन्मन्ददृष्टियुक्॥ कोर्म॥ घृणनववृत्तानेन



[illegible]



यदिकल्पय ॥ मोक्षिके युक्तं वेदुर्ध्वमित्यर्थः ॥ वसेन्नीनाविधेर्न द्व. मर्त्यकल्पं गुरुक  
र्त्तुं। मृ ययत्यत्र विष्णुः ॥ यीत्यर्थं च स्व गभधियं ॥ विष्णुं लय विष्णुः ॥ यत्र न ॥ गन्धं पृष्ठा  
दने वृक्षे वृत्ती नवाक्ष (भरुमी) पृजय तस्यु विष्णुत्वा. गन्धं यथा दत्तमिदं ॥ कामश्च  
गभकर्त्तुं ॥ मनेरु द्वाचके ॥ भु ॥ यद्वा गभ उ गभय ग्रा. म मि दाश्च तिलादि कि ॥ गभ उ  
य का गभ ॥ न क न व मना ज वाः कि म नु गभ य ॥ नाना भाखा रि प्रायं व द्वा व चनी आदि  
त्यय द न च व वी रु या गृ य ग ॥ काम र्त्तुं स्थाव य मि द द्वा म द्वा रु र्त्तुं ॥ गभ उ गभ य गी ॥  
यदि वा जाय विद्वा रु. सर्व र्त्तुं य काय श्री म दि। गन्ता ॥ गभ उ ॥ य चा द या न ॥ अ ॥ य ॥ य  
तिष्ठा का र्त्तुं. स्व गृ य क विधान ग ॥ यन्मा रु वा च नी का र्त्तुं वा द्वा ले र्त्तुं द या न गे ॥ ग  
स्मि रु र्त्तुं व ग द या. को वि यी त्यर्थ मा द त ॥ रु क्ता र्त्तुं वृ य वि धि व. र्त्तुं यत्र कट का दि कि  
॥ मनेरु भान न वि धि व. त्या क्ता र्त्तुं य द्वा रु र्त्तुं ॥ द वे द व ज ग न्ता थ. ले र्त्तुं पि य य वा  
य ॥ वा रु र्त्तुं स्य पु दान न. रु र्त्तुं क र्त्तुं वि या क र्त्तुं ॥ अदि वा र्त्तुं ज ग न्ता थ. ना वा य ॥



जगन्मय ॥ यथा वा पटले वाधि. वातन क मथयिवा । न कं वा या धव का र्था. तथा र्वदमथ  
यिवा ॥ तथा विमृष्ट विषु र्द. निष्टे विष्टे धव न्धु रि ॥ स्नात्वा विपान् लाजयित्वा. सुखी तव नि  
मानव ॥ दाना रु ने स्नात्वा यथा हं वाचयित्वा आश्रम वंश वा द्वाभन लाजय ॥ ॥ तथा  
व व द्वा ॥ ॥ अक्षि संलवना गम. माश्रं कनक संयुगं । दशा द्वि पाये विधि व रु डा गत्या  
यन रु य ॥ ॥ अथ नका श्च रु न गम पा ल दाने ॥ रु मा डो महा र्क्ष व व वा श्च ॥ नका श्चः  
जायत तस्य. या ग वान यन द्र य । कवा नि गूल यक्ष य. तस्य व आ मि नि कु ति ॥ विष्णु र्मा  
या ल व व स्य. यथा न क्वा च रु कि न ॥ स व (पू) न य नि कु ति. व लू ना द न त त्य त्र ॥ व रु  
यी उ क संयु क्ता. द्वि कु जां रु वना रु मां । का व यित्वा गु रू का नां. पु का ल्य पु वि वा वि ॥  
व मुं ला व द्वा यित्वा च. गन्ध मा ल्य ॥ सम र्च य ॥ त लु ला य वि सं स्था या. द र्वा ग क न सा न  
त ॥ आ वा र्थ ॥ सर्व ॥ म मु द्वा. व द व द ग या न ग ॥ पू जां व मू ल म नु ल. कृ षां द्वि व स्य रु  
कि न ॥ ॥ मूल म नु ल ॥ क्ली कृ ष्णाय गम वि दाय गम पी ऊ न व लू ला य स्था रु ॥ रुः



मंयन गुरुवीर समिदायतिले वयि॥ पुं दूद विष्णुः पुन द्विष्णुः विष्णु नृकं वृत्तिकमा ७॥ मंय  
गृ अक मा। गर्ज। या। न॥ संस्कार्यनी तव ७॥ कुरु यो नृलमनेन विधिसंयादि तं वरं॥ पुली  
तामा कय र्थनी कत्वा द वं ययुज य ७॥ द वस्य द या ने वं यी रुत्रिः सर्व समनत ८॥ स  
मि द्य वीर्य तिले ८॥ पुति दु य मष्टा रुव ग रं दू त्वा पुनः पूजा या दू ता। य न ने व य म  
ष्टा सु दि दू वलि शु का र्थ ८॥ गनः शु क्राम्ब न प्र नः शु क्रमा त्या न ल य न ८॥ द या डा गी  
पूर्व मुखः पुति मां तां सद कि लीं॥ मनु लान न विधिव न्त मस्त्वा थ रु कि त ८॥ ग  
विन्द। गमयी जन वल्ल रुं। कं गम स्र व सु रि द। ग नु वं य। गम वे द्वा ना दि पु व ने क द  
सु। संत्र कि ना। ग य ग वा मनी क॥ गम च दू व यति ति वा ध न न। जा ता कि मा र्थ म  
मना ग या मु। त्व दी य दा नं हि सु दि दू र्थ न का न्ध म गत्स म या क वा ७॥ उ वं क  
त्वा पु ती का र्थ। गम य व स स्य दा न त ८॥ अ वि वा द व हि सु जा य न ना य र्थ ग य ८॥ ॥  
अथ के क वा क त्व रु वी॥ गम ता ग य ८॥ ग व को नि रु नं च व जा य न क क न क ल ८॥ द या द



त्रिमयी धनी. स तस्यानकशकय ॥ तत्र कर्म भदन ॥ तत्र धन विधि ॥ कय रुव दनि ॥ ॥  
 अथ धिगल कल रुव ॥ भगवत ॥ मा ज्ञान निरुत वेव जायत विरुत कल ॥ न वेदु यनि  
 तानि दातया नि स्व न कि ॥ ॥ अथ न गुगुल रुव ॥ कर्म विद्या कसै गुरु ॥ न भय न कि  
 यै दृष्टा. सूर्य वासु मथा दय ॥ न गुगुली तव सायि. न दियु कर्म न दण ॥ वया भद हिम  
 कुल. हाम ॥ स्या दष्ट वायुत ॥ वय ॥ सय धू ॥ ति व न गु सि ह अवा वि ॥ अक्षि स्या ॥ ति उ  
 थ. रुगुली पुन मयति ॥ व द्या दा ज्ञानि व अमि दही ति मनु ॥ अष्टाधिक मयु न हाम ॥ अगु  
 व अमाल ॥ गुल दान विधि क्य ॥ न गु स व न या व डी गति वृत्ति ॥ न गु वि द व ना त्वा सूर्य य  
 जा त ल्पी स्य र्थ वासु ल हा ज न व का र्य मिति मरु लू व ॥ ॥ अथ न गु कुरु रुव ॥ भगवत ॥  
 मा तु ला न्या सु ग मना न गु कुरु पुजा यत ॥ कर्मा जिन य दान न. पा य धि र्म समा व न ॥ क  
 र्मा जिन दान विधि म्मा स्त्र दान का लु प सि द्ध ॥ ॥ ॥ ॥ ति दिन क व रु द रुत कर्म वि  
 या क सा न न गु ग रुवा नि ॥ ॥ अथ ना सा वा ग रुवा नि ॥ कर्म विद्या क स धा नि ॥ नि  
 दान म क वि क्य. ये धू र्च ना सिका वृज ॥ कर्म विद्या क सै गुरु ॥ ल व ल स्या व रु रु रु. मी धू

६४



प्राप्तं विधातिकः। धर्मे तत्त्ववर्गं। धर्मजायमानस्य निवृत्तिः॥ उं उग्रनयशुर्वसम्यक  
कथं दक्षकृत्वायुर्गं। इदं याकि लस्यि कर्त्तव्यं कर्त्तव्यं सिकी चर्त॥ दद्याद्दवद्विजगर्वा के  
र्यात्त्यजं स्वशक्तिः॥ उग्रनि स्यने नवहामा जया दक्षोऽनन्युति उद्यी॥ दवः॥ सूर्यः॥  
अथ वकनासिका त्वरुर्न॥ शतातयः॥ कृकृत् निरुतयेव वकनासः॥ यजायर्गं। ग  
नतिरुः॥ पुदानया वाप्लवाय हि वधुर्कं॥ ॥ अथ नासावलेहर्न॥ शतातयः॥ ॥ श  
त्रियकुपसंगन जायर्गनासिकावली॥ अत्र न सविष्टुर्गर्थं वा जायत्यव उद्यी॥  
॥ ॥ अथ युक्तान्नयनासिकावलेहर्न॥ कर्मविद्या कर्मगुरु॥ कर्मकाल कृकृ  
टश्च स्वरादीन्नायः॥ सुतः। स नासिकावलीयस्या दाह नयश्च जायर्गं॥ उग्रनयशु  
यन्तायः॥ इदं यादयुर्गं चर्त॥ श्रीसूक्तं वज्रयुद्धं इव कर्त्तव्यमिति॥ निखायं वनि  
वधीया॥ द्विवर्गं कल्पमनुगां॥ निवर्गं कल्पमनुगां वध्वीया दिव्य नयः॥ अथ सा  
मान्या र्गं कदापि मयीति मरुर्गवः॥ ॥ ॥ नूतिदिन कर्त्तव्यं कर्मविद्या कर्मा



ननगवागरुमलि॥ ॥ अथनासा नामरुमलि॥ कर्मविद्याकर्मधनित्वे॥ निदानमकवि  
रुमयैधैर्ननासिकावली॥ कर्मविद्याकर्मगुह॥ लवसस्वावरुकादुगोर्लुवालीपुया  
लिक॥ सधनस्वनवांग्रेत्रजायतगस्यनिष्ठमि॥ उंउग्रनयशुर्वसंमकदधदशकन  
युर्न॥ रुद्रयाहिनसयिर्ग्रीवकवासांसिकावर्न॥ दद्याद्वद्विऊमर्वाकृष्टीसृजास्व  
किरु॥ उग्रानिष्ठननवहामाऊयादग्नी॥ नयमिउग्र॥ कवः॥ सूर्य॥ ॥ अथककुना  
सिकावर्न॥ गगनय॥ कृष्णनिष्ठगदेववकुनासः॥ उजायत॥ नननिष्ठयदात  
शावाग्नीयदित्रश्चक॥ ॥ अथनासावलीरुर्न॥ गगनय॥ गगनिष्ठयमीपमी  
नजायतनासिकावली॥ अवनस्मविगुहार्थं॥ उजायतवदुष्टय॥ ॥ अथपुका  
नवलीनासिकावलीरुर्न॥ कर्मविद्याकर्मगुह॥ कर्मकालंकृष्णस्वमादीनाय  
०० अग॥ सनासिकावलीवस्याकदुर्नयश्चजायत॥ उग्रनयशुर्वनाईरुद्रयाद  
युर्नवर्न॥ गीसर्कवउयैवदोद्विद्वद्विनिष्ठिर्मा॥ निरवायवनिवधीकाकिवर्न



25



पर्व॥ अथातः प॥ ॥ स्वमा ऊर्जा नादि हिः सृष्टं दुःकादूर्जश्च नाहं क॥ घीत्वा विनाशं गमयन् हाउ  
 यद्वा द्रव्यं गयं ॥ ॥ अथ पूर्वकर्मविपाकसमञ्जसं ॥ कूटसादीहवद्वक्त्रागीभलितपि  
 रुदाने। कृत्वाति कृत्वा कृत्वा ग. वन्द्या यत्तमथयरी॥ कृत्वात्कृत्वा हांमं व. गमयन् गीमयुर्गज  
 यो॥ देशाद्विद्वन्धीहींश्च. मुख्यभागस्याभक्तयं ॥ ॥ अथ मुख्यभागरुवगजदानी॥ रुमाजी  
 महार्णवववोक्षयन॥ वाग्निनाशं पुनः॥ कृत्वा. मुख्यभागीरुवन्नव॥ तस्य दाननविहितं॥  
 पुनीकावायमयुगं॥ सोवर्णं वाजनीवापि. पलनाह्वयलनवा। कात्रयत्कविर्हीमोनी. य  
 थविहवगापिवा। तस्यैव कात्रयदको. गुह्यनवजगननु। यर्चुसमोकिर्ककृत्वापिताना  
 मक्षिणीतथा॥ सैव सुधीतवसुध. गन्धपूष्पादगादिहिः॥ अर्चयद्वा नानागिहं. धन्यं  
 धन्यं कर्मणी। गुणवृक्षा यस्य मयनी. वाष्पलं सैयगदियं। अर्चययनयातका. वसुलीकावह  
 वली॥ वृजयत्ययगाहत्वा गनेतत्कर्मकात्रयत। समिदाश्रितिलेखेव. हांमं वापिपव  
 र्गं। अग्निनाग्निस्तथाध्यायिगुर्कश्रितिवितिकुमोत। मनुजगविनिर्दिष्टः. ध्याध्याध्वतः  
 शतं। कृत्वायेवपुलीताम्. सुगाहस्यर्चनीरुव॥ स्वाहानीकर्मकृत्वाथ. पुनीतायादप  
 तथ। ततः॥ कृत्वाध्ववध्व॥ गुह्यमास्या नूतनपन॥ तस्मै दूतवगंदया. कविर्हीमं सदक्षिणी।



मनुमाननविधिवत्प्राप्तुं वायुमूदधुखः। सुपुगीकगजनुत्वं सनस्यसिधयकः॥०॥  
उस्यवाहनगत्वं सर्वद्वेषपूजितः॥ दाननाननदहन मूखवागीविनाशयः॥ वायुम  
नराजयदकः साधुनृजोतवधूरिः॥ सोवर्णदिग्गजवाजतावदकको॥ हामधुम  
रुर्नगरी। नगीर्यमनुमनरादवता। सदद्यादध्विनोरुमनिष्कद्वयविनिर्मितो॥ ॥ अ  
थदनुवत्वरुर्॥ भगवतयः॥ गुरुकवनिहकवेवदनुवाजायगननः॥ सदद्यागुवि  
शुद्धार्थदृगकृष्टसदकिलं॥ ॥ अथभममदकद्वी॥ भगवतयः॥ भममदकः

स्यात्प्राजायस्याष्टकीवत्र७। गच्छन्वायामुताः सकृदश्रुत्यायुद्धयः॥ ज  
यित्वावमहावृद्धिर्दशार्धशुद्ध्याहितान्। ततारिष्येकः करुणा मनेर्वृत्तदेव  
गैः॥ ॥ अथजिह्वादायवरुर्॥ कर्मविवाकसमृद्धयः। जिह्वात्रागनिदानानि वत्वा  
शिशोः पचकः। युभोयवृत्तावत्त्वमन्यइखकृतिः सदा॥ यवस्यवसनाकुंद  
क। येवानृगहायर्षी॥ ॥ भगवतयः॥ यकात्रद्वी। शिवेव जिह्वात्रागः पुजायतः॥  
भयशाः पुजयेन्नृद्धिर्दशार्धशुद्ध्याहितः॥ उवागको भयगुयुतजयस्येकद्वय  
स्यान्नायत्वाज्ञकजयस्तनदशककुन्वाभयशादशसहस्राविशुद्धयो॥ ॥



अथ यत्र कर्म विपाक समुच्चय ॥ यत्र यद्द्विद्वद्वत्कर्म तत्सर्वदा नृणां सत्त्वमात्र ॥ जिह्वा शृङ्ग दारुण शब्द  
 यद्वयागावसंसदि ॥ जिह्वा वागीश्वरदास्य वली चैवास्त्रिजायते ॥ यत्राकाशे ते यत्रैव हामः कृष्णालु  
 सङ्कः ॥ कथानां प्रसूतः कथं जयदा मरुतैव वा वीर्यादीनां गथादान मोक्षप्रसन्नसंस्मृती ॥ ज  
 यहा भेदं सखा ह्यरुणगादिभिः ॥ सुकान्तलोभात्तान् ॥ ॥ अथ मूकत्वद्वयं ॥ भगवत् ॥ मूकत्वा  
 द्द्वयं ॥ अथैव तस्यैव निःशब्दः ॥ मूकत्वा ॥ गतकार्यं विमुक्त्यर्थं यति वा न्दाय लोचय ॥ वगान्कवृक्  
 कंदयात्सर्वलूयलसंयुगी ॥ वाक्प्रलय कर्तुर्द्वयं विदवकुलसंयुगी ॥ ॥ मर्ममर्तु समुच्चयं वाक्प्र  
 लं विमर्जय ॥ सवस्वति जगन्मातः ॥ द्रव्यमा विदेवर्त ॥ इक्ष्मकोत्रलं वायं वक्ष्ममिचत्र  
 मश्ववि ॥ ॥ अथ मूकत्वद्वयं तिलयप्रदानं ॥ हमाक्षो मरुत्तु वव वायुयूना ॥ ॥ स्वरापद्या  
 तीवाच्यं ॥ हर्मा मूकः युजायतं ॥ वक्ष्मिगत्पुती कारी यनसंयद्यं सुखी वाच्यं हर्मा गुर्वी  
 क्षी विना वदति अहीयुक्त कुरुच ॥ कथ्यात्सर्वलूयलसंयुगी ॥ यत्तु विरुव  
 तः संयन्ति मा भर्तु नकारय ॥ वक्ष्मकुलसंयुगी ॥ तासु वागुवि न्दाय स ॥ तासु वागुवनी  
 मालं यत्तु लाम मूकं विद ॥ पीतवर्णं लसंयुगी ॥ पार्तु विनिःशब्दं ॥ अटकद्विगया मा  
 नतिलनामो यत्तु लाम ॥ उयवाच्यं ॥ मातुगति वाच्यं ॥ सर्वभक्तु विगु ॥ वक्ष्मवदनपूष्याथ



[illegible]



ली। गयेवा रुय रुका ॥ १३ ॥ गवमुल सीयुगी ॥ ॥ गतमा ॥ १४ ॥ गतगान्धे मूलमकुल पूजय ॥ हामि  
 वकात्रय रुग. समिदाष्ट वरु कटी। सत्र स्वगिय दमव. ॐ ति मकु शुना दित ॥ आचार्य वूज यित्वा  
 ३. पूजय वसत्र स्वगी। सत्र स्वयेन मः ॐ ति. यथ सिंगी मकु ग ॥ तस्मै कृणवर्त गीरु. दवीं दया  
 सदा क्ली। सोम्य देवि महा हा। ग. सर्वद वन मस्तुते। यद्यासन गग सर्व जगता मलि हा विलि  
 । स्वभाय दाना नदीय. पद्मा ज्ञा शुभे यानू द। मध्व कत्र मिदी दान. सर्वेषां ववि। गयते ॥ ॥  
 ॐ। ये ७ मूक त्वरुनी ॥ भाता गय ॥ ॥ विद्या पूरु क हारी व. ७ ७ मूक ४ यजा यत। ॐ ति हा समर्प द  
 या. ब्राह्मण य सदा क्ली ॥ ॥ गुर्वी कृतिना वेदा य। ॐ ति हा समर्प हार गी ॥  
 ॥ ॥ अथ स्वस्त्योक्त रुनी ॥ भाता गय ॥ ॥ मुक सात्रिक या घागा. नत्र ४ स्वस्ति न वानु वे ७। स  
 दा मुय पूरु की दया सविपा य सदा क्ली ॥ ॥ अथ परी कर्म विद्या कर्त ग ॥ ॥ वेद म्वा धर्म  
 भा मुवा वि कोली या द्वि यानत्र ४। अधी नं न स्य ना या गि. जिह्वा या ४ स्वस्ति नं त्व ७ ॥ अथ रि  
 सुट वकात्र. जिह्वा या विल वा रुव ७। रुक्ता ति रुक्ती कर्वी त. वा न्दा यल मथ यित्वा। सुकं ग  
 मग्नि व पूरु र्वी. जय वे वा युत ७ यी। दया द्वि व पूरु विप र्या. रु। जन व स्व ग कि ॥ ॥ वि कोली  
 या रुत का श्री य क ॐ र्व ॥ ॥ रुक्ता दी निश वस्तानि समस्तानि वा ॥ तामग्नि व पूरु मिति ते कि



नीयाय निषत्पठितं जातवदसं ॥ स्यादिसुकार्यं सुकं ॥ ॥ अथ जिह्वा दन्त वाग पुनि मादानी ॥ कर्म  
 विया कसात्र ॥ लंवा कोत्रोक्तिगो जिह्वा दन्त वागो द्विवर्द्धको ॥ अगन्त कविधिः ॥ ॥ अथ कं ० वाग रुना  
 लि ॥ कर्म वि पा क सुधनि ॥ निदार्न कं वाग स्य गल गलु स्य वस्मर्ग ॥ गल उद्या यद्वर्ण ॥ तथा  
 दार्थ वि निष्कृतिः ॥ ॥ तगु बं कु कं ० त्वरु रं ॥ भगानय ॥ अथ वि निरुत येत व कु कं ० ४ पुजा  
 यगं ॥ या जाय स्यानि यत्वा वि सक धा न्या यो नि स्तु ॥ ७ ॥ गर्ग यत्ता निदद्या वृ व च न स द्विजात  
 य ॥ ॥ अथ दीर्घ गल त्वरु रं ॥ भगानय ॥ व क द्या ती दीर्घ गला दद्या न्ना धव तां गुरु ॥ अ  
 थ य रं व द्या ॥ ७ ॥ अथ कुरु कुरु द्या वा वृ क वाग ४ पुजा यगं ॥ कुरु ग यं व कृ वी ग दद्या ध्वनं  
 सदक्षिणी ॥ कवलं क मला रुवी ॥ कवल नानमनु ॥ कुलि द्वा द न ला कानां गीत वातर  
 या यरु ॥ सर्व ३ ४ रव रु रं य स्मा दग ४ भर्ति पु य कु म ॥ ४ ॥ तिक क वाग रु रं ॥ ॥ अथ कं  
 वाग रु न पु नि मादानी ॥ कर्म विया क सात्र ॥ क वाग ४ क वा ला स्त्री द्वि कु ४ पाण कुरु  
 ध क ॥ क वा ल मा ला इर्द र्ग ४ सा धी वा हा न ह व ल ॥ अगन्त कविधिः ॥ ॥ अथ गलु मा ला  
 रु रं व ल दानी ॥ रु मा डी म हा लू ध व वा यू यू वा ॥ ॥ गल गलु गल उद्या रु रु रं व ति मानः



व०१॥ दानं न तत्पुत्री कार्त्तव्यं निगृह्य हस्तं व०१॥ मालिनीं पद्मं नागं च० व०१॥ मोक्षिकं मन्त्रं च० वेदं च०  
 पूष्यं नागं च० व०१॥ मन्त्रं कर्त्तव्यं तथा० नृसिंहात्तां प्रकृष्य तत्सु गमय्य गवाजिनं० अत्राह मोक्षिका  
 यत्राह मां वे मां तां प्रकृत्य य० सर्वं गवाजिनं सुगमिनि वद प्रकृत्य य० तां मुया एविनिदि  
 श्य० तिलानां मूयत्रि न्यसे० तिलानां वयं वीमर्त्य० अलं यं व कमी श्रुता० यदा तदद्वैतं वस्या  
 स्त गच्छा वाचिका वय०॥ महाभक्तिं तथा कुर्याद्वा द्वासे च दया वागे०॥ महाभक्तिर्नैव ग  
 रुभा नि०॥ अ०१॥ गृहद्वयं मनुया दाना द्वे मादि वश्वं॥ अ०१॥ वायुं शुभं विद्वद्० सर्वं भु  
 र्थं तत्त्ववि०॥ अ०१॥ वृक्षा पर्वतं० सर्वं पालिहि न वत०॥ अ०१॥ विधं पूजयित्वा वमुमा न्या न  
 स वने०॥ हर्म्यं वका वयं न० समिदाश्च वत्कटं॥ अ०१॥ सख्यं न तथा मे नु०॥ हर्म्यं वाजान मि  
 त्यपि॥ मनुलं सिद्धं कर्त्तव्यं दद्याद्लगली च वा ग्या त०॥ मनुलं न न विधिव०॥ अ०१॥ द्यूराय य  
 द द्यूराव०॥ मालयं सर्वं देव त्या वद्विष्णु निवादि हि०॥ अ०१॥ अदिता कया लेष्टं तथा सर्वं म  
 ये वपि॥ अ०१॥ मकलं लभया० अविता पीति पूर्वकी० वा द्वासे यय द रुयं० गतं गुरुं यथा रु  
 द०॥ गुरुभक्तिं० कृता ये शुभं गद्या दद्याद्दुद कि०॥ पूष्यं रुवा च न कृत्वा० कुंजी न सरुव थू कि  
 ०॥ हर्म्यं विगृह हर्म्यं वा क०॥ ॥ अ०१॥ पर्व०॥ कर्म विद्या कर्त्तव्यं०॥ अ०१॥ यय नि निष्ठा



मु. यः पता र्थं पुत्रसुखा । निष्ठा पुत्रं वी वायेत्वा । याधीत तस्य तस्य वा । जायत ग पुमाता  
स्था । त्राग सुदय न कथ ॥ गथा ॥ अरु कुरु सुयायी वा । ग पुमाती ह व न व ॥ कुरु ग  
यं य कवी ग । वा न्दा य ल म था य री । अरु कुरु स ह मुं ड । जय त्पू व स क की । सो व म  
नु ज य सु द द की त्या मि ति मा र्ज नी । वा न्दा ल क उ थ ड क्का । त्राग त्रा ग द्वि मू र्था ॥  
सो व म नु मु उ य नि ति शु च ॥ ॥ अथ ग पुमाता त्रा ग य ति मा द न ॥ क र्म वि या  
क सा व ॥ ग पु वा ग १ क र १ व १ १ ग र व क य त्र व धी न । पा न वा य ग रा नि च । द्वा व  
न जी धू नि वा नू ह ॥ ॥ अथ हि का ह न ॥ क र्म वि या क स मू च य ॥ या क त्वा वा न्दा ल  
कुं क । त्रा न ह । म ज या दि क । स क र्त्वा हि का त्रा ग सी य क क त्वा य त्या प न रू थ ॥ या न्दा  
य ल ग र्थ क र्था गु । क र्त्वा य स मी च क ॥ त्रा म नि व धू मि ति व । ज य त्पू क स मा हि त  
१ । त्रा म नि व धू मि ति जा त व द स ॥ मि स क र्त्वा स क ॥ ज य सी र्वा स ह सा य यू र्ता त  
॥ ॥ अथ ग द्द द त्वा ह न स न स नी द न ॥ ह मा डी व म ह लू व व वा यू य ना । ल ॥ वा  
नि व र्ध य १ क त्वा क र्त्वा द्द द वा न न १ । त स्य व धू य नी का र्त्वा द न न ज मि हा पि  
ती । व स ना थ त द द्द ल । त द द्द न वा पू न १ । स न स नी ड य ति मा । क र्था डु ज च



उच्यते। वनदं वा दसुर्गं च विरुगी दक्षिण कर्त्र। यस्मै कं वाग्यी वाम दधानां हं स वा द  
 नां। अगिष्ठं कुं लोचनं कूटं स्वर्णं न वायुनः। पुं कृत्वा गन्धसम्यक् सो वल्लुं यद्रम  
 रुर्गं॥ कूटं तासां दिविर्गं॥ वज्रगन कूटं स्वर्णं न वा सनं कृत्वा गेस्यो यत्रि सो वल्लु  
 यद्रं यसां दिव्यं॥ यद्रम्यो यत्रि स स्वायः दवीं वागीश्वरीं यत्रीं। मूका दामसमा  
 युक्तीं शुक्रं वसुधं सीयतां॥ वागीश्वरी आदि मकुं लं यद्रय त्यीत तल्लुं ले॥ श्वन  
 युव्यः॥ श्वनर्गं॥ सत्कृत्या विधिपूर्वकं। यद्वा ग्वद कीर्ति द्युवा वागीश्वरी म  
 नु॥ वा दसुर्गं॥ सर्वं भस्म कृत्वा सनं हर्म समा व्रज॥ वायु संहृया दसुर्गं गीश्वरी  
 मय कथा। रुद्रया त्स मिधुश्चापि गन्धर्वा वति तानपि। कृता विवा सना मना मा  
 वायुं यत्रि वदय॥ संपृष्ट्वा दसुर्गं सस्य कं वसुधं कावत् वल्लुं॥ मनुष्यं न  
 न विधि वत्सा दसुर्गं यद्रुद्रं दसुर्गं॥ या वकुं वद्वत्सा दवी या सा वागीश्वरी य  
 ना। वद्वत्सा विष्णु मित्रे श्वी॥ युक्तिना सर्ववन्दिता। युष्माकं वदुदानेन दलं नान  
 न वा सना। वाग्निं नार्धं युवा॥ कृत्वा यन्मग द्दरा वली। तत्सर्वं दययद्वि य  
 वा दसुर्गं ता कयावनी॥ अनू क्ता यवा दसुर्गं तं स्वयं युजात वन्धु हि॥ दूव्यं॥



नागावधिवासाजागत्रलंविश्रयपातःपूजयित्वाहामाकनंदयादित्यर्थः॥ ॥अथविद्वत्स्व  
 नरुनी॥ ॥भागवतयः॥उद्धृविनिहंत्येवजायतविद्वत्स्ववः॥सत्यायस्यविशुद्धार्थंरुद्रम  
 कंनरुनी॥कथंनस्यायलीदद्यात्कुरुदद्यानिशक्तिः॥कथंनदानमनुमु॥कथंनवृत्ति  
 रंदविद्वत्स्व॥लमस्तुपूजितं॥वृष्यनंधसिनासामं॥कमलापीयमामिति॥ ॥ॐतिदिनेकन  
 रुद्रकृतंकर्मवियाकसात्रकलुषागहनालि॥ ॥अथद्वदयवागहनालि॥ ॥तगनिदा  
 नंकर्मवियाकसात्रसमूच्चय॥यत्रमर्मास्याटनस्यादृडागसादिकात्रली॥तगस्थस  
 कासहनालि॥अगनिदानमूमामहध्वनसंवाद॥कुरुध्रातायनेमर्त्यः॥करुवान्मस  
 कासवान्॥करुद्वनीवनिर्ह्यहि॥यिरुवागसमन्विता॥कविइल्लुद्वनीवत्यधिया०॥कर्म  
 वियाकसेमूच्चय॥वादायलणयंकुर्वात्यैवागद्विपलाऊनी॥अग्निद्वतायसूकन॥वत्र  
 लसर्पियायूनी॥अष्टाधिकंरुद्रया॥इकवागस्य॥अकथ॥सूकनपुष्टवैहामंॐतिम  
 हावै॥अयूगमित्युपयगसंवद्वाग॥अथयनी॥वायूयूवा॥तद्विष्वात्रिगिष्वाकनउ  
 यंकुर्वाद्विजाकमाने॥पूजयहाऊयदद्याकननानाचमानस॥तद्विष्वात्रिह्यनैवाग  
 यजतिस्वकंनयग॥देशानधूसर्पिहिनयवासांसिॐतिमहावै॥दानमनुदानका



अतः याः ॥ अथ विविक्षाकरुहरी ॥ यमः ॥ निखान्धानविमूर्खः कुरुवागीरवनवः ॥ अथ  
 वसमाप्रति वल्लारुगवाचमः ॥ तस्मात्कथमासमर्कः यावर्कुरुकथनवः ॥ सहस्रनामया  
 ० अहमश्वाखारुवायुगीनामगयलकुर्वीगः वर्याईवहविकुर्वः ॥ ॥ अथ यनकर्मवि  
 याकसंगद ॥ कुरुकणदिदं ॥ वृः कालसूरुहलदिषु ॥ महादानानिष्टुक्रिया निधिद्वारा  
 थवास्वयं ॥ अथ गुरुनादाहृत्वा निधिद्वाराश्चमानवः ॥ स्यामाश्वसकासेष्टः कुरुकुरुमि  
 हिस्तथा ॥ कुरुस्थानेवपीथानगडागस्ययज्ञकथ ॥ महिषीयमदेवलीदद्याद्विकानुसावत  
 ॥ काश्यायदीयगदानं तस्मै गुरुस्वोवहं ॥ असमर्गकुदावाय एवगीरुपवगत्राजयेव्रया  
 नृषं सुकं नामात्रैव सहस्रकं ॥ उद्यन्नगुष्टवर्वाई ॥ अमश्वाखारुवायुगी ॥ हिवश्चवकवासा  
 सि ॥ यथाशद्विपराजने ॥ सहस्रकसंज्ञानं यकुर्यादोगगनकथ ॥ महिषीदानमनुमु ॥ क  
 लमृष्टस्वकुर्यागां महिषीवकुरुषर्षा ॥ सोरं कार्यायदास्यामि ॥ ममश्चानिपयकुड ॥ उद्यन्न  
 यश्चनेनवहमः ॥ वासांसिदद्यादिति ॥ अथ ॥ स्तान् नूदलनूदस्य ॥ ॥ अथ यनभगवत  
 ॥ अथ नानवकस्यानं जायगश्चसकासवान ॥ घृणीतनपुदागवृ ॥ सहस्रयलसंखया ॥ उ  
 द्यन्नयजयकाश्याहमश्चवर्वाईयावधि ॥ ॥ अथ यनसकासहर्वक्षजयागदानं ॥ याध ॥ अ  
 सकासयुगामर्षा ॥ वंदीगुरुलगाहर्व ॥ हमादीमहाक्षवत्रवोक्षयन ॥ अक्षयार्णवसे

२१



कं न कृत्वा तु न जन्तवः ॥ पतार्द्धनाथवापुः सृष्टिकावसमादनात् । न लेम्नत्रकटे । सम्यक् त्वेदम  
(इव सर्वतः) कं हवत्कावयत्तु नितानां डा लयं चक्री । कं हस्यापनिर्मकाय धर्मायां विष्णु  
गनी । निष्कद्वययुगीतकुवा प्रलयनिवदय ॥ कमुलवद्वयत्तु मृगश्रयया कृताव्विगी ॥ १५  
रुचिरुसमगाय ॥ प्रियाया कृदुच्चिना । व नृलस्य तथावाया ॥ श्रीरथं विनिवदय ॥ नमः ॥ १६  
ग हग तुल्यं न माधुजकनायक । जता धियतये उल्यं वाया सर्वजनपिय । प्रवया ॥ १७ गय  
दलो धर्ज या लो सुवाव्विगी ॥ अस्माकं सोरुवतीं भूयो तो सर्वजनाधुयो । उर्वकृत्वा अस्माका  
सी नीवागस्तु कृत्वा कृत्वा ॥ वायदातय कं सुवर्णं निष्कद्वयं सोवर्णं वाजनी वा कृत्वा स्माय  
य ॥ कृत्वा व नृल वाधार्धज या लो चनाममने ॥ संयुज दया ॥ ॥ अथ अस्माकं सपृहि  
दानी ॥ कर्मविद्याकसाव ॥ अस्माकं सुवा ॥ १४ या अस्माकं कमउत्तरयगा वा इद्वयैवामनक ॥  
उवमन्यगपिविषमवा इयू । कर्मवर्षी कृत्वा ॥ १५ अगारुकविधि ॥ ॥ अथ ददय  
किमिहनी ॥ अगातप ॥ अरुदरुदालयेव जायक किमया इदि । यथावत् रुदिउद्य  
र्थ उथा र्थी हीवार्थवर्क ॥ कार्त्तिकमाया चतवर्षे काद अदीनिर्वदितानि रीवार्थ  
वर्क ॥ ॥ अथानावर्णहनी ॥ कर्मविद्याकसन्वया ॥ जता अद्वर्धनी पायनिमिरुतमिथत



यः। एवं इति इति वृत्तिः। विनिवृत्तिः॥ सदृशः। कादृशं सम्यक्। यं वा। द्विपु। राजनी। दकि  
 र्णं यथैव। मूकः। रुक्मिणी। गतः॥ ॥ अथ यः॥ गतः। यः॥ स्वजातिः। जाया। गमनः। जायते। ददय  
 वली। तस्या। तत्कविः। दुःखं। पाजाय। स्ववर्णं। वक्रः॥ स्वर्गार्थाया। अगमनं। नृतिः। कुंदः॥ अथ वा। गमन  
 दृष्टिः। नृतिः। स्वर्थः॥ ॥ अथ स्त्री। सुनः। स्मृत्। ददृ। कर्मविद्या। कसमूचयः॥ अथ मयः। चरु। रुक्मि  
 जात्रमा। लिङ्ग। ननः। सार्धः। कीर्ति। नियाता। वी। तमवान्। स्मन्। स्वयि॥ तस्या। सु। सुनयाः। स्मृत्। जाय  
 नः। जननान्। ननः॥ तस्या। वक्रः। सुवर्णः। तद्वा। गस्य। पशुः। नयः॥ दद्याद्वा। यः। सुवर्णः। रुक्मिणी। दधन  
 मवतः। उमा। मरुत्। ननः। वक्रः। पूजयः। वक्रः। ननः। ननः॥ निवृत्तिः। ददृ। कर्मविद्या। कसमूचयः॥ अथ मयः। चरु। रुक्मि  
 ता। मग्निमिति। मयः। पती। कनः। जातः। वदः। सः। नृतिः। सः। कर्मविद्या। कसमूचयः॥ अथ मयः। चरु। रुक्मि  
 धनः। सति। निवृत्तिः। ददृ। कर्मविद्या। कसमूचयः॥ अथ मयः। चरु। रुक्मि  
 दीर्घः। मयः। गति। याना। वी। पूर्वः। जन्म। ननः। सुवर्णः। जन्म। ननः। वक्रः। गस्य। वक्रः। दीर्घः। ननः। वक्रः। सुवर्णः॥ दी  
 वान्। रुक्मिणी। यद्वि। पा। सार्धः। समधुः। मयः। कर्मविद्या। कसमूचयः॥ अथ मयः। चरु। रुक्मि  
 दादकः। मयः। कालः। यत्कर्म। मयः। सुवर्णः। मयः। सार्धः। दीर्घः। ददृ। गस्य। वक्रः। दीर्घः। ननः। वक्रः। सुवर्णः॥ दी  
 वरिंदः। दद्याद्वा। यत्कर्म। मयः। सुवर्णः। मयः। सार्धः। दीर्घः। ददृ। गस्य। वक्रः। दीर्घः। ननः। वक्रः। सुवर्णः॥ दी  
 धः। रुक्मिणी। यद्वि। पा। सार्धः। समधुः। मयः। कर्मविद्या। कसमूचयः॥ अथ मयः। चरु। रुक्मि

२२

५२  
५२



[illegible]



धर्मा॥ सो न अस्माकं वा॥ उ शत्रु शत्रु वा वा॥ उ दृष्टं जातवदसमिति सूकी वा॥ अथ वशमा  
 लीगुलदानविधिः कथं॥ ॥ अथ हस्तया दगल हस्त हनं॥ कर्मविधौ कर्म संग्रह॥ ॥ वा  
 अलेहगवायीषू. गजा गकूय कादिषू। स्नात्वा यीत्वा वसर्वा। ग. दाहवा न हस्तया दया॥  
 स्नात्वा युकुशं सहवत्कृत्वा न कयनं वने॥ गीर्हिवर्णं ववा सश्व दया कृत्वा न सात्र ग॥  
 यालिवा। ग सामा न्या क कदानमिति कथं॥ ॥ अथ दत्र वागहनं॥ गजा दो गूल वागहन  
 ति॥ कर्मविधौ कर्मस्थानि। धी॥ वशं न गूल वागह्य निदानानि वदुर्द्वय। विष्टं कवि वदो  
 यि ली यं गू यं विष्ट वागम॥ गूरहिं सा यत्र म्नी यं गू संग म॥ स्ववा श्व वदुर्द्वय  
 अ हस्तया गूरु का विना॥ विद्वद्भिः पृथु र्मान स्या य स नं वदुर्द्वय विना॥ ॥ या कृ वत्  
 ॥ अत्र हस्त मया वी स्या ग। अम यो वी गूल वाग वा निमि मरुत्तु व॥ या यश्चि र्गु र्गु मा सि क  
 वा ल्मा सि क्कं धा न्यं द ग ल्ये॥ कृ हस्त्या ह व गो द्वि ग मंद मग्नि कनिष्ठ सारु सु द पु। हि धा न  
 ना य या त क स मत्वा॥ ॥ अथ गूल वागहन विगूल दानी॥ ह मा पु मरुत्तु वत्तु वी धा यन  
 ॥ गूल न गूल र्वाति म नूष्ठा नां वी हिं सक॥ य ल ना थ ग द ह्वे। ग द ह्वे ना थ वा दृ ग॥ सो व  
 र्गं वा ऊ र्गं वा यि गूलं कृ र्वा त्य य त्त ग॥ ना मु ए वा स सा वा यि ख दि व ल्म थ वा पु न॥ न कृ व  
 मु ए सी व श्रु गिताना मूय वि न्य स ग गितानां तु य नी मा ली डाली वा यि त द ह्वे की। ग द ह्वे वः

२३



यथागच्छाः पूजयन्तां प्रसादात् पुत्रिणां अर्घ्यादिभूतमनुलभात् पुत्रिणां वायव्यावकाशादिभ्यां विद्वांसः ॥  
पूजां कृत्वा ह्यर्घ्यं वक्तव्यं ॥ मूलस्य दक्षिणे वा ॥ पूर्वस्तुल्यमिति ॥ पुत्रीयतां ॥ समिदाश्चित्तान  
कृत्वा ॥ ततः ॥ अर्घ्यं वक्तव्यं ॥ तनादकनवाहिं व. कृत्तिर्नानाभिर्ननरी ॥ गताद्गतवर्गपूरीय  
ऊयित्वा स्वर्गाकिं ॥ दद्यात्सदक्षिणं गन्तुं पादुकाय अद्दद्यात् ॥ मनुष्येन नयवया ॥ रक्षा  
सर्वेषां विस्मयः ॥ त्वं गृहं वृद्धं ॥ अर्घ्यं यत्राहं विना लनी ॥ दद्यान्ती दानवानी व. जीकनस्या  
युर्वतथा ॥ कृत्तिष्ठमपि पार्श्वं ॥ मथवाष्ट्रं सीगरी ॥ मूर्त्तिविनाशयत्वं म. मरुदयनधा  
त्रिर्गं ॥ ततः ॥ लात्वा रुकुंती ॥ वाग्मले ॥ सरुवश्चरि ॥ मूलं हि सा समस्यनी ॥ वदनामाशुना  
लयः ॥ मूलमनु ॥ लेवयीया कना वा वृद्धपुकाणकवेदिकमनुवा ॥ समिद्धामयूय ॥  
यतिमनु ॥ आश्रुतामण्यकमिति मनु ॥ मितलहामयत ॥ नुतिहामश्वाष्ट्रसदसमष्ट  
गतमयूगीवा ॥ अर्घ्यं ॥ स्वस्वशास्त्रीया सा च मनु वत्सायिण कलशा ॥ गुकल ॥ अदकनाहि  
यक ॥ नृदं विधानं सर्वगुलसाधारं ॥ अथ यत्री ॥ अतः तय ॥ गृहीयत्रायतायन  
जायतव पूजातः ॥ सो न दानं युक्तीति ॥ तथ वृद्धं यत्सूयी ॥ सामान्यपुति कृतिदानं  
यागकृयी ॥ ॥ अथ वृत्तिगृहं ॥ कर्मविद्याक सीगुह ॥ अद्वाहीनाधनवानश्च वति



कामसदानीवा॥ यः सावृत्तिमान्गुनी जायतागेवनिकारः॥ वाचायलं वातिकुर्त्तुं पाजायत्य  
 मथयवै॥ हामायपित्रकुर्वीत उद्याद्वननूयनः॥ हामः पूर्वकृष्णकावर्णः॥ आदिवदनसर्व  
 वागहवविष्णुसहस्रनामायामार्जनस्तुतिविष्णुदशस्वागोष्थयनः॥ इति महावैवः॥ ॥  
 अथयवैकर्मवियाकसंग्रहः॥ साक्षाच्छक्तिगवादीनि यः पूनर्जननाकवर्णिनामी॥ म  
 उभागी गुनीयान्विमानेवै॥ उगतिवृक्षयवर्षद्विवर्षवागिवर्षकै॥ वक्रद्वर्णदकवर्ण  
 हिनश्चादिकैदिगैः॥ ॥ अथाजीर्णगूलरुचै॥ कर्मवियाकसमूहय॥ दानमारुहद्वभाता  
 तयः॥ गूढस्येवकुक्षान् अत्रतस्यद्विजस्यवागूलवाधिवर्षनिश्चमजीर्णनागितातिगः॥  
 अथयैनिष्कृतिः॥ कर्थाः इयवातयैतथा॥ दद्यात्यनयैतृष्यै॥ वाङ्मयसकावर्णै॥ तृष्य  
 दानैतन्मकुक्षै॥ इत्यजीर्णगूलरुचै॥ ॥ अथजः॥ वृक्षलरुचै॥ कर्मवियाकसमूहय॥ गु  
 नाधयनैसंपन्नै॥ याचिगात्रमर्कित्वै॥ वाङ्मयैदातुमाहूय॥ दानार्थेनददातियै॥ सहव  
 ऊ०॥ वृक्षी॥ तथाध्वानैवकारिद्वि॥ कृत्वातिरुक्त्वात्ताति॥ कर्थाः उगयनूरुय॥ ॥ अथ  
 श्रीरुचै॥ कर्मवियाकसंग्रहः॥ विश्वसुविषदागात्र श्रीरुदानऊयगैतवः॥ वगैदावृ  
 तीवै॥ उगतिवर्षनार्थे॥ पायश्चैरुसमादिगै॥ वाचायलंघेनाकीवर्णै॥ अथऊयगैव  
 वा॥ अयामार्जनकस्यापिऊयः॥ सैध्वगुयैरुचै॥ ॥ अथऊ॥ अद्वनरुचै॥ भातातयः॥

२४



बुद्धावात्स्यसंज्ञायां जायते बुद्धः। अथ ॥ विनायकं विष्णुं कृत्वा त्यागकोट्यपमं श्रुतं ॥ विष्णुर्देविनायका  
 संकृत्वा ॥ इयं वासविद्याविष्णुविनिवचनाम् ॥ ॥ अथ ॥ अथ दत्तगुल्महरी ॥ कर्मविद्याकर्मसूत्रे नि ॥ च  
 त्वाविष्णुत्तमनागस्य निदानानि विद्वद्भ्यः ॥ गुणवृद्धादिनिर्वृत्तिः ॥ अथ ॥ गुणवृत्त्यादिनिर्वाणम् ॥ गदसूत्रान्तरं  
 लं गद्यममवादिनिर्वृत्तिः ॥ अथ गद्यः ॥ ॥ द्वाविंशतिवर्णावली च ॥ रुद्रइदं कृत्वा गुल्मवान् ॥ गुणधनं ॥  
 यदा गद्याः सन गद्याः सन कथं ॥ गुणधनं विधिः कथं रुद्रइदं कृत्वा ॥ ॥ अथ वागुल्महरी ॥ क  
 र्मविद्याकर्मसूत्रं ॥ गुणवृत्त्यादिनिर्वाणम् ॥ गुल्मवान् कथं गद्यः ॥ अथ वागुल्महरी ॥ क  
 थावर्गः ॥ मूर्त्तिमित्येति सूक्तं ॥ यशुर्वचनं सार्वभौमम् ॥ इदं यादयुर्गं सम्यक् वागुल्महरी ॥  
 पुनस्तु कथं जय दद्यात् दत्तं दानं वगैः कृतं ॥ युतिद्वयं मयूतहारी ॥ ॥ अथ गुल्महरी विनायक  
 दानं ॥ यादं ॥ गुल्मीत्यादन्त्याकागमः ॥ रुद्रादीमहाभूतं ववोक्षयनः ॥ सोवर्णं वाजं तापुः का  
 वयं कथं स्यात्पापिवो ॥ यद्वा कर्मसूत्रं काष्ठं न विष्णुर्गणकिं नान्वः ॥ पृथक् च कथं यद्वर्गं सोव  
 र्णं लावनद्वयं ॥ नाऊतयति मादो वयि पृथक्वादिह मी ॥ आरुचकत्थयं रुद्रं यथार्थं दत्तं वि  
 निर्मितं ॥ यथार्थं न सुवर्णं दिनादवागल ॥ अथ निर्मितं सुने वा र्वं मयि कथं यदि स्थर्थः ॥ ना  
 गयक्कावतीति च कथं यं रुद्रं गुल्मवान् ॥ वन्दना गुणवृत्त्यादि ॥ पूजिर्गणं विनायकं ॥ सहितं  
 र्थं वाक्कायं स्वर्णं कथं पूजिताय च ॥ कृतं रुद्रमायं कथं सत्त्वमिमांसां विदिनं ॥ मनुष्यं न वि



धिव दक्षिण हि मूखा यत्र ॥ विनायक गणेश सर्वदेवनमस्कृत ॥ पावत्रा नन्दनमम उत्तमागुविनाशयाक  
 नानानन दानेन नवागीजायगेन वः ॥ विनायकमकुल पूजाहामध्याधेनाह रुवरीतादि सरुमानक ॥  
 ॥ अथ उत्तमपतिमादाने ॥ कर्मवियाकसान ॥ उत्तमः कृत्स्नसर्वविगम दलुधारी रुयंकवः ॥ दधानः  
 किंकिनीमाला वद्धका ॥ अद्विवाचन ॥ अगोककविप्रि ॥ ॥ अथ यद्वत्प्रीह उलादवरुव ॥ अता  
 गयः ॥ गह्वरातनजावाग यत्तुत्प्रीह उलादवरुव ॥ गवः पुगमनार्थय पायश्चिकमिदं स्मृते ॥ अतः  
 दद्याद्विपाय उलधन विधाने ॥ सुवर्णनोपगानात्त वलगुय समन्वित ॥ ॥ दं कर्मवियाकय  
 सामान्यपार्कषशार्थिकमित्यर्थः ॥ उलधनविधाने दयदुवउक ॥ सुवर्णदेवकेकीरुले ॥  
 अथ प्रीहादवरुव ॥ कर्मवियाकसंगुह ॥ हगकाधायकायमु कन्याद्वेषतात्यवः ॥ प्रीहवानस  
 वद्विधा ॥ जयकीसुकमगहि ॥ अयगुयसैत्याकः प्रीहारुवविमूकथ ॥ वगुर्ववरुवद्वामधुव  
 लसैर्विषायक ॥ हाममुजयुगगयनदद्वदधर्मागनवेतिमहार्णवः ॥ ॥ अथ यद्वत्प्रीहप  
 तिमादाने ॥ कर्मवियाकसान ॥ प्रीहायदुजुओदववरुवदारुयधवि ॥ दधर्मागोवाधुइः ॥ य  
 द्दोः रवप्रदलु रुयंकवो ॥ ॥ अथ प्रीहादिहवविनायकदाने ॥ रुमाओ वद्धगेतमः ॥ सोवर्णनोपग  
 गाम् ॥ कांसीयिरुलतापिवा ॥ यद्वार्कमूलकाधुन विधीविरुवमानवः ॥ यक्कव कल्पयद्वमी सोव  
 र्णलावनद्वय ॥ अखर्व कल्पय रुसायादनव सुवर्णकी ॥ नागकारं वायवीग सुवर्णनप कल्प  
 य ॥ गिलाटकद्वयवमु यगमस्थायविस्मावयग ॥ हनोपुद्वयद ॥ गुरु रुकाययगमानवः ॥ वमुव



श्रुमतिमान् पृजयन् विनायकः । वन्दनो गुणधुर्येष्टः । कर्मनायकः । यथापृजयदाहर्नवादि  
यथादर्वते । येषां हि । आचार्यश्रुतिसेरुर्मि । कृपादिष्टाकर्मनं ॥ गणनां स्वमिमेकुल । तथे  
नाया । इति ४ कमा । कस्ययत्नं वदुश्चां । सर्वमनस्य कन्ययत्नः ॥ पृजयं लैतथा वार्थः । वरु  
लपुयनः ४ पुत्रिः । दद्यादननमकुल । रुक्मायनमयायुतः । विनायकग । लक्षणः । सर्वद  
वनमस्तुतः । पार्थवीनन्दनमम । मयथाधिभोदनं ॥ गुल्मप्रीहानमहात्मा । बाधिता  
यक्षोदरी । गवदाननमहगा । यूकानाख्युत्तनवा ॥ नागयागुमहान । पृगृहकस्यवय  
रा । उर्वकृष्या द्रव्ययतः । दर्शनं बाधिविभावनी ॥ ॥ अथ दत्र बाधिरुर्न ॥ कर्मविया  
कसमञ्जसः ॥ आबुध्वविष्णुदाक्षः । रुद्रमूरुमरावतः ॥ साधयइदत्र बाधि । यूकास्व  
तिमानवः ॥ कृष्यास्वर्कसातिरुक् । वा नु यलमथाघनी । सदसुकलः । स्वान् । मीन  
नस्युक्तानयः ॥ उयदयुगसंख्याकः । मयन्नशुशुवकथा । आगधितत्र नैलका  
युगनत्रनलायुथकः । अष्टारुनसहस्रिह । रुद्रयाञ्चतः ४ यत्री । मधुनायनसंयुक्त  
हिनर्धनकिगादिनेतः ॥ ॥ अथ उलादनरुर्न ॥ कर्मवियाकसं ३ रु ॥ राजावा  
नियुक्तन । नियुक्तः धर्मनिश्चयः । पुनारुहः ४ पाद्विषाकः । सचिवोवायथा रुसंतः ॥  
उलादनरुर्नयाप्रातिगस्यवशमिति ४ कर्मि । पयसावर्कयं मांसी । नियतं वृत्तमे



रुम। सहस्रकललान्नानं महादवस्य येव हि। हाउय वृगर्तविषा। नृश्वन किलिषा रु  
न॥ ॥ अथ ऊलादन रुव। सर्वोदनवाग रुवत्र मकन दानं॥ रुमा डो माहा पूर्वववो धी  
यन॥ उदनवाधियूक सु। रुव दुर्व दुर्लभ गम। कथा रुम कर्न सम्य। अऊत ता मुम  
वत्रा॥ पलपयल दा र्यावा। यद्व कनधु हा रुमि॥ पूकु वल्लानि दया नि। कटि वृथान  
कावय अने गस्त्र भूमय कार्थ। डि द्वा नी र्या पुक ल्य यत। यद थो ४ पुदिय रुउ। घृग  
या पुवरा दया॥ यदा ता मुल मकन ४ रुत रुदा यि केटी वृथामय॥ कपूव मुल सी  
वृथ। वन्दना पुवृत्र विर्ग। ता मुउ ऊल या गती स्मा यथ मकन धुरी॥ वा द्वा ली वृरु सी  
यनी वृद्ध दान मला लूपी॥ वसु ४ कटक कयूरे ४ पूऊ यद रुली ये के॥ हा मा व नृध  
देव रु। मने ४ काथा यथा विधि। तग स्त्रो दा वकी विथे। मकन नी ते वद यत॥ ॥  
दान मनुमाह॥ ऊला धिद वद वंश। यश्रि मा धम यत विहा। उदनवाधिनार्गी म। क  
नृदान नगा धित॥ मने विगिव इव वनं॥ ताना धम ववी उम नृपा क्थ॥ रुम आर्य  
नाष्टे रुवगर्ग उत ऊला दन रुव मिगि म हा पूर्व॥ उदन सर्ववाग रुव मिगि रु मा  
डि॥ ॥ अथ महादन पुति मा दानं॥ कर्म वि या क सु धी नि र्धो॥ महादन नि दाना नि र  
स्वा र्या इविव रुध॥ पुवृग ल्य गम द्वा वा यव द्वा रुग का विना। मुग र्द या तनं व रि। ग

ल५



मार्गनिष्ठमिति न च ॥ श्रीगर्भपातनीहस्ता. ता अवरुद्धात्तादत्र ॥ ॥ कर्मविद्याकसात्र ॥ महाद  
नामयः ॥ सुतः ॥ कुवामहिसपुष्टगः ॥ खड्गवर्मधनेः ॥ कान्. सुथयीगान्त्रावृत्तः ॥ अगान्त्रक  
विधिः ॥ ॥ अथमन्दाग्निरुवाच ॥ कर्मविद्याकसुधनिः ॥ श्रीगर्भहामकवर्ण. मनत्रि  
वित्रवायदि. निदानद्वयभक्त्या. दन्तिमावस्थसंगतं ॥ गगानयः ॥ मन्दादनाग्निरुवति.  
सतिद्वयनवेज्यः ॥ सतिद्वयकदन्तदः ॥ त्रिधा ॥ ॥ वाजायत्ययं दत्त्वा. राजयत्सग  
तद्विज्ञानं ॥ ॥ अथपर्व ॥ वृद्धयात्रावृत्तः ॥ ॥ गमसि सखादकामन्द. ॥ ॥ वाग्निरुवन्तवः ॥  
वाजायत्ययं वत्स. सुतिद्वयकदन्तदः ॥ अग्निमर्तुजयतिर्य. गीसुकीवतिवत्तः ॥ ॥  
यावदागनिवृत्ति. युतिदिनमष्टविंशत्यादिकाजयः ॥ ॥ अथपर्व ॥ कर्मविद्याकसंग  
तः ॥ अकावर्णगर्भदत्त्वा. प्रमाययति यः ॥ यूनः ॥ समीक्षाग्निरुवदव. मृगकल्याप्रजाय  
तः ॥ आतवृद्धलसुक्तन. वरुवद्वयस्युतः ॥ अष्टारुनायुतं सन्त्याक. तस्यायस्यायन  
रुयः ॥ गामग्रीतिनेकिरीयायनिष्ठत्य. ॥ ॥ जागवदमगिसकर्वसुकी ॥ ॥ अथमन्दा  
ग्निरुवन्मयदानं ॥ रुमाक्षोमहाधुवयवोक्षयनः ॥ अग्निमोहीरुवत्तुस्य. यस्तुगाग्निरि  
नागिकः ॥ वत्सामितत्युगीकारं. यत्तुकीवत्तुस्य. यस्तुगाग्निरि  
यूनः ॥ वाजर्तकावयत्सो. य. म. ग. व. हिनमृहमी ॥ सोवत्तुस्य. यस्तुगाग्निरि  
काव्यः ॥ ॥ वाजवत्तुस्य



[illegible]



जायते नमिष्ठदा कथं च न। आनायवां न मन्यस्य अग्निव स्माद्वै जय ७॥ आना स्मवत्त रुवदि  
ति। गय ८॥ ॥ अथ यव ॥ गता तय ८॥ यवान्न विद्यु कवत्त दज्जि मयि जायते ॥ लक्ष्म  
मं यव वीत पायश्चित्तं यथा विधि ८॥ ॥ अथ गीसावत्रा ग रुनालि ॥ कर्मविया क संधानि  
८॥ ॥ अतीसावनिदानानि सकल्या इर्मली विल ८॥ गुवा सत्य गमदया पत्र दत्तं कात्रि  
ता ॥ वापी कूय तदा गमना नदी नान्नैव रुदनी ॥ कर्मविया क समुद्रय ॥ सारु गीन मय श  
मु साती सावयू गारु व ७॥ अग्निव ग्नी शुर्वै जसा दग्गं रूद्र या हिले ८॥ सार्यवा वयु ता  
न्यथा द्वि वे र्थं वा द्मल यव ॥ विमासिक वा यश्चित्तं ॥ जय श्वरा गम न्य वे वि अरु नतम  
ष्ट स र्पु वाय गिदि नै का र्थ ८॥ यदायू तादि सै कत्य मूर्ति ८॥ कार्या ॥ जय मनु ले व हा म ८॥ ॥  
अथ गीसाव रुवव क्रि मूर्ति दानी ॥ वी व सिंहा वला कया द्या ॥ अती सा वी व रुवति यमु ता गि  
विना ग क ८॥ रु मा यो म हा र्ण वत्र वो क्षय न ८॥ सुव र्ण नाथ ता म ले क या त्यति कृ ति वृ थ ८॥  
वक्र ८॥ ग क न सा व ल य ले ना र्ध न वायु त ८॥ यथा द्वा ला कू लै व कू ल न न विल यि ती न क  
व मु ल सै वी ता म य स्या य वि सै सि ता न क मा ल्ये ८॥ स सै कृ ता म क्रा दा म य वि रु ता ॥ त क का व  
न व र्ण र्ण द्वा द ग म कृ ति र्ण र्ण र्ण व द्वा त र्था नि ग वि य क निष्ठ वा गि हा गि ति ॥ अ गु ती य क  
व सु यो र्ण वि त ता नि व द य ७॥ म नु ल न न वि धि व द गि यी स थ मा द त ८॥ अ क निष्ठ र्ण ति कृ द  
८॥ गु ता व या गि ती शु ल्भ म नु श्व र सि व नृ र्ण र्ण व र्ण पा क र्ण या य म ती सार वी वि ना ग या ॥ ७



५८

संयुक्त न्याय



समिद्धामानकनैव नूहाम ॥ ॐ देविष्णुः पुनर्विष्णुः विश्वान्नकमिति कमलहविष्णुमनु ॥ ३  
दानमनुविष्णुपुकाशवचनात् ॥ हामसंख्याकृष्णगोद्ययुताका ॥ तस्मैद्रुतवर्तदद्यात्पुजिता  
यां तुलीयके ॥ गंक्षुविष्णुवृषाये ननुत्तमननत्रागवानादवकीपुगचापूवः कंसाविष्णु  
विनाशनानाशयगुरुलीकृष्णगयीऊनमहात्तव ॥ देवना ननदाननगुरुलीगंति  
मिच्छति ॥ सामान्यार्गकदानमपिगुरुलीहव ॥ ॥ अथकुर्दिवागहव ॥ गंगानय ॥ वि  
षः पदः कुर्दिवागी गंत्तदद्यात्तयस्विनी ॥ वकावादकः ॥ हनुः सोवऊयः धृतिम  
हर्षव ॥ ॥ अथानुयीगहनाति ॥ कर्मविद्याकसमूहय ॥ किन्नान्ननालिजाय  
नः वेग्यहनुसुगः पनी ॥ कनोशीभाषुकोदारुअपानतनिवृहय ॥ हनुकानिहृदं  
याच्चगतवाक्षुलहाऊनी ॥ उद्युचऊयधृष्टादयुतगयसंख्याया ॥ अगस्तूकन  
वर्षाश्चशुद्रयाकृगमष्टव ॥ अथवामहिषीदद्यात्पुतिवृथलकीवनी ॥ वच्चाश्च  
याः पृथगष्टारुगगस्तूकनहामानभिप्रितिमहर्षव ॥ महिषीयत्रिमालीयथ  
शकि ॥ ॥ अथानुवृद्धिरुवनावायलदान ॥ हमाक्षोमहर्षवववक्षुपाक ॥ यकू  
विष्णुकनामस्याजायतवानुवृद्धिमान ॥ वअमिगत्युतीकारं दानहामादिकर्मणि  
॥ कयास्वर्धमयीमूर्तिगुरुनावायेलस्यगु ॥ यावेलाविकतिक्काह्यमिकनाथ



तद्वद्विष्णुना नावायल मूर्तिन कर्त्तुं यत्र वेग गम्भ ॥ नावायल विष्णुर्द्विहो जीव च जीव (थ) रु  
व । दक्षिण (ल) गुगदां यद्वी नील जीमूत सन्नि ॥ वामशीर्षे ललाटे रुक्मा येष्टियद्वा कनायवा  
। यद्वा त्र्ययं गयान् स्थाययेत्कं कुमायत्रि ॥ अथ तव मूल सैव द्यु गन्धनात्थो ॥ समञ्चथ  
॥ उच्यते ॥ ४ ॥ या उच्यते नावायल विष्णुव ॥ अथ ॥ सर्वे भस्मात्तत्त्वज्ञा वक्ष्य विद्यासूत्रि  
विष्णु ॥ हामं वका वयं लुग । आ । प्रयादिनिष्पत्त ॥ समिदाश्च तिले (ध्रुव) इन्द्रया मू  
लमनुग ॥ तितानया द्वागिरि ईत्वा । सर्वे वागमत्यमृशत ॥ वागीतथश्च यद्वी नावा  
यल मना मयी । मूलमनुग विधिवे नैव ईवत्र विष्णु ॥ नमानुनामभा क्षीरं मूलम  
नु ॥ पकीर्त्तित ॥ ततस्त्रिपुति मांदया । त्यादूखा यद्वा दक्षव ॥ मनुलमन न विधि व  
रुक्मा यत्र मेयायत ॥ नावायल गुगनाथ जीव च कुगदाधव । पूर्वज नानियद्वा द  
विद्वी यद्वे कर्त्तमम । अनुवृद्धि मदावागं । दानं नानं नगापि त ॥ वके रुक्मा गदाया । ल  
गी मया गुगन्यत ॥ उर्वदत्वा तु नैव । दमाष्टवा द्वालीनत ॥ विषाली रोजनं दद्या  
स्त्रात्वा तु जीववन्धु रि ॥ मूलमनु ॥ ५ ॥ नमानावाय लय ल्य वृद्धव ॥ नैव द्य (ग)  
धल्लहाम ॥ हामं सैव्या वाक्षरुवगतादि ॥ ॥ अथ अनुवृद्धि मूर्तिदानी ॥ कर्म वि  
याक साव ॥ अनुवृद्धि । द्वा । भनृत्य । भदिनी मवला कयन् ॥ पाली वध्वी सतर्त्त । द्या

२२



नयिनेव नयः॥ यालम्ब्य अनुनिनि सादिवा॥ अग्निकविधिः॥ ॥ अथ किमिमादवदन्ती॥ भगवत  
यः॥ उदञ्चवदितं रुक्मा जायत कुमिलादवः॥ गमूग याव को हावः॥ सकना गेलु छानि  
॥ ॥ अथ कुमिकुदित्वदन्ती॥ कर्मविया कसमूचय॥ गऊविनिदन्तवा॥ कुमिकुदिसुर्ज  
यन॥ सावगनथा॥ मृतेरु रुद्रियां नानी नीलीवर्ण यथावय॥ सा मृगानवर्क याति॥ कुमि  
कुदिसुते॥ यन्ती॥ सनीलवृष रं यश्च दद्याद्वा दायर्णवती॥ कृष्यादिगदिजाहा अदद्या  
कृष्णालेथोवध॥ ॥ अथ वमिदन्ती॥ कर्मविया कसमूचानि॥ वमं विन्धम सद्यातः॥  
स्या॥ निदानी तस्य निष्कृतिः॥ यादाने द्वादश दार्द्ध जयहामादियुववत॥ विद्वहिर्वाधि  
ननायि॥ नदरुं यदुगसति॥ गौद्वहीनतया तस्य निदानी नभूव समती॥ वाचा यलमन  
थार्क॥ या जायस्य मथायिवा॥ अनूकनिष्कृतिर्न पूर्वस्या ऊयनादिकी॥ तथपुतिरु  
नं दर्नि॥ पूर्ववच्चयकल्ययन्॥ मूलमनुनिवाधदिषु वसिन्ना॥ गयुसर्ववागहवा नय  
वत उदृष्टी॥ ॥ अथ कठिकुदन्ती॥ भगवत यः॥ विरुषयत्री गमनात्कटिकुदं य  
जायत॥ निष्कृतिर्न करुया॥ कथादानेन यत्नः॥ उकवाग्न नूसावेल गिववादि स  
मायवः॥ ॥ अथ लिङ्गगो गहवालि॥ गगमूग रुद्र रुवालि॥ अस्मवीर्गर्क वा मूग  
रुद्राण्यकावधनिड॥ यत्र मीविधवा कन्या निर्याग्यानिषू र्गमः॥ वन्वा यादिसुथ



अथ मृगकृच्छ्रं स्मृतं । दिजानां कुंभकवर्णमयमानकृतिसुखा ॥ अनागतयः ॥ उवृज्जायाहि  
 गमना मृगकृच्छ्रं पुजायनं । तनायिनि स्मृतिः कायाः अमुद्वेनवर्त्मना ॥ उवृगल्ये वा यधि  
 काद्वेक्यादिस्थथः ॥ स्थाययत्वं रमककु यधिमायां गुहं दिनि । नीलवर्णसमा कर्तुं नील  
 मात्यविह्वितं ॥ तस्यायविश्वसद्वर्ण लाहयागुपयनसं । सुवर्णनिष्कयकल निर्मितं या  
 दसां यतिं । यजत्पूजयत्कन ववर्णविश्ववृषिर्ल ॥ ववर्णमूर्तिमु ॥ यागववदकनामक  
 ववाहनाच । सामविद्वाक्कलसुग । सामवदं समा यय ॥ सुवर्णयुक्तिकां कृत्वा निष्कविं  
 शतिं सैव या । दद्याद्विवायसंपूज्य निष्ठायाः ॥ स्थापितिवृत्तन ॥ यादया मधियादवा वि  
 श्वमामपियावतन ॥ सीसानात्र ॥ कर्णभ्रात्रा ववर्ण ॥ यावना मुमे ॥ ॐ मर्ममर्तु समूचाय अ  
 वा र्थाय यथाविधि । दद्यादवमलीकृत्य मृगकृच्छ्रं पुजाय ॥ कृत्वा लवणमिषकलर्ण  
 सैव स्थाप्य तद्वयविश्वसयवागु ववर्णयुक्तिमां यवृषसूकन विंशतिनिष्ककृतां मृगकृच्छ्र  
 धिदेवतायेन म ॥ ॐ ति सैव वृष्य युक्तिमासमीर्थं सामयात्रा यलं कावयन यावत्समायि य  
 तिदिनं पूजानिष्ठायाः ॥ स्थाप्य ववर्णमृगकृच्छ्रं युक्तिमां यादसा मिति मर्तु लेव ववर्णयुक्तिमां सा  
 मया ० काये दद्यात् ॥ यात्रा यलविधिः पूर्वमुक्तः ॥ ॥ अथायनी ॥ अनागतयः ॥ यजुथा नोच  
 गमना मृगकृच्छ्रं पुजायनं । तिलयागुगयं सम्यक् सदद्यादात्मगुह्य ॥ गले कं तिलया



गदानपुकारमाहविष्णुः॥ गामयार्गुनिलाहृत्वा. यलयागणकल्पिता. सहितं च स्व  
क्यावा. विषाययुगियादयः॥ नागयः विविधं वायं. वादानः कायसंरुवी॥ पुकारान्  
नमूकं कोभं॥ तिलपूर्णागामयार्गु. सहितं च द्विजागयः॥ यातदत्वाउविधिवगः॥ ३४  
स्वयंयुगिरुनिसः॥ तिलयार्गुगिष्वापाकं. कनिष्ठाकममश्चमा॥ गामयार्गुदणयलेउ  
घनययविकीर्तितं॥ द्विगुलंमधुमंथाकं. त्रिगुलंथाकमंस्मृतं॥ स्वर्णमर्कजघनंउ  
द्विगुलंमधुमाद्वयः॥ त्रिगुलंथाकमंतद्वत्सुवर्णंयविकीर्तितं॥ सुवर्णंद्विगुलं  
यासर्वयायकथाकं॥ ॥ अथयनी॥ कर्मविद्याकसमूहये॥ मत्सुवीगुनू  
यत्र. विधवामरिगच्छति॥ सहवन्मूगकृच्छीह. गुनगत्याद्वमात्रं॥ गुनगत्या  
यश्चिरुस्याद्वयंयविकं॥ ॥ अथमूगकृच्छीह. तिलयद्वदानं॥ हमादोमहापूर्व  
ववायूयः॥ सुनाथामूगकृच्छीस्यादिनि. अगतिच्छतिमाहगलेववोषायनः॥ सो  
वर्णंकारयत्यर्धंयलनाद्वयलनवा॥ यथास्वगकिमतिमान्दरमद्वदलेगुहं॥ त  
लडाधरकवायि. गामयार्गुजलान्वितं॥ निदधीतंति॥ यशः॥ पाणमच्छुतंयद्व  
निदध्यात्कंक्रमान्वितं॥ वासूलंशुनसंयतं. हरिद्वान्निहाणिलं॥ आह्वयगन्धमा  
लाये. विधिनाति रुकितः॥ अथयदिनि॥ यशः॥ पादवावाहयद्वद्व. हास्कनं



हनायकी। अहिरावन्दव. पादोस्मिन्निधिं कुरु। गयीतनादा दशमनसुहृद  
 मिहिवृत्तं॥ आवाहनमनु॥ आवाहनमिन्दवर्ग. पूजयदक वन्दने॥ पूजयेनक  
 नयने॥ कीकमायुवन्दने॥ नेवर्गयायसंदद्याः दलाहृदोवभवच॥ वाक्त्रादनय  
 जा. आश्रितलहामश्चयादगिहि॥ कार्य॥ गत॥ स्वर्धूमययदी दद्यान्मनुजसंयुगी। ख  
 ग॥ पूषायर्ग। गमो. द्वादशमागतीतनू॥ यदोनाननदरुन. पीतुस्तुनलिनसुभ  
 । कननाननमनुजा. मृगककुत्यमृगन॥ उतत्रविवासरं कार्य॥ यददानय  
 थागक. आदिहृदनि कावथदिति बोधायनाक॥ ॥ अथमृगककुत्यमादा  
 नी॥ कर्मवियाकसाय॥ मृगककुमय॥ खलु. कर्तुवीवदधृकखव॥ ॥ अथ  
 ग्मनीहृदी॥ मातु॥ सयत्रीगमन. जायतवाग्मनीगद॥ सुरुयोयविशुद्धार्थपा  
 यश्चिह्नसमावक॥ यायश्चिह्नंमासिक॥ दद्याद्विपायविदूषमधूधनंयथा  
 दिता॥ तिलदालगर्गव. हिरा. अन्नसमेचिनी॥ मधूधनविधि॥ दयद्वन्दक॥  
 ॥ ॥ अथवदमृगत्वहृदी॥ गतातय॥ इत्येवमुपनूषा. जायतवदमृगवान  
 । सदद्याइत्येधनैव. वाक्त्रादनययथाविधि॥ इत्येधनविधि॥ दयद्वन्दक॥  
 ॥ ॥ अथयनी॥ कर्मवियाकसमृच्चय॥ सोदद्याग्निमित्रा। ग. जायतवद



[illegible]



ल. सं. ल. कुं. क. म. ग. न. व. ॥ दा. ध. ल. य. क. ल. य. र्थ. ॥ लं. ल. ग. न. न. क. र्. नी. व. वे. द. ना. य. वृ. य. स. व. द. द. या. नी. ल. व.  
 वां. नी. न्. म. धू. स. र्थि. लि. ला. न. पि. ॥ द. वा. न्. वी. त्. स. र्ग. क. ल. द. ल. न. ॥ ॥ अ. थ. य. स. व. व. श. नि. म. लि.  
 न. रु. र्. ॥ क. र्म. वि. या. क. र्. स. ग. र्. ॥ मा. सा. य. र्. सि. नी. ना. बी. व. त. ॥ स. मा. व. र्थ. य. दि. य. ति. स. य. र्. दा. ध. ल. जा.  
 य. त. सा. य. ज. म. नि. ॥ सु. व. द. का. स. दा. या. नी. त. नि. कृ. ति. वि. हा. य. न. ॥ मा. सा. य. वा. स. कृ. दी. त. त. थ. वा. सा. य.  
 था. व. र्. ॥ ॥ अ. थ. वृ. य. ल. या. धि. रु. र्. ॥ क. र्म. वि. या. क. र्. स. ग. र्. ॥ नृ. या. रु. या. दि. रु. का. दि. अ. य. ना. र्. धि. वि.  
 ने. व. य. ॥ रु. द. य. रु. स. म. स. रु. रु. व. द. य. वृ. वा. गि. ना. ॥ लि. ला. यि. ह. स. रु. रु. ध. स. व. ल. थ. यि. जा. य. त.  
 ॥ वृ. धि. र्. य. सु. व. ल. य. थ. रु. स. य. नि. कृ. ति. य. ना. ॥ ग. त. वृ. ड. ज. य. स. म. ग. श. रु. न. स. रु. मु. र्. य. ति.  
 वा. न्. दा. य. ल. यि. व. कृ. या. दि. या. न्. ग. ति. ॥ वि. द्. वृ. यि. ॥ जा. य. त. वृ. य. ल. य. स. य. धि. य. र्. म. दा. वृ. ल. ॥  
 ऊ. यि. त्वा. द. ग. सा. रु. र्. मृ. या. त. वृ. ड. स. हि. नी. ॥ ग. त. वृ. ड. म. यि. वृ. डा. थ. य. न. व. अ. श. रु. न. स. रु. मु. र्. द. य. ॥  
 म. हा. वृ. ड. ऊ. या. ल. य. ग. ति. म. हा. र्. व. ॥ या. नि. वा. लु. यी. ग. रु. ना. लि. ना. नि. वृ. य. ल. या. धि. रु. ना. ती. ति.  
 म. हा. र्. व. ॥ सा. मा. न्. या. र्. क. वि. धि. व. य. ग. रु. व. ती. ति. स. व. ॥ ॥ अ. थ. रु. ग. न्. द. व. रु. र्. वा. वा. रु. ॥ या.  
 रु. ही. त्वा. दि. जा. मा. हा. नि. य. क. ध. र्म. नि. ध. य. ॥ रु. ग. न्. द. र्. रु. व. रु. स. य. ध. र्म. वि. द. ना. मृ. र्. ॥ उ. ल्का.  
 वृ. रु. ही. त्वा. र्थ. ॥ या. ध. ॥ अ. या. र्. रु. या. ग. म. न. रु. ग. न्. द. र्. मृ. ता. रु. व. ॥ रु. मा. डी. म. हा. र्. व. व.  
 रु. व. गे. त. म. ॥ मा. लि. र्. य. द. वा. र्. व. रु. व. रु. व. ॥ ग. म. द. र्. म. न. क. र्. य. र्. ना. र्. व. म.



किं कौ। रुत्रिर्नवनवतानि। स्वर्ग्ययगायत्रिः स०॥ अथवात्राजतंगामुगवाअनययूवय०। नवयहाध  
पीत्यर्थः। वक्ष्येनिर्मितायूना। गन्धयूष्यादनेद्वये। नवयैसाययूजय०॥ स्वर्ग्येनेष्टेवमनेष्ट  
होमः कार्यमुपूर्वव०॥ तगावाप्रलोमाहूयः। सर्वेषामुर्थकाविदौ। आदित्यादिगृहाः सर्वे नव  
वत्तयदानतः॥ त्रिनाशयन्तुमदृष्टः॥ द्विषुभवत्तुगन्दरी॥ अननकर्मधनूनीयथावद्विद्विगत  
डा। नवानेवयूमायातिः। निःसंदिग्धंरुगन्दरी॥ यस्मिन्प्राणवत्तानिष्कापिगानि। तद्गवाअनयूवयि  
त्वा। गृहाधायनगः॥ साययित्वा। गृहमूर्खकृत्वा॥ तनायिनिष्कृतिः कार्य॥ वत्तपाददत्तागृह  
दाहृषादि। गव्यसमायय०॥ ॥ अथपर्व॥ शतगव्यः॥ स्वर्ग्ययगायत्रिः। पसी। गनः। कायगवत्तुगन्द  
नः॥ तनायिनिष्कृतिः कार्य। भिषीदानेनयत्तनः॥ दवानांयामूर्खदृष्टः। वारुनः॥ सर्वपूजितः॥ ग  
त्यत्तवाहनपूषः। दत्तः। गन्धर्मदृष्टिः॥ रुगन्दवः॥ पूर्वकर्मवियाकाययूयन्मम। तत्सर्व  
नाशयद्विषः। सीर्यवायिपवद्वय॥ ॥ अथरुगन्दवयुतिमादानं॥ कर्मवियाकसात्र॥  
रुगन्दवः॥ पांशुगीर्णकः। गन्धनाहिवधनः॥ यदुः॥ वाष्पकृष्णधनः॥ वीभसीनः॥ ककुदृगः॥  
ककुदृगः॥ पहावयूकः॥ अग्नकविधिः॥ ॥ अथगुजगहवालि॥ शतगव्यः॥ सुनाल  
यऊलवायिः। सकृद्विषाकत्रातियः॥ उउत्रा। गन्धवत्तुगन्धः। वायव्यः॥ सदावत्तः॥ मोसीस  
वाचननेव। गदानद्विगतयनव। पाजायत्यनवकेन। गन्धानिउउऊ। वृजः॥ आवायैहा



लनादि कृदिति स्मृतः ॥ तस्यैव योजः ॥ ॥ अथ सवदु उरु ॥ कर्मविपाकसंग्रहः ॥ त्रिनामूनां स  
 र्जनं कृत्वा या कृत्वा ॥ गीतकर्म ॥ ॥ उंकाजना कर्म मर्त्या रुवं सवदु उरु ॥ रुवं सवदु उरु ॥ रुवं सवदु उरु  
 लयी जातगुरु कृत्वा ॥ तिकृत्वा कृत्वा ॥ वा नुदाय लीव कर्तुं ॥ तथा दोनं वसर्पिषा ॥ अदोत्या मिति  
 सकन सवदु उरु कृत्वा ॥ उद्यन्नशु वीव व ॥ जयसु वीव कर्तुं ॥ सवर्पिषा सवदु उरु कृत्वा  
 नैव सवर्पिषा कृत्वा ॥ ॥ अथ ॥ गीतगुरु ॥ कर्मविपाकसंग्रहः ॥ निदानाश्च कर्मवदु  
 गीतगुरु सवर्पिषा ॥ यवदु कर्तुं कर्तुं ॥ गु वदु मथ ॥ गीतगुरु ॥ यवदु कर्तुं कर्तुं ॥ गीतगुरु ॥ यवदु कर्तुं कर्तुं ॥  
 यवदु कर्तुं कर्तुं ॥ निविष्टा चार कर्तुं मगा यवदु कर्तुं ॥ कर्मविपाकसंग्रहः ॥ दत्ताथ वतनीया  
 ॥ ॥ त्यादाया यवदु कर्तुं ॥ अथ यवदु कर्तुं कर्तुं ॥ यवदु कर्तुं कर्तुं ॥ यवदु कर्तुं कर्तुं ॥ यवदु कर्तुं कर्तुं ॥  
 यवदु कर्तुं कर्तुं ॥ वा नुदाय लीव कर्तुं कर्तुं ॥ यवदु कर्तुं कर्तुं ॥ यवदु कर्तुं कर्तुं ॥ यवदु कर्तुं कर्तुं ॥  
 यवदु कर्तुं कर्तुं ॥ नामनिवर्पि मिति ॥ यवदु कर्तुं कर्तुं ॥ नामनिवर्पि मिति ॥ नामनिवर्पि मिति ॥ नामनिवर्पि मिति ॥  
 सवदु कर्तुं कर्तुं ॥ यवदु कर्तुं कर्तुं ॥ यवदु कर्तुं कर्तुं ॥ यवदु कर्तुं कर्तुं ॥ यवदु कर्तुं कर्तुं ॥ यवदु कर्तुं कर्तुं ॥  
 यवदु कर्तुं कर्तुं ॥ यवदु कर्तुं कर्तुं ॥ यवदु कर्तुं कर्तुं ॥ यवदु कर्तुं कर्तुं ॥ यवदु कर्तुं कर्तुं ॥ यवदु कर्तुं कर्तुं ॥  
 यवदु कर्तुं कर्तुं ॥ यवदु कर्तुं कर्तुं ॥ यवदु कर्तुं कर्तुं ॥ यवदु कर्तुं कर्तुं ॥ यवदु कर्तुं कर्तुं ॥ यवदु कर्तुं कर्तुं ॥  
 यवदु कर्तुं कर्तुं ॥ यवदु कर्तुं कर्तुं ॥ यवदु कर्तुं कर्तुं ॥ यवदु कर्तुं कर्तुं ॥ यवदु कर्तुं कर्तुं ॥ यवदु कर्तुं कर्तुं ॥  
 यवदु कर्तुं कर्तुं ॥ यवदु कर्तुं कर्तुं ॥ यवदु कर्तुं कर्तुं ॥ यवदु कर्तुं कर्तुं ॥ यवदु कर्तुं कर्तुं ॥ यवदु कर्तुं कर्तुं ॥



नानावस्त्रवलीकृता। गृहस्थमयत्रिकाया नवधा न्यानि विग्रहः ॥ सुवर्णधनः ४ यवता नवसं  
ख्यका निवृत्तानिध्या न्यात्रिका यथा ॥ हस्तमुपवृत्तवलायाः ॥ गमविन्दपीतयतथा ॥ गृहस्थाय  
नवधा इव वीर्यार्थः ॥ गनगृहयस्त्रायिकर्तुं शुभं सुकः ॥ हामाविग्रहहामः ॥ गमविन्दार्थम  
पि हामः ४ कर्तुं शुभः ॥ तगमकाया ॥ ॥ दं विष्णुः ४ यतद्विष्णुः ४ विष्णुः नैकमिति कुमा ॥ समिदा  
ईव नैकत्वाः पूर्णद्वयकः ४ वत्तः ॥ हामसंख्याशोक्तवर्गताय युगात्ता ॥ ययतमुत्तमावो गी  
वा प्रलंबदयावर्गः ॥ रुक्मास्त्रयं समानीयः पूजयत्येति पूर्वकः ॥ अं उलीयकवस्त्रायै नृपा  
नस्तु गकेवधिः ॥ मनुष्येन ननतस्मैर्गः दद्याद्वा गीयतास्त्वाना ॥ गमविन्दमनसा ध्यायनः गर्वा  
मः ॥ धृष्टिर्गुहः ॥ मनुवावत्तः ॥ गमविन्दध्यानमाह ॥ वल्यो उकसंयुक्तः वल्यो नादनतत्परः  
॥ गमवीजने ४ परिवृत्तः वन्यपूषावर्गसर्कः ॥ दानमनुमाह ॥ गमविन्दः ॥ गमवीजनवन्त्रः  
गः ॥ कसासूत्रघृणिदः ॥ लुवश्च गमदानकृत् ४ कृत्तुमदयात्ता ॥ अं गमविनागं दयितानि  
वर्गः ॥ दाननानननियतः ॥ मर्गसां जायतं दयः ॥ ॥ अथा गमविनागयतिमादानी ॥ कर्म  
विवाकसावः ॥ अर्गवागः ४ कः ॥ गमवक्तुः ४ खः ॥ अरमरुददददकः ॥ अणककविधिः ॥ ॥ अ  
थ उल्लूकः ४ रुहः ॥ गमतातयः ॥ गमकाया गमने ॥ उल्लूकः ४ यजायतः ॥ स्ववधूगमन



श्रीव. कृष्णकृष्णं यजामहे ॥ स्वयं धृष्टस्वयं गताया ॥ गतं कार्यं विष्णुं ह्यर्थं यागुक स्याद्भवत् ॥ दक्षिण  
 गताया ॥ सर्वं तु धृष्टं कर्तुं किं यत्नं तिले ॥ ॥ अथ च न वलं रुद्रं ॥ गताया ॥ हीनजातिमुगम  
 नाजायते न च वलं वली ॥ गताया न कविं ह्यर्थं याजायत्यसमाचरेत् ॥ ॥ अथ यादना गहना  
 लि ॥ गताया ॥ मानं ह्यायादना गीत्या दश्वदानीं समाचरेत् ॥ अग्निमावश्वदवत्वा दश्विना  
 यदना विषं गतिं स च नो श्ववृजा ॥ ॥ अथ स्वजं रुद्रं रुद्रया दत्तं रुद्रं च ॥ गताया ॥ रुद्रि  
 (ल) निरुगं स्वजं ॥ गताया ॥ रुद्रया दत्तं ॥ अथ रुद्रं न पदात्तं ॥ सो वलं निष्कसं मितं ॥ ॥ अथ  
 रुद्रया दत्तं रुद्रं ॥ गताया ॥ जायते वक्रया दम्बु निरुगं गुनिमानव ॥ निष्कगयमिदीदद्या  
 त्सो वलं विष्णुं ह्यर्थं ॥ सर्वं धनं न्यस्य दत्तं त्रिंशत् मनुष्यैः पूज्यं दद्यात् ॥ स सर्वं विष्णुं ह्यर्थं  
 य ॥ ॥ ह्यधिया ॥ ॥ अथ याद (श्व) दत्तं ॥ सर्वं धनं दत्तं ॥ रुद्रादी महार्धं वत् ॥ वायवी  
 य ॥ पश्चिन्त्या निया दं स्या या रुद्रं रुद्रसादिकं ॥ वक्रामित्युगीकारं दानं ह्यमादि कर्मणि ॥  
 यत्ना दत्तं न दत्तं न दत्तं न दत्तं न दत्तं ॥ कार्या धनं ॥ सर्वं धनं वत्स ॥ स्याददत्तं तावत्वे ॥ उर्व  
 रुद्रा रुद्रा धनं वत्स ॥ वत्स ॥ वत्स ॥ स्याददत्तं तावत्वे ॥ उर्व  
 त्रिमासीं रुद्रं वत्स ॥ त्रिंशत् मनुष्यैः पूज्यं दद्यात् ॥ अग्निं पश्य  
 नं रुद्रा आयाय ॥ सर्वं धनं विष्णुं ॥ समिदा अग्निलेहमा मनुष्यैः ॥ रुद्रं रुद्रं ॥ अग्निं (ग) विष्णुं



मनुष्यः स निश्चयः यथा स्यात् । स्यात् न पृथिवी मनुष्यः आ अरुमा वृद्धेः स्मृतः ॥ तिलहो मा ग्या द्रति किं ॥ अथ  
रुगसदसुर्कः । उर्वरहो मनिर्वर्त्यः कृष्यारु स्यात् रिषवर्नः ॥ ॥ अथ नवा समावृष्टः मृत्तिका सुगुलं  
था ॥ ॥ गमना च नासं हवचः पंचरं ॥ ॥ १४ समुद्धनं ॥ ॥ रंग ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥



नृदानी ॥ अस्तु नदी सततति. यस्तु हिंसां दृष्टव्यं नृन ॥ वृद्ध बोधायन ॥ अस्तु नदी दान यति आ  
 वृद्धानति विस्तृतान ॥ महापूवं ह मा जो न वृद्धा गे तम ॥ धनं ययस्त्रिनी दाता. लाहिनी ह म  
 र्गिनीका ॥ न धा बोधायनानिक. वमं स समलीकृता ॥ चलन वात द ह न. तद ह नाथ वापुन ॥ स  
 व. धून नृगां शुभा. यदा स्व विरुवन तु ॥ वाक्मन्त्रा यागि वक्ष्य. य. दया तत्तु. स मान व ॥ अग्नि  
 वक्ष्य ॥ कपिल वा. धू. वक्ष्य. धू. वा ॥ धनं ता मति सी दृष्ट. मनुष्य न न रुकि त ॥ मन्त्रा म द द य  
 स नृ. मन्त्रा म स नृ वृष्ट ॥ द वानी या तु स व र्णा. क य या सृ द ली म म ॥ दान मनु ॥ विना न  
 य सदा दान. मपि दी र्घ म सृ द ली. त न दी य त ॥ क र्था द सृ द न ग दा र्दि त ॥ अस्तु नृ न य  
 ति मा दान मनु ॥ विना न य सदा दान. मपि दी र्घ म सृ द नृ. त न दी य त ॥ क र्था द सृ द  
 न ग दा र्दि त ॥ अस्तु नृ न व क य वा ह ॥ ॥ अथ मन्त्रा वृद्धि र्द्वी ॥ मन्त्रा त य ॥ दधि द्रो व मनु  
 वृद्धा. युक्ता रु वति म द सा. दधि. धन ॥ शुदा त या. त न विषा य शु द्धा ति ॥ दधि. धन विवि ॥  
 क य रु न उ क ॥ ॥ अथ हि वा ग रु नृ ॥ कर्म विद्या क स मृ च य ॥ न क र्ता ति म हाने. य क्ता न  
 अस्ति वा नी स जा यत. वा ग हि म य म ॥ हि न र्थ ॥ क र्था ॥ क रु वा नु य म न याने दि न य  
 पु स र्द वा न र्गि म नु म य ॥ क रु व स रु सृ ज य ॥ क रु द ॥ पु स्या म्ना य न. क व. धन न दि न ग  
 ल न त या ज य ॥ क र्था ॥ ॥ अथ पु द न वा ग रु नृ ॥ कर्म विद्या क स मृ च ॥ मा ग वा यु नृ ल



वायि. यानत्र १॥ भुनिर्धूय ॥ स्यद्धतसो युजायत बुदवशाधिमाकुवि ॥ पुदवस्य मीनागत्वा  
स्यद्धजन्माहिपायं वृत्तिं ॥ वा न्दायलं पकृवीत कृद्धं वैवागिक कृद्धं ॥ तद्विष्णुविति वज्र  
यः देयुतगयसंखाया ॥ सय्यिर्मधुसमायुक्तं मद्रुका नैनं लज्जयत ॥ विष्णुन तस्या दसति  
ले मीर्जयत्युदवर्तय ॥ तद्विष्णुविति मृद्वयं मनु ॥ ॥ अथ पुमं हृदनालि ॥ कर्मवि  
याकसंभानिधि ॥ नवेगानि वदानानि पुमं हृदस्य पचयन् ॥ वाक्मलं स्वर्णं हनन् ॥ गावसीग  
मनं तथा ॥ गुर्वतस्य गमद्वयो यवहृत्कृणोका विना ॥ यवमृविधवा कचातिर्युल्यानि वृ  
र्गमम ॥ कर्मविवाकसमवय ॥ वाधुलीगमनामर्धपुमं हृदयाधिमाकुर्वन् ॥ कुत्सि  
यासाकुर्वन् ॥ जायतं न स्यानिष्कृति ॥ वा न्दायलं गुयं कृष्यायवमर्धं तथयव ॥ पिपी  
लिकामधुवा न्दायलं गुयमर्कयवमर्धं तथयव ॥ ॐ दमाय ॐ तिद्वास्या मृदुरुमम  
थेकया ॥ इदृयात्सय्यिषावेगान् ऊयन्मनुनाममाहित ॥ हाभ ॐ दमाय ॐ तिजृद्वय  
मका मनु ॥ ऊयहिन् ॥ ऊयहामे संखाया रुवर्गगाद्ययुताका ॥ ॐ तिसर्वगुपमं हृद  
नं ॥ ॥ अथ मधुलपुमं हृदव ॥ कर्मविवाकसंयुक्तं ॥ तिसृग्ममीसंयुक्तं न पुमं हृद  
युगात्तव ॥ कृष्यान्नायनादीनि पायश्चिदं यथा विधि ॥ ॥ अथ वातपुमं हृदव ॥ कर्म  
विवाकसंयुक्तं ॥ यववासीमनु ऊय कचागमीतथेव च ॥ वातपुमं हृदयुक्तं ॥ कृष्यान्ना



दाशल गयी ॥ ॥ अथ मधुमहादिहनालि ॥ कर्मविद्याकसमूह ॥ मधुमहीमाहमसी. सगर्गजाय  
 गनत्र ॥ धिह रायाहि गमसी ॥ कुलमहीनवाधम ॥ यागकं कुनिनीति स. मिहमहीनिनिधय ॥ पिह  
 रायासयलज्जननी ॥ वायगुहं कमादग. वदवी अथ पंचव. अदमियावचं सचयक. तनावागमत्य  
 मयगा ॥ क मलयददं पंचादमिहयथ ॥ सर्वगमोन गुयनाह ॥ रुनसहसं जय होमो ॥ ॥ अथ  
 यमरुच्य सवर्ण. धन दानं ॥ वायुयूरा ॥ वाग्मही स्वर्णहानीच. पुमही जायतनत्र ॥ ॥ रुमा  
 जोमरुध्वं वच ॥ वृद्धागेतम ॥ धनं स्वर्णमयी कथा स्युर्वलविधिनाग ॥ पूर्वलयलनवातद  
 द्वल. गदछाद्वनवायूननिह्यनन ॥ स्वर्णं गीत्रवलाशी. तथारुयारुनामयि. तथचनर्णककथा  
 दष्टरागनवृव्वेन ॥ तर्णकं वत्सी ॥ वाग्मही श्रुतसंयनं. वेष्टुर्वचकदुमिनी. गुरुमाहयविः  
 धिव. त्युजयह्वयलेदिहि ॥ यथविहवगा रुका. होम ॥ पूर्ववदवहोमने मुवेष्टुवे ॥ सम्यक  
 यालासं समिधे ॥ स्मृत ॥ मनेत्रितिरुवचनं नानागारवाहियायी ॥ अगुका मनु ॥ नदिश्रावि  
 तिसादि ॥ होमसंख्याशरुवगा ॥ होमानं पुदया. मनेष्टानन रुमवान ॥ मनुमाह ॥ चर्क  
 सुदनीनं युस्य. वाजोयुत गयेवच. पुमहं हवउदि. प. विष्टुर्ननुवादन ॥ दोनं पुमरुनाग  
 मगत्कार्यमनीधिरि ॥ कननाननमम्यनि पुमहादावृष्टमयि ॥ ॥ अथयवी ॥ गनागय ॥  
 नपस्विनी पुसी. गन पुमहा जायतनद ॥ मासं वृद्धजय ॥ काथादिद्या रुकावकीवनं ॥ ॥ अथपुम  
 रुपतिवृयकदानं ॥ कर्मविद्याकसाव ॥ पुमरु ॥ वाहिमूयम्य. दकिनीयोतिह. यल ॥ पाव ॥ पा ॥

१०६



कल ४ कर्तव्यं वादाद्यातनगर्हिणी ॥ अणककविधिः ॥ ॥ अथ वरुत्तरुनी ॥ गतातयः ॥ इष्टवादी  
तुषलस्य सदद्यावृद्धिजायत ॥ त्रोष्यं पलपयं इष्टं घटपय समन्वितं ॥ ॥ अथ विज्ञातना  
गहनं ॥ सावयमहं गेनमः ॥ विषादधनं साधो वात्मानं यः पुमाययः ॥ सजन्मानकवमा  
साधः अविज्ञातगदीरुवः ॥ विष्णुनामिसहस्रं सागमकुं ध्वजे ऊयः ॥ शीयवृत्तं कर्णवाध  
(गेनमीकानमवत्रायेवागः) ॥ ऊयदिपांरुं दद्यावृद्धिदक्षिणं ॥ ॥ ॥ तिथीमहाभय  
वसुविस्तुनी मन्त्रावायलसतगीमदामकृष्णसतदिनकवकृतकर्मविपाकसावनाग  
रुनेयकवर्णः ॥ ॥ ॥ अथ धिहनालि ॥ सनिदानीयाधिमूकानि सुनिमित्तं (सादितां) ॥  
आधिस्यसिमसकृष्णवृत्तदिनकवाधना ॥ तगादीयूयातावत्याधिवृत्तं रुद्धवमृशतं ॥ म  
हार्धवैयिगामरुः ॥ इत्यियासातुर्नानीरुत्तात्रमवमृशया ॥ मिष्टानं स्वयमश्रानि नसाय  
यवती रुद्धः ॥ मिथुनानिवर्पवागः ॥ ऊय रुन्निवृत्तयः ॥ दद्यात्सोराश्वेत्तु निरुत्तयः ॥ क  
नसाननः ॥ कवसुववाजः ॥ रुन्निर्वायेवधौ अर्कः ॥ विकारववृत्तः ॥ गदीर्नः कसर्कः कसर्मत  
था ॥ लवर्णः वाधर्मिकः ॥ सोराश्वकर्मशतः ॥ सुववाजः ॥ सुवर्णः डावकः ॥ डावकः ॥ सुव  
गर्भः ॥ तिथिसिद्धः ॥ कप्युत्रोवा ॥ ॥ तिमहाधुवः ॥ विकारः ॥ अमिष्टां दद्यादि ॥ ॥ बोधाय  
नः ॥ अथ पुजायिहामः ॥ पूर्वयदेषः ॥ अनदः ॥ मावास्या विषुवद्वनवानहीतीश्वरध्वत  
कायायां वा ॥ गमयं कस्य वाधर्मिकः ॥ न ॥ गवर्मयार्गवतुवर्णः ॥ रुत्तरी



कृत्वा वा द्वाभनयविद्विष्टयुष्मदं स्वस्ति मृद्विमिति वाचयित्वा वा श्रादिनि वद्वा लं युगिष्टा श्रा  
 यान्ध्रश्चाह्वीतानं विष्णुता नंदद्वि लोताध्वीतानं रु व विष्णुता नंदतत्कानं द्वय ७ ॥ वद्वा लमा वा  
 रुयामि पुञ्जयति मा वा रुयामि । य व मं विने मा वा रुयामि । हि वं भगवन् मा वा रुयामि मीत्या  
 वा ॥ सावित्र्या वा ईददाति सावित्र्या निवदय दत्ते वनं नाम धेय ४ शुक्र मनी वद्वा लमूदा  
 नं वा रु ४ यीतानं विष्णु रु ४ त ४ सावित्र्या वम्य पुल वनाष्ट ४ तं रुत्वा वद्वा लमूयति वृत्त  
 नमा वाचनमा वाच स्य गय ०० ल्यथ मिमूयति वृत्त नमा वद्वा ल सका द्वि ४ सका द्वि ४ स  
 क धा माग्नि ४ युगिष्टित ४ स के व विष्णु रु गानि का य मि ४ युगिष्टित तत्त्व स सि विष्णु स सि यो  
 नि न सीति स्थ थ सु य मा रु ॥ सावित्र्या यला गी य लो वृष्ट सरु मे ४ स्नाययित्वा पुन व स क न  
 रु रु या ७ ॥ तत्सीया तन मृ द्वि रु रु या रु । यल व ने व न म स्तू या ता । अ ध्व र्यु वं रु क लु ला  
 त्या म लं क वा ति त ४ सा ग द्वि नी रु व ती त्या रु रु ग वान वो धी य न ४ ॥ अथ वं ध्वा ल्य  
 रु ना ति ॥ कर्म विद्या क स धा नि ध्वा ॥ उका द्वा नि दाना नि वं ध्वा ल्य व व रु द्वि धी । उ व द्वा  
 धा वा ल घा त ४ य व हिं सा ता थि व वा । पा लि रु रु ल म न्य र्वा । पा ल्य न व स र व वृ च । द्व व ४  
 पा ल्य लु उ न्नि ष्ठ मृ ग भ व रु ति रु था । अष्ट का दि षू का ल मू यि रु क म्मा विष्णु यि ता । मा  
 रु द्वि या ज न व त्से रु र्वा नि वृ ति न रु य ॥ वं ध्वा ल्य व रु रु का दि पु र स त्व यि ॥ म नू ना ॥  
 वृ गं युगिनिधीना इति युगिनिधित्वा क्वा तस्मिन् युगत्वा ताव वा धना त् ॥ यि ता पु र स्य जा

१०१

१  
 २  
 ३  
 ४  
 ५  
 ६  
 ७  
 ८  
 ९  
 १०



[illegible]



न। डाल पुमालं तस्मिंस्तु निदिधिमश्नतः॥ आश्रयानि सस्मात् मूयवीर्गसूयुक्तिर्गान्धय  
प्याकते दूये. नेवये धरुक्तिः॥ मरुतितामुवागुडालयमाली. दश्मार्थं च निःक्रिय. तत्रय  
रूयवीर्गमूरुनीयसहिर्निदिधिशूयुजमदिल्यर्थः॥ यैवगशस्माननगयशामनुत्तनापा  
दानासूजायामयिसमनु॥ तगावास्त्रलेमाहूय. हासैतगवकारय॥ तिलेवाश्नमधूना  
मिमेवश्नरुर्नगर्ग॥ हासमैगावाहृतिगामयगीवा॥ तस्मैकृतवगदयै. वक्राश्नैः पूजि  
नायतु। मनुत्तनन विधिवत्साधुत्वायाववीतकी। उयवीर्गयवममिदं. वाक्त्रयविधुर्ग  
पूना। रुवनीकासादानन. गह्वरैर्वीरयश्रुहं॥ धनान्यपि वाक्त्रयसुस्मिक्कालेयदायय  
७। अन्वयश्चतुर्थाश्रयः. सुविषयकमायय॥ गह्वरैर्वीरयश्रुहं. दर्वकृत्वाविमूयतः। अ  
नुमियाधिकाव॥ ८। तिगह्वरैर्वीरयश्रुहं. यश्चायवीतदानी॥ ॥ अथयत्यत्रुर्वी॥ नगताय॥  
विप्रवत्तायहावीयः॥ भानयत्यः॥ यजायतः। तनकायविशुद्धार्थं महानूयुजयादिकी॥ अ  
नयत्यनयनाजायत्यउद्यतः॥ ननशायत्यः॥ तस्मिन्निनूयधियाहावा॥ आदियदाह्रा  
ल्लहोहनरुविर्वीरयवत्त॥ मृतवत्सादितः॥ सव्यविधिवगविधीयतः। दध्मर्गहामः॥ करु  
शः॥ यालाः॥ नयथाविधि॥ यालाः॥ कसुमै॥ दध्मर्गश्च महानूयुजस्य॥ स्कन्दवद्ययवासा  
यिपूयदः॥ तद्वक्त्रावाह॥ अस्याह्लागेनायस्तु. यजुनिथतमानसः॥ अपूयानरुतय



ग. नधनाविधनलरु॥ ॥ रुमाडोविधमिग॥ य॥ पयत्ननवत्तात्रि. विपत्य॥ संपयच्छति। स  
सर्वगुणसंपन्नान् यूगान्चिन्दति नन्दति॥ ॥ अथमृगयुगत्वरुनी॥ भगवतय॥ रुक्मिणेवातकी  
सूर्य. स्वसाजातं वमूलकं। तनसाजायत व-आ. मृतवत्सावनानकी॥ तस्या ग कविनाभयत  
य॥ कार्यययत्नग॥ भोवर्णवालकं कृत्वा. दद्याद्वासा समन्विता। अनदा हुंगगा दद्यादसुद्वय  
समन्विता। तस्या ग कविनिर्मका. यश्च रुवतिपुलिनी॥ रुद्विकुम्भीक कर्मव॥ ॥ अथयनी॥  
भगवतय॥ बालद्यागी व पूरुषा. मृतवत्स॥ पुजायत। वाङ्म. लदा रुनयेव कर्कशं मन गुद्या  
ति। शुवर्णरुत्रिवर्णस्य कर्कशं वयथविधि। महाबूद ऊर्ध्वयेव. कावयत्रयथविधि॥ रुद्रयात्र  
दन्ता। न इवा मास्ययविपुर्गा। उकादश स्वर्णनिका॥ पुदा गद्याशुदक्षिणा॥ उकादश यमून  
येव. दद्याद्विकानुसात्रग॥ अन्यथापियथानका द्विऊर्यादक्षिणादि। न॥ ला ययदम्यती  
यश्च। तमनुववृत्तदेवते॥ आवा यीयपदयानिवमालं कवत्तनिव॥ उकादशनिका उकाद  
शस्या जलिन्या ल्यर्थ॥ वाङ्म. लदा रुनरुत्रिवर्णशुवर्णविधिमुल्यमहाबूदालं विकल्प  
॥ यमून॥ कस्य नूनमिति यवदशवानाहियक॥ रुत्रिवर्णशुवर्णविधिमुल्यमकिल्वरुन  
कवत्तलो न गशुवर्णविधिपुसं गनाक॥ रुत्रिवर्णशुवर्णविधिमुल्यमकिल्वरुन  
नयैवे पूर्वयग॥ दक्षिणावागदयावे. निष्कगयसूवर्णकं। वावकाययथानका. य। थ। क. रु



नमिहृता। स्वर्णं गीवकयिलां। सवस्त्रावमुसकृतां॥ वाचकायचदद्याद्वात्मनः॥ अथमिहृता  
। अलंकालं बुदद्याद्वा॥ अथैतन्नवतर्कः॥ कर्णस्यारवर्णदद्याद्धानं वसविषयः॥ तन्मिहृता  
सदद्याच्चोक्ष्णयनवाधिया॥ गृह्णातिअवयवाधि। रुचिर्वर्णं बुधानः॥ सर्वयोपविनिर्म  
को। वेष्टुर्वयदमायुया॥ यिहृनृद्धवर्णं सवर्णं कादभसमूहवान्। आत्मानं ससर्गं चैव  
सुखं चरुवर्णं ह। दर्शं। गनेवहामध्म। कार्यश्चाग्ननवाधिया॥ सुखीवर्णं सैवादेव॥ अथ  
वर्णवर्णं पाकं। रुचिर्वर्णं सारुचिः॥ अथवर्णं रुचिर्मूर्तिः॥ सगीकस्यबुदीयग॥ सुव  
र्णनृता सस्यकं लक्षकं प्रमानं॥ स्नातयैवध्वज्यलं। यावद्दं०॥ समाश्रय॥ स  
माकोविधिवदुर्ध्वं। दयंक्षेमं हि जातय। एतयमिथेनाशेव। अथुर्विभक्तिवाद्यः॥ अ  
थववाहमकुलं। सहस्रं हवर्णं गथा। अथकृगविधानं॥ अथवाप्रातिमानव॥ अथनमा  
त्राअमायुर्ध्वं। सोलायं गुलं सैवदी। वाप्रातिमन्त्रः॥ नागकायाविवात्रल॥ ॥ अथ  
रुचिर्वर्णं गुवलययाग॥ दशकासो सैकोत्पन्नकजन्मा कृतानयस्यल्लमृतायत्यत्यादि  
निदानरुतवालद्यागविपुत्रत्वायहवर्णदिजन्यद्विगसमूलनागद्वाराआकत्यावि  
कृदिदीर्घायुषाद्वरुस्ययादिसैगतिपांफयमगुर्ववर्णं वदुर्ध्वं सार्धमर्धं वाया  
यश्चिह्नं पूर्वाह्नं वागि सैहर्गकृत्वाद्यम्यस्यावनृकूलदिनद्विर्वर्णं गुवर्णं गत्वनविनाय



काभर्त्ति कृष्णदिति महाभूतः ॥ पुनरथ त्वादिपूर्वकं हलकामाह विर्वंशः ॥ अथावह  
ॐति सपत्नीकः ॥ सीकल्या गल्लपूजा स्वस्ति वाचनमाह पूजा नान्दी ॥ अत्रि कृत्वा वसु मृदि  
का कृत्वा दिति हविर्वंशः ॥ अथ वल्लभार्थं त्वा म हं वृ ॥ ॐ ति वृत्वा च वाक्त्रय मय वाचकं वृत्तया  
॥ अथ हं वाचकं वाय सीला ऊय ॥ यावत्समाप्तिर्न लताम्बूलः शत्रु कर्म मी सी गख द्वा  
नेय नानि वरुं यनी हविर्षं दुं जीयातां ॥ अथ पूरक कवाचकं व सी पूष पूष्य पुति मां स व  
त्सां स्वर्णं गीं गोप्राखूनां कां स्थापदा हं स व नू पुय मर्कं तद्विद्विदत्वा हविर्वंशः ॥  
दभी ॥ अथ ववाह मनुं ल सहस्रं वातिता अहत्वा गीं यथा गकि वा विपान् चतुर्विंश  
ति मिथुना निवायाय सीला ऊय दिति ॥ ॐ ति हविर्वंशः ॥ अथ पयागः ॥ अथ यवी ॥  
अतातयः ॥ विपुष्टा वा लकं हत्वा सी ह ऊर त्रकां वनी ॥ नैव जायत मृत्युः ॥ पूषा ली वय  
नः ॥ पुनः ॥ गच कर्म विना भय कार्य भ नैव यत्नेत ॥ ॥ अथ वृषो ह म सी यूकी दाग यो वसु सी  
यूगी ॥ दद्याच्च भर्त्ता धनं ॥ अऊय अगर्गं द्विजान् ॥ ॥ अथ मृत्यु गृह विनिष्ट वर्म की  
लत्तु र्वी ॥ कर्म विपाक सी गृह ॥ अहं कादि चिह्नं अहं दानानि ॥ गी कद्या त क ॥ पालिनां  
सतर्गं द्विती ॥ पुनर्द्वितीया यया हं क कामृ गभ वस्य नत्र कान्क यऊ मनि ॥ मृत्यु गृह म  
की ल ॥ याधियूका हव च सः ॥ अथ वजायकं ॥ गस्थं यनिष्टुति ॥ यया ॥ कृत्वा नुय



॥ कथा. क्षामः शुक्ला गुह्यं कृष्णं ॥ गलहासः स्वर्णं कान्तं. तमिदानीं तथा चरी. कथादानीं च यं व म्या  
 अहं कवी तय त्वत्तः ॥ समुनामजायी च. रुवदवी विम श्रुतं ॥ क. कुदर्वि कल्पः समुद्र यावा ॥ यं व  
 म्या अहं कृष्ण यं व म्या अहं म. गव अ. मालं ॥ जायी तिता. क्षीत्य विनिः ॥ स्त. द्यात्य हि धवर्ण यः  
 मृगाय त्वत्त रु. ॥ य. धेनीय ० ग. सारु. कार्त्तिक य त्व मानवः ॥ त. त्या. ग. रु. क. मा. वा. ली. द. मा. वा. र्थ  
 रुविष्णु तीति वा वा हा. ॥ ज. ध. मृ. त. व. त्सा. य. त्व. न. व. ल. रु. वी. ॥ द. मा. जी. मा. त्स्थ. ॥ सक. मी. क. व. न.  
 व. श. सर्व. त्सा. क. दि. गा. य. वे. ॥ जा. त. त्या. मृ. त. व. त्सा. य. ॥ सक. म. मा. सि. ना. व. द. ॥ ज. ध. वा. गु. क. स. क. म्या  
 म. त. सर्व. पु. न. स्य. तं. ॥ ग. रु. ता. वा. व. ली. ल. द्या. क. त्वा. वा. द्या. ल. वा. व. नी. ॥ वा. ल. स्य. ज. न्म. न. द. र्. व. र्. श. य.  
 क. ति. था. द्यु. ॥ ता. ज. न्म. ति. थि. ॥ ग. म. य. ना. य. नि. का. र्था. रु. मा. व. का. ग्रे. व. रु. था. ॥ ग. लु. ते. व. क. श. ली.  
 उ. ध. र्. ॥ ग. म. जी. व. सी. य. र्. ॥ नि. र्. व. थ. स्य. र्थ. व. द्या. र्था. त. न. म. न्ता. र्था. वि. क्षा. न. ग. ॥ कार्त्तिक. य. त्स्थ. र्थ. दे. व. र्थ.  
 सक. म. व. द्या. ता. द्या. ती. ॥ रु. रु. या. द्यु. द्यु. क. न. त. द्यु. द्या. य. ना. व. द. ॥ हा. त. था. ॥ स. मि. ध. धी. ग. त. धे. वा.  
 क. य. ला. ल. जा. ॥ य. व. क. वृ. ति. ले. र्. म. ॥ क. र्त्त. या. द्या. र्थ. न. ॥ या. द्या. ती. हि. व. थ. अ. न. त. थ. वा. द्या. र्थ. ती.  
 दि. उ. ॥ रु. त्वा. त्वा. न. व. क. र्त्त. र्थ. म. न्ते. से. व. व. धी. म. ता. वि. थ. ल. व. द. वि. द्या. वि. धि. व. द. र्. क. या. ति. ना. ॥ रु.  
 य. थ. व. रु. व. ॥ क. र्त्त. र्थ. रु. रु. ॥ ल. मृ. ॥ ग. रु. ना. न. ॥ व. र्. य. व. पु. न. म. ॥ ध. द. ध. द्या. वि. रु. वि. ती. ॥ स्त. य. य.  
 द. व. र्. क. र्त्त. सक. र्त्त. ना. हि. म. नि. ती. ॥ सो. व. ल. ती. र्थ. ता. य. न. ॥ व. र्. व. ल. स. म. नि. ती. ॥ सो. व. ल. सक. र्त्त. ना.



सुवामस्यत्यादिना॥सद्यःसद्योविधीयुक्तान्येवहंगजलान्वितान॥हंगयन्त्रवशायेवतत्तुलेयुक्ताः  
न.वासारिः॥यत्रिविष्टाना॥गजाध्वंजथवस्मीकसंगमादुदोगाकलाग॥संगहामृदमानियस  
वैधवविनिःश्रियगासंगह्यकीकृत्य॥उत्सवियवकीरुषू.गायनकेषुमधमी।गृहीत्यावाप  
दीसग.सोवा.मन्त्रानुदीनय॥नावीरिः॥सकसंख्याहि.वर्धगंगारिःववया।पूजिताहि  
शुभमका.मात्यवकादिरुषाले॥सविवाहिरुषकलंयै.मृतवत्साहिषवनी॥दीर्घायु  
बन्धुवालायै.जीवत्यगास्त्रियं तथा।आदित्यवन्दनमस्माद्वै.गहनदण्डमपुले॥गक  
॥सत्ताकयालावे.पुष्पविष्णुमहेश्वर॥उतयायचदेवोद्या॥सदावानुकुमावकी  
मासिनिमाचवाकृष्ट.मात्रवासीगहा॥कवि॥यीर्जकृष्टनुवातस्य.समाहजन  
कस्यवातत॥पुष्पाध्वजवा.कुमावयनिर्सेयुता।सककैपूजयस्मीलममाचार्थहारया  
सहा।कांचनीवगत॥रुत्वा.गामयाणीयविस्मिगी।पतिमोधमवाजह्य.पुत्रवविनिव  
दये॥वमुः॥कांचनवलायेईश्वर॥सदृगवायसे॥पूजयद्वाध्वलन्येष्टा.दिरुगम  
विवर्जित॥उक्ताथपुत्रलमयाव.मृद्यायापिगुप्तनि॥दीर्घायुबन्धुवालायै.यावद्वय  
गर्गस्त्वही।यत्किंचिदस्यइतिगं.तत्किंचिवत्तवामुख।पुष्पावडीवसु॥स्किन्दा.विष्णु॥ग  
काइतागन॥नदनुसर्वइष्टया.ववदा॥सनुसर्वदा॥उवमायाविवायानि.विन्दन



पूजयद्गुरुं। न किं तः कवित्वां दत्त्वा। यत्नियस्य विस्मयः। गुरोर्वयूगसहिता। यत्नम्यत्र विर्गकनी।  
 इतः। गीर्वातमा ग्रीया। दाक्षिण्येन मास्ति। तः। दमकादुता द्वं। ग. ५४ स्वप्रवृत्तगस्यतः। कर्तुं।  
 मादिनदगं। हित्वा संपूजयत्सदा। न सार्थं। शुक्रसकस्याः। मतत्कर्वेत्तसीदति॥ ॥ ॥  
 तिदिनकवरुदृक्कर्मविद्याकसात्रं। मृगवत्सादिदावद्वरसकमीकृयनी॥ ॥ ॥  
 थक्कुविधिर्विष्णुत्वरुनाति॥ तग्नदत्तानेहमात्रे। विष्णुत्वरु॥ मृगवत्सादुयानानी। इहग  
 र्दुवर्जिता। यास्तुर्गकन्यकावत्। स्नानमासां विधीयत॥ अष्टम्यां वाचकुर्द्विष्णुः। मूयवासेय  
 वायव्या। एतौ। शुद्धवदुर्ध्व। क्रियाकस्यदिनतथा। नद्यास्तुर्गमकृष्यामहानद्याविष्णु  
 यगः। निवालेयथवा। गम्य। विविक्तवो गृह्णागः॥ आदिगात्रिद्विर्जन्मनः। धर्मद्वयस्य  
 लिनी। स्नानार्थं सार्थयद्वी। निपूतं नूतकर्मलि। तत्तु मल्यैक्यया विदुर्नर्मदकपूर्व। व  
 द्धवन्दनमा लीव। गमय नानुसयित। तन्मध्य। श्वतः। संपूर्णं यद्यमातिरवे। मध्य  
 तस्य महादर्वस्काययत्कालिकायत्रि। दद्यादलषूनद्यादींश्चकुर्व्विधिपूर्वकं। नूदादिताकया  
 लांश्च। दलश्चन्यवृविचसः। दर्वीविनायकं वेव। स्काययत्कालिकायत्रि। दद्यादलषूनद्यादींश्चकुर्व्विधिपूर्वकं। नूदादिताकया  
 धूर्पदीपं। गुणगुनी। रुद्रानानाविधान्दद्यात्तुलानि विविधानि च। वदुष्का। लषूटं गमय। मध्य  
 कदलहयित। उक्तेकविचसं दुग्म। सर्वविधसमन्विता॥ वदुर्द्विक् मल्यवस्य। दद्याद्गुणव



सिंगतः॥ आ॥ प्रयादिजिकर्तुं शं म॥ यद्यसमीयतः॥ अग्निका र्यगुरुक॥ पु॥ यद्यध्वये वलीकृतं॥ लवली  
 सार्यवायुर्क॥ घृणनवाचनोसरु॥ मानसाकनरुद्रात्कनरुद्राभनवयहं॥ द्वितीयस्याग्निका र्यस्य  
 कलत्रवाक्क॥ म॥ रुद्रं॥ नूडजायुद्रादाचार्यसिगवन्दनेवद्विती॥ सिगवन्दयत्रीधनै॥ सिगमात्य  
 विरुषिती॥ म॥ रुद्रं॥ क॥ ले॥ क॥ नै॥ क॥ पू॥ व॥ व॥ पु॥ ली॥ य॥ के॥ म॥ य॥ समी॥ य॥ स॥ ज॥ य॥ दू॥ ज॥ न॥ वि॥  
 म॥ से॥ न॥ या॥ व॥ द॥ का॥ द॥ म॥ पु॥ पु॥ न॥ व॥ व॥ ज॥ य॥ व॥ न॥ न॥ द॥ व॥ म॥ पु॥ ल॥ व॥ का॥ र्य॥ द्वि॥ ती॥ य॥ म॥ पु॥ ली॥ पु॥ रु॥  
 ॥ तस्याम॥ ध्रु॥ सु॥ साना॥ ना॥ ॥ ग॥ त॥ य॥ य॥ व॥ ली॥ कृ॥ ता॥ ॥ ग॥ त॥ व॥ रु॥ य॥ व॥ ती॥ धनै॥ ॥ ग॥ ग॥ न॥ धनै॥ ल॥ य॥ ना॥ ॥ सु॥ खा॥ स॥  
 ना॥ य॥ वि॥ द्या॥ या॥ आ॥ वा॥ र्य॥ नू॥ ड॥ जा॥ य॥ क॥ ॥ अ॥ हि॥ वि॥ व॥ रु॥ त॥ पु॥ ना॥ म॥ र्क॥ य॥ ग॥ त॥ द॥ म॥ च॥ ना॥ व॥ रु॥ ॥ व॥ वि॥ र्क॥  
 व॥ न॥ व॥ नू॥ ड॥ ने॥ का॥ द॥ ॥ न॥ न॥ तु॥ ॥ ग॥ ता॥ नि॥ स॥ क॥ य॥ धू॥ नी॥ ॥ व॥ रु॥ कि॥ व॥ धि॥ का॥ नि॥ तु॥ ॥ व॥ धू॥ नी॥ ॥ अ॥ र्वा॥ ता॥ सा॥  
 व॥ व॥ रु॥ ॥ व॥ वि॥ र्क॥ सी॥ त्या॥ ना॥ ॥ उ॥ का॥ द॥ म॥ रु॥ द्र॥ ॥ य॥ ॥ ता॥ ना॥ मि॥ र्क॥ सी॥ त्या॥ ॥ अ॥ वि॥ रु॥ ॥ ल॥ ति॥ म॥ नु॥ ल॥ स्त्रा॥ ना॥ र्थ॥  
 वि॥ नि॥ व॥ म॥ य॥ ॥ अ॥ ग॥ य॥ त्वा॥ ना॥ ग॥ ज॥ स्त्रा॥ ना॥ व॥ ल्मी॥ का॥ सं॥ ग॥ मा॥ द॥ द॥ न॥ ॥ व॥ ग॥ म॥ ग॥ ना॥ का॥ ज॥ ग॥ रु॥ ॥ द्रा॥ वा॥  
 द॥ ना॥ य॥ वे॥ मृ॥ द॥ ॥ स॥ व॥ वि॥ धी॥ वा॥ व॥ ना॥ व॥ न॥ दी॥ ती॥ ॥ अ॥ द॥ का॥ नि॥ व॥ ॥ उ॥ त॥ सी॥ दि॥ य॥ क॥ ल॥ ॥ म॥ मि॥ व॥ सी॥ दू॥  
 सु॥ य॥ जि॥ ग॥ ॥ आ॥ वा॥ द॥ त॥ ल॥ क॥ म॥ नी॥ क॥ दि॥ द॥ ॥ वि॥ ॥ ग॥ य॥ त॥ ॥ स॥ र्वा॥ ग॥ ल॥ य॥ य॥ रु॥ द्र॥ सु॥ गी॥ ला॥ का॥ वि॥ द॥  
 रु॥ ना॥ ॥ नू॥ ड॥ हि॥ उ॥ क॥ व॥ त॥ ॥ स्त्रा॥ य॥ य॥ क॥ ल॥ ॥ ग॥ त॥ ना॥ ॥ म॥ य॥ पू॥ धू॥ र्क॥ ल॥ ॥ न॥ ग॥ य॥ द॥ ल॥ य॥ जि॥ ग॥ ॥  
 स॥ र्वा॥ दि॥ रु॥ मि॥ त॥ ॥ य॥ य॥ ॥ स्त्रा॥ य॥ य॥ क॥ ल॥ ॥ ग॥ द॥ ना॥ ॥ उ॥ व॥ स्त्रा॥ स्त्रा॥ य॥ का॥ य॥ द॥ द्या॥ द्रा॥ का॥ व॥ नी॥ त॥ था॥ रु॥ उ॥



नवागनिर्दिष्टा दक्षिणा (गो० यय स्त्रिनी। वाक्स्वभनामथयथा स्वगच्छामुनियुगव। (गब मुकां वना  
 दीनि दत्वा सर्वं कमायय ॥ कृत्वा नानेन विषयं नृदस्मान्न न हामिनी। लु रुगम कानि सैयूक वरु  
 यूगावजायत। सर्वं च यिहिमा सभ वाक्स्वभनम तं ॥ ॥ अथ पाकान्नं वद नृदस्मान्न ॥ हमा  
 दोर्वो भयन नरु स्य कथं ॥ पुन पुजा पुजा वा पि पित्र गी पुजा वा पिय ॥ रुवं हृ हमा गच्छिताया ल्यका  
 ल्यजति वा यति ॥ वद दद व कथं तस्या ॥ सर्वं म त द्य या ह ति। जायत व य थ लो ह म त ॥ पृष्ठा मिर्ष क न  
 ॥ ॥ श्री ग्व न उवाच ॥ गृह्येन पुन स्य नि दाया ॥ श्री लं त्व या दिता ॥ जायत व य थ लो ह म त सर्व  
 क थ या मिता ॥ (गम र (गम मया र्था व र रु द्वि य वि क ल्य य ॥ आ वृ त्त व द न द (ग य पु ना न्य ॥ य  
 य ग्गति। कृ क्त्वा न्तमान य रु द द (ग कं व त थ द्वि जान ॥ आ हू य यो र्थ य स वी न च य न्यि य रु क  
 या। य दा ल्य रु प य रु क्त्वा पुन य र्थ वा वि ल। कृ त्वा त्म न का वि धि व त्वे सि कं व त थ स न ॥  
 श्रय मां सर्व को भ र्ग। पा लो नाय म्य वा य त ॥ स क ल्या वा च रु भू म मा म वा न्वा व रु ति ति आ  
 सा दि तं स म र्क व त थै व य वि क ल्य य ॥ कृ क्त्वा स व रु द (ग रु ला क या ला न्य वृ ज य ॥ वा धाय  
 ना क वि धि ना ग म मी ग न र्सी नि (प्रो ॥ त्व रि तं त व न त्वा मां ॥ नृ दी नृ ल म नु त ॥ पु न व श्रा दि  
 त ॥ का र्था नि म श्र न्त त थै व व ॥ द य ता य ॥ म श्र रु मूल म नु ॥ पु को र्ति ता ॥ रु ड का द मि नी म  
 कां ल्य रु कृ क्त्वा द कं ज य ॥ पु न ॥ र्सी वृ श्र वि धि व न्ना मि नृ दी र्क ल्ये व व ॥ उ व सर्व य



सर्वकार्यविजयकर्म ॥ ततः कृष्णानामादायः कुमान्मृद्विद्विसर्जय ॥ सर्वकृष्णदत्तनस्य  
यस्यदायानिवर्हति ॥ निवः निवमितीत्युक्ता ततः कृष्णान्विसर्जय ॥ ततः कादण्डुली  
कर्कशद्विजसकर्म ॥ उकादण्डिद्विधिवत्कर्कशद्विजतर्पणी दत्त्वा च दक्षिणं गत्याः  
नमस्तुत्यविसर्जय ॥ उर्वदायाः पलान्ति जायतवतः थिप्तिनी यन्मृषस्यापि कर्कशं  
गृहमागन्ति तस्य च यष्ट्या यूर्ध्वलकामस्य दक्षिणस्य ऊयाधिनि ॥ पुनिसर्वस्वर्गयम्  
प्रेमपुत्रं गुरुदिन ॥ कर्माणि च ह्योयूका न कर्नाथयह न्याग ॥ ॥ अथ वीक्ष्य खड्गस्य  
वर्णधनुर्दानं ॥ रुमाजोमहाधनुर्वज्राय यूनाली ॥ वेदुद्विधावया वीक्ष्य हवद्वेस्त्रि  
या ऊनात् ॥ वक्ष्यं तस्याः पुत्री कारी तस्त्वयै निवाधम ॥ हवत्स्त्रिधनमथमका सर्वस्वोका  
नयदृष्टी ॥ धनं यत्नतवत्सव पादनगुन्त्रववीग ॥ यथा न कर्ति ॥ चलनवागदद्वल गदद्व  
धनवायूनः ॥ नित्यविहायो कयकानल धनं वृष्टा खनवैर्ल तस्याः वृक्तनिया ऊय ॥ द्यौर्गलव  
वधीया स्तवत्सा पाद्वर ॥ पुत्रिः चन्दनागुन्त्रकव्यत्र गन्धमात्ये ॥ सुगन्धने ॥ उववात्रे ॥ घातगहिने  
वर्षयायसैरुव ॥ मादकं वतथा नृप्यं गुर्तलवतमेव च ॥ जीवकं वसुनिस्त्री ॥ पूष्यवतमथदृष्टं  
धना वरकं पुदागर्थं वाञ्छला मुषवेव हि ॥ वउष्टी दग वा दद्या रुदनकं नमवच ॥ मादकादिहि ॥ यनि  
गान्धवस्तुत्यालिखदक्षोदग वा सरुगृका र्था वाञ्छली र्था दद्यादित्यर्थः ॥ वाञ्छनी सर्वगामार्थकृगर्त



धर्मवर्दिनी। आहूय रुक्मासंयुक्तवक्राद्यैर्नभश्चक्रे ॥ नैव कात्रयत्पुजा मां रुक्माधनं वत्सया ॥ हा  
मैत्रकात्रय रुक्मासंमिदाद्यैश्चक्रे ॥ ॥ पूजायां विहाममनुमाह ॥ सा माधनमिति मर्कं समुद्रा  
यगतं पुनः ॥ अस्य धनो विधिया गच्छन् नृद्वर्गं मिमहा ॥ हा ममैव लं समिदादिरि ॥ पुण्यं कंज  
क्षारुनं सहस्रं कथं ॥ पाद्मस्वायाय विद्याय पुदद्या कामूदद्यैव ॥ मनुष्येन न विधिवत्त्यक्तं  
संनिधाय च ॥ धनूयानि त्रसं सगं पविष्टा सुवर्णश्रया ॥ इति ताया तथा हाना ॥ व प्रथमं वनं लस्यता  
याश्च गतं ॥ पुनरुक्तं वनं वृषे वनं वृषा ॥ वीर्यं नुता मम सदा पुण्ययोग्यं पुदा ॥ सुखं पुनरुक्तं दि  
वा नागं मविष्टं दं वसं गतं ॥ उर्वदत्ता उ नंदानं पुलियस्य विसर्जय ॥ ॥ गिरं श्रीत्वहर्न स व  
र्णं धनूदानं ॥ ॥ अगवस्तीर्णं सया मिति तथा ॥ पुण्यं कंवायथ मिमिरु मधिकारी ॥ दानधर्मयु  
दव ब्रह्म ॥ यमुसं वत्सर्न वृक्षं दद्यादीयं करं उक्तं ॥ सवर्जला मूलरुक्मा ॥ पुजागस्य विवर्द्धनं  
॥ नावदसं हितायां ॥ रुक्माद्यै वृष्य च उ वृष्य च रुक्माद्यै नृवृष्य च उ वृष्य च ॥ सो मद्यय वृष्य  
वर्णं उ वृष्य च अहं पुदा गावदं पुण्यवानस्य ॥ ॥ अथ कं पुण्यं च मी गुह्य विधिः ॥ रुमाजीः  
वृक्षसं हितायां ॥ वृक्षा वाच ॥ अथा गतं ॥ पुनरुक्तं मिमिरु मधिकारी ॥ यन विज्ञान  
माणं लं पुण्यं लं पुदद्यै ॥ अथो दोषा मुनाबीर्णं वृक्षस्य च उ वृष्य ॥ तस्य दा वस्य  
उ वृष्य ॥ यं वृक्षं मा वक्तं ॥ गते वृक्षं ॥ यं ना मन वक्तं धारं पुण्यं दद्यात् विवर्द्धनं ॥



येनैव लं हवति यः ॥ त्वयैव दि कीर्ति ॥ गणेश स्तुति ॥ मा ग्रीष्मार्थे तथा माद्य वे गार्थे कारिका तथा ॥  
पूग का मान वः कुर्यात्पु सन्नः कृष्णं वमी ॥ पूग का म म नू याली ॥ अ न्या या या न वि शती मू क्ता दु र्य  
वमी अ द्ध मि ति वृ त्ति ता म ह ॥ १ वी द्वा त्वा न वः सं श्रु क ॥ अ द्ध कृ त्ति ता न व दायि ग का र्म य ॥ १ का र्म  
म द्वि का र्म ना थै व व ॥ स्व र्ग का र्म तथ र्प सा ॥ १ ग द्वा र्ध पे का र्ति ता सर्व का र्म य त्रि त्थ य ॥ कृष्ण य द्वा उ  
यै व मी ॥ या य त्रि रु दि गु र्थ ॥ नृ दे का द नि नी ज य ॥ ग य श्रु स रु त्ता लि ॥ द र्भा ॥ ग न रु हा म य ॥ वा  
द्व त्ता न रु हा म हू य ॥ य ग म नू स का वि दा ॥ य ऊ मा नं ॥ उ वि र्कृ त्ता ना त ॥ कि पू व र्कृ त ॥ १ कृष्ण य द्वा उ  
उ र्ध्वा उ हा र्म कृ र्था त्वा कि त ॥ १ रु द वा न म ह्य र्थ ग ल ना र्थ प वृ ज य ॥ १ द्वा र्ध व र्कृ य त्ता  
म अ द्ध वि धा न त ॥ १ म ध्म र्म उ त ॥ १ पि लुं ॥ न म स्तु या श्रि ता म ह ॥ १ रु हा य ऊ मा न मु द व ता त्थ म र्च  
ज य ॥ १ पि लु मा दा य दा त था ॥ ध र्म य त्नी स सा धि र्नु ॥ ग या रु हा त्वा त्थि लुं ॥ १ प ॥ वि धि व र्कृ दा ॥ द कि  
र्त्ता दि श मा त्रि त्थ ॥ ग ता उ जी त वा य ता ॥ आ ध र्म वि ग रा ग र्क ॥ मा य नू न ऊ य द पि ॥ १ रु का ले रि ग म  
न ॥ त्थ क्ता आ य वे उ र्ध्वा ॥ त स्मा धू म्भ स यू ग र्थ स वि ल ॥ द द्वा ॥ ल कि आ ॥ वा र म्भ कृष्ण वा सा मि  
रु प्रो ॥ गे द्वा र्ध तथ ॥ १ न न वि धि ता स म्भ क ॥ क र्था व कृष्ण र्प व मी ॥ १ वी द्वा द ल मा र्म व  
स ग क्ता अ द्ध मा द व ॥ १ ग ॥ १ र्प व र्कृ त्ता न ॥ ग क्ता न व दाय य ॥ १ ग ॥ १ र्प व र्कृ त्ता न द वा ग र  
रु न्द वा कि र्त्ता र्त्ता ॥ ॥ अ र्थ वि धू र्ध वि ता म ह ग कृ ति त्थ ॥ १ य त्थ यि त ॥ १ स्व या र्थे न



युगगर्हाहत्वा म व लभ्यता यनूतवति यरुगादिदहं वाकाः युगादिगर्हा नागयन्किता विष्णुनृप  
लभ्यद्विभक्तियमा लभ्यद्वि विष्णुधीनमिच्छाग ॥ ॥ दालखडवाच ॥ केन कर्म विवाकन. मिय  
कनिशवः ॥ युगागर्हादिमुवर्गनद. दनयस्यापि जायते ॥ ॥ श्रीरुगवानूवाच ॥ साधुपुष्टं त्व  
या विष्णु. पालिना हि न का मया ॥ तत्सर्वं कथयिष्यामि. विस्मयेन महामुने. कूटवादेन गाय  
व. ययवाक्यनिन्दकाः ॥ वक्षस्व हा त्रिंशः ॥ कूवा. वाग्दुरुस्याय हा नकाः ॥ अनावा नः ॥ कृग  
घ्राष्ट्र. अन्तः पालिद्यागकाः ॥ यत्र दात्रत्र गायत्र. सर्वधर्मवहिकृताः ॥ मिथ्या हि नीतिनाथ ॥ ॥ ॥  
व. ओत्र कर्मत्रगाथय ॥ तत्सर्वं यावक मालि ॥ यत कि नत्र कं कुर्व ॥ पुनः ॥ पुनः ॥ समोपानि. य  
दवैयति यापित ॥ अन्त्या यूषापि जायते. यत तानत्र कागताः ॥ मूका मृतः ॥ यत कीर्त्त. गर्ववा  
संयुतः ॥ पुनः ॥ अन्त्यः ॥ कू. काष्ठविकृता. विकर्ता गहनवाधमा ॥ याप्रिता याप्रिभूयल. दग्धकथा  
यिह गले ॥ ॥ दालखडवाच ॥ यापि नाथ त्वया याका. म्म वावे निष्कृतिः ॥ कथं. कथयस्व  
महाभाग. पालिना हि न का मया ॥ ॥ श्रीरुगवानूवाच ॥ यत मूक. कृ. वेरु. मी. यापिष्ठानां च  
ममृती. कथयिष्याम्यहं विष्णु. विष्णुनृप. तव सुवत. वन्ध्या वका कवन्ध्या व. मुषसुष्टं मृतप  
जा. उर्वरु बुद्धिबन्ध्या. तस्याः ॥ भक्ति कमीयते. यदा मागहं सीहता. यदा माजी विनक्तथा.  
तत्सर्वं नाममाया कि. विष्णु. अहं यसा दनः ॥ विष्णु. अहं नतः ॥ कृ. यादी गनू. नपूर्वकं. अगु



नमो सकलेश्वर मथवेवाहिकयुवा ज्ञात्मा मुद्धि यूना कुर्यात्सर्वयाग कनागिनी कुर्यादिदावकाउ  
वा नु. वा नु दय मथायेवा ॥ का र्य धनं सर्व धनं भयनीये ॥ स्वभक्ति कृष्णाय शिरुमिदं कृत्वा. वि  
ष्णु अर्द्ध समाज ॥ अर्द्ध नील समासाय. वृद्ध स्नान समाज ॥ अर्द्ध नील स्नान मंगल न कृत्वा विष्णु  
अर्द्ध कुर्यादिदं ॥ उकादगी समासाय. कृष्ण कुर्यादेति ॥ ५ याथागर्था कर्तव्यं विष्णु अर्द्ध  
विधानं ॥ अर्द्धो मृदङ्गः ॥ स्नात्वा च. स्व गृह्य क विधानं ॥ आत्मना वरु सद्य क दीर्घायु ॥ पूजत पु  
ष्टा. गर्ह दोषा यद्गर्ह विष्णु अर्द्ध समाज ॥ दवागर्ह समासाय. वधीयात् यथा मलयी. गद  
धस्मादयो वयं त्रिनि सी कल्य पूर्वकी. यश्च मावाय त्वर्ण. दनीदत्त नि मरुत ॥ वलया कृत्वा न ॥  
स. त्रिनि अर्द्धा कल्यार्त्ता. गर्ह दोषे वलिना ॥ ४ यीति नास्मिद्विजा. धिय विष्णु ॥ संपूर्ण कृत्वा  
पूर्वोक्तं मना प्रथम ॥ नृत्वा वा र्य युल म्याथ. मलय धर्म मलय ॥ माध्वत ग पुत्रे ॥ पूर्ण कल  
गं स्नायय द्वे. वसुये. ग्धन सैव यु. तस्मिन्ना उवाहर्न ॥ नृत्वा निष्कन वा द्धन. गद द्धना वि  
शक्ति ॥ निर्मिती स्नायय रु. सद्य द्दिना ग सुग ॥ सै स्नाय कल ग्धे प्रात्र रुथा बुद्ध मरु  
यवो. गो क्थो विनिर्मिती ग क्थ. सै स्नायो पुत्र ग सुग ॥ सक धान्य मिता न रा जीन. पु र्य कं डो  
ल सै मिता न. कृत्वा पूजय सक न. विष्णु संपूर्ण य रुग ॥ उय वात्रे ॥ धा उगा हि. ने न्ये नमि य  
दे ॥ पृथक्. चं वा मृत् न सै स्नाय. पूजा कुर्यात् पुजा गरी. नित्य माय य वधीहि. कं गुप्ता मा



क मद्रकारसककोयमिति पाकी पथकं दासं मिती ॥ गत ४ पुरातनयादो स्त्रात्वामनु द्विजानु वी  
 न ॥ विष्णु रुक्मि समायुक्तान स कर्पयत्र यायिवा ॥ निमनु या मित्रे विपान ॥ विष्णु अक्ष दक्ष धरु ॥ रुक्मी क  
 ने गतान्दावान् वासंग देवयस्मिता ॥ ४ ॥ जूननाम कुमभुल ॥ दधु वल्लभ मद्रोति ॥ कत्वा नित्य कि या  
 गद्व ॥ द्विष्णु दीने च य रु ग ॥ आर्म गवा र्वद वस्य पूरत ॥ स्त्राय य रु ग ॥ नाना ॥ गे गान्ति दं रु ग ॥ म  
 नु ल्म वा रु य दि ति ॥ कूट वा द व ग ॥ त्यादि ॥ ग स र्व बुद्धि माया नु ॥ रु कि ग र्वा क वा म्य ह ॥ ५ ॥  
 दू गान ग धे पूष्य न दू गानि रुक्मा र्व य ॥ ७ ॥ दृ ग पु ग न वान न ॥ आ म वा र्ण य पू न य ॥ गि ल द रु य ॥ ११ ॥  
 गी गार्थ ॥ गृहीत्वा पूर्व वत्य ॥ ० ॥ मनु न त्या र्व न रिता ॥ रु गाम नु मि द य ॥ ० ॥ य ग वा र्ण रु ग  
 जी वा ॥ पा पि षो इ ॥ ख रु गि न ॥ ४ ॥ अ न्नी ग र्वा मया द रु मू यति रु रु क य ॥ ॥ ॥ नि सै क ल्यो ग  
 ला य ॥ क व रु ग र्वा नि ॥ ४ ॥ किय ॥ ग ग ॥ रु मी प क र्वी ग ॥ व र्वा र्व रु स मि कि ले ॥ ॥ ॥ द वि षु वि ति  
 म नु मू द्वा यो रि ॥ रु र्वा ग ॥ ॥ पथ कं दा म क रु ल्य ॥ ४ ॥ रु द या र्व द कि ल्म ॥ ॥ पथ क मि ति वे र्व  
 दि रि ॥ सै व रु ग ॥ ॥ पू र्वा रु गि वि र्वा यो थ ॥ ॥ अक्ष क र्म समा व र्वा ॥ ॥ रु का दि रु वि र्वा न न वि षु रु  
 य म नु स र्व न ॥ ॥ जून क ना म ॥ ग ग ॥ ॥ वि षु रु अ धि का वि र्वा ॥ ॥ वि रु र्वा वि षु रु वा ल्म ॥ म को  
 दि रु वि र्वा न गे ॥ ॥ वि षु रु अक्ष क वि र्वा रु मि ति सै क ल्य मा व र्वा ॥ ॥ उ द्वा र्थ ना म ॥ गे ग ॥ ॥ उ र्व वा  
 या दि रु क मा ॥ ॥ ग ग ॥ ॥ दि रु कि स रि त ॥ स र्व मि न् ग ॥ अक्ष क र्म मि ॥ ॥ आ स र्वा रु र्वा रु रु ग र्वा या



नटकमलुली॥दशात्रयाद्वहाकृत्वा दक्षिणकादनादिकी।यनितामकनदत्वा हाकृसीयां  
निर्वेय॥विभुनृदिअगान्नाम।मर्मिगान्नाम।यिदृन्नुवि॥गर्कवाद्यतसीमिअ किलया अस  
संयगान्।संपूर्णवाचयित्वा गान् वा अक्षरं धुवि सज्जये॥अनीययनु तसर्वं विषयः८ पुनि  
यादयता।मा ऊं यि कुह हृषि च आ वा र्थं पूजय रुत॥यायाद्यगभयपूया डी वय योत्रे८ स्व  
गकि त॥वसु।लं का ल स हि ते।स स्य रु रु ऊ लं क्रिये॥निवा॥सी गायं स्य कृत्वा कृत्वा ग।म  
पूजनी तत॥स्वर्णं नीत्रो अरु री।तामुपृष्टं स व स का।वत्त वृद्धा कां स्य दो हां स व स  
मवृथ रुत॥अ सो अमूक।मगाय सुवरा य व ग म लो विषा य।म मि मा विष्णु दे व स्थाने  
कृ य स्तु गी।विष्णु अक्षी ग रु तां ग।त्व हं त्व मूक।म ग क॥य थ प व व ग म म्मात्मा वि वा यं८  
पू ग ल वृथ ग।स द क्षि लं सी व द दं ति म नु ग त॥य ०॥म वा म अ ग तं वि म नु॥००  
ति म द क्षि लं य क्ता दत्वा मू द व म र्चि ती।स क ध र्थ स क ल र्थ गृ हा ल त्वा द्वि जा रु मा ००  
गि द र्थ वि व द्या से।द क्षि लं य त्रि कु र्थ य।द क्षि लं क र्थ पु द द न म म गि त त॥य ००॥  
म नु ही नं क्रि या ही न मि ति॥अ द्धं संपूर्ण तां या गि।य सा दा रु व ग।म मा ०० स्य कृ द लु व  
रु मा वा वा र्थं पु ल म रु त॥गृ ही त्वा म ग वा व र्क द रु पूर्ण ने दी वृ जं॥ऊ ल म अ ऊ र्थ  
मे गान् कू ट वा द व ग ०० ति॥विष्णु अक्ष पु सा द न स व र्ण ता वि ता म या।उ रु मा न्यां दु ग ल



का. न्याय न्यस्यामलजला. ऊपि स्वनिगना वीत. सलिलकायय रुतशा. गवात्र नाशयर्थ न  
जल क्लिप्ता सवे लकी. लात्वा. धोता म्बरं धृत्वा. आगच्छ रुवे नी निजौ. उर्वयः कृत्वा तां क. वि  
मृगं द्विहि मानवः। तस्य युगः यजाय न. सुगील शुचिना युवः। सुहृगधन स वना. ध मि  
वाः सत्यवादिनः॥ ॐ मि॥ ॥ अथ विष्णु गच्छांग रुता नूद स्नान विधिः॥ नूद स्नान विधिः  
अ. दम्यस्याधुसुगाधिनाः। कृष्णा दम्या मया धोत्र. नवम्या सम माहिनी। नाना वस्त्रे ध्याय  
यिष्टेः यद्रमष्ट दलीति रवः। विन्यस्य कलश नक्षे. दिक्कृष्टा सुव मादकान॥ पुनत्र कं पूर्व  
गा। ग कलशं विन्यस्य रुतः। यद्रम्या यत्रि स विष्टे. दम्यगी पाद्वे रवी. सुयी। अथ स्नाना नूद रुता  
ना. दम्यी का संग मादुदात्ता। नद्या उरुय कृत्वा च. मृग मादुत्य यत्र तः। अथ विन्यस्य क वस्त्रो रु  
सिक्क गभो तया मृदा। अत्रि डाध्व कं यशति. निधाय गत सक कौ॥ नूदाध्व संपूजा कृत्वा  
नूद नूयाध्व। अथ जय॥ दिक्कृष्टा स्वष्ट्र नूयाति. नव मनु लीति रव तथा। नूयाध्व कादले तथा उ  
वा. उनव मे वूनः। अष्टानी कलश नाना उ. उदकं शनि दं क्रिय॥ तद्वा विन्यस्य कं यशु. दम्य  
स्यात्र रिष्य वने। अर्क यशु गता तां च सकानी त्यागं कृत्वा। पुन्य कं नूद मनु ली. लायतां द  
म्यगी ततः। त्याक्ता च पूर्व विष्णु ली. तगा. चां तु कक्षे त्रि। न अष्टा नि नूद वस्त्रा ली. त्यावा य  
पूजय रुतः। पूजितां नूद मूर्तिं च. निष्कमान मितां गुरी सदा रुनी सा ले कता. मावा यय



निवेदयता नगद्विधानपूर्वकं दुविभुजं द्वैसमाचरता गत्यपूजापूजायने सुमीलाश्चिना  
युवः ॥ शुभमधर्ममनु क्री. धर्मिष्ठाः सख्यवादिनः ॥ नदीसंगमनवायं कर्तुं शुद्धिदिना  
विधिः ॥ ॥ अथ पितामहकृतः पंचागः ॥ यथागच्छिष्यते कृत्वा कृष्णकृष्णकृतं नृप  
नः कृष्णकादध्यानादौ कालो संकीर्त्यमानयत्यस्य मृगायस्य त्वनिदानद्विगदयदावाञ्ज  
स्याथ यायाश्च दुर्विधवत्थात्वा नृपनिधानद्विगदयदावावागथा पूर्वजानां महापातका य  
यातककूटवादवमि याति हि सायात्र दार्थमिच्छाभिधयवीर्यकृतयतानृगानृगावावात  
निर्सेकादिना नायायेः पूनः पूनगर्भकं वासगर्भयोतात्यायूयूदिनिदानद्विगदय  
दावाञ्जकत्याविच्छेदिनीयैर्द्वैसपूजादि संगतं वा कथं यथागच्छिष्यते कृत्वा कृष्णकृतं नृप  
द्वमनया हायया सरु कविष्यः ॥ यत्कालोऽर्कयोः ॥ ॥ आत्मना वद स हृददीर्घायः पून  
तद्वयागगर्भदावायकृतयविष्णुं अर्द्धसमात रुदिगि ॥ ततो गच्छेत् पूजापूजापूजापूजा  
नमा कृत्वा पूजननादी अर्द्धानि कार्यानि ॥ कश्चिदु अर्द्धत्वा नृकृत्वा ॥ तत आचार्यं कृत्वा  
यात ॥ आचार्यं यथास्वर्गं ॥ ति यति ॥ गच्छेत् काले नो ॥ यीति तास्मि दिजाधिप  
शा विष्णुः ॥ संपूजनं कृत्वा पूजा कृतमना वथान् ॥ ॥ ति यति ॥ आचार्यं पूजयता गता



कामार्थं यथागच्छि वा प्रत्यक्षं न वृत्तं यागा आवा यो मनुष्याश्च स्नातुः वा उभार्वं सर्वता तदुः जपुद  
 लं स्वस्ति कं वा न ऊहिः कृत्वा गमः (धृ) गद किं (भ) रुत्र या ध्रुवा च वा (मि) तलु लपृ वि र्ग कल ग  
 पयं मा कल (ग) विनि निक्षय वसु युग्म वन्द नादिना लं कृत्वा तद्वय विपूर्व या उ ग ग वसु स्वष्ट  
 दलं ति खि त्वा गगन गगन सल श्री कं विष्णु गद किं कल (ग) रुदं सय कल (ग) वक्रा लं  
 वक्रा ययित्वा तं धां पूव गः यथ कं तिल माष य वधी हि कं गुग्गु मा क मूद्रा ध्या नयि यथा ग  
 किं वा गी कृत्वा ॥ त गः पूव स्वस्तु कं न विष्णु शुभ क मनु ल रुदं वक्रा यज्ञान मिनि बुद्धा लं  
 वयं वा मृता हि य क पूर्व कं वा उ (भ) य वा वः पूज य ग ॥ त यथा सह सुभी वा ॐ त्वा वा रु  
 नं पूव स्वस्तु द मि ग्रा सनं (ग) वा वान स्थिति वा र्धं वि यो हृद् ॐ त्वा र्धं गस्मा दिना उजा य  
 गं त्वा वमनं यत्पूव (ले) ति स्नानं तं यज्ञ मिति यज्ञा य वी रं गस्मा यज्ञा दि ति वसुं गस्मा  
 यज्ञा दि ति गन्धं गस्मा दग्ध ॐ ति मा र्थं यत्पूव मिनि धूर्य वा द्म (भ) स्थिति दी र्घं वनु मा  
 ॐ ति ने व र्धं सका स्या सन्नि ति गाम्द लं यज्ञं ने ति द किं लं सर्व सु कं न वृत्ता उ नि मि ति ॥  
 पूजा नं मूल यमा मं ग वा र्धं द व र्धं नि (धृ) क (भ) य वि नि क्षय वा जी जा ग व र्धं कृत्वा या गः  
 सक यं व गी न वा वा द्म (भ) न गुह्य विधि ना नि मनु य ॥ विष्णु अहं त्वा म हं नि मनु य नि मनु या  
 मि हा वि पा विष्णु अहं क लो य हाः ह स्मी कृत्वा गता दा यान् वा ले ग र्धं य स्ति गान् ॥ ॐ नि

११७



पठित्वा वा प्रालेः सुरु द्विष्टा दीनः संप्रदायमनवाव विष्ठाः पूनतसि स द के नाना गतश  
मि हृ नावा रु य द ग म ले ॥ कू ट वा द न ग य व य व वा म नि न्द का ॥ व म स्व हा मि  
२१४ कू रा का ग्द रु स्या प हा व का ॥ य व दा व न ग य व सर्व ध म व हि ४ रु ता ॥ मि थ्म शि  
गं मि ना य व यो य के म लि थ व ता ॥ पू न ४ पू न म्म ति पा ष्ठ य ग के स व न कि न्वा ग स व  
कु छि मा या नु ग्द कि न्म धा क रा म्म ह ॥ आ कू ता ना धा दि हि न स्य य दृ त पु न ना न्न न या  
य स न व न ग रा व य पृ थ्म नि ल द र्क य र्ग ज ले गृ ही त्वा कू ट वा द न ग य व लो दि स व न  
की ल्य न्म म नु य णि लो ॥ य ग य ग म्मि ना जी वा ४ या पि ष्ठा ५ ४ ख हा नि न ॥ जू न्म ग र्म म य  
द रु म्म य ति षु नु म्म क थ ॥ नि व य णि लो ग ना वा य वि क्रि य ७ ग ना द व स्या य न द  
ग ल्य प्रि म ना प्रि पु ति षा य य व ग य यि त्वा म्म मा न क व न्म म्म म्म मि हि मि ला  
अ न व पु ति षा मि दं वि षु वि ति म नु म्म म्म रु व ग र्ग वृ द व म्म म्म म्म म्म म्म म्म  
म न म्म वि षा ति षा दि गी र्ग रु या ७ ॥ सि षु रु ता दि षु र्ग रु ति व रु ता क म्म ग र्ग  
म मा य हा म क रु स्या य धा न कि द कि र्ग द ला कू ट व का ले म म पु ग पा क र्थ ना ना  
(म ग र्ग वि षु अ धि का वि र्ग वि षु र्ग वा र्ग यि रु र्ग उ का दि षु वि धा न न वि षु



अथ मर्हकविशेषः ॥ मूर्तिर्लोककृत्या कृत्या ॥ सकयं च वरा वा वा द्वा ॥ शानदवा ॥ नावाहना ॥  
कर ॥ १ ॥ सर्ववदा ॥ धेयुना ना ॥ मगाले मित्यादियथा ॥ याग्यविरुक्तिरिदं वा ॥ यवा ॥  
रा ॥ ऊना न कृत्वा विष्णुं स्मरन् ॥ पुनर्गर्ह वा या य स किल यने नाना ॥ मगाले मित्यादि  
दि ॥ उवाच विष्णुं सत्त्वा या पि न्दा न्दत्वा ॥ अथ ॥ गेयं समाया संपूर्णं ता वा च यित्वा  
अथ ॥ मी ॥ मय नानु लिखा वा र्थं संपूर्णं सा य क्त्वा गार्ह ॥ मगाले वा व पूर्व दत्वा ॥  
मवा मे मृ ग न ॥ मित्यादि विष्णुदीनां उरु व पूजा कृत्वा सकयं यादि सदिता ॥ ११२  
नावा या य दत्वा यथा गकि स्वर्णं व दत्वा ॥ मनुदीनं क्रियादीनं ॥ रुकि दीनं द्विजा रु  
मा ॥ अथ संपूर्णं ता या रु पु सादा इव नाम म ॥ ॥ मित्यादि पुन म्या गि वा गृहीत्वा वृ  
क्ष्म विना मग वा व रुक् ॥ स र्वा य ना हि मा ॥ जलं स्त्रित्वा कृत्वा दत्वा ता य वं त्या दि  
सं यत्र नीत्यर्क यो त्वा विष्णु ॥ अथ पु सादेन सर्वं गता विता मया ॥ उरु मा र्था उ गला  
का या र्थं न्यस्या मल जल ॥ ॥ मित्यादि गवा व जलं स्त्राय यित्वा मवा ना ग य र्थं कं ऊ  
ल स्त्रित्वा स्त्रा त्वा गृह मा ग क्त्वा ॥ ॥ मित्यादि पुन पु या ग ॥ ॥ अथैक व सु हान वि  
धि ॥ सू र्या नू ल स वा दं ॥ पु कं ल पा थित ॥ ग मु ॥ पु निल य ल्य उ ग द्रु ॥ उ क व सु



विधिं ब्रूहि स्वाभिन्विष्टं नाममा ॥ ॥ श्रीगुरु उवाच ॥ मूलं हार्गं वयं तन्न ॥ ५४ ॥ खवेध  
शनागनी ॥ वंशं च विलयं याकि ॥ यस्मिन्नेकं विष्णुं कृतं ॥ निवा नामंति मनुज ॥ दम्यती  
यत्रिभ्यः पथं ॥ साययदेकककुल ॥ तानावनूदिनं सति ॥ अष्टयद्रीतिखस्य श्री ॥ कमत ॥  
उक्तं पुनः ॥ वंशं काविधिना मनु ॥ ब्रूयदविधानं ग ॥ यच्च हतिवमकुल ॥ दक्षिणस्य तु पृ  
थ्वी ॥ यदवाह ॥ समुद्राय ॥ नेर्जितं सनकान् यज ॥ ॥ वरुण ॥ याविना मनु ॥ न्यायि मव  
र्त्तन्य स ॥ गलनां त्वं मिमकुल ॥ वायश्च गालं गव ॥ ॥ अहि ॥ गालि मकुल ॥ उरुं गव ॥ मा  
नूत ॥ नेमन च ग ॥ सर्वान् ॥ साययस्वस्वमनु ॥ ॥ गव ॥ वरुण ॥ गव ॥ मनु ॥ पूर्य स्थावित्र्य  
संस्मरम् ॥ कंदर्प ॥ कूलकुरुव ॥ पूर्य लीथवाविष्णु ॥ पूर्य पाण्युर्गम ॥ सर्वोषधिसम  
न्वितं ॥ सर्वं सहितं च ॥ नासिकं वलं संपूर्णं ॥ पुतिष्ठाविष्णुयादौ ॥ ग ॥ पूजनमावरु  
ण ॥ नगमुदगमास्थिति ॥ संजायं च षडंगं ॥ श्रीपूसायाविष्णुग ॥ पूजनं विधिवरुण ॥  
अथ शंसकरी संम्यक ॥ कृत्वा स्नानं पथागत ॥ नादीमुखं तु यद्वाह ॥ विधयं विधिवरुण ॥  
वगा मूले वमकुल ॥ मधूदद्यात्सगार्थिनी ॥ गव ॥ सीति वमकुल ॥ पाण्यस्थिषु मधुम ॥ ॥  
अथ ऊतपार्थना ॥ ॐ पुरुषोत्तम ॥ वगव ॥ ऊताना मधियपरा ॥ नष्टानष्ट पसृष्टान्  
गव ॥ दहिषु सीदमा ॥ नदीनदास्तुतामनि ॥ कृपादनीं ऊतामया ॥ ॥ तुल्यं विना न ॥ ग ॥



नमो ह्रीं दहि जलं गवरा ॥ पूर्वजन्म त्रिय स्यायै कसं सग्न स्वयं करी ॥ हापि सति तं हित्वा गह्वरं दहि  
 पुसीदम ॥ अष्टाष्टि सुती धर्मा नदीनाम धिया तवाना सकानामपि वादीना मीम गह्वरं पुद  
 हिम ॥ त्वमव पाति सकव त्वमव सकला यत्रि ॥ अयमुपाति नां जीवा दहि गह्वरं पुसीदम ॥ त  
 वरुसं जलं वाभ दहि ॥ न जीव जीव न ॥ नमस्तु जहायि ॥ गह्वरं दहि पुसीदम ॥ ततपुगाधि  
 दा माधमं वा गमलमि गव स्याव ॥ अकनार्यं पुरा हित्वा गह्वरं दहि जगत्पम ॥ ॐ गिजल पार्थना  
 ॥ ॥ सर्वं वा जगतां एतन् गह्वरं मधिया यथा ॥ ततः स्वामी सदा सामा दहि गह्वरं मलो व ॥  
 ओ इच्छन्ती हलवगी ॥ गह्वरं मरिचमनु विग ॥ उमधयः समुद्रार्थं का मिश्रा मय्येयं दध ॥ ग  
 खायालीनं रं पुकं रुदिनिर्मलं ततः ॥ समालय करं इव नात्रिकं वा काना नपि ॥ वन ॥  
 पायसं कुर्यात्सुगिवा ॥ यत्रा यत्रा ॥ वक्रा विष्णुसामध्व कंदर्पा वृषवाहन ॥ पार्थवी सुर  
 गह्वरं दहि सग्न पित ॥ मूद्रं गह्वरं ॥ गह्वरं यवकं सुगमलिहि ॥ वाजमाघे त्रिमे विद्वान् व  
 गवा रं पुपुनय ॥ त्रिभुवः दीपकं दीपं रुतानी सफकं गथा ॥ धना कवमं मकुल ॥ अयत्ना  
 नं शुका वयं ॥ नात्रिकं वना विर्गं दाहिमी वीजपूरकं ॥ उरुकी मथपुन ॥ सकर्म वद वन  
 था ॥ कर्मपुष्टि निरुपृथी ॥ को वगी वपुष्टि गि ॥ त्रिभुवः ॥ नं शुदे वस्था ॥ नात्रिकं ॥ सुग ॥ पुद



॥ वृत्तं कनकवर्णं सती जसमना रुचिं । कुहिन न समं गीतं नात्रिगं गर्वदकथा । उद्यदकं समं  
युष्मिन् । रुचिं सिद्धव सति ॥ वीजं यत्र कं सदनं गर्वदं वा मुदा विमं । त्रुद विम्वसमानं रुचिं  
वीजं सती जसमना । सती गं सामदेव ही गर्वदं वीजं यत्र कं । रुचिं कं गर्वदेव ही । गमं रुचिं सदनं  
यमी । सानध्याति पुपुर्वं न । दहि गर्वदं उरु मी । युगं सती सती सती । लाक्षा सती सती सती । सती  
रुचिं न वीजं । गर्वदं सती सती । उरु सती सती सती । उरु सती सती सती । गमं सती सती  
मां रगं । गर्वदं सती सती ॥ ॥ अथोपध्यानां तानां ॥ वृत्तं विविदं सती सती । मां रगं सती सती  
था । ध्यानां तानां वृत्तं रुचिं । सती सती ॥ मां रगं सती सती ॥ यां रगं सती सती । सती सती सती  
वनी । सती सती सती सती । वीजं यत्र कं सती सती । सती सती सती सती । सती सती सती  
पुर्वं कानां ॥ धीमां सती सती सती । सती सती सती सती । सती सती सती सती । सती सती सती  
सती सती । सती सती सती सती । सती सती सती सती । सती सती सती सती । सती सती सती  
॥ मी मं सती सती ॥ यत्र रुचिं सती सती । सती सती सती सती । सती सती सती सती । सती सती सती  
नी । सती सती सती सती । सती सती सती सती । सती सती सती सती । सती सती सती सती । सती सती सती  
सती सती । सती सती सती सती । सती सती सती सती । सती सती सती सती । सती सती सती सती  
सा । सती सती सती सती । सती सती सती सती । सती सती सती सती । सती सती सती सती । सती सती सती



श्रीकर्मसमाधिर्ली। उक्तविरु ४ समवेदव. ममया सहितं निर्व। तत्तु तव्यथद्वान. मनया नरु  
 पूर्वजान्॥ ततो न गवर्सी सुखा. सुखे लयावके सुर्। स्वगृया कविभानेन. ययसि शेययवर्नी॥ आ  
 धावा वायुलागेव. दवा सुगमखा इती। तस्येव गवर्दि। काग. सुंतिन कलन नयस ७ अयुवर्नी  
 गस्यसीपुर्नी. स्वर्णपुष्पोवधीपुर्नी। स्वस्वमने १ पुतिष्ठाया. ग्रहणममया सह। तस्या। यवजयवर्नी  
 वासना ४ वरकाविदा ४। यवर्गभानिधिव नानान. नूद सुर्को सुथयवान्॥ ततजा वायुविधि  
 व. इदास्यववर्नी तथा। दिक्क. तंश्च तत ४ पूष. स्वस्वमने १ समाहित ४। आधावा वायुलागेव १२१  
 रुहाहाने समाचर ७। अर्वापुष्पानिहा गाव. पुनत्वाच तथा समि ७। वाज ४ पुनस्माद। यत्तमा  
 दिह्यं गन्मिवव॥ तत ४ सनस्वगीथान्या. तीयत्नीहि तत ४ यनी। अदिह्ये वासनासिमनु. थयन  
 एवयायिवा॥ ॐ ममगिचर्वीरुत्वा. तत ४ स्विष्टकूर्गदि। ग ७। हामानकनिव मयर्श. य। थक  
 विधिपूर्वकी। ऊयहाभवनेवर्षी. नाना तस्य समन्विती। याद्वलीचयुली तांच. दया ४ कथा  
 दिसर्जनी। वृषर्षी वाक्क. ७। दद्या. दावायायिचर्षी सुर्नी। ॐ तवस्थाथवियस्य ४ स्वकृया  
 दक्षिणार्गुर्नी। अ. रेखर्कतत ४ कर्था नानु ४ को। गनवाविष्णो। ततव ४ सुगिमनुत. अह  
 यत्तलसककी। सदीर्घवर्गयाग्व. नीत्वायातिगिवालर्षी। निवस्यपूवतामूक्ता. वगयाग्व  
 पलमाव। रुवनीभन सर्वरू. नमस्कृपुलदा सुम। अष्टमीयारुवनात्री. पूवस्यवतुद



न। तया द्वाविनाभय स्वामिनः कुं मया कर्तुं विदुर्नय च मद्रहः स कानय विधीति न। तत्सर्वं  
निर्दिष्टा मुं सुयुजिता ॥ ॥ वक्रुभावनमनु ॥ वक्रुभावनमनु ॥ वक्रुभावनमनु ॥ वक्रुभावनमनु ॥  
पुलावनमनु नदीदहिमवद ॥ ॥ अलपार्थना ॥ दत्तादीदम्यगीयथा दत्तेष्टयत्रिधा यय ॥  
तगादानावसानमु मनुभनं समुद्रकजादवदकउ गनाथः इर्ननाथमहं च व। सर्वं स  
वदवंगः रुवमं स्रग सुदः ॥ कर्मलाननदानन गथा ॥ गयगलस्य ॥ सीकु ४ मं करोतु  
सकृदिदहिमयुग ॥ आचार्य यय दयानि नववक्रुदिकान्यधि ॥ पुत्रवक्रुससीदत्ता कर्म  
यसमायय ॥ यलम्यदवगासवा विष्टयत्र विधानग ॥ गतः कुरु समादाय अरिधक समा  
गा ॥ मनु यवावले ॥ मोत्र ॥ किंत्वस्य यनादिति ॥ यवाले नाग भाके यना नारुले विधायि  
॥ वक्रुभावनमनु नतः ॥ अर्द्धसमावक्रु नमावक्रु गिमनु ॥ समस्य श्रमं मद्रु मद्रु ॥ मध्रमं  
यिषुमश्रीया ॥ यलीदवा ननादिता ॥ आधस्वगि वमनु ॥ यलीपा मर्तु दिता ॥ आवम्य वि  
धिवस्य श्रमं मर्तु समायय ॥ ॥ अथ नागवलि ॥ अथ वक्रुमिसर्यस्य सीकावविधि  
मुरुमं ॥ सिनीवा ल्या युरिमायां यं वक्रुकाव यक्रु ॥ कृतस्य विधि विपु ॥ वक्रुजन्म निवाय  
दि ॥ स्नात्वा गलतगा वक्रु दं उदयादि जायत ॥ वक्रुपख्या लयत्यायी वक्रु कुरु वक्रु इति ॥  
धरुजन्म निवृत्तः ॥ लोठं वक्रुद्विजायत ॥ दद्यात्ता यविशु द्यथ ॥ अगियाय कुरु म्बिना विपा



मदपुमस्यैवा. अलावसमिदाययत॥ साकादावकर्मकर्तु. भगदवपुदायय॥ निष्कदयंति निष्कवानि  
कमर्वकनीयसं॥ अनसखोदिकर्तु. निष्कमर्दगदद्वकी. विरुभर्शनकृषीग. दयादिकान् सावग॥ अन  
कृषीगुवाज्ञेवा. संस्कर्या रुदनकरं. प्रियउदीहि. गभूम. तिलचिष्टनवाधवा॥ कृत्वा सदाकृतिस्तन.  
सर्वरागसमन्विनं. अननवयमा. लत. पार्थयदिके. लत्वहिं. उरि पूर्वमग॥ सर्व. अस्मिन्निष्ठसमावि  
त॥ संस्कारार्थमहंरुक्म. पार्थयामिसमासग॥ वभुयवीतग. धाये. स्तन॥ कृत्स्नमादि. रु॥ कलपूय्या  
ऊर्तिदत्ता. अतिवस्य रुद्रद्विहि॥ पदातिगोपियालिकु. आयम्यायविनकुवि॥ कृत्वा सीस्कावसंकर्त  
या. भयामयव॥ सर्व. यद्वा. पवीतिनाकार्य. सकसीस्कावकर्मकु. लोकिका. ग्रीवतिष्ठाया. समिदाधन  
मावव॥ तगा. ५. गृत्रनिदिगा. ग. रुमिसंयु. अवात्रिहि॥ विनिर्दत्ताथसंस्कीर्य. कामेवा. प्रयका.  
गुके॥ पर्य. अग्रीवविस्कीर्य. यत्रिर्विचसमव्यय॥ कृत्वा श्री. धनपर्यन्त. मुकया. गसादनादिकी.  
आश्रयास्वश्रीरुत्वा. सर्व्यमाउयथविधि॥ सर्व्यरु. हीत्वायत्न. विनिमात्रोपयत्तधी॥ अय  
स्यत्वा. स्य. ल. दु. ग. गत्वायात्रिसमीयत॥ पूर्वजश्रुयादाय. मा. मे. यादगिहि. मि. हि॥ सर्व्य  
स्यश्रुयादाय. यादयात्रसमगया॥ आश. नर्व. पूर्व. लेव. सर्व्यदहद्विधवय॥ वमसस  
ऊर्ले॥ सर्व्य. यादयात्र. अवातिना. अ. गृत्र. का. ल. ल. नया. सर्व्याया. ग्रीवदायय॥ उयति. व  
द. अमान. नमा. मु. सर्व्यमकुत॥ कानगा. कानगा. वापिकुत. सर्व्यव. धा. मया॥ पूर्वज. मनिवास



र्कः पुस्तकं कमयस्वम ॥ अंगि संपाद्य नागद. स्नात्वा गत्यनगः पूनः। दीनाश्च न गतः ॥  
 नि. पा. अथाकति हिमि हिः। कृतं सत्यं जलनामि. महिषि चरुतः ॥ वरं ॥ नास्ति संचयनं क  
 र्यात्. स्नात्वा वयं गृहं वुः। वृद्धवयादि कं कार्यः। शिवाणत्क द्वि विभाग ॥ बहुार्थ ह नि  
 संपादक सचेनं लानमात्रक ॥ घृतयायसरुके मु. द्विजाने द्रोहा जय ॥ कलनामयदे  
 द्विषा. नवयं द्रुमानके ॥ सयानक सुधा ॥ वः कथितानाग उवव ॥ कासिक ॥ काल  
 यागश्च. हृदयः ॥ संपादक र्कः ॥ यादपश्चात्तनं कथा. दकिन्नामयदे ॥ वृथक ॥ गन्धपुष्पा  
 दर्शकं द्रुप. दीयाश्च वच्यं द्विजान्। उर्वरुग विधानेव. सत्यं सत्कात्रकर्मणि ॥ सत्यं हि साह  
 नायाया मयान नाग संपादयः। कृष्टया विहिः ॥ संपादक सच्यं मयज त्वदा। आयुवा ना अ  
 मंग्र्यं पाश्चात्मानवा प्रया ॥ ॥ अथ वंश्चा हिमक ॥ कार्त्तिक यउवाव ॥ पूर्वमव त्वय  
 ख्यातं. संधिव-श्चान हिमि यः। दाये मु विविधा कोने. एरुधा उविकात्रउः। वंश्चा त्वं जायत  
 नासां. वंश्चा नाश्च प्रयत्न ॥ ॥ अथ वंश्चा हिमक ॥ कार्त्तिक यउवाव ॥ पूर्वमव त्वय  
 तः। द्वाविंशति गृहाः ॥ पाका. नावी योजकना मुगो। गृहाः को मात्रिकाश्चमे. द्वाविंशति गृह  
 कीर्त्तिता ॥ वंश्चा वंश्चा संपादना. गृहात्मा कुत्रकर्मणा। वंश्चा वंश्चा संपादना. एके क



स्य प्रविशन्नात् । गयी मरुतु पा शन वरुं म वि य ना य का हा दो वे द द न हि व त्स ग हा गृ क्र  
 नि या वि गी । ५ क या गु ल या न न ५ क स या स न न तु । य व पू व स । ग न . व न व रु वि रु व ली ४ ॥  
 ला ला हि ह क मा ल्य न . ५ क हा ज न हा ज न ४ क । म द क न स मिको . अ न्य ना र्थ म् गृ ह ना ग । ५  
 न म् वि य न स र्व ग हा पी ज क वा ४ स्मृ ता ४ । पृ थ म् गृ ह न म् वि य न र्ग व ग द न न री । पृ थ म् क  
 र्ग न ना वा ल म व मा रु र्म र्म र्म य ४ । गृ ह ना मा नि व श्र मि . म व नी व व नी तु हा । स र्व ना न दा व र  
 वा व पु न ना क दृ पृ न ना । म् म र्खी व त्रि नू ती च . म हा ली मा म हा व ला । का का ली च रु स नी च  
 अ र्द का वी ज या न था । मू क क गी रि द धी च . अ ऊ म र्खी च वा च धा । मू क दा र्पि ग ला ना म् . यी  
 ७ ना रा न था य वा । र्द द गृ हा रु थ वा च ४ स र्व म् ना य का ४ स्मृ ता ४ । वी ज नी कृ क क धी च . ना  
 य सी वा द सी य वा । मा द नी वा द नी वा ग . धे न दा व क ला ग था । व रु ४ व हि स मा ख्या ना . मा ग  
 ना ला क मा त व ४ । आ जि का र्द ग का ली म ४ र्द द उ क ध र्म व म ४ । वा ला नी यी उ का ४ स र्व . ध  
 र्म नि व लि कां कि ल ४ । व र्दि द या दि धा न न . ग ना मू व रि ना न था । व रु व रु क र्ग क र्ग . स म  
 र्द र्ग स म न ग ४ । स क र्ग र्ग स मी स र्वी . कृ त्वा द वि वि व द न ४ । अ न वा न व का ध वृ न व य  
 म् नि का व य ७ । द वा र्द य न व रु ४ . व रु म । धु न यी ज य ७ । द का ध क ध र्म य ४ । अ र्म  
 न र्म य ४ ॥ व रु व रु म र्मी । न दा स रु वा र्म नि ॥ स वा र्म र्म व रु व रु म र्म नि र्म य ४ ॥



[illegible]



वकीमिकीरग्वगतवकीरथाकृष्णवर्णीनीवैकुण्ठयाहु। नो। मवकातथविष्णु। नऊसामधिया  
 ४८॥ १॥ मपुलस्यारुवरु। ग। कृष्ण। स्यापेनमपुनी। वहुहस्यमा। लान। वेष्णुकैर्य। (म  
 हिनी। अकासमूलकलभं। धुनुवमुमुमालन॥ इतयलेवसीयुकी। य। थकृपविषदि  
 गाग। हिनय्म। कतइवहि। नायधीहिधुसंयुगान। नया। (अ) रयकृत्ताह। वत्मीकाइह  
 मूलन॥ १॥ १॥ हीत्यामृगमगल्य॥ ४॥ ४॥ यययुथमघटे। द्वितीय। (म) मयस्माय। नृतीय। ३।  
 खवात्रिभा। वहु। (थ) ह। मत्रऊने। यवमसर्वमोवधं॥ वधुतीर्थम्बुविचय। सयमस  
 फसागवान॥ कल। मवाहमन्यस्य। नंकरमाहहि॥ ४॥ सह। अननविभिनामना। त्व  
 हिषकयुदोयय॥ मृगवत्साजीवपूरा। वैष्णवापियुसूतिका। अवीजावीजातीया  
 ति। श्रीवाथवृक्षापिवा॥ अहिवात्रकृतीदार्ढ्यमनुयनागयदिगि। अननेवहि  
 या। (ग) न। मूर्यनसर्ववधुना। इहृगमप्रातिशोर्यं। कयापाप्रातिसद्वर्। दवीहि। (अ)  
 यसुखानी। वालानीगुहपीठन। क्रियाभगासदाकृष्णसाधकमुयमस्कवी। सरा  
 यदकि। लदया। नगनवाथकृखकी। हस्यग्ववथयानवा। मूकटकृलुतानित्राध  
 नयान्यहिनय्मनि। यनवाहुमुहं। गुन॥ यनहुधुल। दुधुनि। दवगामागनीगुहा  
 ॥ ॥ अथोहिषकविद्या॥ ॐ त्रीं ह्रीं स्रीं वीर्यट् ॥ अथहिषकाननकिलिगनकृदु॥ ॐ



[illegible]



रुनाति ॥ नृपतितामह ॥ इत्यियासाहर्षनात्री. तर्हीवमवमयत. मिहान्नस्वयमभक्ति. न  
सायुष्यवतीमव ॥ मिथुनानिदयेका. हाजयलनिदरुय. दद्यात्तोरायवसुनिग  
त्य ४८ क्वाबसावत ॥ ॥ इति यशवतीस्वरुनी ॥ ॥ अथमृगशायनिद्वरुनी ॥ कर्मवि  
याकसंगह ॥ अथमृगशायनिद्वरुनी. यानजादरुगिस्वरुनी. सतयन्मृगयत्रीक. उषुवन  
समन्वित ॥ काजायत्यग्यकृया. देन्दवकुममववा. तामग्निमितिवाअन. वनूल्म  
शोरुनायगी. इदया हाजय हिवा. नर्वयापात्यमृशग ॥ मद्राया मन. पीवाजाय १२७  
त्यग्यी. द्विग्यवादायत्यग्य. वन ४ वन. अदरुय. तामग्निवल्मीमितिमअपनीक  
नजातवेदसउतिमदावर्नेरुनीयायनिमत्य १० नृकमृशग ॥ अननपशुवहा  
माहवन्मर्द्धमाअनपथमववा ॥ इन्मग्निविपुवायथायागदवता ॥ ॥ अ  
थायनीमातातय ॥ मिगुरायाहिगमीव. पुतराया १ पुजायत. तस्यवायविशु  
द्यर्थ. द्विजमर्कविवाहय ॥ ॥ अथमृविनकिहरी ॥ कर्मवियाकसमृवय ॥ ध  
र्मपत्यासनताया. मुखमेधूनकाविल ॥ यत्याविनकिहर्वमि. सवल्मीकल. अन  
स ॥ उमामहर्षनदव. नडेकादमगीयऊनू ॥ आपयकुद्वयायूका. अविचिन्नाव



अथवा। ये यैव कर्म मनुष्ये। रुद्रयाञ्च जयं दधि। यदि दवाय तनसु वमामरुध्वे न नृसु दातव्यमिमा  
ना जत दृष्टा नृती संवृष्टा हि यत्र यत॥ अथ गुरुर्नृदा हि यका कदी नायुयल दली। ऊय होम सीत्ता  
हो रुद्रा युगी। अथ सदुर्नृवा अ हि यका न कर्न कलनी यति मां च दद्यात्॥ ॥ अथ पुद्गा हीन त्वरु  
नाति॥ पुद्गा हीन त्वरु रागना धिविति महा ध्वं वमर्न। नाग सा मा न्या नैक दातव्यम्। (अर्कः १) पुद्गा  
जा अरु नृवा गीष्ट वीमुखः ४ पु वि वि र्य क थ। वसु तसु आ धिवत्त मना धर्म त्वात्॥ ॥ यत्रा गत्र  
॥ यत्रा यला या न्मर्त्यसु मति हीनारु व दसो। अति रु चं गदा कथा। आ दा यती समन्विती॥ ॥  
ति पुद्गा हीन त्वरु नृ॥ ॥ अथ पुद्गा जा अरु नृ पुद्गा हीन त्वरु नृ व दसु दाने॥ वसु वे वरु॥ पुत्र  
म अ न नृ जा ना। या व दा ध्य य नृ व र॥ स ऊ ३ पुद्गा हीन पु। सी सा व जा य ग न न व॥ व अ मि ता  
पु गी का री। पुद्गा कां स्य मयी दृष्टी॥ म रु नी का व य दृष्टी। पु रु न र वा वि रु वि गी॥ य ले मु क या दि  
म र्था। ति म ता वा ग द दृष्ट ग॥ स स्व री ना म ति मु क्ता। यै व ग र्थे न धा व ये ता॥ एव त व र्थे सी व र्थे  
ते इ वा य वि वि च्य स॥ तै इ वा ली य वी मा र्थ। दो ल ति ग य मि श्रा ग। ग द दृ म थ वा अ र्थे य वि  
मा र्थे स्व ग कि ग॥ आ वा र्थे ४ स र्व ग म् रु क्ता। वे द वे दां ग पा व ग॥ आ रु य व र या रु क्ता पु रु  
य रु वि धा न ग॥ ग न व का व य र्थे र्जा। वि धि त ४ ग म् रु वा धि गे॥ उ य वा र्थे ४ धा उ ग र्थे। म  
नु म्भ न न रु कि ग॥ आ वा रु य रु वा गी र्थ। च म्भ यी व र म्भ वी॥ उ अ हि द वि स र्वे



नि. घृष्टायां सन्निविद्धा सर्वसत्त्वायकावात्तं ज्ञानमूढमनात्तव ॥ १७ ॥ तव मावाच्यतां घृष्टं वाक्कलं  
 वायिपूजय ॥ घृष्टं सनत्तव ॥ न कावाच्यद्वानिति मयं न पूर्व सनत्तव नीपूजा ॥ वक्त्रयुक्तान  
 मिति मनु ॥ स्वृष्टाका कपकावली पुतिष्ठाश्रुतागनी ॥ हर्मकथोत्थयत्तन सनिदायति लेनयि  
 ॥ नेवर्षायाय स दद्याद्दशवक्त्र ॥ लगथा ॥ सनत्तवियदमिति मनुवागुरु सी मग ॥ १८ ॥ मपूजा  
 यां हामकर्मलिख ॥ तस्मै दूतवर्गं दद्यात्तां घृष्टं पूजिताय ॥ मनुत्तनन विधिवत्तागी पूर्व  
 मय ॥ १९ ॥ उदद्युतो वविष्ठाय स्मत्तावागी श्वरीयतां ॥ उवाच वक्त्रया यच्च तच्च स्वाध्यायनेक  
 तां सनत्तवित्तं मात ऊं गङ्गायावहाविलि ॥ साकोद्वक्त्रकलगत्य विष्णुवृद्धादिरिक्तता ॥ तन्म  
 माधेयनेत्रेव जायं रुवववानन ॥ घृष्टदानेन दुष्टत्वं वक्त्रक्षानिर्मितं वृत्ता ॥ २० ॥ तद  
 न्धाश्रुतमाचार्यदत्तायाच ॥ अथ ॥ १८ ॥ किं नादद्याद्वाक्कलस्यश्च हाजनी ॥ तत ॥ १९ ॥ वक्त्ररि ॥  
 साद्वं स्मत्ता ऊं जीतमानव ॥ २० ॥ वय ॥ १८ ॥ वक्त्रगदानं पुक्ताहीना ऊं आयिवा ॥ पुक्तावान ऊं ऊं  
 ऊं ऊं यन वाक्क यगि यथा ॥ ॥ अथ चेतनाहीनत्वरुर्व ॥ १९ ॥ मातय ॥ १८ ॥ चिह्नहावतना  
 हीना माहृहा न्धेष्ठायाच ॥ नवकाकपुक्तावीत वायश्चिह्नं यथाविधि ॥ अथ चेतनमवा  
 पुवायश्चिह्नं ॥ ॥ अथ पुनिष्ठितत्वरुर्व ॥ १९ ॥ मातय ॥ १८ ॥ पुतिमार्गकावीत्त पुतिष्ठेव पुजा  
 यत ॥ सम्यत्तनयसिद्धं दम्बत्वं सानुवासर ॥ अथ त्वं वायश्चिह्नं वद्वयदिह्यर्थ ॥ २० ॥ उद्वा



हृय रुम म्भुनं समं गम्या विप्र न त ॥ य दि न मी स मा ध ना रि त र्हि त क्वा ख या कृ न ह र्म वे न वा स  
ह वि वा ह ॥ स वे र्दं स रि वा य नं कृ त्वा अ म्भु त्कं ग मी त्र व म्भु दि ना ली ख्या रिं पु रि वा य या द ति  
रि ॥ तै ना ना र्थ वा श क व ग र्ग स ह र्म वा कृ त्वा वा म्भु त्कं कृ यि त्वा द दि र्म द या दि नि म ह र्म व  
॥ न ग र्म स क्वा य य द र्दं वि प्र वा र्जं स यू रि न ॥ अ म्भु त्क मूलं द वा ल र्थ कृ त्वा ग ल र्गं या द ति  
रि ॥ स क्वा य आ ग र्म मूल वि प्र ना य क ग म य ग्रा वा प्र क र्थ ग ॥ प रि त्वा ग ल र्ग ना यि नि ता र्थ य  
व व दू त्वा वा म्भु त्कं कृ यि त्वा द दि र्म द या ॥ अ ग वि वा ह ॥ प रि त्वा य पु श न मि नि म ह र्म व  
व ॥ ॥ अ थ नि कृ त्वा ह र्म ॥ अ ता ग य ॥ अ ग य र्कं वि न र्जं कृ त्वा न र्म वि वे य वा ॥ अ क र्ण क  
वा र्कं नि म ह र्म व ॥ अ थ वा द रि द र्म नि म ह र्म व ॥ अ य क र्म वा नि नि दु य र्कं ॥ ॥ अ थ  
स दा इ ह र्म व ॥ क र्म वि या क स म्भु य ॥ स र्वा दा इ ह रि वि रु ह्म ॥ त्वा वि रु वि ना ग क ॥ वा  
दा य ल ग र्थ क र्था इ ह र्म वा त वे द र्म ॥ न त स र्कं ज य ना म रि त्वा र्थ वि म्भु य ॥ ना म ग र्थ  
वा त वा ग र्म ॥ अ ग र्म न न द ग म वि न र्थ र्क ॥ अ य ॥ स र्वा दा क र्म श ॥ द या दि ना वा दा य ल क  
वा र्कं पु र्थ क म य र्ग ॥ ॥ ह मा डो व रि य वा ॥ या द दा ति रि उ र्थ म्भु न ती या या म्भु न ह  
वि म्भु त्कं व र्कं उ स कृ त्क व र्म नि र्ग ॥ न त स म्भु न सा दा हा म र्थ ला क र्म जा य म ॥ ॥



अथ निरुद्धावित्त्वं हर्षं ॥ भगवत्पदं ॥ यत्र वा न कर्तव्यं तत्र न कर्तव्यं ॥ पञ्चायतं ॥ स्वर्गादि ह्यस्य क  
 र्त्तव्यं दद्यात्तु कर्त्तव्यं ॥ ॥ अथ सर्वकार्यसिद्धि हर्षं ॥ भगवत्पदं ॥ कर्मकार्यसिद्धि हर्षं ॥  
 गङ्गायागी हर्षं नव ॥ सा सा दकार्यं रुग्ण गतनाथस्य रुक्मिण ॥ अथ वा गतनाथस्य मर्त्यं नव  
 जय हर्षं ॥ दशमं गङ्गा मय्येषु गतनाथस्य रुक्मिण ॥ सर्वं ॥ गतनाथस्य रुक्मिण ॥ स्वस्वम  
 किं वा ॥ भगवत्पदं नव गतस्यागि क्रमं हर्षं ॥ कर्मविद्या कर्मसमूहं ॥ तय हीत नव  
 यः ॥ रुक्मिण सा सुवा न्वयं ॥ गङ्गा ॥ स सर्वदा जनु ॥ कर्मयता वध रुक्मिण ॥ निषिद्ध रुक्मिणी  
 वीर्य जागृता मर्त्यं कृतं ॥ दशमं गङ्गा नव यागि क्रमं यका हर्षं सदा ॥ वा दाय लं व वृद्धी  
 त गथा रुक्मिण रुक्मिणी ॥ रुक्मिणी वृत्त सार्वभौम ॥ गीतं कर्म पञ्चमं तथ ॥ हाम ॥ पाका द्यादिति  
 हि रुक्मिणी वृत्त वृत्तं ॥ दद्यात्तु दक्षिणं सर्वं गिता दीन्यत्र निदिदि ॥ गङ्गा ॥ वन सार्वभौम ॥  
 पुर्य कर्म रुक्मिणी स रुक्मिणी हाम ॥ द्यादिति रुक्मिणी वानव वानव स न नमिति ॥  
 आदित्य दन वीर्य ॥ ॥ अथ दान विज्ञं हर्षं ॥ धन दानं रुक्मिणी ॥ वायु यत्र ॥ दान विज्ञं  
 यत्र मर्त्य दान विज्ञं कर्मयता ॥ नव यत्र ॥ कर्मयता नव यत्र ॥ यत्र नव यत्र  
 दक्षिण वृत्तं ॥ गत वायु नव ॥ धन दानं रुक्मिणी ॥ रुक्मिणी मर्त्यं ॥ द्विजुजा वा रुक्मिणी  
 यत्र नय नान नव का विज्ञं ॥ रुक्मिणी वानव वानव ॥ रुक्मिणी वानव ॥ रुक्मिणी वानव ॥



[illegible]



वपुः पदः ॥ तत्तु पदः कश्चिद्वाजापि धनिर्ना कुलः । धनं न ब्रह्म ॥ या या दशा कत्र गता ॥  
 वं ॥ महा कृपा वदः ॥ उदावर्तः रुचं नत्र ॥ उद्धमावर्तः ॥ तदावर्तः विमनवानि ह्यर्थः ॥  
 रुचं ॥ रुचिः कश्चिद्वाजापि धनिर्ना कुलः । कश्चिद्वाजापि धनिर्ना कुलः । कश्चिद्वाजापि धनिर्ना कुलः ।  
 किं वदमिति मायुवर्तः ॥ मृगयमिति सुकं ॥ ॥ अथ यत्र मृगयमानः ॥ प्रियः ॥ यत्र  
 दशैर्वाजीकामः ॥ स गतः जयः ॥ आवाहयः ॥ यत्र यत्र ॥ यत्र ॥ कनकविवाः ॥ उयहा ना  
 न्यपहने च कुरुता न्यथा दधि । स्नाती वा कं वभाती नी । ययसा सैकल्ययः ॥ वाडा यल दृगा  
 मा उययय लुयनः ॥ प्रियः । सर्वे विधीः ॥ यतिः ॥ स्नात्वा हि ॥ यवने वधिः ॥ उये दुमीद व ॥ १२८  
 सखः ॥ गतिराजा हि वरनी । मनसः काममिह व । यशु कामा हि वरनी ॥ कदमनाति वलाया  
 लुजा कामः ॥ पुत्रिः ॥ वतः ॥ ॥ ॥ अथ यत्र मृगयमानः ॥ स्नात्वा वाञ्छा कामः ॥ पुत्रिः ॥ वतः ॥ वाहिनः ॥ वर्म  
 लिहाया द्वा द्वा नमुयथ विधिः ॥ वाजा वर्म लिहाया द्वा द्वा नमुयथ विधिः ॥ वाजा वर्म लिहाया द्वा द्वा नमुयथ विधिः ॥  
 यशु कामः ॥ कायस्त्वन न नदी ॥ वन्दामिति दुययानि । रुद्रया त्मार्थ्या द्विजः ॥ आदित्यकः ॥  
 ॥ यत्र नया हा मा विधीयतः ॥ विलम्बः ॥ नवाग्निः ॥ स्नात्वा द्वाली ॥ रुद्रया द्विजः ॥ दग सा ह प्रका  
 हा मः ॥ श्रीकामः ॥ यथ मा विधिः ॥ रुद्रया यथ मसम्ये । गननी विन्दत प्रियः ॥ अयुगल कृत्व मु  
 रुत्वा पुत्रानि सार्विवा ॥ ॥ ॥ अथ न कामः ॥ यवद्विनी । अथ गति विन्दत प्रियः । अयुगल कृत्व मु



ॐ ह्रीं श्रीं यमुपायुतं ॥ अथ वरुणाय नमः ॥ यद्वा न्ययत ॥ गतिनि ॥ ६ ॥ यि र्य ह्य व स ॥ कित्ता-  
सत्तादिह नवे ॥ वित्ता नी वित्ता नितया ॥ इह न वित्ता नित सार्थि वा ॥ एक विंशति नाग ॥ यथा सिद्धिनि  
यद्वा गि ॥ येन येन च कामेन ॥ इहाति यय न ॥ प्रिये ॥ यद्वा न्यथ पि विस्त्वा नि सम काम ॥ सम ॥  
ति ॥ २ ॥ न जातु ह्य व ॥ अथ ॥ प्रिय मा वा ह्य यत्क चिन् ॥ न यत्किं च न कामेन ॥ हाम ॥ का म्य ॥  
कथं वन ॥ मरु द्वा पाथ मान न ॥ नाञ्च कामेन वा पुन ॥ वाच ॥ प र्थ ॥ पाथ यि ना ॥ यत्ना य क ॥ १ ॥  
यं य ऊ ॥ ७ ॥ हि व ॥ अथ व ॥ हि विली मि ह्य न स्य र्य व द ग र्व स्य ॥ श्री स क स्य अ न न्द वि की न क र्द म  
॥ न्दि वा सृ गा ॥ ४ ॥ य ॥ १ ॥ द्वि वे गा न जा या मि ॥ श्री नू रू ॥ ४ ॥ एक प स्ता न य ॥ गि ॥ द्वि रि दू री स  
क म्या या अ नू रू ॥ ४ ॥ अं त्या प स्ता न य कि ॥ ४ ॥ अथ वि नि या ग ॥ ४ ॥ ॥ ७ ॥ हि व ॥ अथ व ॥ हि विली  
मू व ॥ न जा त मु जी ॥ व द्वा हि व ॥ म र्थी ल द्वा ॥ जा न व द्वा म मा व द्वा ॥ गी म आ वा ह जा न व द्वा ल  
श्री म ल य ग मि नी ॥ य स्या हि व ॥ अथ वि न्द र्य ॥ ग म र्थ य नू यान र्द ॥ अथ व ॥ अथ म र्थ ॥ हि सि  
ना द य म्मा द नी ॥ प्रियं द वी मू य द्वा य ॥ श्री म्मा द वी र्द व र्ण ॥ कां सा मि गी हि व ॥ अथ पा का वा मा दा  
दा ल नी र्द कां त र्थ य नी ॥ यद्वा सि गी य द्वा व ॥ गी म हा य द्वा य ॥ प्रियं ॥ व द्वा य र्मा सी य न  
सा द्वा ल नी ॥ प्रियं ला क द व र्द र्मा मू द वी ॥ गी य द्वा न मी ॥ ग व र्ण य व द्वा ॥ ल द्वा म्म न ग्थ र्ण र्वा व  
॥ मि ॥ आ दि य व ॥ ग य सा धि जा मा ॥ व न स्य ति स व र्द द्वा य वि ल्वा ॥ ग स्य द्वा ता नि ग य सान



दीउ. माया अ न न या प्र वा अ अ ल अ शी ॥ उ ये रु मां द व स र व ॥ को लि प्र म लि ना स रु । वा इ  
 र्दु ना सि रा रु सि न्की र्ति वृ द्धि द दा रु म ॥ इ ति या सा म ना र्थ का म ने श्री नी ल या म्य हं ॥  
 अ रु ति म स वृ द्धि व स वृ ति नृ द भ गृ हा ग ॥ ग र्थ का र्ता इ वा ध र्मा नि स्य यू र्हा क नी षि ली  
 ॥ ग्ध री स र्व र ता नां ता मि हा य द्ध य धि र्थी ॥ म न स ॥ का म मा कू टि वा त्र ॥ स ल्य म सी म दि  
 य गृ नां वृ य म अ स्य म यि गी ॥ ग य नां य ग ॥ क र्द भ न पु जा रु ता म यि र्थ म क र्द म ॥ गु  
 र्थ वा स म य कू ल मा न र्थ व द्य मा ति नी ॥ आ य ॥ म उ नु सि ग्धा नि वि की र्ता व स म गृ हा नी  
 त द वी मा न र्थि र्थ वा स य म कू ल आ ड्य यू र्क वि ली वृ द्धि स र्व र्ण र्थ म मा ति नी । स र्था  
 हि न र्थ यी ल श्री जा त व द्यो म मा व रु । तां म आ व र्ण जा त व द्यो ल श्री मे न य ग म मि नी । य  
 र्था हि न र्थ य स र्ग ग व द्यो म मा नृ वि द र्थ य पू र्ण वा न र्थ । अ थ स र्व म क स्य रु त गु ति  
 ॥ य ॥ गु ति ॥ य य ग रू त्वा रु द्ध या दा र्थ म नृ हं । प्रि य ॥ र्थ त द ग र्थ त गी का म ॥ स र  
 गी ज य ॥ य द्या स न य द्य नृ य य द्या दा य द्य र्थ र व । तं म रु ज स र्व य द्या कि य न सो र्थ  
 त रा म्य हं ॥ अ ग्ध दा यी ग्ध दा यी ध न दा यी म हा ध न ध र्ने म इ य नां द वी स र्व का मा र्थ  
 सि द्ध र्थ । य ग यो र्ध न र्थ र्थ रू स्य ग्ध ग र्थ र्थ । पु जा नां रु व सि मा ना आ यू र्थ र्थ  
 क र्मा रु म । ध न म मि र्ध न वा यू र्ध न र्थ र्थ ध न र्थ र्थ । ध न मि र्ध न रु द स्य गि र्ध न र्थ र्थ

१२२



शुभावे नगय सा मयिवत सा मयिवतु वृरु हा। सा मयधनस्य सा मिना म अंददा उ सा  
 भिनः॥ श्री व र्वस्वमाय यमा वा यमाय धन्य वव माने म ही यत। धनी धनं य गु वरु  
 पूरता हंगत सैव त्स व दी र्घ मायुः॥ श्री राम श्व वरु विसृ नू नू दरु धा र दना राय  
 ८४ दौली यति गमान ख पुन रु यी श्री राम कृष्ण कृतः॥ श्री मां साने य त त्व विदिन  
 क वरु स्या द रू रु त्क तिः॥ स यी कर्म विया क सा व वि व या रा मा य द द्या न्म द ॥  
 ॥ ॐ ॥ ॥ इति श्री राम श्व वरु विसृ नू श्री मन्ना राय ल सृ त श्री म जाम कृष्ण  
 त दिन क व र द द र ४ कर्म विया क सा व ४ समा क ॥ ॥ ॐ ॥  
 व द मिना ग विधु वृद्ध ने ध गे नी ति थि श्री ग द ना थ वा व। स्वा र्थ न त कर्म विया क सा व ति  
 ल ख ग विन्द द्वि जा व ऊ र्घी ॥ ॥ ॥ ॐ ॥

वेद

८३४  
८२५ के



आशा सर

2.000

I

ASHA ARCHIVES

730